₹ 100/-

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास

www.anuprasprakashan.com

वर्ष 04 अंक 07, 2023

आलेख

प्रो. डा. रामावतार यादव, पं. शशिनाथ झा
डा. तारानन्द वियोगी, भवनाथ झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि,
राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', चन्द्र किशोर मल्लिक,
नवीन कुमार झा 'शरद'

कथा

प्रदीप बिहारी, जगदीश प्रसाद मण्डल
मधुकान्त झा, विजय शंकर माल्लिक 'सुधापति'
डा. सत्येन्द्र कुमार झा, विजेता चौधरी

कविता

दीपा मिश्र, विनोद कुमार मिश्र,
धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरेन्द्र',
संदीप कुमार झा 'प्रदीप', ललित कुमार

लघुकथा/गजल/यात्रा पन्ना/बालबाड़ी इत्यादि

अनुप्रास क पूर्ववर्ती अंक...

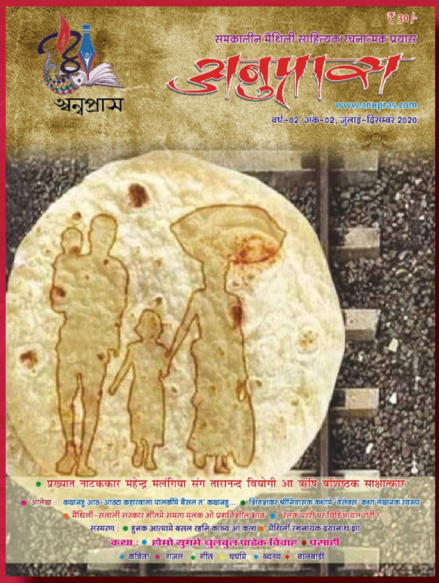

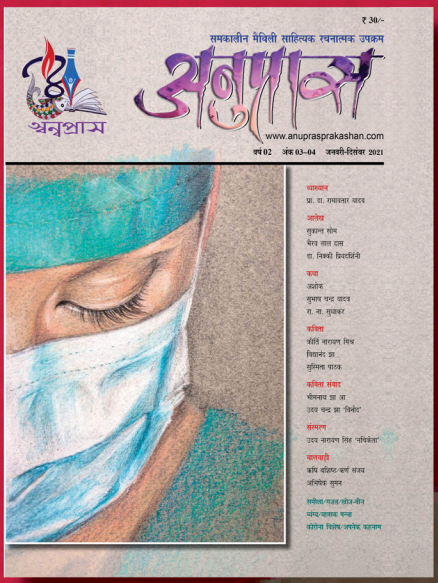

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यिक रचनात्मक उपक्रम

वर्ष 04 अंक 07, 2023 ₹ 100/-

प्रबन्ध सम्पादक

फुलकान्त ठाकुर

+91 7992322719

सम्पादक

दीप नारायण

+91 9430583847

उप सम्पादक

कुमार आलोक

+91 9431014994

शशि कुमार शशि

+91 8521907184

सम्पादकीय कार्यालय

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
मो. +91 88629 77228
www.anuprasprakashan.com
ईमेल : anuprasprakashan@gmail.com
गूगल पे/पे टी एम : +91 8862977228

- सम्पादकीय सहयोग पूर्णत: अवैतनिक।

- पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्पादक उत्तरदायी नहि छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछौट मधुबनी न्यायालयक अधीन होएत।

- अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड नयी दिल्लीसँ मुद्रित।

पग-पग पोखरि माछ मखान, मधुर बोल मुस्की मुख पान।
विद्या-वैभव-शान्ति प्रतीक, ललित नगर ई मिथिला थिक॥

— आचार्य सोमदेव

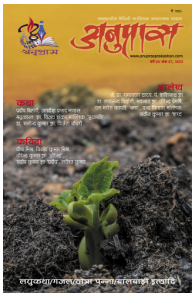

एहि अंकमे...

सम्पादकीय

मातृवाणी लेल मात्सर्य 02

आलेख

भाषा, विभाषा, एवम् मैथिली : प्रो. डा. रामावतार यादव 05
विद्यापतिक सीताराम : पं. शशिनाथ झा 19
विद्यापति, रवीन्द्रनाथ आ पूर्वोत्तर : डा. तारानन्द वियोगी 24
मिथिलाक विभूति रोहिणीदत्त गोसाञि एवं हुनक कृति : भवनाथ झा 30
सांस्कृतिक गौरवक मुहथरि खोलैत... : धीरेन्द्र प्रेमर्षि 34
नेपाल की देलक मैथिली साहित्यकेँ : राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' 39
मिथिलाकेँ कर्णकायस्थ : अध्ययन-विश्लेषण : चन्द्र किशोर मल्लिक 42
सारस्वत साधक : डा. सदन मिश्र : नवीन कुमार झा 'शरद' 51

कथा

नाच : प्रदीप बिहारी 56
नियति आ पुरुषार्थ : जगदीश प्रसाद मण्डल 64
तलाक : मधुकान्त झा 68
सोनमीक बिआह भ' गेलै : विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति' 73
दादीक कम्बल : डा. सत्येन्द्र कुमार झा 78
कलम डेग नहि उठबैत अछि : विजेता चौधरी 81

लघुकथा

हिरेन्द्र कुमार झाक दूटा लघुकथा 86

कविता

बाबा पोखरि : शशि कुमार शशि 55
दीपा मिश्रक चारिटा कविता 89
डॉ. विनोद कुमार मिश्रक तीनटा कविता 91
धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरेन्द्र'क दूटा कविता 93
संदीप कुमार झा 'प्रदीप'क तीनटा कविता 94
ललित कुमारक दूटा कविता 96

गजल

बैकुण्ठ झाक चारिटा गजल 97
विजय इस्सर 'वत्स'क चारिटा गजल 98

यात्रा पन्ना

महानादमे समाहित हमर मोन-प्राण : डॉ. वीणा ठाकुर 99

बालबाड़ी

कथा

रूपू : निवेदिता झा 107

कविता

सुमित मिश्र गुंजन/ राम सेवक ठाकुर 109

सम्पादकीय

मातृवाणी लेल मात्सर्य

अनेक व्यवधानक बादो 'अनुप्रास'क सातम अंक अपने लोकनिक हाथमे दैत हमरा अतीव आनंदक अनुभूति भ' रहल अछि। अपन मातृभाषाक सम्मानमे जे किछु करबाक हमर अवगति अछि ओहिमे 'अनुप्रास'क अनवरत प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। पहिने छओ मासपर प्रकाशित होइत छल मुदा अपरिहार्य कारणवश आब एकर प्रकाशन वार्षिक अंकक रूपमे होएत। पूर्वक सभ अंक 48 पृष्ठक ए4 आकारमे प्रकाशित अछि। मुदा एहि अंकसँ 'अनुप्रास' रॉयल आकारमे 112 पृष्ठक प्रकाशित होएत। किछु गोटेक परामर्शक सम्मान करैत अंकक संग्रहणमे उपादेयताक दृष्टिसँ एकर आकारमे परिवर्तन कएल गेल अछि। पत्रिकाक वार्षिक अंक प्रकाशनक पाछाँ अन्य कारणसभसँ इतर इहो एकटा महत्वपूर्ण कारण अछि— स्तरीय सामग्रीसभक समयसँ उपलब्ध नहि होएब। अनुप्रास परिवारकेँ कहब अछि जे जखन पत्रिकाक प्रकाशनमे भेल व्यय लेल कोनो संस्था वा कोनो मातवर व्यक्तिसँ सहयोग नहि लेल जाइत अछि तखन एकर स्तरीयतासँ समझौता किएक कएल जाए। ओहुना मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक जीवन दीर्घकालिक हो तकर कामना एखन धरि फलित नहि भेल अछि। एकर रेघा इतिहासक पन्नामे देखल जा सकैत अछि जे कतेक पैघ-पैघ नाम धराशायी भ' गेल। तथापि हमसब आशान्वित छी जे ई किछु दिन अवश्य चलत। जतबे दूर जा सकत एकर पदचिह्न बरकरार रहत। स्तरीयतासँ समझौता नहि करब हमसभ! एहि सारस्वत यज्ञमे समिधा अर्पित करैत प्रबन्ध सम्पादक रूपमे श्री फूलकान्त ठाकुर, उप सम्पादकद्वय सर्वश्री कुमार आलोक एवं शशि कुमार शशि नि:स्वार्थ भावसँ संग द' रहल छथि। अपन मातृभाषाक प्रति स्नेहसिक्त श्रद्धा रूपी चाननक ठोप अपन ललाटमे लगा हमसभ मातृभाषाक सेवा लेल कृत संकल्प छी। हमरा लोकनि जतेक सम्मान अपन माएकेँ करैत छी ततबे सम्मान हृदयमे मातृभाषाक प्रति सेहो अछि। हमर माने ई कखनो नहि अछि जेँ आन आओरो गोटेक हृदयमे मातृभाषाक प्रति सम्मान नहि अछि। अछि सभगोटेकेँ मुदा हुँआँ-हुँआँ कएने काज चलत ?

नहि चलत ! तखन किए ने सभगोटे अपन-अपन मेधा आ सामर्थ्यक अनुरूप एहि दिशामे अग्रसर होइ। हमरा सभक उद्देश्य मातृभाषाक प्रति सेवा भाव अछि तँ हमरा कहबाक अछि जे जँ एकटा संतान माएक एक पैर जँतैत हो तँ दोसर संतानक हृदय प्रफुल्लित होएबाक चाही, स्वयं दोसर पैर जाँतए लगबाक चाही। नहि की क्षणिक लोभमे घेंट जाँतए लागी।

हमरा लोकनि सभ काज-धाज छोड़ि क' गुट-गुट खेलएमे लागि गेल छी। गोंधियाँ छोड़ि सभकेँ बेजाए गानए लगैत छी। नीककेँ नीक आ अधलाहकेँ अधलाह कहबाक अपन साहसकेँ पाग-डोपटा, मंच-माला आ सम्मान-पुरस्कारक तिकरममे बेसाहि आएल छी हमरा लोकनि। अपनेमे कटाउँझ करैत सोशल मीडियापर लाठी भँजबाक व्याधिकेँ एना क' गसिया लेने छी हमरा लोकनि जेना... बरदक पेटमे अठगोरबा। हमर भाषा आ संस्कृति फोंक भेल जा रहल अछि आ हमसब बुझि नहि पाबि रहल छी। अपन गोटी लाल करबाक स्वार्थमे दिनो-दिन हमसभ केमहर बहटल जा रहल छी तकर मिसियो भरि भान नहि अछि हमरा लोकनिकेँ। कनेक ठहरि क' सोचबाक खगता अछि हमरा जनैत। देशक पैघ-पैघ संस्थासभ विभिन्न शहर/गाम आदिमे अलेल टाका खर्च क' हर्षोल्लासक संग विद्यापति पर्व समारोह मनबैत अछि। समारोह बहुत सफल सेहो कहल जाइत अछि। मुदा अपसोच! एहि समारोहमे सभ किछु तँ सभक सोझेँ रहैत अछि मुदा जनिकर ई समारोह अछि ओहि मूले व्यक्ति विद्यापतिये केँ कतिया देल जाइत अछि। महाकवि विद्यापतिक निर्वाणस्थल विद्यापतिधामक राजकीय समारोहक आमंत्रण-पत्र

हिन्दीमे छपैत अछि। एहि विद्यापति समारोहक मंच-संचालन, उद्बोधन, कविगोष्ठीमे कविताक प्रस्तुति आदि हिन्दीमे होइत अछि। राजकीय समारोहक अपन प्रोटोकॉल होइत अछि, से मानैत छी तथापि ई कहबामे कोनो दुविधा नहि अछि जे एहि स्थितिक लेल हमसब सेहो कठघरामे ठाढ़ छी। प्राय: समस्त राजकीय समारोहमे कोइ ने कोइ स्थानीय व्यक्ति एहन समारोहक संयोजन अवश्य करैत छथि। ई हुनक दायित्व थिक जे स्थितिमे सुधार आनी। हम उच्चैठ-कालिदास राजकीय महोत्सवमे संयोजक बनाओल जाइत छी। पछिला तीनू समारोहमे महाकवि कालिदासकेँ एहि महोत्सवक केन्द्रविन्दुमे रखबाक प्रयास करैत छी। कलाकार वा विद्वान् सभकेँ मैथिलीमे हकार वा आमंत्रण जाइत अछि। मैथिलीमे निर्गत एहन अनुरोध-पत्रपर हस्ताक्षर तँ कोनो ने कोनो उच्च प्रशासनिक अधिकारीएक रहैत अछि। उच्चैठ कालिदास महोत्सवक अनुरोध-पत्रपर अनुमंडल पदाधिकारी, बेनीपट्टी हस्ताक्षर करैत छथि। हुनक एहि पत्रकेँ सामाजिक माध्यममे अनेक बेर उल्लेख करैत लोक प्रशंसा कयलनि, साधुवाद देलनि। एहि बेरक महोत्सवमे जखन अनुमण्डलाधिकारी श्रीमती मनीषा अपन हिन्दीक स्वागत उद्बोधनमे किछु वाक्य मैथिलीमे बजलीह तखन पूरा पंडाल करतलध्वनिसँ गुंजायमान भ' गेल। ओ मैथिल नहि छथि मुदा अपन एहि छोट काजसँ ओ सुधी श्रोता सभक हृदयमे

उतरि गेलीह आ ई हुनका अतिरिक्त प्रतिष्ठा आ मात्सर्यक अधिकारी बना देलक। एहिना बेनीपट्टीक प्रखण्ड विकास पदाधिकारी डॉ. रवि रंजन सरकारी दायित्वसभक कुशलतापूर्वक निर्वहन करैत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'अभिव्यक्ति'क स्थापना क' यशस्वी भेलाह अछि। एहिमे हम सेहो हुनक संग छी। बेनीपट्टीक प्रबुद्ध वर्ग सेहो हमरा सभक संग छथि। पदाधिकारी सभक ई भाव मिथिलाक माटि-पानि, लोक-वेद, भाषा-साहित्य, परम्परा-संस्कृति सभक प्रति अतिरिक्त मात्सर्यक प्रकटन थिक। जखन ई सभ बाहरसँ एत' आबि एहन सत्कर्म क' सकैत छथि तखन कोनो कारण नहि अछि जे हमरा लोकनि अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति आदर भाव नहि राखी। आवश्यकता एकर छैक जे एहि लेल स्वच्छ मोनेँ सही ढंगसँ उचित स्थानपर अपन बात राखल जाए। हमरा जनैत ई सही ढंग ताधरि नहि आबि सकत जाधरि अपन मातृभाषाक प्रति हृदयसँ सम्मान आ आत्मविश्वास नहि आओत। महाकवि कालिदासक मैथिलत्व विषयक संगोष्ठीक मूल 'माध्यम भाषा' मैथिली आ संस्कृते रहल। एहि बेरक कविगोष्ठीक थीम सेहो कालिदासे आधारित छल। अगिला बरख जँ हम फेरसँ संयोजक रूपमे रहि गेलहुँ तखन दूटा आओर काज करब। पहिल जे आमंत्रण कार्डक मुद्रण मैथिली/संस्कृतमे सेहो करायब तथा कवि सम्मेलनमे संस्कृतक कविसभकेँ सेहो शामिल कराएब। एहन आत्मविश्वासक लेल 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'वला भावकेँ अपन जीवनक मूल ध्येय बनबए पड़त, तदनुसार आचरण करए पड़त आ अपन घर-परिवार-समाजमे 'मात्र मैथिली'मे बाजए पड़त। अपन घर-परिवारमे धिया-पुता संग आइ हिन्दी-अंग्रेजीमे बात करब आ तखन सोचब जे हमर मातृभाषा, संस्कार, परम्परा आदि अक्षुण्ण रहत, ई स्वयंकेँ ठकनाइ थिक। जाहि नेना संग आइ हिन्दी-अंग्रेजीमे गप्प करैत मिथ्या गर्वक अनुभव करैत छी ओ एक दिन गरदनिया देत। एहि स्थितिक लेल हम-अहाँ स्वयं दोषी होएब। मातृभाषे अपन परम्परा आ संस्कार सभक वाहिका होइछ। जँ एकरे बिसरि गेलहुँ तखन मानू जे अपन संस्कृति आ परम्परा बिसरा गेल। तखन की-की देख' पड़त से कहल नहि जा सकैछ। दू पीढ़ीक बाद तँ निश्चित रूपसँ एकर पार्श्व प्रभाव परिलक्षित हुअए लागैत छैक। तकर बाद पुन: आपसी संभव नहि होइत छैक। एहि लेल अखनेसँ साकांक्ष रहब उचित।

हम कलमकारसभ एहि संसारकेँ कनेक कतिया क' एकटा फराक सुन्दर सन संसार बनबै छी— शब्दक संसार ! एकटा फराक संसार बनौनाइ एतेक सहज सेहो नहि अछि। संस्कृत साहित्यक आचार्य लोकनि साहित्यकेँ 'हितेन सह सहितम्, तस्य भाव: साहित्यम्।' कहने छथि। साहित्यमे जीवन आ जगत् लेल कल्याणकारी भाव रहबाक चाही। एहिमे हित केर भावना सन्निहित रहैत छैक। समष्टिक लेल हितकारी वा कल्याणी भावयुक्त रचना मात्र साहित्य भ' सकैछ। साहित्यमे शब्द एवं अर्थक योग संग लोक कल्याणक उदात्त भावना सेहो होएबाक चाही, भाव-प्रेषण केर ढंग सेहो सुन्दर रहबाक चाही तखने साहित्यक सार्थकता। साँचे तँ आर्षवचनमे साहित्यक लेल सत्यम् शिवम् सुंदरम् केर समावेशन परिकल्पित अछि !

एहि अंकक समस्त सारस्वत सहयोगी रचनाकार सभक प्रति अपन प्रणाम निवेदित करैत छी। जय मिथिला ! जय मैथिली !!

(दीप नारायण)

प्रो. डा. रामावतार यादव

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, तीन बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार, डा. धीरेन्द्र साहित्य-संस्कृति पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छैन्हि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत; फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका; ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन; सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका; अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिरोमणि सम्मान* एवं *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान*सँ सेहो सम्मानित छथि।

[*मैथिली विकास कोष*द्वारा नेपालक **मधेश प्रदेश**क राजधानी जनकपुरधाममे आयोजित **जनकपुरधाम साहित्य, कला तथा नाट्य महोत्सव-2078**मे चैत्र 24, 2078 तदनुसार April 07, 2022क' प्रस्तुत आमन्त्रित लघु बीज–व्याख्यानक बृहत्तर एवम् परिष्कृत प्रारूप]

भाषा, विभाषा, एवम् मैथिली

> एहि **मिथिलादेश**मे **मैथिल बालक** लोकनि तीनू काण्ड अमरकोष शुकवत् सयत्न अभ्यस्त कय ककर कोन नाम थिक वा एहि कोषमे की प्रतिपाद्य छैक वा एहिसँ हमरा की लब्ध भेल — ई नहि जानि उपेक्षाबुद्धि कय किछु दिनक बाद शब्दो कैँ बिसरि दैत छथि। ई **गजस्नान** देखि...**मैथिल** बालकक परमोपकारार्थ हमहुँ अपन **देशीय भाषा**मे विवरण करबाक यत्न कयल...। (Boldness added)
>
> मुकुन्द झा (1924) *अमर**मैथिलभाषा**विवृति*

1. उपोद्घात

प्रारम्भहिमे एकगोट गप स्पष्ट कए दी — आजुक विवेच्य विषयक शीर्षकमे प्रयुक्त तीनू शब्द **भाषा, विभाषा,** एवम् **मैथिली** प्रथम दृष्टिमे भलहि अति सरल, सोझ, ओ सर्वमान्य–सन प्रतीत होइत होअए परञ्च अछि ई मूलत: झञ्झटाह — जाहिद' पछाति एहि आलेखमे आओरो बेसी बेकछाक' सयत्न कहल जाएत। आ, भारत देशमे अङरेजक औपनिवेशिक शासनकालमे त' मैथिली–भाषी क्षेत्रसबहुमे मैथिलीक की दुरवस्था छल तकर परिदृश्य मुकुन्द झाक उपर उद्धृत वाक्यांशसँ सुस्पष्ट अछि। ध्यातव्य जे बिहार प्रान्तक मधुबनी जिलाक विष्णुपुर ग्रामवासी *वैयाकरणप्रवर* मुकुन्द झा (1870–1940) ओएह मैथिली–भाषी प्रख्यात संस्कृतज्ञ छथि जनिका प्रथमत: अमरसिंहकृत विश्वप्रसिद्ध संस्कृत कोष–ग्रन्थ *अमरकोष:*क '**मैथिलभाषाविवृति**' (बुझू **मैथिली** विवृति/विवरण/व्याख्या) सन दुरूह कार्य सुसम्पन्नकए 1924 ई.मे मधुबनी शहरक **मैथिली यन्त्रालय** (धन्य छथि ओ प्रेसक मालिक जे एकर नाम **मिथिलाभाषा यन्त्रालय** वा **मैथिलभाषा यन्त्रालय वा देशीयभाषा यन्त्रालय** नहि रखलैन्हि!) प्रेससँ प्रकाशित करबाक श्रेय प्राप्त छैन्हि। एहि आलेखक प्रारम्भसँ पूर्वहि उपर उद्धृत वाक्यांशसँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे ताहि कालमे

'**मिथिलादेश**'मे '**मैथिल**' समाजमध्य '**मैथिली**' नामक उच्चारण पर्यन्त वर्जित नहि तँ अग्राह्य–सन अवश्य छल। अत्यन्त खेदक गप जे ताहिकालमे मैथिली भाषाकलेल '**देशीय भाषा**' एवम् '**मैथिलभाषा**'–सन अस्पष्ट, ओझराएल, संकुचित, विवादग्रस्त, ओ द्वयार्थक शब्द–युग्मक प्रयोग बेहिचक ओ सगौरव कएल जाइत छल — ज्ञातव्य जे दीनबन्धु झा (1950: 299) अपन गौरवशाली शब्दकोष–ग्रन्थ *मिथिलाभाषाकोष*मे '**मैथिल**' शब्दक अर्थ '**ब्राह्मणादि**' कहैत छथि। ओहुना '**मैथिली**' एखनहु भारतक मैथिली–भाषी क्षेत्रसबहुमे हिन्दी भाषाक दुष्प्रभावेँ निस्संकोच '**मएथिली**' रूपेँ उच्चरित होइत पाओल जाइत अछि, आ तहिना नेपालक काठमाण्डूस्थित एकगोट टेलिभिजन चैनेलक मैथिली समाचारवाचिकाद्वारा सेहो सगौरव '**मएथिली**' **समाचार**क आदि ओ अन्त दुहु करैत पाओल जाइत अछि। 'मैथिली' नामक प्रयोगमे बार्धक्य ओ शिथिलता अदौ कालसँ देखना जाइत अछि — एहि विषयक विशद् वर्णन–विश्लेषणहेतु द्रष्टव्य अछि *अनुप्रास*मे हालहि प्रकाशित हमर आलेख (यादव 2021)।

आब आउ मुकुन्द झाक **मिथिलादेश**दिसि। वेदक कोनो पोथीक खोजमे 'छद्म शोधार्थी' गोविन्द झा कोलकाताक आइ.आइ.एमक एक परिचित अध्यापकसँलए ठाढ़ी गामक वेदज्ञ गोसाँइ मिसर आ हुनक काका भैया मिश्रधरि औनापथारी कएलैन्हि (देखू गोविन्द झा 2016: 3–5)। ततबहि नहि, मिसरजीद्वारा गोविन्द झाकेँ धाराप्रवाह कण्ठस्थ सुनाओल गेल गणपतिक मन्त्रसँलए दुर्गाक मन्त्र एवम् विष्णुक मन्त्र होइत केतुग्रहक मन्त्रधरि कुल एगारहो वेद–मन्त्रक सविस्तर अर्थ/व्याख्या प्रस्तुत करैत गोविन्द झा अपन कृशकाय परञ्च महती ग्रन्थमे इहो दिग्दर्शन कराओल जे वस्तुत: वेदमे ई उल्लिखित देव–देवी कतहु छथिए नहि (पृ. 4–5)। मिथिलादेशमादेँ हम तँ से नहि कएल आ से करब हमर ध्येयो नहि छल, परञ्च मैथिली ज्ञान–जगतक तीनिगोट सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ, पुरातत्त्वविद्, एवम् संस्कृतिविद्सभक वैदुष्यपूर्ण सम्मति आम पाठकजनधरि पहुँचेबाक यत्न अवश्य कएल। ओ मान्यवरलोकनि छथि: Upendra Thakur (1956), परमेश्वर झा (1977), ओ Radhakrishna Choudhary (2019)।

सुप्रसिद्ध इतिहासविद् उपेन्द्र ठाकुर कालजयी ग्रन्थरत्न *History of Mithilā (From the earliest times to 1556 A. D.)*क प्रारम्भहिमे मिथिलादेशमादेँ अपन विश्वस्त अभिमत निम्न प्रकारेँ विज्ञप्त करैत छथि:

> No Megasthenes or Fa–hian has left for us an account of ancient Mithila nor are we fortunate in having a Thucydides or Herodotus. **No literature, geographical or historical, affords us any glimpse into the history of that land.** (Boldness Added)
>
> Upendra Thakur (1956/1988: 13)

एहना अवस्थिति विद्यमान होइतहु उपेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थरत्नक शीर्षक रहल — *History of Mithilā!*

तहिना, कनेक काल '*कर्मकाण्डोद्धारक*', '*वैयाकरणकेशरी*' परमेश्वर झाक अतुल्य कृति *मिथिलातत्त्वविमर्श* दिसि दृष्टिपात करी। एहि ग्रन्थमे परमेश्वर झा प्राचीन देशसभक सविस्तर गणन/विवरण निम्नानुसार करैत छथि:

> **उत्तर कोशल (अवध)** — अयोध्या ओ लक्ष्मणपुरी (लखनौ) प्रान्तसँ लयकेँ गण्डकी पर्यन्त॥
> **कान्यकुब्ज (कन्नौज)** — फर्रूकावाद और कानपुर प्रान्त॥
> **काशी —** काशी (वाराणसी–बनारस) प्रान्त॥

मगध — ओहिसँ पूर्व व्यासेश्वरसँ आरम्भकय मुंगेर पर्यन्त, मगधदेश जाहिमे प्रधान नगर पाटलिपुत्र (पटना) और गया अछि॥

अंग — मगध देशक पूर्व अङ्ग देश थीक एहि देशक राजधानी गंगातीरमे चम्पानगर (भागलपुर) अछि॥ ...

बङ्ग — अङ्ग देशक दक्षिण पूर्वमे बंग देश थीक॥ एहिमे अंगरेज सम्राटक राजधानी कलकत्ता महानगरी अछि,...

पुण्ड्र — बंग देशक उत्तर कौशिकी नदीक पूर्व, पुण्ड्र देश थीक एकर प्रधान स्थान पुडैनिया (पुरनिया) अछि। **एहि जिलामे बनैली राज्यमे मैथिल ब्राह्मण राजा छथि**। राजधानी ३ अछि॥ रामनगर, चम्पानगर, श्रीनगर॥ ... (Boldness Added) परमेश्वर झा (1977: 17–18)

उपर्युक्त गणनक सूक्ष्म अवलोकन पश्चात् चोट्टहि अनेकहु जिज्ञासा वा प्रश्न मुह बाबिकए आगाँ ठाढ़ होइत अछि, यथा: परमेश्वर झाक एहि गणनमे **मिथिलादेशक नामोल्लेख** पर्यन्त किएक अप्राप्य अछि; तत्कालीन वा अद्यकालीन मैथिलीक सुधी पाठकजन, ओ विशेषत: संस्कृतिविद् एवम् इतिहासज्ञलोकनि, एहिमादेँ कोनहु जिज्ञासा किएक नहि कएल; एहि गरिमामय ग्रन्थक दोसर संस्करणक सम्पादक सूक्ष्मज्ञानवेत्ता गोविन्द झा पर्यन्त 16 पृष्ठक (‘**क–त**’) अपन वैदुष्यपूर्ण भूमिकामे एहि शून्यता/अनुपलब्धताद’ कतहु कोनहु संकेत किएक नहि कएल; आ तहिना प्रथम संस्करणक भूमिका–लेखक सुरेन्द्र झाकेँ सेहो एकर अर्थात् एहि जिज्ञासाक कोनहु खगता किएक नहि बुझि पड़लैन्हि; आदि, आदि।
तथापि, परमेश्वर झा अपन ग्रन्थरत्नक नाम रखलैन्हि — *मिथिलातत्त्वविमर्श*।

आब आबी राधाकृष्ण चौधरीदिसि — जनिक नाम अङरेजीमे तीनि तरहेँ, अर्थात्, R. K. Chaudhary, Radhakrishna Chaudhary, Radhakrishna Choudhary मुद्रित भेल भेटैत अछि। राधाकृष्ण चौधरीक मृत्योपरान्त प्रकाशित हुनक नवीनतम कृति Choudhary (2019)सँ उद्धृत निम्न वहुमूल्य वाक्यांशसभदिसि दृष्टिपात करी:

> **The history of Mithila from 550 to 1200 A. D. is enveloped in obscurity** and **nothing tangible is known** about the state of affairs in a country so much renowned all over the world for its intellectual and cultural activities... (p. 2)
>
> ...It may be pointed out that the Rigveda does neither mention Nami Sapya as a king nor as the founder of any dynasty in Mithila. (p. 10)
>
> **Videha** is first mentioned in the Satapatha Brahmana. (p. 10)
> The Videhas had their **capital at Mithila.** (p. 13)
>
> **Mithila** was **one of the great towns** of India. (p. 13)
> (Boldness Added)

‘विदेह’ सम्पूर्ण देशक नाम छल ओ ‘मिथिला’ ताहि देशक प्रमुख राजधानी–शहर छल — एहन मूल्यवान ज्ञानक रहस्योद्घाटन करितहु राधाकृष्ण चौधरीक एहि अन्यतम कृतिक नाम पड़ल — *The Political*

and Cultural Heritage of Mithila – जे हालहि महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभङ्गासँ प्रकाशित भेल अछि। एतए ध्यातव्य जे अन्यत्र, 44–45 वर्ष पूर्वहि, Radhakrishna Chaudhary (1977–78) 30गोट पादटिप्पणीसँ संवलित कुल 21 पृष्ठक एकगोट अति वैदुष्यपूर्ण आलेखमे **विदेह**क कायान्तरण (Metamorphisis) **मिथिला**मे होएबाक कालावधिगत संकथनद' Monier–Williamsक नामोल्लेख तँ करैत छथि परञ्च, नहि जानि किएक, Monier–Williamsक उक्त प्रकाशित कृतिक सन्दर्भक सही सूचना ताहि आलेखक पादटिप्पणीमे देबाक कार्यसँ पूर्णत: विमुख भ' जाइत छथि। उक्त सन्दर्भ–सूचना उपलब्ध भेलासँ मैथिलीक आम पाठकजन सेहो ताहि ज्ञानक सही ठेकान करबामे समर्थ होइतथि ओ हुनक भ्रान्तिक निवारण हौइतैन्हि। उपर्युक्त आलेखमे Radhakrishna Chaudhary (1977–78) निम्नानुसारक अभिमत प्रस्तुत करैत छथि:

> **According to Monier–Williams**, Videha indicated the whole country and Mithilā applied to the capital city but **ultimately Mithilā replaced Videha as name of the territory**. (p. 471)
>
> (Boldness Added)

आब देखी जे Monier–Williamsक विश्व–विख्यात संस्कृत–अङरेजी शब्दकोश वस्तुत: एहिमादँ की कहैत अछि

Monier–Williams (1899/1999)

> **विदेह** *vi–deha*, mfn. Bodiless, incorporeal; deceased, dead (also *videha–prāpta*) ,.. N. of a country (= the modern Tirhut), …; a king of V^0 (esp. applied to Janaka),… f. the capital city of V^0, i.e. Mithilā,…, pl. the people of V^0;; … (p. 966)

मिथिला ई स्वतंत्र प्रविष्टि एहि शब्दकोशमे अनुपलब्ध अछि

टिप्पणी: स्पष्टत:, राधाकृष्ण चौधरीक (1977–78) उपर्युक्त उद्धरणमे मोट अक्षरमे (Bold letters)देखाओल गेल उक्तिक, अर्थात् कालान्तरमे **विदेह**क कायान्तरण **मिथिला**मे होएबाक संकथनक, संपुष्टि Monier–Williamsक (1899/1999) संस्कृत–अङरेजी शब्दकोशमे प्रदत्त **विदेह** प्रविष्टिक अर्थ ओ व्याख्यासँ कथमपि नहि होइत अछि। प्रविष्टिमे प्रदत्त व्याख्यात्मक वाक्यांश "f. the capital city of V^0, i.e. Mithilā"सँ अभिप्रेत अछि f. (feminine) स्त्रीलिङ्ग शब्द रूप 'मिथिला' — जाहिकेँ Choudhary (2019: p. 13) विदेहक प्रमुख राजधानी–शहर रूपेँ वर्णित–विश्लेषित कएने छथि — न तु ई कि अन्ततोगत्वा 'विदेह' 'मिथिला'मे परिणत भ' गेल।

मैथिली ज्ञान-जगतमे एहन विलक्षण प्रचलन/प्रवृत्तिक (केओ–केओ 'विचलन' वा अङरेजीमे कही त' hypocrisy सेहो कहताह!) दिग्दर्शन बरोबरि दृष्टिपथपर अबैत अछि। अधिकांश संस्कृतिविद् ओ इतिहासज्ञलोकनि अभिलेखीय/प्रामाणिक सन्दर्भ देताह '**विदेह**'क अथवा '**तिरहुत**'क, परञ्च चोट्टहि एकहि साँसमे बेङकूद (frog–leap) कए कहि देताह: '**विदेह अर्थात् मिथिला**' वा '**तिरहुत अर्थात् मिथिला**'। आब बुझना गेल जे मोहन भारद्वाज (2007) अपन एक साहित्यिक निबन्ध–संग्रहक शीर्षक किएक रखलैन्हि *अर्थात्*!

अन्ततोगत्वा:, संतोषार्थ, एहि परिच्छेदक अन्त हम धीरेन्द्र प्रेमर्षिक लिखल एकगोट गीतक आरम्भक चारि पाँतीसँ करए चाहब — जे हमरा अतीव मर्मस्पर्शी ओ सत्यक लग बुझि पड़त अछि:

मानैत छी जे नइ अछि अक्खन, दुनियाकेर भूगोलमे
तैयो हमसभ बचाक' रखलहुँ जकरा माइक बोलमे
सोहर, लगनी, जटाजटिन कि झिझिया, साँझ, परातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

स्पष्टत: हमरहु मन–मस्तिष्कमे वा कहु जे हमरहु 'मैथिल छाती'मे मिथिला एहिना जीवित अछि आ हम एहिमादेँ अत्युत्सुक भए अन्वेषण–कार्यमे दत्तचित्तभए अद्यतन प्रवृत छी। ओना आस करी जे धीरेन्द्र प्रेमर्षिअहु भ्रमवशात् दीनबन्धु झा सदृश 'मैथिल' शब्दसँ 'ब्राह्मणादि' अर्थ अभिप्रेत नहिएटा करैत होथि।

एतए इहो ज्ञातव्य जे वेदक रचना कालहिसँ जखन श्रुति पाठक लैख्यिकीकरण 'literalisation' (जकरा जर्मन भाषामे *Schriftsprache* 'written language' कहल जाइत अछि) आ पछाति तकर साहित्यिकीकरण 'literarisation' (Sheldon Pollock 2006) भए एक भौतिक पाण्डुलिपि संस्कृतिक 'Manuscript culture' प्रारम्भ भेल तखनहिसँ ब्राह्मण/पण्डितद्वारा वेदकेँ अर्थात् **छन्द:/छान्दस/मन्त्र**केँ '**भाषा**' कहल गेल। ज्ञातव्य जे ऋग्वेदसँ लए पाणिनिधरि **संस्कृत** शब्दक प्रयोग अनुपलब्ध अछि। तहिना, *तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता,* आदि वैदिक साहित्यहुमे संस्कृतक उल्लेख अप्राप्य अछि। *शतपथ–ब्राह्मण* पाठमे आ तत्पश्चातक पाठसबहुमे कुल चारि प्रकारक *आर्य–भाषा* अथवा *आर्य वाक्/ब्राह्मण्या वाक्* उल्लिखित होइतहु **संस्कृत** शब्द पूर्णत: अनुपलब्ध अछि। बहुत पाछाँ जाक' *वाल्मीकि रामायणक* 'सुन्दरकाण्ड'मे पहिलि बेरि 'ब्राह्मणोचित भाषा' **संस्कृताम्** शब्दक उल्लेख प्राप्य अछि, (देखू: Satya Ranjan Banerjee 1987: ii–iv):

ahaṁ hyatitanuścaiva vānararaśca viśeṣatāḥ /
vācaṁ codāhariṣyāmi mānuṣim iha **saṁskṛtām** //
yadi vācaṁ pradāsyāmi dvijātir iva **saṁskṛtām** /
rāvaṇaṁ manyamānā māṁ sitā bhitā bhaviṣyati //

[अहं ह्यतितनुश्चैव वानरश्च विशेषता:।
वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषिम् इह **संस्कृताम्**॥
यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिर् इव **संस्कृताम्**।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति॥]

एहिमादेँ राजेश्वर झाक (1968: 18) सम्मति सेहो अत्यन्त पठनीय आ मननीय दुहु अछि:

वस्तुत: भाषाक अर्थमे 'संस्कृत' शब्दक सर्वप्रथम प्रयोग वाल्मीकि रामायणेमे कएल गेल जतए भाषा कैँ 'संस्कृता' वा 'संस्कृतम्' कहल गेल अछि। टीकाकार 'संस्कृताक' अर्थ व्याकरण–संस्कार–युक्ता (व्याकरणक नियमसँ शुद्ध) कएलैन्ह अछि। सुन्दर काण्डमे प्रहस्त भाषण कैँ 'सुसंस्कृत, तर्कपुष्ट एवम् सार्थक' (संस्कृतं हेतु सम्पन्नमर्थवच्य) कहल गेल अछि। युद्ध काण्डमे ब्रह्मा सुसंस्कृत, मधुर, विनम्र, हितकारी एवं धर्मानुकूल शब्दमे रामक संवोधन (संस्कृत मधुरं श्लक्ष्णमर्थसंहितम्) कएलैन्ह।

तदवत्, कालक्रमेण ब्राह्मण/पण्डितद्वारा संस्कृतकेँ **भाषा** ओ प्राकृतकेँ **विभाषा** कहि उँच–नीचक श्रृंखला प्रतिष्ठापितकए एक प्रकारक कृत्रिम विभेदक सृजन कएल। एहिमादेँ हालहि प्रकाशित Central Institute of Indian Languages, Mysoreक पूर्व निर्देशक एवम् भारतक लब्धप्रतिष्ठ समाजभाषावैज्ञानिक D. P. Pattanayak (2022)क सूझपूर्ण सम्मति अत्यन्त मननीय अछि:

> Ever since pundits named languages and designated some as languages and others as dialects, hierarchical organisation of languages began to take shape. It was forgotten that each language is a dialect. There is no language without a dialect and no dialect without a language. Pundit's languages were distanced from the people's perception of languages. Pundit's languages are dominant, monolingual and exclusive. People's languages are multiple, variant repertoires with language complementation. They are inclusive with idiolect to universal language, bound by a single thread. By refusing the people to recognise the right to name we deny their existence and once they die we museumise them."
> ('Foreword', xxii)

2. भाषा

'भाषा' वा 'विभाषा' शब्दक पाठ्यपुस्तकीय परिभाषा प्रस्तुत करब एतए ध्येय नहि, परञ्च भाषामादेँ एकगोट बात प्रारम्भहिमे कहि दी। एखनुका समसामयिक चिन्तनधारामे ई बात आब सार्वजनीन भ' गेल अछि जे भाषा, अर्थात् कोनहु भाषा, मात्र भाषाविज्ञान ओ व्याकरणक विषयेटा नहि अपितु एकगोट अति संवेदनशील ओ प्रबल संवेगसँ ओतप्रोत–भेल समाज–भाषिक (Sociolinguistic) तथा समाज–राजनीतिक (Sociopolitical) विषय बनि गेल अछि। अर्थात्, भाषा कोनहु राष्ट्रक विकासमे साधक ओ बाधक दुनू भ' जाइत अछि, व्यक्ति–विशेषक ऊर्ध्वगामी उन्नयनमे सौकर्य वा असौकर्य दुनू भ' सकैत अछि, आ तहिना कोनहु राष्ट्रकेँ एकतावद्ध एवम् सुसंगठित करबामे एकगोट केन्द्राभिसारी शक्ति ('a centripetal force') वा तकर ठीक विपरीत एकगोट केन्द्रापसारी शक्ति ('a centrifugal force') भए राष्ट्रकेँ छिन्नभिन्न ओ ध्वस्त कए अन्ततोगत्वा ताहि राष्ट्रक विभाजनकारी कारक तत्त्व पर्यन्त भए सकैत अछि, (देखू हमर अङरेजी आलेख: Yadav (1992)[1]। ताहि हेतुएँ मैथिलीक सुधी अध्येतासँ विनम्र आग्रह: भाषामादेँ कोनहु विचारक संप्रेषण निरपेक्ष भावेँ ओ गम्भीरतापूर्वक करब श्रेयस्कर।

एकटा आओरो गप। बुझि लिअ जे कोनहु भाषाक तथाकथित मानक भाषा सेहो ताहि भाषाक एकगोट उपभाषाए होइत अछि। आ, जेना विलायती अङरेजी भाषाक तथाकथित अत्युच्च काल्पनिक मानक रूप R. P. अर्थात् Received Pronunciationक कतहु कोनहु Native Speaker नहि छथि ताही सदृश तथाकथित मानक मैथिलीक पर्यन्त कोनहु देशीय वक्ता (Native Speaker) नहि छथि। स्पष्टरूपेण ई बुझि लिअ जे सभकेओ अर्थात् कोनहु भाषाक कोनहु वक्ता 'भाषा' नहि बजैत छथि, ओ 'विभाषा/उपभाषा' (dialect) वा अपन 'व्यक्तिभाषा' (idiolect) मात्र बजैत छथि। खाहे चन्दा झा होथि वा दीनबन्धु झा, सुभद्र झा होथि वा रमानाथ झा, उमेश मिश्र होथि वा राधाकृष्ण चौधरी सभकेओ उपभाषेटा/व्यक्तिभाषेटा बजैत छलाह — ओना अपना–अपना उपभाषा/व्यक्तिभाषाकेँ मोनेमोने ओलोकनि भलहि शुद्ध, स्तरीय, शिष्ट, वा तथाकथित मानक भाषा बुझि प्रचण्ड गौरवक अनुभूति किएक ने कए रहल छल होथि। एहि विषयद' गोविन्द झाजकाँ फरिच्छकए आनकेँ कहि सकताह! हुनक सूझपूर्ण सम्मति पाठकक हितार्थ निचाँ उद्धृत अछि:

> बात तँ कोना–दन लागत मुदा थिक निर्विवाद सत्य जे भाषा केओ नहि बजैत अछि, सभ अपन–अपन उपभाषे बजैत अछि। प्रत्येक मैथिल पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी वा केन्द्रीय मैथिली उपभाषे बजैत अछि। लोक बीच ई भ्रान्त धारणा जे दरभंगा आ' मधुबनीक निवासी ब्राह्मण लोकनि जे बजैत छथि से थिक मैथिली भाषा, आ' आन ठामक लोक जे बजैत छथि से थिक मैथिलीक उपभाषा।
>
> (गोविन्द झा 2011: 86)

तहिना, भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वक प्रत्यक्ष सम्बन्ध राजकीय प्रभुत्व ओ सत्ताद्वारा प्रदत्त संरक्षणसँ सेहो होइत अछि। एकगोट Yiddish भाषिक अभियन्ता ओ भाषावैज्ञानिक Max Weinreichक विश्वविख्यात उक्ति "A language is a dialect with an army and a navy"सँ आओरो फरिच्छकएकेँ कहि सकताह! एकहिगोट उदाहरण प्रशस्त होएत। नेपालक थारू भाषा पूर्वमे भाषावैज्ञानिक साहित्यमे तथा नेपालस्थित SIL linguists द्वारा पर्यन्त थारू–मैथिली, भोजपुरी–थारू, ओ अवधी–थारू रूपेँ वर्णित–विश्लेषित होइत आएल छल आ जेँ कि पूर्व, मध्य, ओ पश्चिम नेपालक थारू भाषाभाषीलोकनिमे परस्पर भाषिक–बोधगम्यताक (mutual intelligibility) सर्वथा अभाव रहल अछि तेँ अमेरिका प्रवासमे रहल श्रीलङ्काक प्रसिद्ध समाजशास्त्री Arjun Guneratne (2002) *Many Tongues, One People* शीर्षकक महती ग्रन्थ बहुचर्चित भेल अछि। परञ्च, वर्तमानमे थारू भाषा नेपालक एकगोट स्वतंत्र सत्ता–सम्पन्न भाषा घोषित भ' गेल अछि। भाषामादेँ आइ एतबहि।

3. विभाषा/उपभाषा

आब आबी विभाषा/उपभाषादिसि। भाषा आ विभाषामे की भेद तकर उत्तरमे प्रतिवादार्थ केओ एकटा विकट प्रश्न पुछि सकैत छथि: अङरेजी भाषाक 'hare' आ 'rabbit' तथा 'hill'आ 'mountain'मे की भिन्नता? ठीक इएह बात भाषा ओ विभाषाद' कहल जा सकैत अछि।

विभाषा अथवा उपभाषा कहितहि भाषाक ताहि स्थानीय/सामाजिक/वर्गीय प्रभेदमादेँ दैनन्दिन व्यवहारमे स्वत: अनेकहु भाषेतर समाजभाषिक पक्षक निरूपण होइत देखल जाइत अछि। ताहिमे प्रमुख अछि आन लोक/जाति/वर्गक भाषाप्रतिक दोषपूर्ण वा कहू जे विद्वेषपूर्ण दृष्टिकोण (Attitude)। उदाहरणार्थ, सतरहम शताब्दीक आरम्भक एकगोट अङरेज कवि/इतिहासकार Richard Carew (1614)क अङरेजी–भाषाक वरेण्यता एवम् आन यूरोपिअन भाषाप्रतिक विद्वेषपूर्ण दृष्टिकोणक एकगोट प्रतिनिधिमूलक परञ्च अति मनोहारी परिदृश्यदिसि दृष्टिपात करी:

> The Italian is pleasant, but without sinews, as a still reflecting water; the French delicate, but ever nice as a woman, scarce daring to open the lips for fear of marring the countenance; the Spanish majestical but fulsome, running too much on the o, and terrible like the Devil in a play; the Dutch manlike but withal very harsh, as one ready at word to pick a quarrel.
>
> (Richard Carew (1614: 40) as quoted in John Edwards (2009: 57)

एकगोट आओरो मननीय गप सेहो कहिए दी। ग्रिअर्सनक घनीभूत समाजभाषिक वा औपभाषिक क्षेत्रीय अध्ययन–अनुसन्धान पश्चात्, भारत होअओ वा नेपाल, मैथिली भाषिक–समुदायक कोनहु विश्वसनीय

क्षेत्रीय अनुसन्धानगत भाषावैज्ञानिक अध्ययन ओ वर्णन–विश्लेषण अद्यावधि अनुपलब्ध अछि। सभकेओ ग्रिअर्सन महोदयेक गाओल गीतकेँ पिष्ठपेषणकए वा अदलि–बदलि ताहीक ईर्दगीर्द सामान्य परिवर्तनसङ्ग अपन बात रखबाक सुयत्न करैत रहलाह अछि। परञ्च, मैथिली भाषिक–समुदायमे बाजलजाएवाला क्षेत्रीय वा औपभाषिक विभाषासभक (regional and/or sociolectal dialects) नामकरणहेतु प्रयुक्त ग्रिअर्सनक शब्द–चयन केहन अवैज्ञानिक, अपमानजनक, अशोभनीय, पक्षपातपूर्ण, निन्दनीय, ओ दुर्भाग्यपूर्ण छल ताहिमादेँ गोविन्द झाक सूझपूर्ण विचार पठनीय तँ अछिए मननीय सेहो। निचाँ पुन: गोविन्द झाक सम्मतिसभ उद्धृत कएल गेल अछि — पाठकजनक हितार्थ:

> सबसे पहले मुझे उनकेँ नामकरण नापसन्द हैं। **छिका–छिकी** किसी भाषा या उपभाषा का नाम नहीं है। वस्तुत: यह समस्त मैथिली भाषा का निंदा–सूचक नाम है। **थिक, थिकैक** इत्यादिकेँ बदले **छिक, छिकैक** इत्यादि क्रियापदों का व्यवहार समस्त मैथिली क्षेत्रमे होता है, यहाँ तक कि मधुबनी जिलेकेँ खानदानी मैथिल ब्राह्मणोकेँ घरोंमे भी होता है। अत: **छिका–छिकी** नाम एक सीमित क्षेत्र को मैथिली को देना असंगत है।...
>
> इसी प्रकार पूरबी मैथिली को '**गँवारी**' कहना भाषाशास्त्र की दृष्टि से अवैज्ञानिक तो है ही, अपमानजनक भी है...।
>
> इसी प्रकार '**जोलहा बोली**' भी अच्छा नामकरण नहीं है। यह उसी तरह बुरा लगता है जिस तरह मानक मैथिली को '**बभना बोली**' कहने से लगेगा।
>
> (Boldness added) (गोविन्द झा 1974: 48)

जातीय/वर्गीय पहिचान (Caste Identity) वा वैयक्तिक निजत्त्वक (Individuality) प्रतिपादनार्थ अपन विभाषा/भाषाकेँ विशिष्ट (Superior), पृथक (Exclusive), ओ उच्च/मानक (High/Standard; German *Hoch*) सिद्ध करबाक प्रयोजनेँ मैथिली भाषाक ब्राह्मण–भाषिका बेसी नहि तँ दुइगोट विलग समाजभाषिक ओ व्याकरणिक रणनीतिक अवलम्बन करैत पाओल जाइत अछि। एक, क्रियापद ओ कारक चिह्नमे **नासिक्य**क बहुल प्रयोग, यथा:**केँ छैँ ? की कहलैँ ? कहिआ अएलैँ ? पत्नीकेँ, गामसँ** आदि आदि। ब्राह्मण–भाषिकाक विशद् भाषावैज्ञानिक विवेचनहेतु द्रष्टव्य अछि हमर मैथिली आलेख (यादव 1999)। दुई, '**थिक**' सहायक क्रियाक (Copula) प्रयोग – जाहि 'defective' असार्वत्रिक ओ 'विकलांग' सहायक क्रियाक ऐतिहासिक–भाषावैज्ञानिक व्युत्पत्ति अद्यावधि अस्पष्ट ओ अज्ञात अछि आ जकर सामान्य वा आदरार्थी प्रयोग बाह्मण–भाषिकाक व्याकरणक 'वर्तमान' कालहिटामे परिसीमित अछि। ओना ध्यातव्य जे **थिक/थीक** ओ स्त्रीलिङ्ग **थिकि/थिकी** आदि रूपक बहुल प्रयोग मध्य–मैथिलीक नाट्यकृति ओ गीतिकृतिक नेवारी पाण्डुलिपिमे पर्यन्त दृष्टिगत होइत अछि, देखू (यादव *Forthcoming*)। ब्राह्मण–भाषिकामे **थिक** वा एहिसँ नि:सृत रूपिमसभक बहुल प्रयोग बुझु जे ई ओहिना भेल जेना लण्डन विश्वविद्यालयक कोनहु प्राध्यापक अपन निजत्त्वक (Identity) तथा वैशिष्ट्यक (Superiority) प्रतिपादनार्थ ओ आन विश्वविद्यालयक प्राध्यापकसँ पार्थक्य (Exclusivity) स्थापित करबाक प्रयोजनहेतु अङरेजीक एकटा अदना Preposition 'Often' ***t*** सहित उच्चारण करैत अपनाकेँ विशेष वर्गक (Class) सिद्ध करबाक प्रयोजनहेतु एक ढंगक वर्गदम्भक (Snobbery/Highbrowness) प्रदर्शन करैत छथि।

4. मैथिली

आब सामान्य पाठकजनक हितार्थ मैथिली ओ ताहिसँ सम्बद्ध किछु अति प्रचलित शब्दसभक शब्दकोशीय प्रविष्टिगत अर्थ, व्याख्या, ओ अभिप्राय बुझबाक प्रयोजनहेतु मैथिलीक तीनिगोट सुप्रसिद्ध शब्दकोशकारलोकनिक, यथा दीनबन्धु झा, गोविन्द झा, एवम् मतिनाथ मिश्र, सम्मति निचाँ द्रष्टव्य अछि।

दीनबन्धु झा 1950 *मिथिलाभाषाकोष*

मैथिल — सं.उ. मिथिलाभव (**ब्राह्मणादि**)। स्त्री. मैथिलानी।, पृ. २९९

मिथिला — सं. तीरभुक्ति। पृ. २९४

तीरभुक्ति — ई प्रविष्टि अप्राप्त।

मिथिलाभाषा — ई प्रविष्टि अप्राप्त।

मैथिली — ई प्रविष्टि अप्राप्त।

तिरहुत — ई प्रविष्टि अप्राप्त।

तिरहुता — मिथिलाक अक्षर।

गोविन्द झा (संयोजक/संपादक, 1992) ***मैथिली शब्दकोश- १***

तिरहुत—[सं.] दे. 'तीरभुक्ति' पृ. 235

तिरहुता—[सं.] तिरहुत देश (मिथिला)मे प्रचलित लिपि, मिथिलाक्षर, **मैथिलाक्षर**। पृ. 235

तिरहुताम—[वि.] तिरहुत देशक अनुरूप (वेश–भूषा, आ आचार–विचार)। पृ. 235

तिरहुति—दे. 'तीरभुक्ति'। पृ. 236

तिरहुतिया—[वि.] तिरहुति देशमे भेनिहार वा रहनिहार। पृ. 236

तीरभुक्ति—[सं.] तिरहुति, एक प्रदेश जे गंगा, हिमालय गंडक ओ कोशीक बीचमे पड़ैत अछि।

गोविन्द झा (संयोजक/संपादक, 1993) ***मैथिली शब्दकोश— २***

मैथिल—[वि.] मिथिलाक निवासी, तिरहुतिया। मिथिला सम्बन्धी। स्त्री. ०लानी। पृ. 227

मैथिली—[सं] मिथिलाक भाषा। जानकी। पृ. 227

मिथिलाभाषा– ई प्रविष्टि अप्राप्त।

मिथिला—[सं] पुराणमे राजा जनकक राजधानी, ओ सम्प्रति जनकपुर कहबैत अछि। तिरहुत देश जे गङ्गा ओ हिमालय तथा गण्डकी ओ कोशीक बीचक नाम थिक। ओ अविच्छिन्न क्षेत्र जतय मैथिली भाषा बाजल जाइत अछि। पृ. 216

गोविन्द झा (संपादक, 1999) ***कल्याणी कोश***

मिथिला mithila *n* **उत्तर बिहारक एक प्रदेश**। a territory in north Bihar where Maithili language is spoken p. 522

मिथिलाभाषा–, ई प्रविष्टि अप्राप्त।

मैथिल maithil *adj* मिथिलाक निवासी; मिथिला–सम्बन्धी। inhabitant of or relating to Mithila land. मैथिलानी *f.* मैथिली *n* 1. सीता। wife of Lord Rama. 2. मिथिलाक भाषा। **language of मिथिला**। p. 533

मैथिली ई प्रविष्टि अप्राप्त।

तिरहुत ई प्रविष्टि अप्राप्त।

तिरहुता See below. P. 288

तिरहुति tirahuti [तीरभुक्ति] *n* मिथिला प्रदेश। land of Mithila. **तिरहुता** *n* मिथिलाक्षर, मिथिलामे प्रचलित एक लिपि। the script of Mithila. **तिरहुताम** *adj* तिरहुति प्रदेशक परम्पराक अनुरूप। conforming to the tradition of Mithila तिरहुतिआ *adj* तिरहुतिक निवासी। inhabitant of Tirhuti, तिरहुतिनी f p. 288

टिप्पणी: आब मैथिलीक सुधी पाठकजनसँ प्रश्न: जँ मैथिल 'मिथिलाक निवासी' भेल आ मिथिला 'उत्तर बिहारक एक प्रदेश' भेल तँ नेपालमे बसनिहार लाखहुलाख मैथिली-भाषी मैथिल की भेल?

मति नाथ मिश्र 'मतंग' 1998 ***मैथिली शब्द कल्पद्रुम***

मैथिल–विशे., मिथिलावासी। p. 370
मिथिला–सं., एक प्राचीनतम सुसंस्कृत प्रदेश तिरहुत।
मिथिलाभाषा–, ई प्रविष्टि अप्राप्त।
मैथिली–सं., मिथिलाक भाषा। p. 370
मैथिल–विशे., मिथिलावासी। p. 370
तिरहुत–सं, मिथिला प्रदेश। p. 217
तिरहुता–सं., **तिरहुतक लिपि**। p. 217
तीरभुक्ति–, ई प्रविष्टि अप्राप्त।

टिप्पणी: तिरहुता 'तिरहुतक लिपि' अर्थात् 'मिथिला प्रदेश'क लिपि भेल, अर्थात् मैथिलीक नहि। आब, तिरहुत कोन भाषा भेल?

उपर्युक्त प्रविष्टि–संयोजन एवम् प्रविष्टिक अर्थ/व्याख्या लिखबाक सामर्थ्य (वा कहू जे असामर्थ्य) आदिद' विचार कएलासन्ताँ एहि शब्दकोशसभमे प्रविष्टिक सत्तासँ अभिमण्डित ई शब्दसभक अर्थ कतेक ओझराएल, आग्रही, संकीर्ण, अस्पष्ट, ओ द्वयार्थक अछि से स्वत:सिद्ध अछि। आ देखबामे अति हल्लुक मैथिली शब्दसभक सरल, बोधगम्य, ओ अद्वयार्थक मैथिली भाषामे अर्थ लिखि सकब वा व्याख्या क' सकब केहन दुष्कर आ कष्टसाध्य कार्य अछि ताहिदिसि सामान्य पाठकक दृष्टि जाअओ से हमर अभीप्सित इष्ट। ततबहि नहि, एहिसँ मैथिली भाषाक शब्दकोश–निर्माण–शास्त्र (the art and craft of dictionary–making) अद्यावधि कतेक क्षीण अछि से पर्यन्त परिलक्षित भ' जाएत। एहि विषयक विशद् वर्णन–विश्लेषणहेतु द्रष्टव्य अछि हालहि महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभङ्गासँ प्रकाशित हमर पोथी (Yadav ed. 2021)। तहिना, मैथिलीक प्रमुख शब्दकोशसभक, यथा: गोविन्द झा (1992), जयकान्त मिश्र (1973, 1995), मतिनाथ मिश्र (1998), एवम् काठमाण्डू, नेपालसँ प्रकाशित योगेन्द्र यादव (2017)क समालोचनात्मक समीक्षाद' देखू हमर प्रकाशित आलेखसभ: यादव (1994, 1999, 2000, 2017) एवम् Yadav (1999)। एहि विषयमादेँ एतबहि, बेसी कहब उचित नहि।

5. उपसंहार

एहि आलेखक उपसंहारमे, निष्कर्षरूपेँ पाठकलोकनिक ध्यान हिन्दू मतावलम्बीक अनुरूप श्रृष्टिक आरम्भमे भेल सुरासुर संग्रामदिसि आकृष्ट करए चाहब। सभकेओकेँ सुनल अछि जे ताहि संग्राममे अनकेहु कारणवश

सुरक विजय आ असुरक पराजय भेल छल। *शतपथ–ब्राह्मण* ग्रन्थक श्लोक 3. 2. 1. 23–24 स्पष्टरूपेण ई इङ्गित करैत अछि जे ताहि महासंग्राममे असुरक पराजयक आन जे कोनहु कारण होअओ परञ्च मूलभूत कारण भाषावैज्ञानिक किंवा ध्वनितात्त्विक अछि। उक्त श्लोक पाठकक अवगतार्थ निचाँ उद्धृत अछि:

ते' सुरा आत्तवचसो हे' लवो हे' लवः
इति वदन्तः पराबभूबुः। 23॥
तत्रैनामपि वाचमूदुः।
उपजिज्ञास्या' स म्लेछस्तस्मान्न ब्राह्मणो
म्लेछेदसुर्या हैषा वाग् ... *शतपथब्राह्मण* 3. 2. 1. 23–24

संस्कृत भाषाक हमर ज्ञान अत्यल्प होएबाक कारणेँ अमेरिकामे प्रवास करैत जर्मन संस्कृतज्ञ हान्स हेनरिख होककृत अङरेजी रूपान्तरणक साहाय्यसँ ई ज्ञान नि:सृत भेल अछि। हुनक अङरेजी रूपान्तरण सेहो निचाँ उद्धृत अछि:

The Asuras, deprived of [correct] speech, saying *he lavo*, *he lava,* were defeated.
This is the unintelligible speech which they uttered at that time.
Who speaks thus is a barbarian.
Therefore a brahmin should not speak like a barbarian, for that is the speech of the Asuras. Hock (1986: 1)

शतपथ–ब्राह्मण स्पष्ट शब्दमे कहैत अछि जे ब्राह्मण अर्थात् सुरद्वारा उच्चरित **र** ध्वनिकेँ विकारकए ***ल*** उच्चारण करएवाला म्लेच्छ अर्थात् असुर पराजयक अधिकारी नहि तँ आओर की? कनेक आओरो बेसी फरिच्छकए कही तँ ई जे ब्राह्मणोच्चारित तथाकथित 'शुद्ध' श्लोकांश **हे' रयो हे' रयः** केँ **हे' लवो हे' लवः** जकाँ 'अशुद्ध' बाजएवाला म्लेच्छ नहि भेल तँ आओर की? आब अपनहिलोकनि निर्णय करी: प्राचीन ओ मध्य–मैथिलीक शब्द **राजा** नेवारी लिपिमे निर्मित मैथिलीक अनेकहु बहुमूल्य हस्तलिखित अभिलेखसभमे **लाजा** आ तहिना '**सिमरओन**' (आजुक सिमरौनगढ़) '**सिमलओन**' रूपेँ लिखित अछि तँ की नेपाल उपत्यकाक अनेकहु नेवार नृप एवम् राज्याश्रित ब्राह्मण राजपण्डित–काव्यकार/नाट्यकार म्लेच्छ भ' गेलाह? तहिना, की *प्राकृत–पैङ्गलम्मे* प्रयुक्त **वहुलिआ** (2. 83 = **वहुरिया**)ओ **तुलक** (1. 157 = **तुरक, तुर्क**) प्राकृत एवम् अपभ्रंश भाषा/विभाषाक छन्द:शास्त्रक प्रणेता पिङ्गलाचार्यकेँ 'म्लेच्छ' बना देतैन्हि? ध्यातव्य जे मैथिलीक आद्य श्रोत मागधी प्राकृत ओ पछाति अपभ्रंश वा अवहट्ठसँ नि:सृतभए स्वतंत्र भाषारूपेँ विलग होएबाक उपक्रममे मैथिलीमे **र ~ ल, ल ~ र** एकगोट बहुप्रचलित ध्वनिपद्धतीय ध्वनि विकार (Rule of phonological sound change) स्थापित रूपेँ मान्य सिद्धान्त अछि।

ज्ञातव्य इहो जे ठीक एहने शुद्धतावादी विचारक (Purist view) परिपुष्टि 6 वेदाङ्ग मध्य एक, *शिक्षा,* सेहो करैत अछि। निचाँ प्रस्तुत पाणिनीय शिक्षाक एक श्लोकदिसि दृष्टिपात करी:

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानंहिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतो'पपराधात्॥

[स्वरकेँ उतार, चढ़ाव, खिंचाव, ठहराव या बिगाड़कर बोल देने से जो शब्द बिगड़ जाता है और ठीक–ठीक कानमे न लाने से जब उसका अर्थ नहीं निकलता है तब वह शब्द दुष्ट हो उठता है और वह वज्र बनकर शब्द बोलनेवालेपर ही घहरा पड़ता है और उसे मिटा डालता है जैसे स्वरकेँ तनिक बिगाड़से "इन्द्रशत्रु" शब्द वृत्रासुरको ले बीता।]

हिन्दी अनुवाद, सीताराम चतुर्वेदी (1954: 31–32)

उपर प्रस्तुत वर्णन–विश्लेषणसँ स्वत:स्फूर्त रूपेँ जे निष्कर्ष नि:सृत होइत अछि ओ ई जे श्रृष्टिक प्रारम्भहिसँ तथाकथित जातिगत श्रेष्ठता/निम्नताक पद्धतिपर पार्थक्य स्थापनार्थ कएलजाएवाला भाषिक विभेद प्रचण्ड रूपेण विद्यमान अछि — सुरासुर महासंग्राममे त' असुरक पराजयक कारण पर्यन्त अछि। **मैथिली भाषिक–समुदायमे अद्यतन उग्र रूपेण विद्यमान एहि भाषिक विभेदक शीघ्रहि यथोचित परिष्कार नहि भेने मैथिलीक अकल्याण अवश्यम्भावी अछि।**

आइ एतबहि। शेष सुधीजन बुझथु।

अन्त्यटिप्पणी

1. It has now become a commonplace of contemporary thinking that language is a highly emotionally charged issue, an aid and a barrier to national development, an advantage and a disadvantage to an individual, a centripetal force that may unite a nation, and a centrifugal force that may drive a society apart and ultimately divide a nation. Yadav (1992: 1)

कृतज्ञताज्ञापन

लेखक निम्न उल्लिखित महानुभावलोकनिप्रति कृतज्ञताज्ञापन करैत छथि: अजित आजाद (मधुबनी) — मुकुन्द झा (1924)क *अमरमैथिलभाषाविवृतिक* मूल पाठक Scanned Image पठएबाकहेतु; शिव कुमार मिश्र (पटना) — *प्राकृत–पैङ्गलम् 1–2* ग्रन्थक PDF पठएबाकहेतु; भवनाथ झा (पटना) — *भाषालोचन* तथा *पाणिनीय शिक्षाक* दुर्लभ PDF पठएबाकहेतु; एवम् कमल मोहन चुन्नू (पटना) — शशिनाथ झा (2009, तथा सं. 2010)सन महती ग्रन्थद्वय उपहार–स्वरूप प्रदान करबाकहेतु।

सन्दर्भ सूची

चतुर्वेदी, सीताराम 1954 *भाषालोचन,* बनारस: हिन्दी साहित्य कुटीर।
झा, गोविन्द 1974 *मैथिली भाषा का विकास,* पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
झा, गोविन्द (सं. 1992) *मैथिली शब्दकोश प्रथम खण्ड,* पटना: मैथिली अकादमी।
झा, गोविन्द (सं. 1993) *मैथिली शब्दकोश द्वितीय खण्ड,* पटना: मैथिली अकादमी।
झा, गोविन्द 2007 *मैथिली परिशीलन,* पटना: मैथिली अकादमी।
झा, गोविन्द 2011 *भाषाशास्त्र–प्रवेशिका,* पटना: दीनबन्धु प्रकाशन।
झा, गोविन्द 2016 *वेदसँ लोक धरि,* हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर, मधुबनी: ब्राह्मी प्रकाशन।
झा, दीनबन्धु शाकेँ 1872/ 1950 CE *मिथिलाभाषाकोष,* इसहपुर: दीनबन्धु झा।
झा, परमेश्वर 1977/2013 *मिथिलातत्त्वविमर्श,* पटना: मैथिली अकादमी। द्वितीय संस्करण।
झा, मुकुन्द 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति,* मधुबनी: मैथिली यन्त्रालय।
झा, राजेश्वर 1968 *मैथिली साहित्यक आदिकाल,* रसुआर (सहरसा): श्री अमरनाथ झा।

झा, शशिनाथ 2009 *निबन्धमन्दारमञ्जरी,* दीप–मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय।

झा, शशिनाथ (सम्पादक, विक्रमाब्द 2067/2010 CE) *अमरसिंह–विरचित: अमरकोष: ('मैथिलीविवृति' सहित–हिन्दीशब्दार्थयुत–शब्दसूची संवलित), विवृतिकार: वैयाकरण पं. मुकुन्द झा,* कबड़ाघाट, दरभङ्गा: मिथिलासंस्कृत–शोधसंस्थानम्।

भारद्वाज, मोहन 2007 *अर्थात्,* पटना: मैथिली अकादमी।

मिश्र, जयकान्त 1973 *बृहत् मैथिली शब्दकोश,* Fascicule 1, सिमला: ईण्डियन ईन्स्टिच्यूट औफ एडभान्स्ड स्टडी।

मिश्र, जयकान्त 1995 *बृहत् मैथिली शब्दकोश,* Fascicule 2, सिमला: ईण्डियन ईन्स्टिच्यूट औफ एडभान्स्ड स्टडी।

मिश्र मतंग, मति नाथ 1999 *मैथिली शब्दकल्पद्रुम,* जमुथरि: मिश्र बन्धु प्रकाशन।

यादव, रामावतार 1994 "गोविन्द झाक *मैथिली शब्दकोश* पढ़ला सन्ताँ," *मिथिला वाणी* (जनकपुर) 1: 3, pp. 9–14।

यादव, रामावतार 1999 "मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप," *जिज्ञासा* (राँटी, मधुबनी): 4–6, pp. 73–89।

[*सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा–प्रतिष्ठान,काठमाण्डू): 4, वि. सं. 2055/1998 CE, pp. 34–50मे सेहो प्रकाशित]

यादव, रामावतार 2000 " *मैथिली शब्दकल्पद्रुम :* एक समीक्षा," *भारती मंडन* (सुपौल): 7, pp. 110–115।

यादव, रामावतार 2016 *मैथिली आलेख सञ्चयन (1984–2015),* जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

यादव, रामावतार 2017 "समीक्षा–आलेख: *प्रज्ञा मैथिली–नेपाली–अङ्ग्रेजी शब्दकोश,*" *आँजुर* (जनकपुर) 23: 81, pp. 3–11।

यादव, रामावतार 2020a "कखनहु आठ–आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा–कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली–सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त," *अनुप्रास* (मधुबनी) 2, pp. 3–6।

यादव, रामावतार 2020b "हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* (1807 CE) शीर्षकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध *अमरकोष:*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय: संक्षिप्त परिचय," *घर–बाहर* (पटना) 20: 73, pp. 14–15।

यादव, रामावतार 2021 "मैथिलीक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी," *अनुप्रास* (मधुबनी) 3–4, pp. 3–8।

यादव, रामावतार 2022 "ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित ओ भारतविद्याशास्त्रज्ञ हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* शीर्षकक अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध अमरसिंह–विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश–ग्रन्थ *अमरकोष:*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय – विहङ्गम दृष्टि," *अनुप्रास* (मधुबनी)5–6, pp. 3–8।

यादव, रामावतार 2022 *मैथिली आलेख सञ्चयन II (2015–2022),* मधुबनी (बिहार): अनुप्रास प्रकाशन समूह।

यादव, रामावतार Forthcoming "मध्य मैथिलीक सहायक क्रिया रूप: नेपालमण्डलक नेवार नरेशकृत नाट्यकृति ओ गीतिकाव्यक पाठगत विमर्शक परिप्रेक्ष्यमे"।

व्यास, भोलाशंकर (सं. 1962) *प्राकृतपैंगलम्–२ (भाषा शास्त्रीय और छन्द:शास्त्रीय अनुशीलन),* वाराणसी: प्राकृत ग्रन्थ परिषद्।

Banerjee, Satya Ranjan 1987 *A Handbook of Sanskrit Philology*, Calcutta: The Sanskrit Book Depot (P) Ltd.

Chauhan, Vibha S. (ed. 2022) *The Languages of Bihar*, Delhi: Orient BlackSwan.

Chaudhary, Radhakrishna 1977–78 "Cultural heritage of Mithilā," *The Journal of the Bihar Research Society*: Lxiii–Lxiv, pp. 469–490.

Choudhary, Radhakrishna 2019 *The Political and Cultural Heritage of Mithila*, ed. Sadan Jha 2019, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation.

Edwards, John 2009 *Language and Identity: An Introduction*, Cambridge: Cambridge University Press.

Garrett, Peter 2010 *Attitudes to Language*, Cambridge: Cambridge University Press.

Ghosh, Manmohan 1938 *Pāṇinīya Śikṣā or The Śikṣā Vedāṅga ascribed to Pāṇini (being the most ancient book on Indo–Aryan Phonetics)*, Calcutta: University of Calcutta.

Guneratne, Arjun (2002) *Many Tongues, One people: The Making of Tharu Identity in Nepal*, Ithaca & London: Cornell University Press.

Hock, Hans Henrich 1986 *Principles of Historical Linguistics*, Berlin, New York & Amsterdam: Mouton de Gruyter.

Jha, Govind (ed. 1999) *Kalyani Kosh (A Maithili–English Dictionary)*, Darbhanga: Maharaja-dhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation.

Monier–Williams, M, 1899 *A Sanskrit–English Dictionary Etymologically and Philologically Arranged with Special Reference to Cognate Indo–European Languages*, Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited. [Indian Edition, 1999]

Pattanayak, D. P. 2022 'Foreword', To: Chauhan (ed. 2022), pp. xxi–xxiii.

Pollock, Sheldon 2006 *The Language of the Gods in the World of Men: Sanskrit, Culture, and Power in Premodern India*, Berkeley, Los Angeles: University of California Press.

Thakur, Upendra 1956/1988 *History of Mithilā (From the earliest times to 1556 A. D.*), Darbhanga: Mithila Institute. Second Edition (Revised & Enlarged)

Vyas, Bhola Shanker (ed. 1959) *Prākṛita–Paiṅgalaṁ (A Text of Prākṛita and Apabhraṁśa Metres) Part 1*, Varanasi: Prakrit Text Society.

Weinreich, Uriel 1953/1963 *Languages in Contact: Findings and Problems*, The Hague, Paris, New York: The Mouton Publishers. Second Reprint

Yadav, Ramawatar 1992 "The use of the mother tongue in primary education: The Nepalese context," *Contributions to Nepalese Studies*, 19: 2, pp. 177–190.

Yadav, Ramawatar 1999 Book Review: "*Bṛhat Maïthilī Śabdakośa* [Comprehensive Maithili Dictionary], Fascicule 1 (1973), pp. 40 + 200 & Fascicule 2 (1995), pp. 201–420, by Jayakant Mishra, Simla: Indian Institute of Advanced Study," *Journal of Nepalese Studies* (Royal Nepal Academy), Vol. 3, No. 1, pp. 129–137.

Yadav, Ramawatar (ed. 2021) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation. Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–23

Yadav, Ramawatar 2023 "Toward a historiography of lexicogenesis in Maithili – With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE)," Paper presented to the **Annual Kathmandu Conference on Nepal and the Himalaya 2023**, Kathmandu, July 26–28, 2023.

पं. शशिनाथ झा

सम्पर्क : दरभंगा, मिथिला (बिहार)
मोबाइल : +91 9199475909

पं. शशिनाथजी मिथिलामे संस्कृतक सभसँ पैघ पाग छथि। राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय स्तरपर मूर्धन्य प्रातिभ रूपमे सुप्रतिष्ठित छथि। व्याकरण, भाषा, साहित्य, शोध, संस्कृति आदि केर अनुपम व्याख्याता पं. झाक बहुआयामी प्रतिभा जेहने मौलिक काव्य, नाटक आदिमे लब्धप्रतिष्ठ भेल तहिना शोध आ सम्पादनमे अपन अद्‌भुत आभासँ मैथिल साहित्याकाशक सूर्य आ शशि रूपमे समादृत भेल। मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कुल 101 ग्रंथक यशस्वी रचयिता, अधीति विद्वान् आ मिथिला रत्न पं. डॉ. शशिनाथ झाक शोध निर्देशनमे 27 शोधप्रज्ञ पीएच. डी आ एक डी. लिट्. उपाधित छथि। मिथिला विभूति, मिथिला रत्न, विद्यासागर उपाधि, भाषासम्मान आदि पुरस्कार/सम्मानसँ अलंकृत पं. डॉ. शशिनाथ झा सम्प्रति कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक कुलपति पदकेँ सुशोभित करैत छथि। नामानुरूप भोलेनाथ जकाँ सरल ओ सहज स्वभावक स्वामी शशिनाथजी अपन विशिष्ट विनम्रता, असीम अध्ययन, अहंकाररहित सरलनिश्छल स्वभाव, जिज्ञासु एवं विद्यार्थी लेल सर्वसुलभता आदि कारणेँ अत्यन्त लोकप्रिय छथि। अपन अतुलनीय वैशिष्ट्य सभक कारणेँ सम्पूर्ण देशमे समादृत छथि।

विद्यापतिक सीताराम

अपना गामक कीर्तनमण्डली द्वारा विद्यापतिक गीत सुनल जाहिमे जानकीक नामकीर्तन करबाक निर्देश अछि। ई 'मिथिला गीत संग्रह' भाग एकमे उनतीसम गीत थिक। ई कूटपद थिक, तेँ अर्थ गूढ छैक। गीतक स्वरूप एहि प्रकारक अछि —

रे नर ! नाम सतत भजु ताही।
जाहि नहि जनक, जननि नहि जाही॥
बसु नैहर सासुरकेँ नाम।
जननिक सिर चढ़ि गेलिह गाम॥
सासुक कोरहि सुतल जमाए।
समधि बिलह तेँ बिलहल जाए॥
जाहि उदरसँ बाहर भेलि।
से पुनि ततहि पलटि चलि गेलि॥
भन विद्यापति सुकवि सुजान।
कविकेँ कवि कह, कवि पहचान॥

— विद्यापतिगीत समग्र- गीत सं.- 672
पं० गोविन्द झा

एहि पिहानीक (पहेलीक) उत्तर भेल सीता। छपलहा पोथीमे 'रे नर! नाम' केर स्थानमे 'रे नरनाह' (रे राजा) अछि, मुदा ताहिसँ अर्थ बैसैत नहि अछि। एतए राजाक प्रसंग नहि अछि आ तनिका लेल 'रे' शब्द अनुचित थिक। तेँ हम एकरा लेखकप्रमाद मानि 'रे नर! नाम' एहन पाठ राखल अछि।

अर्थ- रे मनुष्य! तनिक नामक सतत भजन करह जनिका ने जनक (पिता) छथिन आ ने जननी (माता)। अर्थात् पृथ्वीसँ प्रकट भेलि सीताक नामक कीर्तन करू, जे बसैत छथि तेँ नैहरमे मुदा नाम होइ छनि सासुरक (अयोध्याक), अयोध्यो पृथ्वीये थिक जे सीताक माए छथि। जननी (पृथ्वी) केर सिर (गाछ), तकर बनल सबारी पर चढ़ि गाम (अयोध्या) गेलीह। सासु (पृथ्वी), तनिक कोरमे जमाए (रामचन्द्र) सुतल छथि। पृथ्वीक समधि राजा दशरथ समधिन पृथ्वीकेँ बिलहथि तेँ ओ बॉटल जाए (दीनकेँ देल जाए)। सीता जाही पेट (पृथ्वी)सँ बहरएलीह अन्तमे पुन: ओहीमे पलटि (घुरि) चल गेली (समा गेली)। विद्यापति कहैत छथि— जे

सुकवि छथि सैह नीक जकाँ जनैत छथि। कविकेँ कवि (विद्यापति) कहैत छथि आ कवि चीन्हि जाइत छथि जे ई सामान्य लोकसँ विलक्षण गुणवाली सीता थिकीह।

विद्यापतिक सेवामे लागल उगना (महादेव) जखन बिलाए गेलथिन, नहि भेटलथिन तखन शिवभक्त विद्यापति भक्तिक उद्रेकसँ हुनका पर बिगड़ि ठक तक कहि देलथिन। रावणक मुखसँ कविक ई रोष बहार भेल छल—

जौँ हम जनितहुँ भोला मोरा ठकना,
होइतहुँ रामगुलाम, गे माइ।
भाइ विभीषण बड़ तप कएलनि,
जपलनि रामक नाम, गे माइ॥

— विद्यापति गीत समग्र, गीत सं.- 863

सांसारिक सुखसँ विरक्त भए विद्यापति रामभजनकेँ सर्वश्रेष्ठ कहैत छथि। खेती, चाकरी ओ बनियौटी एहि सबमे असफलता देखबैत कवि रामरूपी धनक व्यापार करबामे अनेक लाभ देखबैत कहैत छथि। ई गीत नेपालमे प्राप्त तालपत्र पर अछि जे नेपाल पदावली नामसँ प्रकाशित अछि, जाहिमे ई गीत सं.- 131 थिक—

खेत कएल, रखबारे लूटल, ठाकुर सेवा भोर।
बनिजा कएल, लाभ नहि पओले, अलप मूल भेल थोर॥
रामधन बनिजहु, लाभ अनेक॥
मोति मजीठ कनक हमे बनिजल, पोसल मन्मथ चोर।
जोखि परेखि मनहि हमे निरसल, धन्ध लागल मन मोर॥
ई संसार हाट कए मानह, सबहु लोक बनिजार।
जे जस करए लाभ तस पाबए, मूरख मरए गमार॥
विद्यापति कह सुनह महाजन, राम भगति अछ लाभ।
. . . . . ॥

— विद्यापति गीत समग्र, गीत सं.- 210

कवि कहैत छथि— हम खेत तैयार कए अन्न उपजाओल, परन्तु से सबटा रखबार लूटि लेलक। ठाकुरक (धनिकक) सेवा (चाकरी) कएल, मुदा सेहो भोर (भोल, निष्फल) भए गेल। वानिज (बनियौटी) कएल, परन्तु ताहूमे लाभ नहि पाओल, कम मूलधन थोड़ (कमे) होइत गेल। तैँ हे महाजन (व्यापारी, पूँजी देनिहार)! रामरूपी धनक बनीज (व्यापार) करह, जाहिमे अनेक लाभ निश्चित अछि।

मोती, मजीठ (मंजिष्ठा औषध) ओ सोनक व्यापार हम कएलहुँ, किन्तु कामदेवरूपी चोरकेँ पोसलहुँ, तैँ कतबो तौलि कए ओ देखि कए रखलो पर मनमे सबटाकेँ निरसि देल (तकर सुरक्षित रहबाक आशा त्यागि देल) किएक तैँ पोसलहा चोर तैँ लैये लेत, तकर चिन्ता रहिए गेल। हे मन ! सहि संसारकेँ हाट मानह आ सब लोककेँ बनियाँ बुझह। जे जेहन करत से तेहन लाभ पाओत, किन्तु मूर्ख गमार मारल जाइत अछि (हानि पबैत अछि)। विद्यापति कवि कहैत छथि— हे महाजन! सुनह, रामक भक्ति करबामे लाभे-लाभ अछि किछुओ हानि नहि।

अर्थात् संसाररूपी हाट पर बनियाँ बनह, व्यापारक वस्तु रामनाम, गहिकी राम ओ लाभ अनन्त पुण्य रूपी रत्न ओ ताहिसँ परमपद प्राप्ति। एहिमे लाभ छोड़ि हानि नहि। जे मूर्ख ओ गमार (अज्ञानी) आछि से रामनाम छोड़ि अन्न, सोना, चानी आदिक व्यापार कए लैत अछि ताहिमे क्यो मूरो गमा लैछ आ क्यो किछु आर्थिक लाभ लए पेट पोसैत अछि।

विद्यापतिक ई सीतारामभक्ति परम उदात्त ओ शरणापन्नस्थितिक प्रकाशक थिक। अध्येता लोकनि एहेन पदक अन्वेषण करथि, कारण विद्यापतिक गीतमे सीताराम विषयक चर्चा आकस्मिक नहि भए सकैछ। हुनक बहुतो गीत अनुपलब्ध अछि, ताहिमे एहन पद सभ अवश्य रहल होएत। उपलब्धो पद सभमे गहन दृष्टि देबाक प्रयोजन अछि।

विद्यापतिकृत कीर्तिपताका (वस्तुत: कीर्तिगाथा)मे तीन ठाम रामक चर्चा भेल अछि। अर्जुन राएकेँ एक सिद्धपुरुष एतए कहैत छथिन जे हम बहुतो राजाकेँ देखने छी— हरिश्चन्द्र, नल ओ राघव राम। एतए अहाँक चरित्रकेँ देखैत तनिकहु युद्धक आकलन करैत छी जे विजयी भैओ कए ओ सभ सुख-भोग नहि कए सकलाह। तेँ अहाँ सुख-भोगमे लागू—

"बहुल राअ मो दिट्ठ, हरिच्चन्द्र नल राम राहव।
तुअ चरित्त देखन्त, तन्तिहु केर आकलओ आहव"॥12॥

पुन: आगू ओ कहैत छथिन जे श्रीराम विजयी तँ भेलाह, मुदा सीताक वियोगक दु:खेसँ जेना रघुवंशी राम पूर्वकालमे कृष्ण रूपमे अवतार लए शत्रुक मर्दन कएने हलाह, तहिना एखन अहाँ छी। तेँ हे भूपालशिरोमणि! देव! सुखोकेँ सुरतेसँ अनुभव करू किएक तँ एहि भोगायतन संसारमे राजाक लेल सम्पत्तिक फल आन कोन भए सकैछ—

"सीताविश्लेषदु:खादिव रघुतनयो लब्धकृष्णावतार:
पूर्वं कृष्णोयथाभूदरिकलदमन: साम्प्रतं तादृशस्त्वम्।
तस्माद् भूपालमौले ! सुखमपि सुरतादेव देवानुभूया:
संसारे भोगसारे स्फुटमवनिभुजां श्रीफलं वा किमन्यत्"॥

— कीर्तिगाथा- 13

यथार्थ जे हो, एतए कवि सम्भावना कएने छथि। हमरा बुझाइत अछि जे विरही राम ओहि दु:खक निवारणक लेल जेना भोगीन्द्र कृष्ण बनि गेल छलाह। एहि तरहेँ एतए उत्प्रेक्षालंकार अछि। 'सुरतादेव देवानुभूया:'मे देवशब्दक आवृत्ति यमक अलंकार भेल, कारण 'सुरतात् एव' सुरतादेवमे देवशब्दक कोनो अर्थ नहि, जखन कि अगिला 'देवा' सार्थक अछि—

पुन: आगूक संस्कृत गद्य प्रभावोत्पादक अछि। आशय ई अछि जे जेना रामावतारमे राम सीताक विरहरूपी बनैया आगिसँ जरल मनसँ ताहि खेदकेँ दूर करबाक लेल कृष्णावतार लए गोपकुमार बनि आनन्दमय हजारो सुन्दरीक संग कौतूहल करैत खेलएलाह ओ प्रेरित भेलाह—

"तद् यथा रामेण रामजन्मनि सीताविरह-दवानल-दग्ध-मानसेन तत्खेदापनोदाय धृतकृष्णावतारेण गोपकुमारेण सानन्द-सुन्दरीबृन्द-सहस्रसाहित्यसमुपजातकुतुकेन... खेलति: प्रेरितरच"॥

— कीर्तिगाथा- 15॥

एतहु रामक वियोगकेँ असह्य वर्णित कए हुनकेँ द्वारा कृष्णक रूपमे जन्म लेबाक वर्णन अछि। अर्थात् विद्यापति राम ओ कृष्णमे अभेद मानने छथि। रामक रूपमे वा कृष्णक रूपमे हुनकेँ स्तुति कएने छथि।

विद्यापति अपन अवहट्ठ भाषाक तीन काव्य लिखलनि—

(1) कीर्तिगाथा (अर्जुन राएक यश), (2) कीर्तिलता (कीर्तिसिंहक यश) ओ (3) कीर्तिपताका (शिवसिंहक यश)। यद्यपि एहि सबमे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एहि तीनू भाषाक किछु-किछु अंश अछि तथापि मुख्य अंश अवहट्ठ (प्राचीन मिथिलाक अपभ्रंश) ओ विशुद्ध मैथिली थिक। जेना—

अवहट्ठ —

महुअर बुज्झिअ कुसुमरस, कव्वह सार छइल्ल।
सज्जन परउअआर मन, दुज्जन नाम मइल्ल॥

— कीर्तिलता- 1-12

अर्थात् मधुकर (भौंरा) फूलक रसकेँ बुझैत अछि,, चतुर रसिका व्यक्ति काव्यक तत्वकेँ बुझैत छथि, सज्जन परोपकारमे मनकेँ लगबैत छथि, मुदा दुर्जन तँ स्वभावसँ मलिन होइत अछि।

मैथिली —

पाञे चलु दुआओ कुमर।
हरि हरि सबे सुमर॥
बहुत छाड़ल पाटि-पाँतर।
बसले पाओल आँतरे-आँतर॥
जहाँ जाइ जेहे गाँओ।
भोगाइ राजाक बड़े नाओँ॥

— कीर्तिलता-2-15

अर्थात् दुनू राजकुमार वीर सिंह ओ कीर्तिसिंह जौनपुरक बादशाहसँ भेंटक हेतु पएरहि चललाह, से देखि सबलोक हरि-हरि स्मरण करए लागल (दु:खी भेल)। ओ दुनू आगू बढ़ैत बहुतो पाटि (एकपेड़िया) आ पाँतर (बस्तीक अभाव वाला वाट) पार कएलनि आ किछु दूरक अन्तर पर लोककेँ बसल पओलनि। जाही गाम जाथि ओतए राजा भोगीश्वरक (हिनक पितामहक) बड़ नाम प्रसिद्ध छलनि।

कीर्तिसिंहक पौरुष (पराक्रम) बड़ विलक्षण छल। ताहि प्रसंग विद्यापति महापुरुषक गणनाक क्रममे रघुनन्दन रामक चर्चा कएने छथि —

पुरुस हुअउ वलि राअ, जासु करे कन्ह पसारिअ।
पुरुस हुअउ रघुतनय, जेन्ने करेँ रावण मारिअ॥
पुरुष भगीरथ हुअउ, जेन्ने निज कुल उद्धरिअउ।
परसुराम पुनि पुरिस, जेन्ने खत्तिअ खअ करिअउ॥
अरु पुरुस पसंसञो राअगुरु, कित्तिसिंह गएनेस-सुआ।
जे सत्तु समर सम्मद्दि कहु, बप्पवेर उद्धरिअ धुअ॥

— कीर्तिलता-1-20

अर्थात् पुरुष भेलाह राजा बलि, जनिका लग विष्णु हाथ पसारलनि, पुरुष भेलाह रघुनन्दन (रघुकुलक पुत्र) जे अपना हाथेँ रावणकेँ मारलनि, पुरुष भेलाह भगीरथ जे गंगाकेँ पृथ्वी पर आनि अपन कुलक उद्धार कएलनि, पुरुष भेलाह परशुराम जे दुर्दान्त क्षत्रियक क्षय कएलनि आओर एक पुरुष भेलाह राजामे श्रेष्ठ गणेश राएक पुत्र कीर्तिसिंह जनिक प्रशंसा करैत छी, जे युद्धमे शत्रुक मर्दन कए बप्पावैरक (पिताक बधकएनिहार शत्रुक शत्रुताक) उद्धार कएलनि (बदला लेलनि)।

एतए विशिष्ट पौरुष कएनिहार सभक दृष्टान्त दए कीर्तिसिंहकेँ ओहि पाँतीमे बैसाए हुनक महान् पराक्रमक उदात्त वर्णन कएल गेल अछि।

दोसर प्रसंग अछि, वीरसिंह ओ कीर्तिसिंह एहि हुनू सहोदरक समान आन कोन सहोदर भेलाह तकर किएक तँ एतए विलक्षणता ई अछि जे जेठ छलाह वीरसिंह मुदा राजा भेलाह कीर्तिसिंह। हिनका दुनूक तुलना राम-लक्ष्मणसँ नहि भए सकैछ, अपितु बलभद्र ओ कृष्णसँ देल गेल अछि। कृष्णे राज चलाबधि, बलभद्र परामर्श देथि—

वेबि सहोदर संग, वेबि पुरिस सब गुण विअक्खण।
णं बलभद्दह कण्ह, ण उण वण्णिअउ राम-लक्खण॥
राएह नन्दन पाञे चलु, अइस विधाता भोर।
तं पेक्खन्ते कमन काँ, नयन न लग्गइ नोर॥

— कीर्तिलता-2-13

अर्थात् दुनू सहोदर (वीरसिंह ओ कीर्तिसिंह) संग-संग रहथि, दुनू पुरुष विलक्षण गुणसँ युक्त रहथि जेना बलभद्र-कृष्ण होथि, ने कि राम-लक्ष्मण जकाँ वर्णित छलाह। राजाक पुत्र पएरहि चललाह, विधाता एहन भोला (मन्दमति) छथि। हुनका देखि ककर आँखमे नोर नहि लागए ?

तेसर प्रसंग अछि— जौनपुरमे बहुत दिन घरि प्रयास कएलो पर सुलतानक कृपादृष्टि नहि भेटला पर परमचिन्तित दुनू भाइ कष्ट सहि कृपाक प्रतीक्षा करैते रहलाह, प्रयासरते रहलाह। तहि अवसरक हुनक चिन्तन ओ क्रियाकलापक वर्णन करैत विद्यापति लिखेत छथि—

"तैसना परम कष्ट पराकष्ठाक प्रस्ताव दुहु सहोदर समाज, अनुचिन्त लाज, आचारक रक्षा, गुणक परीक्षा, हरिश्चन्द्रक कथा, नलक व्यवस्था, रामदेवक रीति, दानक प्रीति, निजऍक प्रतिग्रह, साहस उत्साह अकृत्यबाध, वलिकार्णदधीचि करो स्पर्धा साध।

—कीर्तिलता- 3-31

ई मैथिली गद्य थिक। वीरसिंह ओ कीर्तिसिंह दुनू सहोदर तेहन परम कष्टक पराकष्ठाक प्रसंग समाज (संगत भए, मिलिकए) अपन लज्जाक रक्षाक चिन्तन करए लगलाह। आचार व्यवहारक रक्षा, गुणक परीक्षामे लगैत हरिश्चन्द्रक कथा, नलक व्यवस्था ओ रामचन्द्रक क्रियाकलापक अनुसरण करैत दानक प्रति प्रीति रखबे कएलनि (किछुओ दान कारबाक क्रम जारी रखलनि), निज व्यक्तिएक देल वस्तुक प्रतिग्रह (ग्रहण) कएलनि, साहस ओ उत्साहसँ अकर्तव्यकेँ बाधित कएलनि आ वलि कर्ण-दधीचि सन दानीक स्पर्धा (हुनकेँ सन बनबाक इच्छा) साधित करए लगलाह।

सहि प्रकारेँ देखैत छी जे विद्यापति अवसर पाबि सीता-रामक प्रसंग उठाए दैत छथि जे हुनका प्रति कविक निष्ठा सूचित करैत अछि।

सन्दर्भ सूची

1. विद्यापति गीत-समग्र, सम्पादक एवं व्याख्याकार - पं. श्री गोविन्द झा, प्रकाशक- भाषा संस्थान, मैसूर- 2012 ई.।
2. कीर्तिगाथा एवं कीर्तिपताका — विद्यापति, संपादक एवं व्याख्याकार- डॉ. शशिनाथ झा, BRAHMI PUBLICATION. Com, 2019 ई.
3. कीर्तिलता- विद्यापति, सम्पादक- डॉ. शशिनाथ झा, BRAHMI PUBLICATION. Com, 2020 ई.

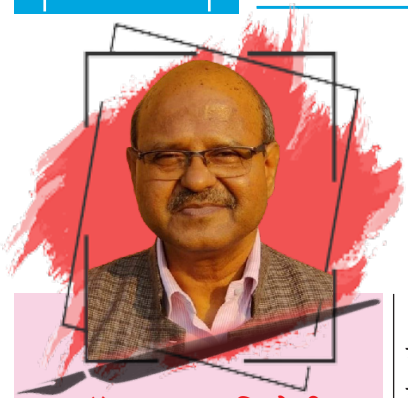

विद्यापति, रवीन्द्रनाथ आ पूर्वोत्तर

डॉ. तारानन्द वियोगी

सम्पर्क : सीतामढ़ी, मिथिला(बिहार)
मोबाइल : +91 9431413125

आधुनिक मैथिली साहित्यमे बहुत कम एहन लेखक छथि जिनकर सर्जनात्मक आ आलोचनात्मक दुनू प्रतिभा समान रूपसँ उच्चस्तरीय होनि आ प्रभूत परिमाणमे ओ सारस्वत-साधना सेहो क' रहल होथि। तारानन्द वियोगी एहिमे सर्वोपरि छथि। साहित्याचार्य, एम.ए, पी-एच.डी. उपाधित छथि। कविता, आलोचना, कथा, जीवनी, संस्मरण, क्षेत्रीय इतिहास आदि विधामे चालीससँ बेसी मौलिक एवं सम्पादित कृति प्रकाशित छनि। जनकवि नागार्जुन स्मृति सम्मान, साहित्य अकादेमीसँ बाल साहित्य पुरस्कार, यात्री सम्मान, किरण सम्मान, विदेह सम्मान आदि-आदिसँ अलंकृत वियोगीजीक प्रकाशित कृति सभमे 'अपन युद्धक साक्ष्य', 'हस्तक्षेप', 'प्रलयरहस्य', 'दुनिया घर मेहमान', 'साखी', 'धराशायी हेबाक समय' (कविता-संग्रह),अतिक्रमण', 'शिलालेख' एवं 'छियानत' हिनक कथासंग्रह छनि। 'कर्मधारय', 'बहुवचन', 'रामकथा आ मैथिली रामायण', 'मंडन मिश्र : मिथक आ यथार्थ', 'कबीर आ हुनक मैथिली पदावली', 'धूमकेतु', 'महाप्रकाश' आदि पोथीसभ चर्चित छनि। यात्रीजीपर लिखल संस्मरणात्मक पुस्तक 'तुमि चिर सारथि'सँ हुनका राष्ट्रव्यापी प्रतिष्ठा भेटलनि। बादमे यात्री नागार्जुनक वृहदाकार जीवनी 'युगों का यात्री' लिखलनि, जे देश भरिमे बेस चर्चित आ प्रशंसित भेल। हालमे दू खण्डमे छपल हुनकर आलोचना-ग्रंथ 'मैथिली कविताक हजार वर्ष' एखन बेस चर्चित अछि।

1880 ईस्वीक दशक मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृति लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण काल थिक। हम सब अवगत छी जे यैह ओ समय छल जहिया मिथिलाराज कोर्ट आफ वा वार्ड्ससँ मुक्त भेल छल आ इहो समय वैह छल जहिया मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक आरंभ भेल छलैक, राज स्कूल दरभंगाक स्थापना भेल छलैक। वैह समय छल जहिया मैथिलीकेँ ल' क' ग्रियर्सनक अध्ययन सब प्रकाशित हुअ' लगलै आ एहि ठामक असेढ़ समाजकेँ चकबिदोर लाग' लगलैक जे सात समुद्र पारक अंग्रेज जँ एहि ठामक भाषामे एते सुन्दरता देखै छथि त' एहिमे अवश्य किछु अन्तर्निहित श्रेष्ठता हेतै। आ कमाल देखू जे एही समयक लगधगमे बंगाली विद्वान लोकनि अथा राजकृष्ण मुखोपाध्याय, विद्यापतिक परिपूर्ण अध्ययन-मनन केलाक पछाति सिद्ध केलनि जे ओ बंगाली नहि थिका, मैथिल थिका, मिथिलावासी, मैथिली भाषी थिका। आ दोसर कमाल देखू जे ओही दशकमे कवीश्वर चन्दा झा मिथिला भाषा रामायण लिखलनि जे संस्थाबद्ध ढंगसँ आधुनिक मैथिली साहित्य लेखनक मार्ग खोलि देलक।

1880 इस्वीक एही दशकमे घटल एक आर घटनाक दिस हम अहाँक ध्यान आकृष्ट करय चाहब। ई घटना बंगलाक महान कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ सम्बन्धित अछि। रवि ठाकुर जिनका आगू जा क' ने केवल बंगालक अपितु सौंसे भारतीय उपमहाद्वीपक सबसँ पैघ आधुनिक कवि साबित हेबाक रहनि, तहिया उनैस-बीस बर्खक नौजवान रहथि। कविता आठे बर्खक अवस्थासँ लिख' लागल रहथि आ से प्रकाशितो हुअ' लागल छलनि। से रवि ठाकुर, अद्भुत प्रयोगवादी नवतुरिया कवि, एहि दिनमे एक विचित्र प्रकारक कविता लिखैत रहथि। एहन विचित्र जकरा ओ अपना नामे छपाइयो नहि सकै छलाह। एहि दौरक 22 गोट अपन कविताक संग्रह 'भानुसिंह ठाकुरेर पदावली'क नामसँ 1884मे ओ प्रकाशित करौलनि। भानुसिंह ठाकुर एक छद्मनाम छल, ओ रवि ठाकुर अपनहि छला, से तँ बहुत बादमे तखन जा क' पता चलल जखन ओ बातकेँ खोललनि, ताहि दिनमे तँ ओ यैह कहैत रहला जे भानुसिंह ठाकुर सतरहम शताब्दीक एक सन्त कवि छला जे ब्रजबुलिमे पद लिखलनि आ से पद सब हुनका कतहुसँ परि लगलनि आ तकरा ओ हूबहू छपबा रहल छथि। ओ रवि ठाकुरक पहिल कविता-संग्रह रहनि, जकर पहिल कविता तँ ओ

1877मे जहिया सोलह वर्खक छला, लिखने रहथि। असलमे भेल की रहैक? अक्षयचन्द्र सरकार आ शारदाचरण मित्रक द्वारा संपादित 'प्राचीन काव्यसंग्रह' नामक संकलनमे ओ विद्यापतिक कविता पढ़ने रहथि। स्वाभाविके जे विद्यापति बंगालक प्राचीन कवि मेसँ एक विशिष्ट मानल जाइ छलाह, एकर अछैत जे हुनकर भाषा साहित्यिक वा चलित बंगलासँ बहुत भिन्न छलनि। विद्यापतिकेँ पढ़ि क' ओ तेना भावाविष्ट भेलाह जे आगू चलि क' रवीन्द्रनाथ ठाकुर तँ ओ जेना जे भेला से भेला, तहियो ओ भानुसिंह ठाकुर भ' गेला। प्रसिद्ध भ' गेला।

विद्यापतिक कविताक प्रति तरुण रवि ठाकुरक भावाविष्टताक हम प्रकारता-विवरण प्रस्तुत करी, ताहिसँ नीक जे हुनकर किछु कविते हम सुना दी। ई अनुवाद नहि थिक, ने एको अक्षर बाम-दहीन, बस लिप्यन्तरित टा कएल गेल अछि। संग्रहक पहिल कविता थिक, 'वसंत आओल रे।' कविता ओ एना शुरू करै छथि—

वसंत आओल रे।
मधुकर गुन गुन, अमुआ मंजरी
कानन छाओल रे!
सुन सुन सजनी हृदय प्राण मम
हरखे आकुल भेल,
जर जर रिझसे दुख ज्वाला सब
दूर दूर चलि गेल।
मरमे बहइ वसंत समीरण
मरमे फूलइ फूल
मरमकुंज पर बोलइ कुहु कुहु
अहरह कोकिल कूल।

कहब आवश्यक नहि जे एहि ठाम ओ केवल भाषा आ भास टा विद्यापतिसँ नहि लेलनि अछि अपितु आँखि सेहो ओ विद्यापतियेसँ लेने छथि। लगैत अछि जेना चारि सय बरखक बाद एक बेर फेर विद्यापतिक आँखि वसंतकेँ देखि रहल होइक। 'हृदयक साध मिसाओल हृदये' कवितामे ओ कहै छथि—

हृदयक साध मिसाओल हृदये
कंठे विमलिन माला
बिरहबिखे दहि बहि गेल रयनी
नहि नहि आओल काला।
बुझनु बुझनु सखि विफल विफल सब
विफल ए पीरिति लेहा
विफल रे मझु जीवन यौवन
विफल ए रे मझु देहा।

एक आन भासक कविता 'सजनि सजनि राधिका लो'मे ओ लिखलनि—

सजनि सजनि राधिका लो !
देख आबहु चाहिया,
मृदुल गमन श्याम आवे
मृदुल गान गाहिया।
पिनह झटित कुसुमहार

पिनह नील आंगिया !
सुंदरी सिंदूर दे के
सींउथि करह रांगिया।
सहचरि सब नाच नाच
मिलन गीति गाव रे
चंचल मंजीर राब
कुंजगगन छाव रे।

विद्यापतिक काव्यात्मा कोना रवि ठाकुरमे पुनरुज्जीवन प्राप्त केलक, से गमबा लेल 'साओन गगने घोर घनघटा' कविता देखबाक चाही। ओ लिखै छथि—

सजनी गो
साओन गगने घोर घनघटा
निशीथ यामिनी रे,
कुंजपथे सखि कइसे जायब
अबला कामिनी रे।
उन्मद पवने यमुना तर्जित
घन घन गर्जित मेह,
दमकत विद्युत पथतरु लुंठत
थर थर कंपन देह।
घन घन रिम झिम, रिम झिम रिम झिम
बरखत नीरदपुंज,
घोर गहनघन ताल तमाले
निविड़ तिमिरमय कुंज।
बोल त सजनी, ए दुरुयोगे
कुंजे निरदय कान,
दारुण बंसी काहे बजायत
सकरुण राधा नाम।

कतेक कहल जाय, एतए स्पष्ट देखल जा सकैत अछि जे विद्यापतिक कविताक समस्त लय, समस्त रंग रवीन्द्रनाथक युवा कवितामे ओना उतरि आएल अछि। एतय धरि जे 'हम परिनाम निरासा'कैं सेहो ई नवतुरिया नहि छोड़लनि। 'मरण' शीर्षक कवितामे लिखलनि—

मरण रे, तुंहुँ मम श्याम समान!
मेघवरण तुझ, मेघजटाजुट
रक्त कमलकर, रक्त अधरपुट
ताप-विमोचन करुण कोर तव
मृत्यु अमृत करे दान
तुंहुँ मम श्याम समान।
मरण रे, श्याम तोहारहि नाम!
चिर बिसरल जब निरदय माधव

तुंहुँ न भइलि मम वाम।
आकुल राधा रिझ अति जर जर
झरइ नयन दोउ अनुखन झर झर
तुंहुं मम माधव, तुंहुँ मम दोसर
तुंहुँ मम ताप घुचाउ
मरण रे, आउ तू आउ रे आउ।

अस्तु, रवीन्द्रनाथक कविता सबकेँ एते विस्तारमे जा क' उद्धृत करबाक पाछू हमर उद्देश्य अछि जे उनैसम शताब्दीक अन्तहु धरि आबि क' विद्यापतिक कविता कते प्रखर आक्रामताक संग लोककेँ प्रभावित करै छलै, भावाविष्ट क' दै छलै, तकरा कने खियाल करी। स्वयं रवि ठाकुर भानुसिंह ठाकुरक काल-निर्धारण सतरहम शताब्दी केलनि अछि। एकरा एक साधारण कथन नहि मानबाक चाही। भने रवीन्द्र एखन तइसे बर्खक युवक होथु, मुदा हुनका सौंसे संसारक कविता पढ़ल छनि आ विदेश जाइओ क' बिनु बैरिस्टर बननहि देश घुरबाक मलिनता लेने ठाढ़ छथि। सब खुराफातक जड़ि ई कविते थिक। तेँ, हुनका द्वारा ओहू उमेरमे कएल गेल कोनो निर्णायक कथनकेँ साधारण क' क' नहि बुझबाक चाही। ओ जेँ कहै छथि जे भानुसिंह ठाकुर सतरहम शताब्दीमे भेल छला तेँ एकर आशय बुझबाक चाही जे सतरहम शताब्दी धरि कविता-लेखनक तेँ यैह परिपाटी छलैहे, आधुनिक भारतीय भाषा बंगलाक कविताक सेहो कोनो स्वरूप ठाढ़ नहि भेल छलैक। हमरा लोकनि नीक जकाँ अवगत छी जे सिद्ध साहित्यक उत्तर रचना काल धरि अर्थात तेरहम शताब्दीक अन्त धरि आधुनिक भारतीय भाषामेसँ कोन्हु टा भाषा अपन निर्णायक स्वरूपमे नहि आएल छल। रवीन्द्रनाथ जेँ कल्पित कवि भानुसिंह ठाकुरकेँ सतरहम शताब्दीक कहै छथि तेँ एकर एक तात्पर्य इहो थिक जे सतरहम शताब्दी धरि ई परिपाटी चलनमे बनले छल। एहना स्थितिमे विद्यापति-सन भावाविष्ट क' दै बला लोकसिद्ध कवि, जिनका बारेमे गोविन्द दास बहुत सही-सही बात लिखलनि जे 'जाक गीत जगचीत चोराओल', से विद्यापति पछिला चारि सय बरखसँ, कोन तरहेँ सौंसे पूर्वोत्तरकेँ भाषिक भावाभिव्यंजनक परम आदर्श आ अनन्य प्रेरणास्रोत रहल हेथिन, तकर सहजहि अनुमान कएल जा सकैत अछि।

एहि ठाम हमरा लोकनिकेँ एक इहो बात मोन रखबाक चाही जे आइ जे पूर्वोत्तरक अवस्थान अछि, सैह मध्यकालमे, एतय धरि जे सद्य:पूर्व आधुनिक कालो धरि नहि छल। आब ई एक जानल-मानल तथ्य थिक जे आइ जाहि बाटें गंगा बहि रहल छथि तकर इतिहास सतरहम शताब्दीसँ बेसी पुरान नहि अछि। विद्यापतिक युगमे तेँ संभवत: बिना गंगा पार कयनहु आसाम दिसुका लोक मिथिला आबि सकै छला। इहो तथ्य समक्ष अछि जे कामरूप आ पुण्ड्रवर्धन प्रान्तक सीमा ने केवल सटैत छल अपितु नदी सभक उद्यमवश निरंतर परिवर्त्तनशील रहै छल। संभव जे कहियो पुरैनियाक बगलमे कामरूप प्रान्त विद्यमान हो। आ, मिथिलाक भूगोलक एक विशेषता इहो जे एतय आबिये क' पूर्वोत्तरक लोक लेल दुनियाँक रस्ता खुलैत छल।

विद्यापतिक कवितामे जे अन्तर्निहित श्रेष्ठता छलनि, तकरा परखबाक लेल एकटा निश्छल आ परम संवेदनशील मनक अनिवार्यता छल। ई मन रवीन्द्रनाथकेँ छलनि, पैघ कवि हेबाक दुआरे आ एहि दुआरे तेँ आरो बेसी जे ताहि दिनमे ओ बस किशोरावस्था-तरुणावस्थामे अवस्थित छला। ई मन चैतन्य महाप्रभुमे सेहो छलनि जे भक्तिकेँ प्रेम धरि घीचि आनि सकै छला। ई मन गोविन्द दासमे छलनि, जे स्त्री-पुरुष मैत्रीमे भक्तिक उत्कर्ष देखि सकै छला। मुदा ई कहैत हमरा ग्लानि भ' रहल अछि जे जे मिथिला विद्यापतिकेँ जन्म देलक, सैह हुनका चिन्हबासँ वंचित रहि गेल। मिथिलाकेँ तेँ सब दिन विद्यापतिक कुलगोत्र आश्रय दाता राजा लोकनि आ ईर्ष्यालु पंडित लोकनि सबटा स्मृति छेकने रहलनि आ ओहि अन्तर्निहित श्रेष्ठता दिस कहियो ध्यानो नहि गेल। अपन एक आलेखमे यात्री जी विद्यापतिक एहि श्रेष्ठताक मादे कहै छथि— 'सृष्टिक सर्वोत्तम अवदान थिक मनुष्य, जीवनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल थिक यौवन, रचनात्मक दृष्टिएँ सर्वोपरि स्थायीभाव थिक नर-नारी परस्पर प्रीति। ओहि प्रीतिक अवहेला केनिहार कवि किंवा दार्शनिक अगबे पाथर थिकाह। सितुआक आँखि आ मोमक नाक नहि काज औतनि ककरो, काव्यात्मा विद्यापतिकेँ चिन्हबा ले चाही भावप्रवण मानवीयता, सहानुभूतिक परम आकुलता, नर-नारीक

पारस्परिक सद्भावना दिस अखंड आस्था। तथाकथित नक्कू उपाध्याय वा अति उग्र वामपंथी यदि क्यो कतहु बाजि उठथि जे विद्यापति रहथि घोर शृंगारी कवि, विकट वासनामय गीतकार तँ ताहि प्रणम्य देवताकेँ वायुविकारग्रस्त बूझि लेबाक थिक। परस्पर अनुरक्त नर-नारी केर मनोदशाक ई चित्रकार संसार भरिमे अद्वितीय छथि। प्रासादिक भावगांभीर्य, अभिनव व्यंजनशक्ति, मर्मस्पर्शी उक्तिविन्यास, चमत्कारपूर्ण शब्दशिल्प— एहि सभ गुणसँ मैथिलीक काव्य भंडारकेँ विद्यापति एसगरे तते ने भरि गेल छथि जे आन-आन भाखावलाकेँ आइयो इर्खा होइ छै।'

एहि ठाम हम विद्यापतिक कविताक सम्बन्धमे किछु आरो बात जोड़ए चाहब। विद्यापतिसँ पूर्वक मैथिली कविता छल, जेना सिद्ध साहित्य, तकरा परिप्रेक्ष्यमे विद्यापतिक कविता की छल? ओ ओहि पूर्वक कविताक परिष्कार छल आ कि ओकरा प्रति विद्रोह छल? कैक गोट दिग्गजो लोकनि मानै छथि जे ओ ओकर परिष्कार छल। मुदा, हम जतबा बूझि पबै छी, हमरा लगैत अछि जे नहि, ओ परिष्कार नहि छल विद्रोह छल। सिद्ध साहित्य छल व्यक्तिवादी, व्यक्तिनिष्ठ कविता, जखन कि विद्यापति लोकमंगल, लोकसंग्रह आ जीवन-रागक कवि छला। विद्यापतिक कविता उच्च मानदंडक शुद्ध कविता छल, जाहिमे कोनो कवितेतर आशय निहित नहि रहै। ध्यान देल जाय जे कबीरमे कवितेतर आशय छनि, तुलसीदासमे छनि, मुदा विद्यापतिमे नहि ओ शुद्ध कविता छल। शुद्ध कविताक अपन एक स्वभाव होइ छै जे ओ अपन पाठककेँ संपूर्ण स्वतंत्रता दै छै जे ओ कविता द्वारा स्वयंकेँ अपने इच्छा अनुसार उदात्तीकृत करय। ई उदात्तीकरण अलग-अलग पाठकक संग अलग-अलग तल पर घटित भ' सकै छै। एक्के कवितासँ चैतन्य दिव्य भावदशामे मूर्च्छित भ' सकै छथि तँ दोसर दिस युवा रवि ठाकुर स्त्री-पुरुषक सनातन मैत्री-तत्त्व पर लहालोट भ' सकै छथि। एक्कहि ठाम राग अछि तँ विराग सेहो अछि। ई विद्यापतिक कविताक मौलिक विशेषता छनि।

मुदा, पूर्वोत्तरक लेल मध्यकालमे एसगरे एक विद्यापति प्रेरणास्रोत होथि, सेहो बात नहि अछि। असल मे, हमरा लोकनिकेँ मोन रखबाक चाही जे आधुनिक भारतीय भाषा सभक विकाससँ पहिने रचनात्मक भाषाक जे मानक रहै, से सर्वभारतीय छल। अर्थात सब ठाम एक्के भाषा-वितानकेँ प्रयुक्त कएल जाइत छल, किछु मोट-मोट वर्गीकरणक संग। ई जे आदर्श छल से सर्वभारतीय छल। तकर अपन विकसित शास्त्रीयता छलै। हमरा लोकनिकेँ इहो मोन रखबाक चाही जे मिथिला जे प्रेरणास्रोत छल पूर्वोत्तरक वा आनोक, तकर मुख्य क्षेत्र शास्त्रीयते छल, लोकानुवाद नहि। पहिने मिथिला वेदान्तक भूमि छल मुदा बादमे जखन एक बेहतर वेदान्त ल' क' बौद्ध दार्शनिक लोकनि उपस्थित भेला तँ बौद्धकेँ कोनहुना पराजिते करब मिथिलाक लक्ष्य बनि गेल। एहिमे वेदान्त कोनो काज नहि आबि सकैत छल तँ मिथिला नव्य न्यायकेँ विकसित केलक। मध्यकालक अधिकांश कालखंडमे हमरा लोकनि मिथिलाकेँ नव्य न्यायक पुरोधा बनल देखैत छिऐक। यैह प्रमुख शास्त्र छल जकरा कारणेँ पूर्वोत्तर मिथिलाक नेतृत्व गछलक। बौद्ध लोकनि जखन भारतवर्षसँ निर्मूल भ' गेला तँ मिथिला अपन सनातन धर्मकेँ मजगूत करैमे अपन प्रतिभा झोंकलक। निबन्धग्रन्थक रूपमे ढेरो रास धर्मशास्त्र लिखल गेल। आब एहि धर्मशास्त्रक बदौलत मिथिलाक हाथमे नेतृत्व पूर्ववते बनल रहलैक। पूर्वोत्तरक प्रेरणास्रोत छल मिथिला अपन सर्वभारतीय शास्त्रीयताक कारण। ताहिमे मिथिलाक दूटा विशेषता। एक तँ सर्वभारतीय आदर्शक निर्माता दोसर तकर बेजोड़ प्रबंधक। ओहुना इतिहास दिस ताकल जाय तँ हमरा लोकनि देखब जे सर्वभारतीय आदर्शक पाछू अपन निजता, अपन जातीयता, अपन राष्ट्रीयताकेँ तिलांजलि द' देबामे मिथिला सब दिनसँ बहादुर रहल अछि।

मुदा, जहाँ धरि पूर्वोत्तरक आधुनिक भाषा साहित्यकेँ प्रेरणा प्रदान करबाक प्रश्न छै, हमरा लोकनिकेँ एहि कटु सत्यकेँ स्वीकार करबाक लेल तैयार रहबाक चाही जे प्रेरणा प्रदान करबाक ई श्रेय मिथिलाक शास्त्रीयतासँ बेसी एकर लौकिकता अर्थात सृजनात्मक साहित्यकेँ छैक। सतत परिवर्तनशील समयक कोन चरणमे आबि क' कोन गुण सर्वाधिक उपादेय भ' उठतैक, ई विषय गहन अछि आ कतेको कतेक सामाजार्थिक आदि कारक पर निर्भर करैत अछि। जे मिथिला अपन शास्त्रीय आदर्श लेल प्रशस्त छल सैह मिथिला अपन विद्याविनोदी जनता आ कलाप्रेमी सामंत लेल सेहो प्रशस्त छल। ई बात भिन्न जे एहन विराट व्यक्तित्व बला सामंत एतए नदारद रहला, जे अपन भू-भागकेँ अखिल देशमे, अखिल विश्वमे देदीप्यमान क' देथि, मुदा विद्याविनोदी जनता बहुत हद धरि अपन परंपराकेँ राजा द्वारा संरक्षित होइत देखि सकै छल, यद्यपि

कि एकर अपन स्पष्ट सीमा छलै। एही सब कारणसँ मिथिलाक संगीत, मिथिलाक नाटक आ मिथिलाक फकड़ा अपन स्पष्ट पहचान आ परंपरा बना लेलक। मिथिलाक संगीत आ तकर 'बोल' तकर गीत सेहो, पर अनेक सुयोग्य विद्वान लोकनि लिखि चुकल छथि, नाटक पर सेहो पर्याप्त लिखल गेल अछि आ 'फकड़ा' पर डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण बहुत सार्थक तरीकासँ लिखलनि अछि। बुझले बात अछि। इहो बात सब गोटे जनै छी जे पूर्वोत्तरसँ जे विद्यार्थी लोकनि एतए पढ़ै लेल आबथि, से अपन शास्त्र ज्ञानक संग-संग एहि ठामक गीत, एतुक्का नाटक आ फकड़ा सभक संकलन पांडुलिपि बना बना क' लिखि ल' जाइ छला। स्वाभाविक अछि जे एहि तरहसँ मिथिलाक शास्त्र आ मिथिलाक संस्कृति, मिथिलाक साहित्य पूर्वोत्तर पहुँचै छल। आगाँ तँ हमरा लोकनि इहो देखै छी जे मिथिलाक कतेको सुप्रसिद्ध ग्रन्थक पांडुलिपि सेहो एम्हर घरमे नहि बचि सकल, नदीमातृक प्रदेश हेबाक कारण आ लोकक असेढ़पनक कारण सेहो, बाहर एकर प्रति पाओल गेल— पूर्वोत्तरक भाषा-क्षेत्रमे। हमर तँ आकलन अछि जे ज्योतिरीश्वरक संदर्भ ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' केवल मिथिलाक लेल नहि लिखल गेल छल, एकर टारगेट पाठक विशाल छल। दाबी तँ ओकर सर्वभारतीय हेबाक रहै, मुदा पूर्वोत्तरमे तँ ओ अवश्ये अंगीकृत कएल गेल। तकर कैकटा प्रमाण सब ताकल जा सकैए।

ज्योतिरीश्वरक कि विद्यापतिक समय एकटा एहन युग छल, जाहि युगक सर्जककेँ अपना लेल नब भाषा चुनबाक बेगतरता रहै। पुरान भाषा नव सर्जन लेल ठठि नहि पाबि रहल छल, एक। दोसर जे अपना युगक आदर्शकेँ अपना भाषामे सर्जन क' सकय, तकर प्रेरणा। विद्यापति एहिमे सबसँ अधिक भाग्यशाली छला। ओ सृजनक साहित्य लिखलनि। स्त्री-पुरुष-मैत्रीक साहित्य अपन स्वभावेसँ सृजनात्मक साहित्य थिक। ओ सृजनक साहित्य लिखलनि, आ प्रेरणा सेहो जगौलनि जे अपना युगक आदर्श अहूँ अपना तरहेँ, अपन भाखामे सृजन करू। सृजनक साहित्य द्वारा सृजनक प्रेरणा!

एहि लेखक आरंभमे हम रवीन्द्रनाथ ठाकुरक भावाविष्ट हेबाक चर्चा केने छी। एहि भावाविष्टताक बहुत अर्थ अछि। ओ कविताक दुनियाँमे प्रवेश क' रहला अछि, आगू चलि क' हुनका गुरुदेव आ कवीन्द्र रवीन्द्र आदि हेबाक छनि। मुदा, एखन जखन ओ कविताक सागरमे उतरै छथि तँ विद्यापतिक नाह पर सवार भ' क' उतरै छथि। आ, सेहो कृतज्ञता कत भारी, जे अपन परिचय बरु नुका लै छथि, भानुसिंह बनि जाइ छथि, मुदा विद्यापतिक लौ केँ कतहु कनी मद्धिमो नहि हुअ' देलखिन अछि— हुनकर भाषा-भंगिमा धरिकेँ अपन कवितामे उतारि लेलखिन अछि। विद्यापतिक एक कविक रूपमे, एहिसँ आओर पैघ सार्थकता की भ' सकै छनि! अही बातकेँ अहुना कहल जा सकै छै जे विद्यापति अपन भाषाक अतिक्रमण क' देलनि, तते यशस्वी भेला। ओ अपन अन्तर्निहित श्रेष्ठताक कारण 'रसिकजन' (विद्यापतियेक शब्दमे) धरि पहुँचि सकला। भाषा एहिमे बन्धन नहि बनल। ओ आनो ठामक युवा कविक प्रेरणापुंज बनि क' ठाढ़ भेला।

अस्तु। रवीन्द्रनाथक दृष्टान्त तँ बहुत उत्तरवर्ती थिक। कहल जाय जे अंतिम थिक। मुदा, एहि दृष्टान्तसँ हमरा लोकनि अनुमान क' सकै छी जे पूर्वोत्तरक सर्जक-प्रतिभाकेँ मिथिला कोन तरहेँ प्रभावित केने छलनि। एहन दर्जनो लोक अलग-अलग कालखंडमे भेला, स्त्री कविसँ ल' क' मुसलमान कवि धरि, जिनकर नाह मिथिलाक साहित्य बनल हएत। पाँच सौसँ ऊपर कविक तँ सुस्पष्ट साक्ष्य(मने कविता) सेहो भेटैत छनि। हँ, एकटा चीज धरि बहुत अलच्छ भेल। विद्यापतिक प्रेरणासँ ओम्हर बंगालमे कि आसाममे सेकंड लाइन, थर्ड लाइन बनल। मुदा सैह चीज मिथिलामे नहि भ' सकल। विद्यापतिक एक-दू पीढ़ीक बादे भक्ति आन्दोलनक देशव्यापी लहर चलल छल। ई आन्दोलन शास्त्रीयताक विरुद्ध लौकिकताक प्रतिष्ठापन रहैक। एहन कोनो आन्दोलनकेँ मिथिला मिस केलक। तकर कारण सब पर बात जँ नहिओ, करब मुदा तकर परिणाम तँ उपस्थिते अछि।

एहि तरहेँ एकटा बात इहो कहल जा सकै छै जे उत्तर मध्यकालक जे शास्त्रीयताक आदर्श छलै, सेह मिथिलाक आगामी युवक सेहो प्रेरणास्रोत बनल रहि गेल। अहाँ दोसरक लेल तँ प्रेरणास्रोत भ' सकै छी, मुदा स्वयं अपना किछु तेहन अकल्पनीय नहि क' सकै छी, गोबर गिजैत रहि जा सकै छी— किछु तेहने सन!

मिथिलाक विभूति रोहिणीदत्त गोसाञि एवं हुनक कृति

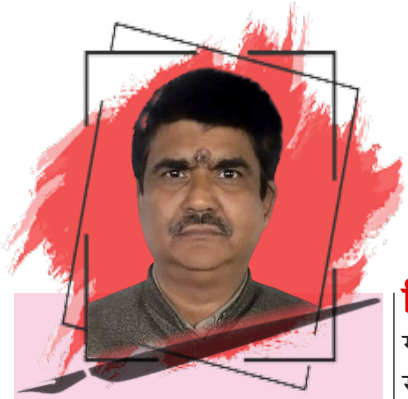

भवनाथ झा

सम्पर्क : पटना, (बिहार)
मोबाइल : +91 9430676240

मिथिलाक ज्ञान-परम्परामे धर्मशास्त्र आ कर्मकाण्डक विद्वान आ गंभीर शोधकर्ता भवनाथ झाक जन्म 1968 ई.मे बिहारक मधुबनी जिलाक हटाढ़ रुपौली गाममे भेल छलनि। संस्कृतमे स्नातकोत्तर भवनाथ झा प्राच्यविद् आ पाण्डुलिपि विशेषज्ञ छथि जिनका संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीमे कतेको शोध कृतिक श्रेय देल जाइत छनि। अपन उत्कृष्ट शैक्षणिक कृतिक लेल प्रशंसा पओने छथि जाहिमे अनुवाद आ पाण्डुलिपिसँ ग्रन्थक सम्पादन सेहो शामिल अछि। हिनक किछु प्रकाशित ग्रन्थ अछि- 'बुद्धिचरितम्', 'भ्रूण-पञ्चाशिका', 'घुरि आऊ कमला' (मैथिली कथा), 'कदमों के निशान' (मैथिलीसँ हिन्दी), 'यक्षसमागम', 'अगस्त्य-संहिता', 'दुर्गासप्तशती', म.म. रुद्रधर कृत 'पुष्पमाला', 'नाम्निदत्तपंचविंशतिका' रुचिपति व्याख्या, म.म. पक्षधरक 'व्यवहार-रत्नावली', ललितेश्वर सिंहक 'मैथिलभक्तिप्रकाश', मदन उपाध्यायक 'मांसपीयूषलता', 'माँटी की सुगन्धि', महाराज रमेश्वर सिंहक 'मैथिल विवाह' (अंगरेजीसँ हिन्दी) आदि। सम्प्रति महावीर मन्दिरक शोधपत्रिका 'धर्मायण'क सम्पादक छथि।

बिहार राज्यक मिथिलामे दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे रोहिणीदत्त गोसाँइ मानक सिद्ध पुरुष एवं सिद्ध कवि 18म शताब्दीमे भेल रहथि। हिनका सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे ई केवल संस्कृत भाषा बाजथि। हुनक संस्कृत भाषा एहन होइत छल जे सभ केओ अर्थ बूझि जाइत छलाह। ई कृष्णविषयक एक काव्य बनओने रहथि से इतिहासकारलोकनि लिखैत छथि। मुदा हुनक रचना अद्यावधि अप्रकाशित अछि।

म.म परमेश्वर झाक 'मिथिलातत्त्वविमर्श'मे रोहिणीदत्त गोसाञिकेँ खौआड़े नाहस मूलक मानल गेल अछि आ हुनका छत्रसिंहक कालमे वयोवृद्ध व्यक्तिक रूपमे सूचित कएल गेल अछि। (1949ई.क संस्करण, उत्तरार्द्ध पृ. 72-73) म.म. परमेश्वर झा लैखैत छथि—

"तथा ओही तरौनी ग्राम मे खौपाड़े नाहस मूलक महात्मा रोहिणीदत्त(झा) गोसाञि (भक्तश्रेष्ठ वैष्णव) रहथि। ओ सिद्धपुरुष छलाह। जकरा जे वाक्य देथीन्ह से अवश्य फलित होइक। उदाहरण अनेक रहितहु विस्तरक हेतु नहि लिखल। एक बेरि महाराज छत्रसिंह बहादुर कोनो कार्यवश ओहि प्रान्त गेल रहथि, तखन तरौनी गामक एक गाछी में डेरा पड़लैन्ह। इच्छा भेलैन्ह जे महात्माक दर्शन हो, परन्तु गोसाञिजी अत्यन्त वृद्ध छलाह तें कुटीसँ अन्यत्र नहि जाय सकलाह, और कोनो गामक मध्यभागमे दलबल सहित ककरहु ओहिठाम जायब प्राय: महाराज साहेबहु के उचित नहि बुझि पड़ल होएतैन्ह तें साक्षात्कार भेट नहि भेलैन्ह परन्तु कर्मचारिद्वारा उत्तर प्रत्युत्तर भेला सँ दूनू गोटे परस्पर परमप्रसन्न भेलाह। गोसाञिजीक धैर्य तथा निर्लोभतासँ परितुष्ट भय महाराज साहेब चल क बेरि कुटीक खर्च चलैक हेतु किच्छु भूमि क सनद लिखि पठाय देलथीन्ह तथा अन्नसत्र (सदावर्त) चलैक हेतु वर्ष में एक दुइ बेरि गाड़ी ओ वड़द पर लदबाय किच्छ अन्नो दडिभंगा भंडारसँ पठाय देल जाइन्ह। ओ (गोसाञि) संस्कृत भाषा मात्र बाजथि।

परन्तु चमत्कार ई जे हुनक संस्कृत वाक्यक प्राशय विद्वान् सँ मूर्ख पर्यन्त बूझि सकथि। चरम अवस्थामे प्रो काशीवास कयलन्हि। जखन मृत्युक समय सन्निहित भेलैन्ह तखन एक दिन संकल्प कयलन्हि जे पूर्वजन्मक वा एहिजन्मक प्रत्यवाय सभ एही देहें भुक्त भय जाय। तदुत्तर हुनका शरीरमे अनेक व्रण भय गेलैन्ह।

जकर तीव्र वेदना असह्य होइन्ह, परन्तु ईश्वरक कृपासँ एक सप्ताहक बाद क्रमश: सभ निवृत्त भय गेलैन्ह, आओर किच्छ समय उत्तर मणिकर्णिका क्षेत्रपर परम पद लाभ कयलन्हि।"

रोहिणी दत्त गोसाँञिक एक श्लोक हमर अपन घरमे भेटल। हमर पिता पं. अमरनाथ झाक ज्येष्ठ भ्राता पं. ललितनाथ झा न्यायशास्त्रक विद्वान् रहथि। प्राचीन कालक प्रचलन छल जे पण्डित लोकनि एकटा पुस्तिका बनाए राखथि आ कतहु किनको मुँहें जँ उत्कृष्ट श्लोक सुनथि तँ ओकरा ओह पुस्तिकामे टीपि लेथि। ई सामान्यरूपसँ सुभाषित संग्रह कहबैत छल। हुनक हाथक लिखल एहने 'सुभाषित संग्रह'मे गोसाँञिजीक एक श्लोक प्राप्त भेल—

आयाहि हृदयारण्यमसन्मतिकरेणुके।
आयाति याति गोविन्दभक्तिकण्ठीरवी यत:॥

एकर सामान्य अर्थ अछि जे हे दुर्बुद्धि रूपी हथिनी अहाँ हमर हृदय रूपी वनमे आउ किएक तँ एतय श्रीकृष्णक भक्तिरूपी सिंहनी आएल-गेल करैए। एहि ठाम शब्दार्थमे विपरीत बात कहल गेल गेल। दुर्बुद्धि रूपी हथिनीकेँ नोंतब विपरीत कथन थीक मुदा व्यङ्ग्यार्थ अछि जे हे दुर्बुद्धि रूपी हथिनी अहाँ कहियो हमर हृदयमे नै आउ एतए भक्ति रूपी सिंहनी सदिखन वास करैए से कहब तँ दम्भ होएत मुदा कखनहुँ ओ आबि जाइछ। तखनि अहाँक विनाश अवश्य होएत तँ कहियो नै आउ। ई उत्तम काव्यक उदाहरण थीक।

संयोगवश 2014 ई. के अगस्त मासमे हिन्दी एवं मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार श्री बुद्धिनाथ मिश्र दूरभाष पर हमारासँ सम्पर्क कए कहलनि जे देहरादूनमे एक मैथिल सज्जनक घरमे पर्याप्त मात्रामे पाण्डुलिपि अछि। हुनक इच्छा छनि जे केओ पाण्डुलिपि-विशेषज्ञ आबि एकर विवरणी तैयार कए देथि जाहिसँ ई बूझल जा सकए जे कोन-कोन ग्रन्थक ई पाण्डुलिपि थीक। हम जाएब गछि लेल।

ओतए पहुँचलाक बाद पता लागल जे वर्तमान बेगूसराय जिलाक बरौनी ड्यौढ़ी गामक विद्वान् हरिअम्बे बलिराजपुर मूलक श्री रतिनाथ मिश्र महोदय एतए रहैत छथि। ओ राजकीय आयुर्वेद विद्यालय नागपुरक अवकाशप्राप्त प्राचार्य छथि। हिनक पूर्वज रानीटोलसँ आबि एतए बसि गेल छलाह। हुनक पुत्री श्रीमती प्रियंवदा अय्यर ओतए दबाइ बनएबाक एकटा कम्पनी खोलने छथि। ओ लोकनि हालहिमे अपन गाम गेल रहथि तँ गाममे हिनक हिस्साक एकटा पुस्तैनी संदूक बाहरमे राखल छल। ई लोकनि संदूक सहित सभटा पाण्डुलिपि देहरादून आनि लेलनि आ तखनि ओकर संरक्षण आ विवरणीक लेल प्रयत्नशाल छलाह।

हम एक सप्ताह हुनक सत्कारपूर्ण आतिथ्यमे रहि सभटा पाण्डुलिपिकेँ छाँटि व्यवस्थित कएल तँ कुल 285 पाण्डुलिपिक सूची बनल। सभटाक संक्षिप्त विवरण बनाए पाण्डुलिपि संख्या दए हम व्यवस्थित कएल। एहि क्रममे किछु महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि सेहो भेटल जे ओहि समयक हमर ज्ञानक अनुसार अप्रकाशित छल—

भागवत-व्याख्या	
विजयध्वज तीर्थ ब्रजभाषाकाव्य	*अज्ञात*
पलपीयूषलता (पूर्ण), शुद्धिचिन्तामणि (अपूर्ण)	*मदन उपाध्याय*
भूषणसारतत्त्वविवृति	*रुद्रनाथमिश्र*
हरिभक्तिदीपिका-द्वारकामाहात्म्यवाक्यानि	*गणेशमिश्र*
प्रशस्तिश्लोक, कृष्णलीला आदि 4 काव्य	*रोहिणीदत्त गोसाँई*
भगवद्भक्तिमाहात्म्य (भक्तमाल) वैष्णवखण्ड	*मैथिल चन्द्रदत्त ओझा*
प्रायश्चित्त-निरूपण	*भवदेव*
काष्टौषधि-निर्माणविधि, अनुभूत-प्रयोग(मैथिली)	*अज्ञात*

कूपजलाशयोत्सर्गविधि	*धर्मकर शर्मा*
अज्ञात चम्पूकाव्य	*केशवभट्ट*
नलोदयकाव्य	*कालिदासमिश्र*
गीत-संग्रह	*अज्ञात (कैथीलिपि)*

पटना आबि हम हुनकासँ आग्रह कएल जे रोहिणीदत्त गोसाँइक लिखल जे 21 पत्रक पाण्डुलिपि छनि, जकरा हम बंडल संख्या 4मे 79म पाण्डुलिपिक रूपमे व्यवस्थित कएने छी से अति महत्त्वपूर्ण अछि। एकर फोटोग्राफी कए पठाओल जाए जाहिसँ ओकर सम्पादन आ प्रकाशन सम्भव हो। श्रीमती प्रियंवदा अय्यर ओकर एक पत्रक फोटो लए हमरा नमूना लेल पठाओल आ हम ओकरा देखि एही पाण्डुलिपिक फोटो लेबाक सूचना हुनका दए देल। ओकर प्रतीक्षामे एखनि धरि छी।

बादमे श्रीमान् रतिकान्त बाबूसँ गप्प भेल तँ ओ 'भगवद्भक्तिमाहात्म्य'क पाण्डुलिपि सम्पूर्ण फोटो प्रति कराए हमरा लेल पटना नेने अएलाह। ताबत सूचना भेटल जे ई ग्रन्थ बाबूराम सक्सेनाक सम्पादनमे राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानसँ प्रकाशित भए चुकल अछि। तैं ओहि पर काज करब व्यर्थ छल। जँ रोहिणीदत्त गोसाँइक ओ 21 पत्र आएल रहैत तँ एखनि धरि सम्पादित भए गेल रहैत।

रोहिणीदत्त गोसाँइक एक कृतिमे हुनक चारि लघुकाव्य अछि। एहि पाण्डुलिपिक लिपिकार यज्ञदत्तमिश्र छथि। 19म शतीक उत्तरार्द्ध मे ई लिपिकार भेल रहथि से हुनक लिखल आन पाण्डुलिपिसँ ज्ञात होइत अछि।

अस्तु, हमरा लग हुनक पठाओल एक पत्रक छायाप्रति सुरक्षित अछि आ ओकरा आधार पर ई आलेख प्रस्तुत अछि।

अथ रोहिणीदत्तविरचिताश्लोकनिर्म्मिति:
ताराक स्तुति—

वितरतितरान्तारा तारापतिप्रभसद्यशो
गुणसमुदयोदारान् दारान् पतिव्रततत्परान्।
सनयविनयान् पुत्रान् सुत्रामतोप्यधिकां श्रियं
सुकृतसहितां भुक्तिं मुक्तिञ्जनेषु चतुर्विधाम्॥ 1॥

देवी तारा चन्द्रमाक समान सुन्दर यश, पतिव्रता आ अनेक गुणसँ भरल पत्नी, विनयशील पुत्र, इन्द्रहुसँ अधिक ऐश्वर्य आ सुकर्मक संग भोग आ मोक्ष तथा चारू पुरुषार्थ लोककेँ दैत छथि।
चित्रा चित्रावृष्टीरातनुते तन्न चित्रमिह।

यन्नामैव हि चित्रा चित्राचरणन्न चित्रमिव तस्या:॥

चित्रा नक्षत्र चितिर-बितिर बरसैए, एहिमे कोन आश्चर्य? जे देवी नामहिसँ चित्रा छथि अर्थात् की हुनक चरित अनेक प्रकारक नै होएत ? सुभाषित—

श्रीकृष्णाय नम:।
परवधं समभीप्सति योऽधम: शमनमीक्षितुमिच्छति स ध्रुवम्।
स इह कंस उदाह्रियते खल: स किल किल्विषवाँश्च सुयोधन:॥ 3॥

जे अधम लोक अनकर वध चाहैत अछि ओ निश्चय अनकर विनाश देखए चाहैत अछि। ओएह एहि संसारमे दुष्ट कंस आ पापी सुयोधनक रूप मे उदाहरण जकाँ जानल जाइत अछि। कालीक स्तुति—

हरप्रदोषनर्तने प्रकृष्टपाणितालिका
निशुम्भशुम्भदम्भपूर्णकुम्भतूर्णचालिका।
प्रचण्डचण्डमुण्डमुण्डखण्डने विशालिका
प्रसूनशालिवानिका हिमाद्रिराजबालिका॥ 4॥

महादेव जखनि सन्ध्याकाल नृत्य करैत छथि तँ ओहि कालमे जे झालि बनि जाइत छथि, निशुम्भ आ शुम्भक अहंकारपूर्ण घैल कें शीघ्रतासँ नचबैत छथि, भयंकर चण्ड आ मुण्डक शिर कटबाक काल जे विशाल रूप धारण करैत छथि ओ हिमालयक पुत्री गौरी फुलवारीमे आ धानक खेतमे घुमैत छथि।

सदालिपालिपालिका नृमुण्डपाणिमालिका
वितीर्णवित्तशालिकाखिलीकृतारिणालिका॥
यशःसुशीलशालिकार्द्धचन्द्रशोभिभालिका
विखण्डितारिजालिका जगन्ति पातु कालिका॥5॥

हरदम अलिपा अर्थात् सुरा पीने रहैत छथि किन्तु अलि अर्थात् भ्रमरक पक्षा करैत छथि। ओ नरमुण्ड आ हाथक माला पहिरैत छथि, हुनक धन चारू कात पसरल अछि। ओ सबटा शत्रुकें नार-पुआर बना दैत छथि, ओ यश वाली तथा सुन्दर स्वभाव वाली माथ पर अर्द्धचन्द्र धारण कएने छथि, ओ शत्रुक जाल कें फाड़ि देनिहारि छथि एहन जे काली छथि, ओ संसारक पालन करथु। सुभाषित—

अन्त्ययुग्मकम्
सन्तो वहन्ति सन्तोषं संतोष्य स्वान् परानपि।
एतदेव सतां सन्त्वं श्रुतिस्मृतिभिरीर्यते॥6॥

ई अन्त्ययुग्मक अछि—

सन्त लोक अपन आ आनो लोककेँ संतुष्ट करैत संतोष धारण करैत छथि। इएह सन्तक सज्जनता थीक जे वेद आ श्रुतिमे कहल गेल अछि।

अने ना एवाच्युतेनाप्यनेनाङ्कीकृतो यदि
कृतैनाश्शक्यते केनाङ्गीकर्तुं हरिणा विना॥7॥

श्रीकृष्णाय नमः।

संसार रूपी गाड़ी पर मनुक्खे एहि अच्युत भगवानक द्वारा जँ पकड़ल नै जाएत तँ जे पाप कएने अछि ओ सभ भगवान् विष्णुक अतिरिक्त ककरा द्वारा स्वीकार कएल जाएल जाएत?

हमरा जतेक अंश पठओलनि से एतहि समाप्त भए जाइत अछि। आवश्यकता अछि जे एकर आगाँ ओतएसँ अथवा कतहुसँ पाण्डुलिपि भेटत तँ रोहिणीदत्त गोसाञिक एहन सुन्दर ध्वनिप्रधान काव्य हमरालोकनिक सोझाँ आबि सकत।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल
इमेल : dhipre@gmail.com

नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक प्राज्ञ-परिषद् सदस्य, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक प्राज्ञसभा सदस्य आ संस्कृति मन्त्रालय अन्तर्गतक अभौतिक सांस्कृतिक सम्पदा परिषदक विज्ञ सदस्यक भूमिका निर्वाह क' चुकल प्रेमर्षि साहित्य, सङ्गीत आ कलाक त्रिवेणीक रूपमे जानल जाइत छथि। अनेको पत्रपत्रिकाक सम्पादन कएने छथि। हिनक रेडियो कान्तिपुरमे बाइस वर्षसँ सञ्चालन करैत आएल 'हेल्लो मिथिला' कार्यक्रम साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जागरणक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। नेपाल टेलिभिजनमे सञ्चालित 'चौबटिया'(मैथिली) आ जनता टेलिभिजनमे सञ्चालित 'वाह, क्या राम्रो'(नेपाली) साहित्यिक कार्यक्रम सेहो उल्लेख्य छनि। प्रेमर्षिजीक मैथिलीमे 'कोन सुर सजाबी ?' (गीत-सङ्ग्रह) तथा नेपालीमे 'समयलाई सलाम'(गजल-सङ्ग्रह) प्रकाशित छनि। दर्जनभरि अनूदित एवं सम्पादित कृति तथा दर्जनसँ बेसी साङ्गीतिक एल्बमसभ प्रकाशित छनि। अटल मिथिला सम्मान, शुक्ला साहित्य पुरस्कार, यात्री-नागार्जुन सम्मान, जीवनकाल उपलब्धि सम्मान, भैरव प्रतिभा पुरस्कार, लोकतान्त्रिक स्रष्टा सम्मान, राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार, भानु पदकसहित नेपाल, भारत आ यूएईसँ दू दर्जनसँ बेसी सम्मान आ पुरस्कारसँ अलंकृत छथि।

सांस्कृतिक गौरवक मुहथरि खोलैत...

साहित्य-कला माने खालि साहित्य वा कला कहल जाएवला वा बुझल जाएवला सामग्री नहि; ई लोकक लेल, समाजक लेल, सृष्टिक लेल होएबाक चाही। वस्तुत: जाहि साहित्य-कलामे एहन समार्थ्य होइक उएटा सार्वजनीन, सर्वस्वीकृत आ चिरस्थायी भ' सकैत अछि। एहन विशिष्ट सांस्कृतिक आ सृजनात्मक संयन्त्रक माध्यमेँ समाजकेँ जोड़बाक वा उन्नत बनएबाक गप्प केलासँ मात्र सेहो किछु नहि होइत छैक, जोड़बाक काजे करब आवश्यक छैक। राज्यपोषित निकायसँ भेनिहार क्रियाकलापमे तँ एहन पक्षक उपस्थिति आओर अनिवार्य होएबाक चाही। एहि बातक सुन्दर दिग्दर्शन होइत अछि मल्लकालीन साहित्यमे, जे तीन शताब्दी पहिनेधरि नेपाल उपत्यकामे सिंहासनारूढ मल्ल राजालोकनि स्वयं रचना कएने छलाह वा आश्रित विद्वानसभसँ करबौने छलाह। खास क' जन-मन-रञ्जनक लेल कएल जाएवला साहित्यिक सृजन वा साङ्गीतिक गतिविधिमे मल्ल राजासभ तत्कालीन समाजकेँ एकताबद्ध करबाक लेल बहुभाषिक सूत्रक सदुपयोग कएने छलाह।

तत्कालीन अधिकांश नाट्यकृतिसभमे संस्कृत, मैथिली आ नेवारीसहित अन्यान्य भाषासभक सुन्दर समन्वय एवं सहकार्य पाओल जाइत अछि। तत्सम्बन्धी अध्येता/अनुसन्धातासभक मोताबिक अधिकांश कृतिसभमे लिपि नेवारी, संवादक भाषा मैथिली आ मञ्चनिर्देश तथा शास्त्रीय पक्षसभ संस्कृतमे रहल करैत छल। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओहि समयक सर्जकलोकनि अपन सृजनकर्मक अभीष्ट सरिपहुँ 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'केँ मानैत छलाह आ ओकर परिपूर्तिक लेल स्वयं सेहो विविध भाषामे दक्षता रखैत रचनाशील रहल करैत छलाह। एहि विषयकेँ बेस मेँही ढङ्गसँ विश्लेषण करैत उजागर कएलक अछि– "मध्ययुगीन मैथिली नाट्य र गीति कृतिहरूको भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण" शीर्षकसँ नेपाली भाषामे प्रकाशित सद्य: प्रकाशित अनुसन्धानमूलक कृति। नेपाली भाषामे रहितो ई पोथी सम्पूर्ण मैथिली भाषी, जिनकासभकेँ नेपाली भाषामे आवश्यक ज्ञान नहियोँ छनि, तिनकोसभक लेल सहज आ बोधगम्य रूपमे आएल अछि। एहि पोथीक अतिरिक्त आ मुख्य विशेषता ई अछि जे जाहि भूगोलमे एकर रचना भेल ओहिठाम रहनिहार आजुक लोक एकर महत्त्व आ वैशिष्ट्यकेँ बुझि सकैत अछि।

मल्लकालमे गीत-सङ्गीत एवं नाट्यकृतिसभक रचना तथा प्रदर्शन सम्बन्धी क्रियाकलापसभसँ तत्कालीन नेपाल उपत्यकामे पड़ल प्रभाव आ ओहिसँ प्राप्त उत्कर्ष द' नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक शास्त्रीय तथा परम्परागत सङ्गीत विभागक योजनामे एहि पोथीक लेखन अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर ख्यातिप्राप्त भाषाविद प्रोफेसर डॉ. रामावतार यादव कएने छथि। भाषावैज्ञानिक अनुसन्धानक क्षेत्रमे डॉ. यादवद्वारा राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय स्वरूपक अनेक उल्लेख्य कार्यसभक सम्पादन भ' चुकल अछि। एहन वरेण्य विद्वान/अनुसन्धाताक ज्ञान-समुद्रसँ बहराएल ई एक लोटा जल लाखो ज्ञान-पिपासुसभक क्षुधा शान्त करबाक साधनक रूपमे आएल अछि। डॉ. यादव एक दुर्लभ प्रकृतिक सामग्री अत्यन्त सुलभ भावमे पाठकसमक्ष रखने छथि। एहिसँ हमरासभक स्वर्णिम विरासतक भण्डारमे प्रवेश करबाक मुहथरि खुजल अछि, जाहिठाम पहुँचि क' हमसभ ज्ञान आ गौरवक अतल गहिराइमे भरिमोन डुबकी लगा सकैत छी; सम्पदाक एहन संश्लेषणीय संसारमे सञ्चरण क' सकैत छी जे बेस गुलजार, ग्राह्य आ गौरवशाली रहितो हमहींसभ ओहिसँ अन्जान छी। वस्तुत: ई विषय अछि– नेपालमे शताब्दियोपूर्व लिखाएल आ व्यापकता पाएल नाट्य एवं सङ्गीत सम्बन्धी कृतिसभक। डॉ. यादवद्वारा "नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे अनुरक्षित नेवार नरेशसभकृत मध्ययुगीन मैथिली भाषाक प्रकाशित नाट्य आ गीति विधाक कृतिसभक भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण एवं ओहि कृतिसभमे उपलब्ध गीतसभमे प्रयुक्त राग-तालक पाठगत शास्त्रीय विवेचन" शीर्षकमे तैयार कएल गेल अनुसन्धान-प्रतिवेदनकेँ पुस्तकाकार रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

नेपालमे सङ्गीत तथा नाटकक इतिहास

नेपालमे सङ्गीत आ नाटकक इतिहास देखलापर मल्लकालीन समयमे एहि विधासभक भण्डार भरल देखल जाइत अछि। एहि कालखण्डमे भौतिक-अभौतिक सभ तरहक सांस्कृतिक सम्पदासभक प्राचुर्य भेटैत अछि। मल्ल राजासभ मुख्य रूपसँ चीनी-तिब्बती परिवारक नेवारी (नेपालभाषा) भाषी रहितो हुनकासभद्वारा भारोपीय भाषा परिवारक संस्कृत, मैथिली, बाङ्ला आदि भाषामे पर्यन्त कुशलतापूर्वक ग्रन्थसभक रचना होएब भाषावैज्ञानिक अध्ययनक दृष्टिसँ सेहो उल्लेखनीय पक्ष अछि। मुदा एहन बहुमूल्य सांस्कृतिक सम्पदाक सामान्य परिचय मात्र हमरासभकेँ भेटैत छल, एहि द' गम्भीर प्रकृतिक काज मिथिला वा नेपालमे नगन्य भेल अछि। एहि द' नीकजकाँ अध्ययन-अनुसन्धान एवं प्रकाशन भ' सकलापर एहि गौरवशाली सृजनात्मक इतिहासक लाभ अध्येता तथा जिज्ञासुसभकेँ अधिकाधिक मात्रामे प्राप्त भ' सकैत छनि। एहि आवश्यकताक परिपूर्तिमे गहन अध्ययन-अनुसन्धानपश्चात विद्वान अनुसन्धाता डॉ. यादवक प्रस्तुत पोथीसँ एक गम्भीर आ महत्त्वपूर्ण कार्यकेँ मूर्त्तरूप भेटल अछि।

नेपालक साहित्यिक इतिहासमे सङ्गीत आ नाटकक छोर मुश्किल एक-सबा सय वर्ष पाछाँधरि खिचाइत अछि। मौलिक नाटकक खोज करी तँ पहलमानसिंह स्वाँरक "अटलबहादुर" (वि.सं. १९६२) धरि पहुँचल जा सकैत अछि तँ सङ्गीत-सन्धानक क्रममे हमसभ आधुनिक सङ्गीतक आरम्भकर्ता सेतुराम (वि. सं. १९६०) धरि पहुँच सकैत छी। आओर पाछाँधरि जएबाक प्रयत्न कएलापर नाटकमे अतिरिक्त सय वर्ष पाछाँधरि गेल जा सकैत अछि, जत' शक्तिवल्लभ अर्यालक "हास्यकदम्ब" (वि.सं. १८५५) सहित किछु अनूदित नाटक पाओल जाइत अछि। एहि तरहेँ नेपालमे नाटकक पनुघी लागल कुल्लम २२५ वर्ष भेल बात नेपाली विद्यार्थी वा सर्वसाधारणकेँ पढ़ाओल /बुझाओल जाइत रहलैक अछि। एहिना सङ्गीतक तकतियान कएलापर ब्रिटिश-गोर्खा भर्तीक शुरुआत सङहि वि.सं. १८७१-७२ दिस गाएल जाए लागल गोर्खाली फौजक झ्याउरे लोकगीतधरि पहुँचल जा सकैत अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि– की नेपालक साहित्य, सङ्गीत, कला आदिक उमेर एतेक काँच छैक?

सत्ता-स्वार्थसँ लिखाएल कैफियती इतिहास

नेपालक साहित्यिक/सांस्कृतिक इतिहासक मूलधारकेँ एना आगाँ बढ़ाओल गेल छैक जेना शाहवंशक स्थापना (वि.सं. १८२५) क बादहि एहि देशक भूभागमे रहनिहार लोकसभ बाजब, हँसब, नाचब, गाएब, लिखब, पढ़ब शुरू कएने होइक। एहनसन जेना ओहिसँ पूर्व देशमे किछु भेबे नइ कएल हो। असलमे शाहवंशक स्थापनाक बाद नेपालमे एक भाषीय एवं एक जातीय वर्चश्वक शुरुआत भेल जे सम्पूर्ण नेपालक वैशिष्ट्यकेँ 'नेपाली' शब्दमे सीमित क' देलक। बाहरी लोक भलहि नेपालक भाषा, संस्कृति आदिकेँ नेपाली बुझैत हो मुदा यथार्थमे ओ शहवंशक साहन-वाहन रूपमे सक्रिय खस जातिक भाषा, संस्कृति, सभ्यता आ चिन्तनक मूल स्वरूप छियैक। ओकरे 'नेपाली' नाम ध' सम्पूर्ण नेपालमे लादल गेल अछि वा कही जे कतिपय अन्य पहिचानवला लोकसभ सेहो राष्ट्रवादी बनबाक लोभी वा गुलामी मानसिकतासँ एहि शब्दकेँ ढो-ढो क' नाचि रहल अछि। शाहवंशीय राजतन्त्र समाप्त भ' गणतन्त्र आबि गेलाक बादो नेपाली सत्ताक धमनीमे उएह राजतन्त्रात्मक सोनित बहि रहल छैक। राजनीतिक बाते छोड़ि देल जाय; साहित्यिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक कएनिहार व्यक्तिसभ सेहो भीतरसँ लोकतान्त्रिक भ' पाएलसन नहि देखाइत अछि। प्राय: अही कारणेँ प्राविधिक रूपसँ बचल रहबाक लेल 'नेपालक' कहबाक/लिखबाक जगहपर 'नेपालीक' कहिक' समग्र देशक प्रदर्शनकारी कलाकेँ खस (नेपाली) भाषाक नाटक/सङ्गीतमे सीमित क' मूलधारक रूपमे देखा देल जाइत छैक। यदाकदा कतौ किछु कहबाक बेगरता भेलापर सेहो नेपालक नाटक-सङ्गीतमे नींव रखनिहार प्रकृतिक कार्यसभक चर्चा/उल्लेख अत्यन्त संक्षिप्त रूपमे मात्र भेल करैत छैक। नेपाल सङ्गीत नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठानहिद्वारा वि.सं. २०७३ मे कृष्ण शाह यात्रीद्वारा 'नेपाली' नहि कहि 'नेपालक' रङ्गमञ्च नाम राखि लिखल गेल एक गथगर कायायुक्त पुस्तक प्रकाशित कएल गेल अछि। "नेपालको रङ्गमञ्च : विगत र आगत" शीर्षकमे प्रकाशित ओहि पोथीमे इतिहासदिस सेहो यथासम्भव हुलकी मारबाक प्रयत्न भेल छैक। मुदा ५२० पृष्ठमे विस्तारित ओ पोथी सेहो शाहवंशसँ आगाँक सङ्गीत/नाट्य गतिविधि द' जेनातेना १० पृष्ठधरि मात्र सामग्री जुटा पाएल अछि।

मानल जाइत अछि जे मानव समुदायमे भाषाक विकास होएबासँ पहिनहि सङ्गीतकेँ आकार भेटि चुकल छलैक आ अभिव्यक्तिकेँ संवादक रूप भेटबासँ पहिनहि भावाभिव्यक्तिक माध्यमसभ बनि गेल रहैक। ताहूसँ कहल गेल हेतैक जे संसारमे एहन केओ नइ हएत जकरा गाब' आ कान' नहि अबैत होइक। एहि बातकेँ मानिक' चललापर नेपालमे १४२ जातिद्वारा बाजल जाएवला सम्पूर्ण १२४ भाषा (जनगणना २०७८)मे गीत-सङ्गीत आ नाटकक अपन-अपन स्वरूपसभ विद्यमान छलैक। मुदा दस्तावेजीकरणक लेल ओकरासभक कोनो ठोस आधार, पाण्डुलिपि, विवरण, लिखत आदि नहि भेटल हेतैक; फलस्वरूप शाहवंशमे राजकीय संरक्षण पओनिहार खस-नेपाली भाषाकेँ मात्र इतिहासमे लिखएबाक अवसर भेटल हेतैक। जेँ कि नेपालक पछिला राजतन्त्र एकरे पक्षपोषण करैत आएल छल तेँ एहन देखल जाएब वा लिखल जाएब स्वाभाविके छलैक। मुदा प्रजातन्त्रसँ लोकतन्त्र होइत गणतन्त्रमे डेढ़ दशक व्यतीत क' लेलाक बादो समग्र चिन्तनक धरातल राजतन्त्रहिद्वारा निर्धारित चौहद्दीसँ फराक नहि भ' पाएब दुर्भाग्यक विषय अछि। अन्यथा ईस्वी सन् १३२४मे लिखित एवं प्रदर्शित ज्योतिरीश्वर ठाकुरकृत मैथिली भाषाक "धूर्त्तसमागम" नाटकक प्रति अपनत्व दर्शाक' ओकर स्वामित्वपर्यन्त ग्रहण करबाक आ अपन सृजनात्मक इतिहासकेँ ६ सय वर्ष आओर नमरएबाक बातसँ नेपालक साहित्यिक इतिहासकारसभकेँ किएक कुण्ठाबोध होइतैक? मल्लकालमे मैथिली, नेवारी (नेपालभाषा), संस्कृत, बाङ्लासहितक भाषामे लिखित आ मञ्चित सैकड़ो नाटकसभ द' नेपाली साहित्यिक वर्ग किएक बेखबर आ उदासीन रहितए? मल्लकालहिमे हजारोक संख्यामे राग-तालक पर्यन्त जानकारी द' क' लिखल वा लिखाएल गेल गीतसभ किएक नेपालक साङ्गीतिक इतिहासमे परिगणित नहि

भ' रहल अछि? तहिया वा ओहूसँ पहिने अन्य कोन-कोन भाषामे की-केहन सामग्रीसभ रहल भ' सकैत छैक ताहि बातक खोजी-पुछारीमे पर्यन्त किएक चाँकि नहि देखाएल जाइत छैक ?

उपरका यावत प्रश्नसभक जवाब तकलापर दूटा बात मुख्य रूपसँ सोझाँ अबैत अछि। पहिल– बनि चुकल लीकमे मात्रे चलैत यात्राकेँ सहज आ अपना अनुकूल बनएबाक मनोवृत्ति तथा दोसर– नवमति सर्जक/लेखकसभमे जिज्ञासा जागृत भेनिहार संसाधनसभक समयानुकूल एवं समुचित अभाव। ई पोथी वस्तुत: जानि-जानिक' अन्ठाबैत अन्हारमे राखल गेल इतिहासकेँ यथार्थ रूपेँ आलोकित करबाक आ नव अनुसन्धित्सु तथा जिज्ञासुसभक लेल "सितारों से आगे जहां और भी है" जकाँ आओर दूरधरिक अध्ययनक लेल सम्पदाक केवाड़ खोलबाक औजार छियैक। इतिहासद्वारा लगाएल गेल अन्हारक ढाठसँ बहुत दूरपर रहल स्वर्णिम दिनमे पहुँचबाक एकटा सशक्त उपक्रम तैयार करबामे ई पोथी सक्षम होएबाक विश्वास कएल जा सकैत अछि।

ओना तँ इतिहासकेँ राजा-महाराजासभक प्रशस्तिगानक पुलिन्दा बुझबाक परिपाटी सेहो छैक। अधिकांश सन्दर्भमे एकर प्रयोग तदनुरूपे देखलो जएबाक कारणेँ एहन धारणा विकसित हएब असान्दर्भिको नहि छैक। मुदा ज्ञान, विज्ञान, शिल्प, शास्त्र, साहित्यक धरातल सेहो इएह होइत छैक। इतिहासे लोककेँ वर्तमान सुधारबाक एवं भविष्य बनएबाक हेतु आवश्यक ज्ञान आ मार्ग उपलब्ध कराओल करैत छैक। वस्तुत: लोककेँ नित्य नूतन होइत निरन्तर सभ्य, सुसंस्कृत तथा सृजनरत बनबाक लेल इतिहासेसँ प्रेरणा भेटैत छैक। कतिपय सन्दर्भमे लोककेँ प्रतिक्रियावादी सेहो बना देनिहार इतिहास अधिकांशत: जीवन आ यात्राकेँ ऊर्जामय बनएबाक भूमिका निर्वाह करैत छैक। एहि यावत पक्षसभपर विचार करी तँ मूलधारसँ अलग कएल गेल सम्पूर्ण नेपालीक लेल ई पुस्तक सृजनपथक अजस्र ऊर्जास्रोत बनि सकैत अछि, मैथिलसभक लेल तँ सहजहिँ। किएक तँ एहिमे मैथिली भाषाक मध्यकालीन कृति कहल गेल मल्लकालीन साहित्यक सूक्ष्म वर्णन-विश्लेषण कएल गेल अछि, जाहिमे मुख्य रूपसँ तीन तरहक भाषाक माध्यमसँ तीन पक्ष समाविष्ट भेल अछि– विद्वता प्रदर्शनक लेल संस्कृत भाषा, साहित्यिक लालित्यक लेल मैथिली भाषा आ जनभावना तथा स्वस्थानिक महिमा-गान हेतु नेवारी भाषा।

नेपालमे मैथिली पाण्डुलिपिक पथार

इतिहास लेखनक सन्दर्भमे चाहे जे-जेना कैफियत भेल हो, मुदा राज्यक दिससँ इतिहास संरक्षणक दिशामे नेपालमे महत्त्वपूर्ण काजसभ भेल अछि। नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे पुरान पाण्डुलिपिसभ बेस जतनसँ अद्यावधि राखल गेल अछि। कतबाधरि जे भारतसहित विश्वभरिक विद्वानलोकनि महाकवि विद्यापतिक गीतसभक मुख्य आ प्रामाणित स्रोत सेहो नेपालहिकेँ मानैत छथि। मल्लकालक पाण्डुलिपिसभ सेहो यथेष्ट संख्यामे नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जयकान्त मिश्रक मोताबिक ओहिठाम ३००सँ बेसी पाण्डुलिपि सुरक्षित छैक। जखन कि नेपालक पुरातात्त्विक विद्वान डॉ. तारानन्द मिश्र नेपालक अभिलेखालयक सङहि केशर पुस्तकालय आ आसा सफुमे मिला ४०० पाण्डुलिपि संरक्षित रहल जानकारी देने छथि। तहिना जर्मन विद्वान Horst Brinkhaus अभिलेखालयमे नेवारी आ/वा मिथिलाक्षरमे लगभग १५० पाण्डुलिपि रहल उल्लेख कएने छथि। जखन कि नेपाली विद्वान कमलप्रकाश मल्लक मोताबिक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे कुल १५३ टा मल्लकालीन कृतिसभ संरक्षित अछि, जाहिमध्य २६-३० टा नेवारीमे, ५-६ टा बाङ्ला तथा हिन्दी/व्रजभाषा/अवधीमे आ अन्य सभ अर्थात ११५ सँ बेसी कृति मैथिलीमे छैक। मुदा एहिमध्य वर्तमानधरि मैथिलीक १३ टा कृति मात्र प्रकाशित भ' पाएल जानकारी डॉ. रामावतार यादवक एहि अनुसन्धानसँ प्राप्त होइत अछि, जाहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ई विषय सम्बद्ध पक्षक समुचित ध्यानाकर्षण नहि करा पाएल अछि। एहन अवस्थामे ई पोथी बहराएब ओहन पाण्डुलिपिसभ प्रकाशन-पथपर अग्रसर होएबाक वातावरण बनब सेहो छियैक।

पोथीक अन्तर्वस्तु तथा वैशिष्ट्य

कुल १० अध्यायमे संयोजित एहि पुस्तकमे मध्ययुगीन मैथिली पाण्डुलिपि : साङ्ख्यिकी, मध्ययुगीन प्रकाशित ग्रन्थ : संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी, विश्वक विभिन्न देशमे अद्यतन प्रकाशित (मल्लकालीन/मध्ययुगीन) नाट्यकृतिसभक संक्षिप्त विवरणात्मक सूची, मध्ययुगीन मैथिलीक भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण (१६००–१७६९ ई.), राग-ताल : शास्त्रीय विवेचना, गीति विधाक प्रकाशित ग्रन्थसँ चयनित गीतसभमे प्रयुक्त राग-तालक पाठगत वर्णन-विश्लेषण, गीत-सङ्गीतक समग्र गुण वृद्धि/उत्कर्षमे राग-तालक अवदानसन महत्त्वपूर्ण विषयसभ समटाएल अछि।

उच्चकोटिक भाषावैज्ञानिक डॉ. यादवद्वारा भाषा-विज्ञानसम्बद्ध वर्णन-विश्लेषण प्राप्त हएब स्वाभाविक आ अपेक्षित रहितो राग-तालक शास्त्रीय विवेचन, ओहि कालखण्डक गीतसभमे प्रयुक्त राग-तालक पाठगत वर्णन-विश्लेषण, गीतक गुणस्तर अभिवृद्धिमे राग-तालक योगदानसन विषयपर्यन्त समाविष्ट हएब पाठकसभक लेल अतिरिक्त आ विशिष्ट प्राप्ति अछि। गहन चिन्तन आ गम्भीर विश्लेषणक सङ्ग तत्त्व-निष्पादनक पक्षपाती डॉ. यादवसन अनुसन्धातासभसँ मात्र ई सम्भव होब' वला विषय अछि। एहिसँ हमरासभक सङ्गीत-सम्पदा सम्बन्धी अध्ययनक पक्ष सेहो उद्घाटित भेल अछि, जकरा कालान्तरमे साङ्गीतिक ज्ञानमे पर्यन्त निष्णात कोनो विद्वानसँ विस्तृति भेटबाक आ भेटैत जएबाक हमर विश्वास अछि।

अन्त्यमे,

नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित मैथिलीक बहुमूल्य हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभमे अभिनिहित वा अन्त:स्थापित पुन:प्रापनीय ज्ञानक उत्खनन, तत्सम्बन्धी नव-नव ज्ञानक सृजन एवम् विश्लेषण तथा जनमानसमे ओहि ज्ञानक सफल प्रसार करबाक मूल ध्येयसँ विद्वान अनुसन्धाताद्वारा भेल अनुसन्धानपर आधारित ई पुस्तक नवीन आ पुन:प्रापनीय देशज ज्ञान (indigenous knowledge)कँ वैश्विक स्तरपर प्राप्त ज्ञानसँ अन्तर्सम्बन्धित करैत अन्ततोगत्वा मिथिलाक सङहि नेपालक सांस्कृतिक एवं भाषिक तथा बौद्धिक उन्नयनमे योगदान पहुँचबाक विश्वास लेखकहिजकाँ हमरो अछि।

नेपाल की देलक मैथिली साहित्यकेँ

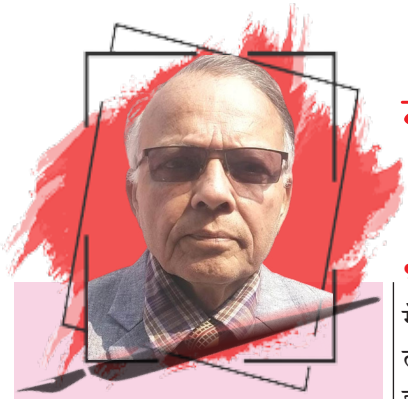

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

सम्पर्क : जनकपुरधाम, मिथिला(नेपाल)
मोबाइल : +977 9854020889

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक पहिल रचना मिथिलामिहिर १९६४मे बालकथा 'इमानदार बालक' छपलाक बाद जे लेखन गति पकड़लनि ओ आइ धरि निरन्तरता अंगेजने अछि। विभिन्न विधामे एकावन्न गोट पोथीक रचनाकार भ्रमरजीकेँ नेपाल राजकीय पज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार', विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गा द्वारा 'मिथिला विभूति'(१९९६ई.) सम्मान, ने. 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार',(जनकपुर), 'मिथिलारत्न' सम्मान(मुंबाइ-२००६), 'मधुरिमा सम्मान',(मधुरिमा नेपाल), यात्री चेतना पुरस्कार, (चेतना समिति,पटना),नेपाल विद्यापति भाषा,साहित्य पुरस्कार (२०६९), मिथिला विभूति सम्मान(छत्तीसगढ,भारत), महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा पुरस्कार(२०७७) आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कारसँ अलंकृत छथि। नेपार सरकार हिनका पलिबेर साझा प्रकाशनक अध्यक्ष नियुक्त कएलकनि, फेर नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य मनोनित कयलकनि। सम्प्रति मधेश सरकारक नियुक्तिमे मधेश प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक अध्यक्षक रुपमे कार्यरत छथि।

भारतीय क्षेत्रमे मैथिलीक आधुनिक काल १९५० ईसँ प्रारम्भ भ' गेल छलै। पत्र पत्रिकाक प्रकाश प्रवासेमे सही शुरु भ' गेलासँ लेखन दिश विधिवत् काज आगा बढ़ि गेल छल। तखन नेपालमे ई अवसर कनेक देरीसँ प्रारम्भ भेलैक। २०१४-१६ सालमे त्रिभाषी पत्रिका नवजागरणक प्रकाशन संगहि मैथिलीमे औपचारिक प्रकाशन भेल देखि पडैत अछि। १९५०-६० ई.। ई दशक नेपाल भारत दुनू दिस साहित्य रचनाक क्रममे व्यवस्थित रुपें नहियो सही, बढ़एबाक काज भेल, जकर परिणती अछि आई दुनू ठाम प्रशस्त मात्रामे विविध विधाक रचना लिखा रहलैक अछि। पत्रिका सभमे छपियो रहल छैक। बहुत गोटे तकरा पुस्तकाकार रुपमे प्रकाशन सेहो कइए रहल अछि। एहि तरहें आधुनिक कालमे अपन रचनासभ द्वारा नेपालक साहित्यकार लोकनि मैथिली साहित्य भंडारकेँ भरि रहलाह अछि।

तखन जाहिसँ मैथिली साहित्यक गरिमा बढ़लैक अछि, ओ थिक एकर प्राचीन साहित्य जे राजभवनक विच रचल गेलै आ पूस्त दर पुस्त आइधरि हमर साहित्यक एकटा अभिन्न अंगक रुपमे सुरक्षित अछि। एहि मुद्यापर जखन हम विचार करैत छी तखन नेपालक पलडा भारी भ' जाइत अछि। विना दस्तावेजसँ एतिहासिक विवेचन नहि कएल जा सकैछ। ताहू दुआरे मैथिली साहित्यक इतिहासक जे कोनो पुस्तक आएल अछि ओ बेसी उतारले गेल सन बुझि पडैछ। देखल, पढल अथवा पक्का अनुमानक कमिक कारणें कतेको सामग्रीकेँ सत्यापन नहि कएल जा सकल छैक। तथापि नेपालक विभिन्न क्षेत्रमे भेल काज सभक एकटा संकलन नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासक रुपमे १९७२ ई.मे नेपालक पूर्वी शहर विराटनगरसँ आएल। डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अनेक त्रुटिक बाबाजूदो नेपालक पहिल इतिहास लिखलनि, जे अधावधिक (साझासँ संशोधित संस्करण) प्रकाशित भ' चुकल अछि। आइ एही इतिहासक माध्यमे नेपालक मैथिली साहित्यक अवस्था बारेमे जानल जाइत अछि। भाषा, साहित्य सम्बन्धि समान्य ज्ञान इतिहाससँ बूझल जा सकैछ। मुदा समष्टिगत रुपें जखन विचार होइत तँ समग्र मैथिली साहित्यकेँ अन्य भारतीय भाषाक आगाँ ठाढ हएबाक हैसियत जतयसँ भेल छैक, तकर जानकारी लेब जरुरी अछि। आ साँच कहल जाए तँ इएह नेपालीय भूमिक मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करबामे कएल गेल योगदानक रुपरेखा मानल जा सकैछ।

मैथिली भाषाक समृद्धिक हेतु तीन गोट आधारकेँ इतिहासकार लोकनि मानैत अएलाह अछि। एक वर्णरत्नाकर, दू विद्यापति पदावली आ तीन मल्ल बंश। साँच बात इएह छैक जे ई तीनू आधार नेपालेसँ मजबूत भेलैक अछि। आ तकर कारण छैक कर्णाट वंशीय शासन जे नेपालक सिमरौन गढमे १०९७ ईमे नान्यदेव स्थापित कएने छलाह।

पहिने हम चर्च करी 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थक। कोनो भारतीय भाषाक ई पहिल गद्य ग्रन्थ मानल जाइछ। कर्णाट वंशक अन्तिम राजा हरि सिंह देव (वि.सं. १३६१-८४)क समयमे दरबारी कवि कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुरद्वारा लिखल गेल ई गन्थ वास्तवमे तत्कालिन राज्य व्यवस्थामे जीवन पद्धती आ विधि व्यवहारक अद्भूत आकर ग्रन्थ थिक। ताहि समयक सामाजिक बनौट, जीवन शैली, जाति वर्गक चालि चलन, राज्यक नीतिक–व्यवहार, पर्व तीहार, लोक जीवन आदिक अत्यन्त सुन्दर वर्णन भेटैत अछि। कहबाक जरुरति नहि चौद्हम शताब्दीक एहि ग्रन्थक बलपर मिथिलाक इतिहास आ भाषा साहित्य समृद्धिक खिस्सा लिखल आ सुनाओल जाइत अछि।

साँचबात तँ ई अछि जे सिम्रौनगढक कर्णाटबंश मिथिलेक नहि, नेपालोक भूभागसँ जूडल एक स्वतन्त्र राज्य छल, जकर सम्बन्ध मिथिलाक तत्कालिन छोट पैघ सामन्त राजा सभसं छलेहे, नेपालक उपत्यकाक राजा लोकनिसँ सेहो प्रगाढ रुपें छलनि आ जत्त कयबेर युद्धो भेल आ सम्बन्धो जोडल गेल। ।

डा. लेखनाथ मिश्र नेपाल अभिलेख सभक अध्ययन करैत अएलाह अछि। ओहो अपन नवका पुस्तक जगज्योतिर्मल्ल पदावलीमे नान्यवंशक राज्य मिथिलामे १०९७ ई.सँ मानैत छथि (पृ– खष्)। पं. गोविन्द झा कर्णटवंशकेँ मिथिलासँ फूट मानैत छथि– कर्णाटक इतिहास नेपालक थिकै, मिथिलाक नहि। ओ एकल सम्पति नेपाली भूमिक अछि। तकर प्रमाण कर्णाट वंशक विवाहादि सम्बन्ध काठमाण्डू अपत्यकाक राज घरानासँ छल, मिथिला क्षेत्रसँ नहि। (पक्ति लेखकसँ साक्षात्कारक, पुस्तक : अहाँ जे कहलहुँ, सं. भ्रमर २०७१ पृ. ८९) हुनक मत छन्हि– कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेव वास्तवमे योद्धा छलाह, जनिका नेपाली राजा लोकनि अपन सुरक्षाक हेतु सिम्रौनगढमे बजा आश्रय देलकनि। आ ओ अपन परिश्रमसँ वन जंगलकेँ काटि सुन्दर राज्यक स्थापना कएलनि। (उएह)।

एहुँसँ वर्णरत्नाकरक योगदानकेँ निश्चय नेपालीय मैथिली साहित्यक उपलब्धि मानल जएबाक चाही। विद्यापति पदावली सेहो मैथिली साहित्यक अमूल्य नीधि अछि। एखनो विद्यापति पदावलीए बलपर अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमे मैथिलीक पहिचान बनल छैक। जखन पदावलीक प्रारम्भिक भाषाकेँ देखि विद्यापति वंगाली कविक रुपमे चर्चामे आब लागल रहथि तँ हर प्रशाद शास्त्री आ जर्ज ग्रियर्सनक संकलन आ कथनसँ ओ मैथिली प्रमाणित भेल छलाह। कहबाक जरुरति नहि एहि काजमे नेपालसँ भेटल विद्यापतिक आधिसंख्य पदावलीक योगदान मानल जएबाक चाही। एखनो जतेक पदावलीक संकलन सभ उपलब्ध अछि ओ तत्कालिन बीर लाइब्रेरी आ एखनका राष्ट्रिय अभिलेखालयसँ प्राप्त पदसभ पर आधारित छैक आ वास्तवमे ओ अपन मौलिक स्वरुपमे सुरक्षितो अछि। जेना पदावलीक एकटा महत्वपूर्ण स्रोत भाषा गीत संग्रह छैक जे एखनो ताहि अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। डा. रमानाथ झा ताही ठामक फोटो स्टेट काँपीक आधार पर सम्पादित क' १९६९ ई.मे पटना विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित करौने छलाह।

एखनो काठमाण्डूक नीजिक जातिय अभिलेखालय आशा शफु गुथीमे विद्यापतिक दर्जनो पदावली मिथिलाक्षरमे आ नेवारी लिपीमे सुरक्षित छैक। जकर उतार कतौ कतौ देवनागरीमे सेहो कयल गेल छैक, जे विभिन्न राजाक समयमे गायक सभकेँ सुविधाक हेतु उतरबाओल गेल छल हयतैक। तेहने किछु अप्रकाशित विद्यापतिक पद पक्ति लेखकक संकलनमे सेहो अछि, ताहि मध्य मात्र दूटा पद पटनाक समय साल पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।

तेसर आ महत्वपूर्ण योगदान मल्ल वंशक साहित्य साधनासँ प्राप्त भेल अछि। राजल्ल देवीसँ जयस्थिति मल्लक विवाहक वाद उपत्यकामे मल्ल वंशक प्रारम्भ भेल जे अनवरत रुपें छव सय वर्षधरि चलैत मैथिली भाषा साहित्यकेँ स्वर्ण युगमे परिणत क' देलक। अनेको नाटक, गीत आदिक रचना क' मल्ल राजा लोकनि मध्यकालिन भाषा साहित्यक एकटा एहन रुप स्थापित कएलनि जे सम्पूर्ण मैथिली संसारकेँ अचंभित क' देलक। तएँ पं. गोविन्द झा प्रश्न करैत छथि– मैथिली गद्यक आदि प्रवर्तक चन्दा झा मानलजाइत छथि, से कोना भेल ? नेपालक राजघरानाक मल्ल राजा लोकनि द्वारा लिखल गेल गद्य की गद्य नहि ! (पूर्ववत, पृ. ८९)

मल्ल राजवंशमे नाटक लिखबाक आ तकर अभिनय करबाक जे सुदीर्घ परम्परा छल तकर शुरुआत नेपाल संवत ४५७ अथाएत १३९४ ईमे भेल जखन राज आज्ञासँ कवि जयत 'महिरावण वद्ध' नाटक लिखलनि। ताहि समयमे पाटनक महापात्र जय सिंह रहथि तँ राजा छलाह अरि मल्ल। मछिन्द्रनाथक जात्राक समयमे एकर प्रदर्शन कयल गेल छल। ई नाटक संस्कृत आ प्राकृतमे छलैक। कहबाक जरुरति नहि कर्णाट शासनमे मैथिलीक लेखन शुरु भ' चुकल छलै आ वर्णरत्नाकरक संगहि धूर्त समागम प्रहसनक रचना ज्योतिरीश्वर द्वारा भ' गेल छल। जयत द्वारा लिखल महिरावण वध नाटकमे आएल अनेको प्रसंग कर्णाट शासन क्षेत्र (मधेश तराई)क विषय वस्तुसँ मिलैत हएबाक कारणें नेपाली इतिहासकार लोकनि ओकरा सिम्रौनगढे दिशक मानने छथि। बरु कहल जाए तँ बहुतो प्रसंग जयत नाटकमे आएल अछि ओ वर्णरत्नाकरसँ पूर्णत: मेल खाइत अछि। तएँ जयत मैथिली भाषी छल एहिमे सन्देह नहि।

तकरा बाद मल्ल राजा लोकनि नाटकक संगहि गीत संगीतक अपूर्व पुस्तकसभक रचना कएलनि जे एखनो अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। आ जे नाटक, गीत सभक संकलन बहार भेल अछि ओ मैथिली साहित्यक अमूल्य नीधि आ समादृत अछि।

प्रताप मल्ल, श्री निवास मल्ल, जगज्योर्तिमल्ल, सिद्धिनरसिंह मल्ल, लगायतक मल्ल राजा लोकनि मैथिली साहित्यक पद्य आ गद्य दुनू विधाकेँ समृद्ध मात्रे नहि कयलनि, तकरा प्राचीन स्वरुप सेहो प्रदान क' मैथिलीकेँ समृद्ध भाषाक रुपमे स्थापित कयलनि।

आधुनिक समयमे लोक साहित्यक श्री वृद्धिमे सेहो नेपालक योगदानकेँ विसरल नहि जा सकैछ। मैथिली लोकगाथाक दू महत्वपूर्ण पात्र सलहेस आ दीना भद्री नेपालेकेँ बासी छल। सलहेस महिसौथा (सिरहा) नेपालक आ दीनाभद्री जोगिया जाँजर सप्तरी नेपालक। दुनूक गहबर आ क्रिड़क अवशेष स्थल एखनो अछिए। दुनूक लोकगाथा जे जर्ज ग्रियर्सन उपलब्ध कएलनि ओ मूल नेपालेकेँ स्रोत छल। सलहेस आ दीनानाथ नेपाल–भारतक मिथिलाञ्चलमे एखनो लोकप्रिय मानल जाइत अछि।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानसँ पहिल बेर लोकनायक सलहेस पर आधारित विद्वत वर्गक विशेष आलेखक संग राम भरोस कापडि भ्रमरक सम्पादनमे दू खण्डमे पुस्तक प्रकाशित अछि तँ भ्रमरेक सम्पादनमे ताहि ठामसँ दीना भद्री पर आधारित पुस्तकक प्रकाशन भेल अछि। ई दुनू पुस्तक एखन लोक साहित्यक अध्ययन कयनिहार हेतु महत्वपूर्ण आधार ग्रन्थ सावित भ' रहल अछि।

एहि तरहेँ हम देखैत छी मैथिली साहित्यक श्री वृद्धिमे नेपालक योगदान महत्वपूर्ण रुपें स्थापित अछि। जकर आर विस्तृत रुपें आकलनक आवश्यकता अछि।

नेपालक साझा प्रकाशन (सरकारी संस्था)सँ प्रकाशित भ्रमरक सम्पादनमे महाकवि विद्यापति आ नेपाल पुस्तक सेहो एहि अवदानकेँ नीक जकाँ फरिछौने अछि। विद्यापतिक जाहि श्रीमद्भागवतक हस्तलिखित प्रतिक चर्च अछि जे राज बनौलीमे प्रवास कालमे महाकवि विद्यापतिद्वारा लिखल गेल छल। 'लिखनावली'मे राजदरबारक पत्रलेखन परम्परापर चर्च अछि तँ भू परिक्रमणक आधारपर जनकपुरसँ काठमाण्डू धरिक विद्यापतिक परिभ्रमणक प्रमाणिकता लिखल गेल अछि। कतेको निवन्ध एहन अछि जाहिसँ नेपालक विशेष योगदानकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि।

एहि तरहें देखलापर मैथिली साहित्यक श्रीबृद्धिमे नेपालक योगदानके कोनो तरहें बिसरल नहि जा सकैछ।

सन्दर्भ सूची

१ विद्यापति गीत शती – सं. उमानाथ झा, प्र. साहित्य अकादमी, १९७२ ई.

२ अहाँ जे कहलहुँ – सं. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' प्र. जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान वि. सं. २०७१

३ जगज्योर्ति मल्ल पदावली, सं. डा. लेखनाथ मिश्र, प्र. मैथिली विकास कोष, पटना वि. वि. २०१० ई.

४ जगज्योर्तिमल्ल – डा. रामदेव झा, प्र. साहित्य अकादमी १९९५ ई. ।

५ महिरावण बध नाटक – विवेचनात्मक अध्ययन – ज्ञानमणी नेपाल, प्र. त्रिविवि काठमाण्डू, वि. सं. २०४०।

६ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास – डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, प्र. साझा प्रकाशन २०६८।

चन्द्र किशोर मल्लिक

सम्पर्क : विराटनगर, नेपाल।
मोबाइल : +977 9854020889

26 अप्रैल 1953 ई.कैं जन्म। नेपाल सरकारक राजकीय सेवामे उपसचिव पदसँ सेवानिवृत्त श्री चन्द्र किशोर मल्लिकजी मैथिली, नेपाली आ हिन्दीमे क्रियाशील छथि। समसामयिक विषयपर हिनक सोच आ दृष्टिकोण नव्यताक आग्रही एवं वैज्ञानिकतासँ भरल रहैत छनि। 'मैथिल कायस्थक अन्त्यकर्म संस्कारमे सरलीकरण आ सुधारक अवस्था एवं आवश्यकता' अंतिम संस्कार आ श्राद्धादि विषयक एक गंभीर एव विचारणीय पोथी अछि। हिनक नेपाली आलेखसंग्रह अनुस्मरण इतिहास-साहित्य-समाज-संस्कृति विषयक विभिन्न विन्दुपर एक जीवन्त दस्तावेज बनि गेल अछि। उद्घोष दैनिक (विराटनगर) सहित विभिन्न पत्र-पत्रिका, स्मारिका आदिमे अनेक समसामयिक रचना प्रकाशित भेल अछि। सम्प्रति विराटनगरमे रहि मैथिली-नेपालीक सेवामे सक्रिय छथि।

मिथिलाक कर्णकायग्रंथ : अध्ययन-विश्लेषण

नेपालमं गिरीदुर्गमं भुजबलादुन्मूल्य तद्भूपतिन्
सर्वान राघववंशजान रविरिपोस्तुत्य: प्रतापनलै:।
देवं विश्ववरप्रदं पशुपतिं संस्पृश्य योऽ पूजयत्
केषां नैष धरातले स्तुतिपदं मन्त्रीन्द्रचण्डेश्वर:॥

चण्डेश्वर रचित कृत्य रत्नाकरमे लिखल एहि श्लोकक अनुसार मन्त्रीन्द्र चण्डेश्वर पशुपतिनाथ शिवलिङ्गक स्पर्श करैत पूजा कयने रहथिन्ह। सिमरौनगढ-तिरहुतकैं कर्णाट शासकक महामन्त्री चण्डेश्वर काठमाण्डौ स्थित श्री भगवान पशुपतिनाथक शिवलिङ्गकैं स्पर्श करैत पूजा करबाक घटनाक उल्लेख अपन ग्रन्थमे कयने छथिन्ह। एकरा नेपालक विद्वान इतिहासकार श्री महेशराज पन्त एवं ज्ञानमणि नेपाल सेहो उद्धृत कयने छथिन्ह। डॉ. गोविन्द टंडनक नेपाली ग्रंथ पशुपति क्षेत्र को सांस्कृतिक अध्ययन (काठमाण्डौ, 1996)मे चण्डेश्वरद्वारा पशुपति शिवलिङ्गकैं स्पर्श करैत पूजा केर कालखण्ड वि.सं. १३७१ (ई.सन् १३१४-१५) कहल गेल छैक। ओहि समय ओ तिरहुतिया सैनिक सभक नेतृत्व करैत नेपाल काठमाण्डौपर आक्रमण कयने रहथिन्ह आ काठमाण्डौ उपत्यकाक तत्कालीन मल्ल राजाकैं पराजित कयने रहथिन्ह। ओहि समय ओ अत्यन्त प्रभावशाली रहथिन्ह, अतएव हुनका पशुपति शिवलिङ्गक स्पर्श करैत पूजा करबाक स्वीकृति भेटल रहैन्ह। मूल भट्ट पुजारीक अतिरिक्त स्पर्श पूजाक अनुमति आन किनको नहि छल।

नेपालक मध्यकालिक इतिहासमे भेल उल्लेख अनुसार चण्डेश्वर सन्धि-विग्रह महामन्त्री रहथिन्ह, हुनकैं प्रस्ताव आ प्रयाससँ हरसिँहदेव (त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित सिमरौनगढको इतिहास शोध ग्रन्थमे मोहन प्रसाद खनाल ई नाम कृत्य रत्नाकरकैं आधारपर पुष्टि कयने छथिन्ह)क वियाह मल्ल राजा जयतुङ्ग मल्ल आ रानी पदुमल देवीक राजकन्या देवलदेवी संग भेलैक। जेकर परिणाम स्वरुप तिरहुतिया आक्रमण रुकि गेलैक आ तिरहुत-काठमाण्डौ बीच वैवाहिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध भ' गेलैक।

डा. टण्डन अपन शोध ग्रन्थमे लिखैत छथिन्ह जे जाहि समयमे चण्डेश्वर पशुपति शिवलिङ्गकैं स्पर्श करैत पूजा कयने रहथिन्ह। डा. टण्डन लिखने छथिन्ह जे ई प्रतीत होइत छैक जे पशुपतिनाथक वर्तमान स्थापित शिवलिङ्ग (वि.सं. १४१७ वा

१३६०-६१ ई.मे स्थापित) अर्वाचीन अछि। प्राचीन शिवलिङ्गकेँ बङ्गालक सुल्तान शमशुद्दिन इलियास नेपाल उपत्यकापर आक्रमण आ लुटपाटकेँ क्रममे तीन टुक्रामे खण्डित क' देने छलैक। तत्कालीन समाज विधर्मी मुसलमानद्वारा खण्डित शिवलिङ्गकेँ पुन: स्थापना अवश्य नै कयने हेतैक।

पशुपतिनाथक वर्तमान शिवलिङ्गकेँ वि.सं. १४१७मे स्थापित भेलासँ, चण्डेश्वरद्वारा स्पर्श-पूजा कयल गेल शिवलिङ्ग वि.सं. १३७१ (ई.सन् १३१४-१५)क शिवलिङ्ग प्राचीन शिवलिङ्ग रहल होयतैक।

सिमरौनगढ-तिरहुतकेँ कर्णाट राजा आ हुनकर मन्त्रीगण सनातन मतकेँ हिन्दू धर्मावलम्बी रहथिन्ह। हुनकर सबहक कुलदेवी भगवती आ इष्टदेव महादेव शिव रहथिन्ह।

कर्णाट राजासब सनातनी हिन्दू छलखिन्ह। हुनकर कुलदेवी भगवती तुलजा भवानी रहथिन्ह। सिमरौनगढसँ पलायनक समय हरसिंहदेव अपन इष्टदेवी तुलजा भवानीकेँ संगे नेपाल लगेलखिन्ह। नेपालक भक्तपुर आ काठमाण्डू दरवार क्षेत्रमे भगवतीक मन्दिर स्थापित छैक आ ओ तलेजू भगवतीक रुपमे पूजित छथिन्ह। नेपाल (नेवारी) भाषामे डोय शब्दकेँ अर्थ होइत छैक तिरहुतिया। तिरहुतिया-डोय सबकेँ कुलदेवी तुलजा भवानी वा तलेजूकेँ नेवारी भाषामे डोयमाजू वा द्विमाजू (डोय सबकेँ देवी माता) कहल जाइत छैक, जू आदरार्थी शब्द छैक।

सिमरौनगढ-तिरहुत/मिथिलाक कर्णाटवंशीय शासक नान्यदेवसँ ल' क' हरसिंहदेव आ हुनकर राजसभा सदस्य मन्त्रीगणक प्रयास रहलैन्ह जे राज्यक शासन व्यवस्था सुदृढ हो। विविध (बौद्ध मत आ सनातन मत) धार्मिक-सांस्कृतिक रुपमे रहल-बसल प्रजाजन सनातन मत वा हिन्दू धर्मक प्रति प्रेरित हो। एकरे लेल एकटा प्रयास छलैक प्रजाजनकेँ पञ्जीकृत करैत अभिलेखीकरण करब। जेना वर्तमान कालमे बिहारमे जातीय जनगणना करेबाक प्रयत्न भ' रहल छैक। वस्तुत: पञ्जीकरण ओहि कालखण्डक जातीय जनगणना छलैक।

तिरहुत-मिथिला नरेश हरसिंहदेवद्वारा सन् १३१० ई.मे पञ्जी निर्माणक आदेश भेल रहैक। पञ्जीकेँ पूर्ण आ प्रकाशित होमयसँ पहिने हरसिँहदेवकेँ सन् १३२३ ई.मे शरणार्थीक रुपमे पलायन करय पड़लैन्ह। हुनकर अनुपस्थितिमे कायस्थक पञ्जी निर्माणक लेल कार्यभार आ आदेश प्राप्त महानुभाव शङ्करदत्त सन् १३२७ ई.मे कार्य सम्पन्न कयलखिन्ह। ओ पांजिकेँ सन् १३५२ ई. धरि संलग्न अन्य पञ्जीकारद्वारा प्रतिलिपि नकल तैयार कयल गेलैक तत्पश्चात् १३५३ ई.मे प्रकाशित भेलैक।

सिमरौनगढसँ हरसिँहदेवकेँ पलायनकेँ बाद दिल्लीकेँ सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक तिरहुतक शासनभार मल्लिक तुल्लीधरक पुत्र अहमद खाँकेँ सौंप देलकैक। मध्यवर्ती कालमे तिरहुतमे मुसलमान विजेता तथा ओकर क्रूर राज्यपालक अलावा अन्य कोनो वास्तविक आ वैधानिक राजा वा शासक नै रहैक। करीब ३० वर्ष धरि तिरहुतक राजनीतिक मञ्चपर अराजकता आ नृशंसताक ताण्डव होइत रहलैक। अन्तत: दिल्लीक शासक फिरोज शाह तुगलक द्वारा सन् १३५३ ई.मे हरसिंहदेवक राजसभामे रहल सभा पण्डित ओइनवार वंशक ब्राह्मण कामेश्वर ठाकुरकेँ शासक नियुक्त कैलकैक। हुनका अन्तर्गत् तिरहुत-मिथिला राज्य करद राज्यक रुपमे स्वायत्त छलैक, मुदा वाह्य कार्य क्षेत्रमे दिल्ली शासनक अधीन।

अखनतक हम कर्ण कायस्थ सब पढैत, सुनैत आ बुझैत एलियै जे हमरा सबहक पूर्वज कर्णाट राजा नान्यदेवक संगे कर्णाटकसँ मिथिलामे एलखिन्ह। पहिल बेर १२ बान्धव सभक संग श्रीधर मिथिला अएलाह, दोसर बेर २०, तेसर बेर ३० आ चारिम बेर ८० कुल १४२ कायस्थ परिवार मिथिला आबि बसलाह।

विद्वान शोधकर्ता श्री डा. रंगनाथ दिवाकर अपन शोध आलेख 'मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ आव्रजन: मिथक या यथार्थ' शीर्षकमे लिखैत छथिन्ह जे कर्णाटसँ मिथिलामे कर्णाटसँ कायस्थक कथित आव्रजन तथ्यात्मक नहि अछि। आगू कहलनि जे श्रीधरक पिता वटुदास लक्ष्मणसेनक संगे विक्रमपुरमे छलाह आ श्रीधर अपन गाम अन्धराठाढ़ीमे रहि सेन साम्राज्यमे सेवारत छलाह आ एहि प्रक्षेत्रक राजकाज सम्हारैत छलाह। बादमे सन् ११४२ ई.क लगीच ओ नान्यदेवक मन्त्री भेलाह आ एहि सम्पूर्ण क्षेत्रपर नान्यक निष्कंटक अधिकार भेल आ कमला अर्थात् लक्ष्मीक आदान-प्रदान कमलादानमे भेल जेकर स्मृतिमे अन्धराठाढ़ी शिलालेख स्थापित भेल। मंग्य दाससँ वटुदास पुत्र श्रीधर धरि ११ पीढीक वर्णन मिथिला- बङ्गालमे उपलब्ध अछि।

श्रीधरक कर्णाटसँ कथित आव्रजनसँ पूर्व मिथिलामे कायस्थ सबहक अस्तित्व छल। पाल नरेश

धर्मपाल (७६९-८०९ ई.) क समय ८४ सिद्धमे प्रथम शिष्य शबरपा शिष्य लुइपा कायस्थ छलाह। एहिना १०४५ ई.मे बौद्ध धर्मक प्रचारार्थ तिब्बत गेल तिब्बती ग्रन्थ स्तन-ग्युरमे संगृहीत ज्ञानोदयोपदेश केर लेखक बसाढ़ निवासी गयाधर कायस्थ कुलोद्भव छथि। कलचुरी कर्णदेव (१०४०-१०५० ई.) क दरवारमे उपस्थित आ रामायणक पाण्डुलिपि तैयार कयनिहार पं. गोपति कायस्थ छथि। अपसढ पुरालेख (६७२ ई.) केर लेखक गौड निवासी सूक्ष्म शिवा, एतहि केर चन्देल पुरालेख (९५४ ई.)क लेखक करणिक जद्धा आदि सेहो कायस्थ कुलोद्भव छथि। श्री अशोक कुमार वर्मा बादल स्तम्भ शिलालेख आ भट्ट भवदेवक शिलालेख सभक आधारपर सिद्ध कयने छथि जे बङ्गालमे ८ म, ९ म, आ दशम शताब्दीमे कायस्थक अस्तित्व छल। राढ, गौड, बसाढ भागलपुर, नेपाल आदिमे नान्यदेव कालसँ पूर्व कायस्थक उपलब्धता ई प्रमाणित करवा लेल यथेष्ठ अछि जे कथित कर्णाटी सभ मैथिल करण कायस्थक आदि पुरुष नै भ' सकैछ।

डा. रंगनाथ दिवाकर लिखैत छथिन्ह जे नान्यदेव कतेक ठाम स्वयंकेँ कर्णाट कुलभूषण कहने छथि, मुदा श्रीधर कतहु अपनाकेँ कर्णाटी नहीं कहने छथिन्ह।

नेपालक नेवार कसजू (कायस्थजू-कस्तजू-कसजू) कायस्थ सब अपन पूर्वज सिमरौनगढसँ पलायन भेल कर्णाटी हरसिँहदेवक शरणार्थी जमात संगे नेपाल उपत्यकामे आयल स्वीकार करैत छथिन्ह, मुदा अपनाकेँ कर्ण कायस्थ नै कहैत छथिन्ह।

त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित 'नेपालको ऐतिहासिक भूगोल' पुस्तकमे डा. जगदीश चन्द्र रेग्मी लिखने छथिन्ह जे मध्यकालक प्रमाणसँ कायस्थ आ वज्राचार्य (बौद्धमार्गी) एकेँ छलखिन्ह से बुझाइत छैक। ने.सं. ५५६ (तदनुसार १४४५ ई.)केँ पाण्डुलिपिमे कायस्थ वज्राचार्य भिक्षु ज्ञानरश्मिक नाम लिखल छैक।

मिथिलाक कर्णाट शासक सभ सनातन मत केर हिन्दू धर्मावलम्बी छलखिन्ह, ओहिसँ पूर्व केर शासक सेन सभ सेहो सनातन मतकेँ हिन्दू धर्मावलम्बी रहथिन्ह, मुदा सेनसँ पहिनेकेँ शासक पाल वंश बौद्ध मतकेँ अनुयायी/धर्मावलम्बी रहथिन्ह। नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा आयोजित सिमरौनगढ विषयक संगोष्ठी ग्रन्थमे मिथिला मूर्तिकला शैलीकेँ विशेषताक बारेमे लिखल छैक, जे पाल शैलीक अधिकांश मूर्ति सब आसनस्थ अवस्थामे रहल निर्माण भेल छैक, मिथिला-तिरहुतकला कालमे उमा महेश्वरकेँ अलावा अन्य कोनो मूर्ति आसनस्थ नै पाओल जाइत छैक।

सिमरौनगढमे हिन्दू देवी-देवताकेँ मूर्ति छैक, मुदा एकर बनावट आ शैली बङ्गालक पाल आ सेन शैलीसँ निकट बुझाइत छैक।

संगोष्ठी पुस्तकमे लिखल छैक जे पाल शासक धर्मपाल, देवपाल आ विग्रहपाल तृतीय सेहो मिथिलापर शासन कैने छलैक।

मिथिला दिग्दर्शन (लेखक इन्द्र नारायण झा, प्रकाशक विद्यापति परिषद, रामगढ)केँ पुरातात्विक और धार्मिक परिवेश खण्डमे लिखल छैक जे अन्धरा-ठाढ़ी ग्रामसँ तीन माइल पूरब मदनेश्वर शिव मन्दिर छैक। ओकर स्थापना बौद्ध धर्मावलम्बी अन्तिम पाल शासक मदन पाल केर हिन्दू धर्मक प्रति आस्था भेलाक कारणेँ भेल छैक। बौद्ध शासकद्वारा स्थापित शिवलिङ्गकेँ किछु कर्मकाण्डी-रुढिवादी शङ्काक दृष्टिसँ देखैत छलखिन्ह, ओ शिवलिङ्गकेँ असली नै मानैत रहथिन्ह, संगे शिवलिङ्गकेँ उपासक निकट सडरा ग्रामवासी ब्राह्मणकेँ सेहो हेय दृष्टिसँ देखैत छलखिन्ह।

ओही पुस्तकमे लिखल छैक जे अन्धरा-ठाढ़ीसँ दू माइल पश्चिम पस्टन गामक निकट एकटा उँच टीला छैक जे कोनो प्राचीन नगरक भग्नावशेषकेँ रुपमे मुसहरनियाँ डीहकेँ नामसँ लोकमे प्रचलित छैक। अहिमे बौद्धकालीन मूर्तिसब सिक्का, बर्तनकेँ टुकडा आ इँट पाओल जाइत छैक। भूमिगत भवनकेँ जे अवशेष छैक, ताहिमे एकजनियाँ छोट-छोट कोठरी देखाइत छैक, अनुमानत: ई कोनो बौद्ध विहारक अवशेष भ' सकैत छैक। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग एकर अधिग्रहण क' चुकल छैक।

विदेश्वर स्थान (लोहना रोड स्टेशन)सँ निकट दक्षिण ३ किमीकेँ दूरीपर श्री गौरीशङ्कर स्थान मन्दिर बनल छैक। ओ स्थान पाल शासक कालक छैक।

नेपालक वीरगञ्ज नगरमे भिस्वा चैत्यकेँ अवशेषक रुपमे एकटा उँच टीला छैक। मोरङ्गकेँ अनेक गाममे राजा रणपाल-धनपालकेँ नायक आ ग्राम देवताक रुपमे पूजा कैल जाइत छैक।

मिथिलाकेँ अनेक स्थानमे, वैशालीमे आ चम्पारणमे बौद्धकालीन पुरातात्विक अवशेष पाओल जाइत छैक।

मिथिलाक इतिहास (मैथिली अकादमी, पटना)मे लेखक डॉ. उपेन्द्र ठाकुर जनजीवन आ दशा खण्डमे लिखैत छथिन्ह जे बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्मक बीच सङ्घर्ष एहि युगमे पूर्ववत् विद्यमान रहल। ब्राह्मण लोकनि नालन्दा ध्वंसक दू शतक बाद धरि बौद्ध सभकेँ अपन धर्मक सभसँ पैघ शत्रु बुझैत छलखिन्ह। ज्योतिरीश्वर सेहो बौद्ध सभकेँ भ्रष्ट तथा भयङ्कर मानलनि अछि। शिवसिंहक मृत्युक अनन्तर राजा बनौलीक द्रोणवार मैथिल राजा पुरादित्यद्वारा सप्तरी (नेपाल)क बौद्ध जनता तथा ओकर शासक राजा अर्जुनक संहारक कथा एही तथ्यक द्योतक थिक।

बौद्ध धर्मावलम्बी आ हिन्दू धर्मावलम्बी बीच हिंसात्मक द्वन्द्वक इतिहास मिथिलामे नै देखल जाइत छैक, मुदा धार्मिक आ वैचारिक द्वन्द्व कर्णाट शासन कालतक कायम छलैक। अर्थात् कर्णाट शासन कालमे मिथिलाक जनता धार्मिक आ आस्थाकेँ आधार पर विभाजित छलैक। यद्यपि सबकेँ सनातन मत हिन्दूमे रुपान्तरित करवाक प्रयास भ' रहल छलैक।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे (लेखक डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश') धार्मिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिकोण खण्डमे लिखल छैक जे वस्तुत: मिथिलामे बौद्ध आ वैदिक संस्कृतिमे दीर्घकाल धरि सङ्घर्षक वातावरण बनल रहल ओ अन्तमे जखन बौद्ध धर्म पराभूत भए गेल तँ बौद्ध धर्म लोक प्रचलित सामाजिक तत्वकेँ मिथिलाक वैदिक संस्कृतिमे समाहित कए लेल गेल। चौदहम् शताब्दीक मिथिलाक सामाजिक पुनर्संगठनक विशिष्ट पुरोधा चण्डेश्वर ठाकुरक 'कृतिरत्नाकर'मे मिथिलामे प्रचलित वारहोमासक पावनितिहारक जे विवरण प्रस्तुत अछि ताहिमे बौद्ध धर्मक अनेक पावनिक ब्राह्मणधर्मक कृतिक रुपमे उल्लेख भेल अछि। भगवान बुद्ध हिन्दूधर्मक देवताक रुपमे ग्रहित भए चुकल छलाह।

जैन मत आ बौद्ध मतक व्यापक प्रसार आ हिन्दू मतक क्षय/ह्रासक अवस्थामे आदि शङ्कराचार्यद्वारा हिन्दू मतक पुनरुत्थानक लेल अनेक प्रयास विगतमे भेल रहैक।

ओ स्वयं पूरा भारत वर्षक भ्रमण कैलखिन्ह। सब स्थानक वस्तुस्थिति बुझैत आ शास्त्रार्थ करैत किछु विशिष्ट निर्णय कैलखिन्ह। जेना भारतवर्ष चारि कोणमे चारिटा मठ/पीठकेँ स्थापना कैलखिन्ह।

पूरब	*- गोवर्द्धन पीठ*	*- जगन्नाथपुरी (उडीसा)*
पश्चिम	*- द्वारिका पीठ*	*- द्वारिकाधाम (गुजरात)*
उत्तर	*- ज्योतिर्पीठ*	*- बद्रिनाथधाम (हिमालय)*
दक्षिण	*- शारदापीठ*	*- श्रृङ्गेरीमठ (वर्तमान कर्णाटक)*

एहि शङ्कराचार्य मठ/पीठकेँ विलक्षणता एहिसँ स्पष्ट होइत छैक जे पूरब, पश्चिम आ उत्तरक पीठ वैष्णव तीर्थस्थल छैक, दक्षिणक भगवती शारदा स्थान छैक। नेपाल सहित भारतवर्षक सम्पूर्ण पूर्वी क्षेत्रक कार्यक्षेत्र गोवर्द्धन पीठ अन्तर्गत छैक।

आदि शङ्कराचार्य स्मार्त गृहस्थक लेल पञ्चदेवता वा पाञ्चायन देवताकेँ अवधारणा, विधान आ परम्परा स्थापित कैलखिन्ह। ओ पञ्चदेवता छथिन्ह शिव, विष्णु, भगवती, सूर्य आ गणेश। सनातन मतक हिन्दू धर्मावलम्बी सभक मध्य यैह पाँचटा उपासनाक सम्प्रदाय कायम भेलैक, जे अद्यापि प्रचलित छैक। कोनो पूजा-आजा करैसँ पूर्व दिनकेँ समय पूजा सूर्यादि पञ्चदेवता इहागच्छ य: तिष्ठत आ सन्ध्या/ रात्रिक समय गणपत्यादि पञ्चदेवता इहागच्छ य: तिष्ठतसँ प्रारम्भ करबाक विधान बनलैक, जे अखनो धरि प्रचलनमे छैक।

मिथिलामे पञ्जी निर्माण करेबाक आधार किछु धार्मिक-सांस्कृतिक आ सामाजिक छलैक आ किछु राजनैतिक।

ऋग्वेद दशम् मण्डलकेँ सूक्त १०मे यम-यमी सम्वादमे लिखल छैक जे यमी यमसँ शारीरिक सम्बन्ध राखि क' गर्भधारण आ सन्तान उत्पन्न करबाक याचना करैत छथिन्ह मुदा यम कहैत छथिन्ह जे अहाँ हमर सहोदर बहिन छी, अतएव ई उचित नै छैक।

मनुस्मृति तेसर अध्याय श्लोक ५मे लिखल छैक जे पितृकूलमे ७ पुस्ता तथा मातृकूलमे ५ पुस्ता सपिण्ड बाहरकेँ असपिण्डमे बियाह करवाक चाही।

याज्ञवल्क्य स्मृति आचार अध्याय श्लोक ५३मे कहल गेल छैक जे, मातृकूलमे ५ पिढीसँ उपर आ पितृकूलमे ७ पिढीसँ उपरमे बियाह करवाक चाही। मुदा अन्य ऋषिगणकेँ कथन छैन्ह जे असपिण्ड सेहो सगोत्र भ' सकैत छैक, सगोत्रमे बियाह नै करवाक चाही। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमे सगोत्र आ मातृकूलक ५ पुस्ता अन्तर्गतकेँ बियाहकेँ निषेध कहने छथिन्ह।

मैथिल करण कायस्थक पाञ्जिक सर्वेक्षण पुस्तकमे मेजर श्री विनोद बिहारी वर्मा लिखने छथिन्ह जे मैथिल करण कायस्थक पाञ्जिमे हमरा गोत्रक कतहु उल्लेख नै भेटल।

जनकपुर निवासी स्व. पञ्जीकार श्री विश्वनाथ मल्लिक द्वारा लिखित (वि.सं. २०५४ श्रावण तदनुसार १६ जुलाई १९९७ ई.) एवं प्रकाशित पुस्तक मिथिला दर्पणमे कर्ण कायस्थक ८१ मूलकेँ लेल ३१ टा गोत्रक उल्लेख अछि। ३१ गोत्रमे ८१ मूल भेलासँ एकेँ गोत्रमे अनेक मूल देखाइत छैक। जेना वत्स गोत्रमे नरङ्गवाली, सहोरा आ घाँसीपाल। शाण्डिल्य गोत्रमे बलाइन, नरहरी आ रजेडापाल। अङ्गीरस गोत्रमे शिशव, कोडारी आ वडहरी मूल लिखल छैक।

तिरहुत-मिथिलाक कर्णाट शासक सब सनातन मतक हिन्दू धर्मावलम्बी रहथिन्ह। ओहीसँ पहिने मिथिला क्षेत्रमे प्रभाव रहल सेन सब सेहो सनातनी मतक हिन्दू धर्मावलम्बी रहथिन्ह। मुदा सेनसँ पूर्ववर्ती शासक पालवंश बौद्ध मतावलम्बी रहथिन्ह। जखन सन् १०९७ ई.मे नान्यदेव मिथिलामे सिमरौनगढ राजधानी निर्माण करैत रहथिन्ह, ताही समय दक्षिण बङ्गालमे विजय सेनक राज्य रहैक। ओहीसँ पहिने उत्तर बङ्गालमे पाल सबहक राज्य रहैक। पाल वंशक राजा रामपालकेँ अधीन मिथिला क्षेत्रक किछु भू-भाग सेहो रहैक। पाल राजा रामपालकेँ समयमे हुनकेँ अधीनस्थ रहल कैवर्त दिवोक आ भीमक विद्रोह भेल रहैक। विद्रोह दबा देलाक बावजूद पाल राज्य कमजोर भ' गेल रहैक। मिथिला आ सेन सबसँ कैवर्तक घनिष्ठ पड़ोसीक सम्बन्ध रहैक। अखनो नेपालक पूर्वी मोरङ्ग जिल्लामे कैवर्त सभक सघन बसोवास छैक आ ओ सब लाल दास नामान्त लिखैत छथि। विजयसेन पालवंशी गौड़ राजा रामपालक उत्तराधिकारी मदनपालकेँ हराक' बङ्गाल, तिरहुत, आसाम, कामरुप आ कलिङ्गमे अपन अधिकार कायम क' लेलकैक। पाल शासक सब बौद्ध मतावलम्बी रहैक।

मिथिलामे पञ्जी निर्माणक कारण आ औचित्य पुष्टि करबाक लेल पं. हरिनाथ उपाध्यायक पत्नीकेँ अग्नि परीक्षा आ चाण्डाल गामिनी नै होयवाक निर्णय विषयक कथा प्रचलित छैक। एकर वर्णन मिथिला दिग्दर्शन (लेखक इन्द्र नारायण झा)मे सेहो लिखल छैक। मुदा पञ्जी निर्माण करेवाक मूल उद्देश्य छलैक मिथिलाकेँ समस्त प्रजाजनकेँ एकीकृत करैत सनातन मतक हिन्दू धर्म प्रति प्रेरित एकबद्ध केनाई आ ओही माध्यमसँ स्थिर आ स्थायी शासन व्यवस्था कायम केनाई। दुर्भाग्यसँ पञ्जी निर्माणक आदेश ई.सन् १३१०मे देल गेलैक आ ओकरा पूर्णतासँ पहिने १३२३मे मिथिला नरेशकेँ शरणार्थीकेँ रुपमे पलायन करय पडलैक। अन्तत: सन् १३५३मे मात्र निर्माण भेल पञ्जी प्रकाशित भेलैक।

पञ्जी निर्माण भ' प्रकाशित भेल अवस्थामे कर्णाट शासन व्यवस्थाकेँ अन्त भ' गेल छलैक। करद राज्य शासककेँ रुपमे कर्णाट हरसिँहदेवक राजसभामे रहल ओइनवार वंशक श्री कामेश्वर ठाकुरकेँ शासन भार सौंप देल गेल छलैक। मिथिला-तिरहुत राज्य आन्तरिक रुपें स्वायत्त छलैक मुदा वाह्य रुपमे दिल्लीकेँ सुल्तानकेँ अधीन।

महत्वपूर्ण विषय ई देखाइत छैक जे ओई अवस्थामे सेहो अधिकांश वैह राजसभा सदस्यगण, धर्माधिकारी आ पदाधिकारीगण रहथिन्ह जे कर्णाट शासनक अवधिमे रहथिन्ह।

अहिठाम पञ्जी निर्माण पश्चात् मिथिलामे रहल कायस्थ सबकेँ की भेलैक सैह सन्दर्भ मात्र चर्चा करब उचित बुझाइत अछि।

ओहि समय मिथिलामे रहल स्थानीय आ आप्रवासी विभिन्न मतमे विभाजित कायस्थक पञ्जीकरण/अभिलेखीकरण मार्फत् एकीकृत करैत एकटा समुदाय (Cluster)मे आबद्ध क' देलकैक। समस्त कायस्थजन सनातन हिन्दू धर्मावलम्बी भ' गेलखिन्ह।

ई. सन् १०९७सँ १३२३ ई. धरि करीब २२६ वर्ष कर्णाट शासक अधीन कार्यरत् आ सेवारत रहलासँ समस्त कायस्थकेँ नया नाम, पहिचान आ परिचय कर्णकायस्थक रुपमे तात्कालीन ओइनवार शासक, हुनकर पदाधिकारी आ धर्माधिकारी सब कायम क' देलखिन्ह।

समस्त कायस्थजनकेँ तात्कालीन धर्माधिकारी सब गुरु-पुरोहित-पात्र सब पांजिमे लिखल मूल आ डेरा अनुसार अपन-अपन शिष्य यजमानकेँ रुपमे आपसमे विभाजित करैत यजमनिका कायम क' देलखिन्ह। कायस्थ यजमान-शिष्यकेँ कुलदेवी/कुलदेवता आ इष्ट देवताक उपासना करवाक मन्त्र-दीक्षा देलखिन्ह। धर्माधिकारी गुरुजनकेँ जे कुलदेवी या कुलदेवता रहथिन्ह सैह उपासना करैकेँ लेल शिष्यकेँ दीक्षा आ निर्देश करैत प्रत्येक परिवारमे एकटा सिरागू स्थापना करबाक आ ओकर नित्य नैमित्तिक पूजा करबाक विधान बना दीक्षा आ निर्देशित कैलखिन्ह।

धर्माधिकारी गुरुजनकेँ जे इष्टदेव रहथिन्ह सैह शिष्यक सेहो इष्टदेव भेलखिन्ह। मिथिलामे ओही समय इष्टदेवक रुपमे महादेव शिवक प्रचलन रहैक अर्थात् शैव सम्प्रदाय रहैक।

ताहिना ब्रह्म स्थानक स्थापना करैत ओहि स्थानकेँ ग्राम देवताक रुपमे पूजा उपासना करबाक उपदेश दैलखिन्ह (अखनो तक ई प्रचलित छैक जे ब्रह्म स्थानमे भगवान ब्रह्माकेँ पूजा होइत छैक, त्रिदेवमे ब्रह्मा, विष्णु, महेश मानल जाइत छथिन्ह, मुदा पञ्चदेवता वा पाञ्चायन देवतामे ब्रह्माकेँ स्थान नै अवैत छैक। आ मन्दिरकेँ रुपमे राजस्थानकेँ पुष्करकेँ अलावा अन्यत्र कतौ ब्रह्माजीकेँ मन्दिर नै देखल गेल छैक)। वस्तुत: ब्रह्म स्थान धर्माधिकारी गुरु-पुरोहित वर्गकेँ पितर-पितृ स्थान छैक। आ देवता-पितरकेँ रुपमे ब्रह्म स्थानमे सेहो पूजा करवाक चलन छैक।

मुदा धर्माधिकारी गुरुजन अपन कायस्थ शिष्य यजमानकेँ गोत्र नै देलखिन्ह। शास्त्र अनुसार जिनका अपन गोत्र स्मरण नै होइक, ओ कि अपन गुरुकेँ गोत्र अथवा सर्वमान्यगोत्र काश्यप गोत्र प्रयोग करवाक चाही।

बौद्ध मतमे वर्ण-जाति वा गोत्रकेँ प्रयोग नै होइत छैक, मुदा सनातन धर्ममे वर्ण-जाति तथा गोत्रकेँ प्रयोग होइत छैक, अर्थात् एकरा वर्णाश्रम धर्म कहल गेल छैक।

गौतम बुद्ध अर्थात् सिद्धार्थ गौतम एकटा राजकुमार छलखिन्ह, बुद्धत्व प्राप्तिकेँ बाद उपदेश देवय लेल जखन ओ भ्रमणमे निकललखिन्ह, तखन हुनकर स्वागत सत्कार एकटा राजकुमारकेँ रुपमे सामन्त आ जमिन्दार सब कर लगलखिन्ह, हुनकर उपदेशसँ प्रभावित भ' ओ सब हुनकर अनुयायी होइत गेलखिन्ह, राजा-महाराजा बौद्ध मतकेँ अनुयायी भेलासँ प्रजाजन सेहो अनुयायी भ' गेलखिन्ह। गौतम बुद्ध धार्मिक रुपान्तरण वा धर्मान्तरण नै करौने रहथिन्ह।

बौद्ध धर्म/मतकेँ अवसान भेलाक बाद जखन पुन: हिन्दू धर्म सनातन मतकेँ उत्थान भेलैक आ जनमानस सनातन धर्ममे रुपान्तरण होमय लगलैक, तखन धार्मिक विधान अनुसार हुनका सबकेँ वर्ण, जाति आ गोत्र निर्धारण करवाक सेहो आवश्यकता पड़लैक।

मिथिलाक धर्माधिकारी सब पहिनेसँ सनातनी रहथिन्ह, अतएव हुनकर सबकेँ वर्ण-जाति-गोत्र निर्धारित रहैन्ह। बौद्ध मतसँ सनातन हिन्दू मतमे रुपान्तरित भेल राजा-महाराजा, सामन्त तथा जमिन्दार सभ प्रभावशालीवर्ग धर्माधिकारीकेँ माध्यमसँ अपन वर्ण आ गोत्र निर्धारण करवा लेलखिन्ह। तत्समय मिथिलामे रहल क्षत्रिय-राजपूत सब सनातनी रहथिन्ह, अत: हुनका सबहक गोत्र निर्धारित रहैक। मुदा ओकर अलावा अन्य किनको गोत्र निर्धारण नै भेलैक। कायस्थ समुदायक सेहो गोत्र निर्धारण नै भेलैक। ओ सब अखनो धरि सम्पूर्ण कायस्थ समुदाय एकेटा सर्वमान्य गोत्र काश्यप प्रयोग करैत छथिन्ह।

पञ्जी निर्माणक पश्चात कायस्थ समुदायक स्थितिमे आयल एकटा महत्वपूर्ण परिवर्तन छलैक वैवाहिक निर्णय आ अवस्था। बियाहक लेल अधिकार-अनधिकार, स्वजन-अस्वजन, भलमानुष-गृहस्थ, उँच-नीच, उतेढ़क निर्णयकर्ता भ' गेलखिन्ह पञ्जीकार। अर्थात् ओ कायस्थ समुदायक पारिवारिक-सामाजिक दशा आ दिशाकेँ महत्वपूर्ण निर्देश कैनिहार स्थानीय मिथिलाकेँ शासक आ धर्माधिकारीद्वारा संरक्षित पदाधिकारी भ' गेलखिन्ह।

परम्परागत रुपमे कायस्थ समुदाय साक्षर, शिक्षित आ योग्य रहथिन्ह, मुदा हिनका सबकेँ मध्यम आ निम्न स्तरकेँ प्रशासनिक/राजकीय सेवामे नियुक्ति आ कार्यरत रहबाक परिस्थिति छलैक। ओही कालखण्डमे उच्च स्तरकेँ पदाधिकारीकेँ रुपमे कोनो कायस्थक नाम इतिहासमे नै देखाइत छैक। अतएव कायस्थ समुदाय आर्थिक-सामाजिक आ सांस्कृतिक रुपें सक्षम नै रहथिन्ह, निर्वाहमुखी जीवन रहल बुझाइत छैक, अत: मौन स्वीकृति दैत रहल होइथिन्ह।

मिथिलामे बियाह संस्कारकेँ लेल दूटा पद्धति प्रचलित छैक –

(१). छान्दोग्य आ (२). वाजसनेयी

विद्यापति काव्यालोचन (प्रकाशक मैथिली अकादमी, पटना, मार्च १९७९) पुस्तकक कुलीन एवं विद्वान पूर्वज शीर्षकमे छान्दोग्य पद्धतिक रचयिता श्री वीरेश्वरकेँ कहल गेल छैक। हिनका देवादित्य कुलोद्भव आ कर्णाट राजा शक्रसिंहदेव आ हरसिंहदेवक कार्यकालक मन्त्री कहल गेल छैक।

छान्दोग्य एकटा प्रमुख एवं महत्वपूर्ण उपनिषद छैक। एहि उपनिषदक प्राक्कथन (उपनिषद रहस्य, एकादशोपनिषद व्याख्याकार महात्मा नारायण स्वामी, प्रकाशक विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, २०१८ संस्करण) ग्रन्थमे कहल गेल छैक जे ई सामवेदक एक व्राह्मण छान्दोग्य छैक जाहिमे १० प्रपाठक छैक। जाहिमेसँ प्रथम दू प्रपाठक व्राह्मण मन्त्र आ बाँकी आठ छान्दोग्य उपनिषद कहल जाइत छैक।

देवादित्य कुलोद्भव वीरेश्वरक तेसर भाइ गणेश्वरकेँ पुत्र रामदत्त द्वारा वाजसनेयी पद्धतिकेँ रचना भेल कहल गेल छैक।

नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित संस्कृत-नेपाली शब्दकोषमे वाजसनेयीकेँ शब्दार्थ (१). याज्ञवल्क्य ऋषि (२). शुक्ल यजुर्वेदी कहल गेल छैक। अर्थात् ऋषि याज्ञवल्क्यकेँ दोसर नाम वाजसनेयी छैक।

महर्षि याज्ञवल्क्य प्रदत्त ज्ञानकेँ रुपमे वृहदारण्यक उपनिषदकेँ कहल गेल छैक। उपनिषद रहस्य, एकादशोपनिषद ग्रन्थमे एहि उपनिषदक सन्दर्भे डा. सच्चिदानन्द शास्त्री लिखने छथिन्ह जे यजुर्वेदकेँ दूटा शाखा छैक (१). माध्यान्दिनी आ (२). काण्व। वृहदारण्यक दोसर काण्व शाखाकेँ उपनिषद मानल जाइत छैक। ई विस्तृत आ पैघ भेला कारणे वृहद आ वनमे कहल गेलासँ आरण्यक कहल गेल छैक। अहिमे कर्मकाण्ड, उपासना आ ब्रह्मविद्याकेँ रहस्य वर्णित छैक।

धार्मिकग्रन्थ-स्मृतिमे मनु सहित अनेको ऋषिमुनि द्वारा प्रदत्त स्मृति छैक, ताहिमे महर्षि याज्ञवल्क्यद्वारा प्रदत्त स्मृतिकेँ वर्तमान कालोमे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण मानल गेल छैक।

याज्ञवल्क्य स्मृतिकेँ विषय अनुक्रमणिका अनुसार तीनटा अध्याय लिखल छैक (१). आचार अध्याय (२). व्यवहार अध्याय (३). प्रायश्चित अध्याय। (याज्ञवल्क्य स्मृति, सम्पादक एवं व्याख्याकार, डा. केशव किशोर कश्यप, चौखम्वा, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी वि.सं. २०६५ ई.सन् २००९)

पञ्जी निर्माणक निर्णयक सन्दर्भे मिथिलामे प्रचलित पं. हरिनाथ उपाध्यायकेँ कथासँ ई बुझाइत छैक जे तत्कालीन समाजमे वर्णशङ्कर (चाण्डाल)क विस्तार भ' रहल छलैक।

अतएव याज्ञवल्क्य स्मृतिकेँ आधारपर रचना भेल। छान्दोग आ वाजसनेयी बियाह पद्धति अनुसार पञ्जी द्वारा निर्धारित वर-वधूकेँ बियाह सम्बन्ध होमय लगलैक।

मुदा कर्णकायस्थक बियाह पञ्जी द्वारा निर्धारण भेल अनुमतिक बावजूद मूल बियाह पद्धति द्वारा नै होइत छैक। हुनका सबकेँ सरलीकृत आ संक्षेपमे रचित सुगम बियाह पद्धति अथवा शूद्र बियाह पद्धति द्वारा सम्पन्न करेवाक प्रचलन छैक।

पञ्जीकरणकेँ माध्यमसँ मिथिलाकेँ कर्णकायस्थ सनातन धर्ममे रुपान्तरित भ' गेल छलखिन्ह। तदुपरान्तकेँ शासक वर्ग आ सभासद धर्माधिकारी सब सनातन धर्मकेँ गुरु-पुरोहित रहथिन्ह।

मिथिलामे कर्णकायस्थक मूल आ डेराकेँ आधारपर गुरु-पुरोहित द्वारा कुलदेवी/कुलदेवता सिरागू घर कायम भ' गेलैक। ताहिना मन्त्र आ दीक्षा द्वारा इष्ट देवता कायम भ' गेलैक। ग्राम देवताकेँ रुपमे ब्रह्म स्थान सेहो कायम भ' गेलैक। वस्तुत: ब्रह्म स्थान धर्माधिकारी गुरु-पुरोहित द्वारा स्थापित पितृ-पितर स्थान छैक।

कालक्रममे सनातन हिन्दू धर्ममे किछु विकृति जेना (१). रुढिवादिता (२). धार्मिक शोषण (३). अन्धविश्वास आबय लगलैक।

एहि कारणसँ बहुत कर्णकायस्थ अपन गुरु परिवर्तन करैत सनातन धर्मकेँ अन्य सम्प्रदाय-उपसम्प्रदाय अर्थात् शैवसँ वैष्णव अथवा शाक्तसँ वैष्णवमे रुपान्तरित होमय लगलखिन्ह। उदाहरणक लेल पञ्चदेवतामे एकटा भगवान विष्णुकेँ अवतार राम-कृष्ण वा हुनकर संगिनी भगवती लक्ष्मी, भगवती सीता वा भगवती राधासँ तथा सेवक बजरङ्गबलीसँ प्रेरित होइत वैष्णव भ' गेलखिन्ह।

ताहिना सनातन हिन्दू धर्मकेँ मूल पाँच सम्प्रदायसँ जुड़ल उप-सम्प्रदाय सबमे दीक्षित होइत ओकर अनुयायी भ' गेलखिन्ह।

मिथिलाकेँ कायस्थ सभ अपन शिक्षा आ रोजगारकेँ लेल मिथिला क्षेत्रसँ अन्यत्र जाय लगलाह, तखन ओही क्रममे हुनका सबकेँ अन्य क्षेत्रक समाज, धार्मिक विचार आ सम्प्रदाय सबसँ सम्पर्क भेलैन्ह। सनातन धर्मक कोनो सम्प्रदाय अथवा उप-सम्प्रदायमे दीक्षा मन्त्र लेवाक बावजूद गाममे सिरागू आ कुलदेवीकेँ नित्य पूजा यथावत रहलैक, अद्यापि छैक। मुदा कुलदेवी या देवताकेँ पूजामे बलि प्रदान करवाक पद्धतिमे किछू परिवर्तन भ' गेल छैक।

ग्राम देवताकेँ रुपमे मिथिलामे ब्रह्म स्थान अर्थात् पितर स्थानक पूजाक प्रचलन अखनो छैक। कतेको स्थानमे जातीय नायक सलहेस आ दिनाभद्रीकेँ ग्राम देवताकेँ रुपमे पूजा करवाक प्रचलन सेहो छैक।

ग्राम देवता नगर देवतामे स्थान भेद छैक मुदा सब सनातन सम्प्रदाय अन्तर्गते छैक। उदाहरणकेँ लेल नेपालक मोरङ्ग विराटनगरमे ग्रामदेवी/नगरदेवीकेँ रुपमे भगवती संसारी माई स्थान छैक, ताहिना राजविराजमे राजदेवी, जनकपुरमे राजदेवी, वीरगञ्जमे गहवा माई छैक।

काशी-वाराणसीकेँ नगरदेवता कालभैरव छथिन्ह।

मिथिलामे आख्यान प्रचलित छैक जे हम सव भगवान चित्रगुप्तक वंशज छी। चित्रगुप्तकेँ बारह सन्तानमेसँ चित्रचरण/चित्रचारुकेँ नाम कर्ण कायस्थमे रुपान्तरण भेल छैक। कर्णाटसँ मिथिलामे आयल चित्रचारु कायस्थ कर्ण कायस्थ भ' गेलखिन्ह, तखन त' कर्णाटमे रहल सब अखनो चित्रचरण वा चित्रचारु हेथिन्ह। मुदा एहन प्रमाण नै भेटि रहल छैक।

सनातन हिन्दू धर्मक प्रचार प्रसार आ प्रभाव विस्तारकेँ लेल अनेको कथा आख्यानक रचना मध्यवर्ती कालमे भेल छैक। जाहिमे प्रमुख छैक– अठारह टा पुराण आ चित्रगुप्तक वंशजक कथा आख्यान।

अठारहटा पुराण सब शैव, वैष्णव आ शाक्त सम्प्रदाय मतकेँ प्रेरक छैक। उदाहरणार्थ ब्रह्मवैवर्तपुराणमे भगवतीक प्रादुर्भाव स्वरुप आ महिमाकेँ वर्णन छैक, मार्कण्डेय पुराणमे दुर्गा सप्तशतीक पाठ छैक, गरुड पुराणमे पितरकेँ वैकुण्ठवासक कामना सहितक श्राद्ध पद्धति (वैष्णव)क विवरण छैक। सनातनधर्मी सब भगवान विष्णुकेँ नवम् अवतारमे गौतम बुद्धकेँ कायम क' देने छथिन्ह।

मैथिली साहित्यिक इतिहासमे लिखल छैक जे शिवशक्ति-भक्तिक तुलनामे विष्णु भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। विष्णु सम्बन्धी व्रत-उपवास एखनहुँ एतए प्रचलित अछि, ताहिसँ सिद्ध होइत अछि जे मिथिलहु मध्य वैष्णव भक्ति महत्वपूर्ण मानल जाइत छल।

आगू लिखल छैक जे गृहस्थाश्रमकेँ त्यागि ओ सांसारिक सम्बन्धकेँ विच्छिन्न कए जे वैरागी बनि जाइत छैथि, माछ ओ मांसकेँ छोडि जे तुलसीक माला धारण कए लेने छैथ से मिथिलामे शाक्त होइतहुँ वैष्णव कहबैत छथि। वस्तुत: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्य धारा शिव औ शाक्त-मूलक थिक। सनातन हिन्दू धर्मक प्रयोग आ प्रभावमे ई देखबामे अवैत छै जे मतकेँ सम्प्रदाय-उपसम्प्रदाय-पंथ तथा अनेक विचारसँ सामञ्जस्य आ समन्वय सनातन हिन्दू धर्मक विशेषता आ विलक्षणता छैक।

सनातनधर्मी स्मार्त गृहस्थ सब शाक्त, शैव आ वैष्णवकेँ संगे पूजा उपासना करैत छथिन्ह। जाहिना दुर्गा पूजा आ शिवरात्रि मनवैत छथिन्ह, ताहिना राम नवमी आ कृष्ण जन्माष्टमी सेहो। सत्यनारायण भगवानकेँ पूजा प्रत्येक संस्कारगत कर्मकाण्डक संगे अनिवार्य रहल छैक।

चित्रगुप्त कथा आख्यानमे कहल गेल छैक जे भगवान ब्रह्माकेँ कायासँ उत्पन्न भेल भगवान चित्रगुप्तकेँ वर्ण पञ्चम छैक। जखन कि ऋग्वेद (१०।९०।१२) आ भगवदगीता (४।१३)मे चारिएटा वर्णक वर्णन भेल छैक। अहि आख्यानद्वारा चित्रगुप्तकेँ वर्णविहीन कहल गेल छैक। कायस्थ लोकनि अपनाकेँ भगवान चित्रगुप्तक सन्तान आ क्षत्रिय वर्णकेँ मानैत कतबो गर्व करियौक, मुदा कथा आख्यानक भाष्य वर्णविहीन मानने छैक।

मनुस्मृतिक भाष्यकार-अनुसन्धानकर्ता एवं समीक्षक श्री डा. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति,अ गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, प्रकाशक - आर्ष साहित्य प्रचार ट्रष्ट दिल्ली) अपन ग्रन्थक प्राचीन भारतीय साहित्यमे प्रक्षेप की प्रवृत्ति का इतिहासमे शीर्षकमे लिखने छथिन्ह जे महाभारत युद्ध पश्चात् महर्षि व्यास जे काव्य लिखने रहथिन्ह ओकर नाम ८८०० श्लोककेँ जय काव्य छलैक। व्यास शिष्य वैशम्पायन एकरा बढाक' २४ हजार श्लोक क' देलखिन्ह आ नाम देलखिन्ह भारत संहिता, ताहिना सौती एकरा एक लाख श्लोककेँ महाकाव्य बना देलखिन्ह। एहि रुपें जयकाव्यसँ भारत आ भारतसँ महाभारत महाकाव्य बनबाक यथार्थ कथा छैक। अहिना गरुड पुराण सहित अन्य पुराणमे सेहो भेल छैक।

भाष्यकार लिखैत छथिन्ह जे दोसर संस्कृतिसँ जे सभ वैदिक संस्कृतिमे सम्मिलित भेलखिन्ह ओ सब अपन स्वार्थ साधनकेँ लेल भारतीय ग्रन्थ (धर्मग्रन्थ-पुराण)मे प्रक्षेप (मिलावट) केने छथिन्ह।

मिथिलाकेँ जे कायस्थ अपनाकेँ सनातन मतसँ पूर्णतया पृथक करैत अन्य सम्प्रदायमे दीक्षित भ' गेलखिन्ह, जेना भरवाडा बिअर मूलकेँ सत्यनारायण दास कवीरमतकेँ सम्प्रदायकेँ अनुयायी भ' गेलखिन्ह ओ सनातनसँ सम्बन्धित सम्पूर्ण पूजा-उपासना, देवी-देवता, त्यागि देलखिन्ह, ओ घरमे रहल सिरागूकेँ समेटिक' गङ्गाजीमे प्रवाहित क' देलखिन्ह।

मिथिलाकेँ कर्ण कायस्थक बियाह रामदत्त रचित वाजसनेयी बियाह पद्धतिकेँ मूल विधि अनुसार नै होईत छैक। बल्कि वाजसनेयी पद्धतिक संक्षिप्त विधि अनुसार होइत छैक। बाजारमे उपलब्ध ओई पद्धति पोथीक नाम छैक 'सुगम बियाह पद्धति' सम्पादक छथिन्ह पं.(डा.) शशिनाथ झा, विद्या वाचस्पति, दीप, मधुबनी, उर्वशी प्रकाशन, पटना। एकरो दोसर संस्करणमे शूद्र बियाह पद्धति सेहो लिखल छैक।

कायस्थ सभक विधि-व्यवहार संस्कारमे आम मैथिले जकाँ दुर्वाक्षत मंत्रक प्रयोग होइत अछि। मैथिल संस्कारमे प्रचलित दुर्वाक्षत मन्त्र यजुर्वेदक बाइसम अध्यायक बाइसम मन्त्रसँ लेल गेल छैक जाहिमे लिखल छैक-

ऊँ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथी जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु: सप्ति: पुरन्ध्रिर्योषा: जिष्णू रथेष्ठा: सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधय: पच्यन्ताम् योगक्षेमो न: कल्पताम्।

मिथिलाकेँ पञ्चाङ्गमे यजुर्वेदक उक्त मन्त्रक अतिरिक्त दू पद आर जोड़ि देल गेल छैक- मन्त्रार्था: सिद्धय: सन्तु: पूर्णा सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

एहि मंत्रमे दीर्घायु भव सौभाग्यवती भव जोड़ि वर-वधूकेँ आशीर्वाद देल जाइत अछि। ओना एहिमे राष्ट्र कल्याणक कामना अछि कोनो वर-वधू लेल आशीर्वाद नहि।

सारस्वत साधक : डा.सदन मिश्र

नवीन कुमार झा 'शरद'

सम्पर्क : मोकामाघाट, पटना
मोबाइल : +91 9955089655

कोलिखाहा, (भटपुरा), मनीगाछी, दरभंगाक रहनिहार नवीन कुमार झा 'शरद' जीक 'उपवन' (हिन्दी कविता-संग्रह) वर्ष 2019 आ बदलैत गाम (मैथिली कविता-संग्रह) वर्ष 2020मे प्रकाशित भेलनि। बरमहल हिनक कविता, कथा, गीत, गजल, आलेख आदि आज, सेंटिनल, संगम, काव्य मंजरी, वसुंधरा, खनन भारती, आजकल, श्रवंती,मिथिला मिहिर, जानकी, मैथिली दर्पण, देसिल बयना आदि पत्र-पत्रिकादिमे मैथिली आ हिन्दीमे प्रकाशित होइत रहै छनि। विद्यालय पत्रिका (के वि.खानापाड़ा, गुवाहाटी, असम) विद्यालय पत्रिका केन्द्रीय विद्यालय, गढ़हरा, बरौनीकेँ कुशल सम्पादन कएने छथि। सम्प्रति केन्द्रीय विद्यालय, सी.आर.पी.एफ. मोकामाघाट, पटना (बिहार)मे हिन्दी शिक्षकक रूपमे कार्यरत छथि।

मिथिलाक ग्राम रत्न सरिसब-पाही प्राचीन कालसँ माँ शारदेक साधक लोकनिक सारस्वत साधनाक केन्द्र रहल अछि। प्राचीन कालमे म.म.भवनाथ मिश्र प्रसिद्द अयाची मिश्र, म.म. शंकर मिश्र, म.म. सचल मिश्र,एवं म.म.मोहन मिश्रक नाम सर्वोपरि अछि। आधुनिक कालमे शास्त्रार्थ मार्तण्ड पं. मार्कण्डेय मिश्र, कविशेखर बदरीनाथ झा, म.म.डा. सर गंगानाथ झा, डा.अमरनाथ झा, अमर गल्पकार मनमोहन झा, महाकवि प्रो. मुक्तिनाथ झा, पंडित तेजनाथ झा, महाकवि डा. महिनाथ झा, एवं डा. विश्वेश्वर मिश्र प्रभृत्ति विद्वानक एक सुदीर्घ परम्परा अछि। एहि क्रमके आगू बढ़ेबामे संलग्न छथि लोकप्रिय एवं सुयोग्य शिक्षक, दूरदर्शी सम्पादक एवं मैथिली साहित्यमे नाटककारक रूपमे समादृत डा.सदन मिश्र।

जन्म, शिक्षा एवं कर्ममय जीवन- डा.सदन मिश्रक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत पाहीटोल, सरिसब – पाही ग्राममे 02 मार्च 1936 ई. कैँ भेल छलनि। हिनक पिताक नाम पं. सोमनाथ मिश्र एवं मायक नाम वागीश्वरी देवी छलनि। हिनक प्रारम्भिक शिक्षा गामहि पर बलौर निवासी देवनारायण दासक देख-रेखमे भेलनि। 1952 ई.मे लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसबसँ मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण कएल। गोयनका कॉलेज, सीतामढ़ीसँ 1954 ई.मे आई.ए.,1956 ई.मे बी.ए. (हिन्दी प्रतिष्ठा) एवं 1958 ई.मे बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरसँ एम.ए. केर परीक्षा हिन्दी विषयसँ उत्तीर्ण कएल। बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरसँ पी-एच.डीक उपाधि प्राप्त कएल। हिनक शोधक विषय छल "अष्टछाप के कवियों की श्रृंगार एवं भक्ति साधना" तथा शोध निर्देशक छलाह सी.एम.कॉलेज, दरभंगा केर तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष डा.पूर्णानन्दलालदास। हिनक विवाह मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ अमर कथाशिल्पी मनमोहन झाक पुत्री प्रतिभा मिश्रसँ 1954 ई.मे भेल छलनि।

जून 1958 ई.मे डा.मिश्र पूसा हायर सेकेण्डरी स्कूलमे हिन्दी शिक्षकक पद पर नियुक्त भेलाह। एहि विद्यालयमे 03 दिसम्बर 1959 ई. तक कार्यरत छलाह। 04 दिसम्बर 1959 ई. कैँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय, सरिसब-पाहीमे हिन्दीक

प्रवक्ताक पद पर योगदान कएल। एहि महाविद्यालयमे लगभग अड़तीस वर्ष धरि हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर सेवा कए 31 दिसम्बर1997 ई.कैँ विश्वविद्यालय प्रोफ़ेसर सह प्रभारी प्रधानाचार्यक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह।

अध्यापनक अतिरिक्त डा. सदन मिश्रक कार्य क्षेत्र बहुमुखी छल। ई एन.सी.सी.मे चौबीस वर्ष तक अधिकारीक रूपमे कार्यरत छलाह। सेवानिवृत्तिक समय ई मेजर पद पर आसीन छलाह। किछु दिन एन.सी.सी.क 34 बिहार बटालियनक प्रभारीक पद पर सेहो रहलाह। एन.सी.सी. अधिकारीक रूपमे कामटी, नागपुर, मीसामारी आ वर्धामे प्रशिक्षण प्राप्त करैत मेजर पदकैँ सुशोभित कएल।

डा.मिश्र नन्दन संस्कृत महाविद्यालय, इसहपुरमे लगभग पाँच वर्ष नि:शुल्क रूपसँ अध्यापनक सेवा देल। 1961ई. सँ 1985 ई. तक आर्यावर्त आ इण्डियन नेशन समाचार पत्रक निज संवाददाताक रूपमे कार्य कएल। लगभग नौ वर्ष तक आकाशवाणी दरभंगाक सलाहकार समिति केर सदस्य, छह वर्ष तक डॉ.सर गंगानाथ झा वाचनालय, सरिसब-पाहीक सचिव, तथा 1998 ई. तक लक्ष्मीवती संस्कृत महाविद्यालय, सरिसबक सचिवक रूपमे सफलतापूर्वक अपन कर्तव्यक निर्वहण कएल।

डा.सदन मिश्र द्वारा मैथिलीमे दू गोट मौलिक आ तीन गोट संपादित पोथी प्रकाशित अछि। एकर अतिरिक्त हिनका द्वारा दू गोट अभिनन्दन एवं स्मृति ग्रन्थ, एक स्मारिका एवं एम.एल.एस.कॉलेज सरिसब –पाहीक पत्रिका 'अयाची' क सम्पादन कएल गेल अछि।

प्रकाशित पोथी

1. राजनर्त्तकी (मैथिली नाटक) -1991 ई.
2. म.म.भवानी नाथ मिश्र (प्रसिद्द सचल मिश्र) - 2005 ई.

संपादित पोथी

(1) अश्रुकण – मनमोहन झाक कथा संग्रह द्वितीय संस्करण -1976 ई.
(2) गंगापुत्र – मनमोहन झाक कथा संग्रह –2005
(3) कथा यात्रा – मनमोहन झाक समग्र कथा संग्रह- 2006 ई.

अभिनंदन-स्मृति ग्रन्थ ओ महाविद्यालय पत्रिकाक सम्पादन

(1) आनन्द मंदाकिनी – प्रो.आनन्द मिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ -2000ई.
(2) अमर कथा शिल्पी मनमोहन झा स्मृति ग्रन्थ – 2010 ई.

स्मारिका एवं पत्रिका

(1) स्मारिका – अ.भा.मैथिली साहित्य परिषद् अधिवेशन -1969
(2) अयाची – महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय, सरिसब-पाहीक गृह पत्रिका

प्रकाशित पोथीक संक्षिप्त विवरण

डॉ. सदन मिश्र द्वारा मैथिलीमे प्रकाशित मौलिक पोथीक संक्षिप्त विवरण एहि प्रकारेँ अछि –

1. राजनर्त्तकी (मैथिली नाटक)- पल्लव प्रकाशन, दरभंगा सँ डॉ.अजय मिश्र द्वारा 1991ई.मे 'राजनर्त्तकी' नाटकक प्रकाशन कएल गेल अछि। एहि नाटकक दोसर संस्करण 2022 ई.मे प्राची डिजिटल पब्लिकेशन, नैनीतालसँ श्रीमती दीपा मिश्रक सम्पादनमे प्रकाशित भेल अछि।

'राजनर्त्तकी' नाटक तीन अंक आ चौदह दृश्यमे विभाजित अछि। एहि नाटकक पहिल अंकमे पाँच दृश्य, दोसरमे चारि एवं तेसरमे पाँच दृश्यक निरूपण कएल गेल अछि। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखल एहि

नाटकमे मिथिलाक साहित्य, संस्कृति, लोकमे देशक प्रति प्रेम,राजनीतिक साकांक्षता एवं विद्वत परम्पराकेँ सहज रूपेँ चित्रित करैत मिथिलाक राजनर्त्तकी मनकी अर्थात मीनाक्षी द्वारा अपन मातृभूमिक लेल कएल गेल आत्म- बलिदानक चित्रण अछि।

1070 ई.मे कोनसोनाक राजा विजयसेनक पुत्र राजकुमार बिल्लालसेन द्वारा मिथिला पर आक्रमण कए महाराज नान्यदेवकेँ बन्दी बनाओल जाइत अछि। एतए लूट-पाट मचाओल जाइत अछि, जकर मुख्य उद्देश्य छल मिथिलाक प्राचीन ग्रन्थ, साहित्य, दुर्लभ पांडुलिपि, ताड़पत्र आदि लूटिकए बंगाल लए जाएब। ओहि समयमे देश-विदेशक विद्यार्थी मिथिला आबि, एतऽ चौपाड़िमे न्याय, दर्शन, साहित्य ओ व्याकरण विषयक अध्ययन करैत छलाह। मिथिलाक राजनर्त्तकी मनकी अपन आत्म बलिदान दए, प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ, पांडुलिपि एवं ताड़पत्र सभ सुरक्षित बचा लैत अछि। मिथिलाक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत आ ज्ञान परम्पराक जनतब नब पीढ़ीक लेल परम आवश्यक छैक।

एहि पोथीक प्रसंग मिथिला विश्वविद्यालयक भूतपूर्व मैथिली विभागाध्यक्ष डा.नवीनचंद्र मिश्र लिखने छथि-"ई एक गोट ऐतिहासिक नाटक थिक जाकर कथावस्तु आधारित अछि मिथिलाक लोक स्मृतिमे जगजियार उजियार अनुश्रुति पर आ समय थिकैक मिथिलाक इतिहासक मध्य संक्रांतिकाल। एकर पात्र किछु इतिहासविदित ओ किछु कवि कल्पित अछि। मातृभूमि मिथिलाक संस्कृति सभ्यता ओ स्वाधीनताक रक्षाक निमित्त राजनर्त्तकी मीनाक्षी अपन बलिदान दए अमर भ' जाइत अछि। एही मुख्य कथावस्तु पर आधारित अछि ई नाटक।"

वस्तुत: एहि नाटक द्वारा डा.सदन मिश्र प्राचीन मिथिलाक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विरासतक उल्लेख कऽ, आत्म गौरव ओ आत्मविश्वासक बोध करबैत, सामान्यजनमे देशप्रेमक भावना जगएबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि।

2. म.म.भवानी नाथ मिश्र (प्रसिद्द सचल मिश्र) – साहित्यकी प्रकाशन, सरिसब-पाही द्वारा 2005 ई.मे एहि पोथीक प्रकाशन भेल अछि। एहि पोथीमे डा.सदन मिश्र द्वारा मिथिलाक विशिष्ट विद्वान् एवं 'आर्यासप्तसती' ओ 'स्मृतितत्वसमुच्चय:' केर रचयिता म.म.भवानीनाथ मिश्र प्रसिद्द सचल मिश्रक व्यक्तित्व और कृतित्वक चित्रण कएल गेल अछि। डा. मिश्र स्वयं हिनक वंशज थिकाह।

जनश्रुतिक अनुसार सचल मिश्रक जन्म 1730 ई. एवं निधन 1810 ई क आस-पास मानल जाइत अछि। ई मिथिलाक न्यायपीठक मुख्य न्यायाधीश छलाह। हिनक वैदुष्य, पाण्डित्य ओ छात्र संख्यासँ प्रभावित भए मिथिलाक महाराज प्रताप सिंह द्वारा 1971 ई.मे जगतपुर मौजे एवं महाराज माधव सिंह द्वारा 1779 ई.मे चनौर मौजेक भू संपदा प्रदान कएल गेल छल। 1788 ई.मे पूनाक सत्ताधारी पेशवा माधवराव नारायणक दरवारमे आयोजित पंडितसभाक बीच शास्त्रार्थमे विजयोपरान्त, पेशवा द्वारा हिनका एक लाख टाका नगद तथा जबलपुर जिलान्तर्गत सलैया ओ महँगामा दू गोट गाम पुरस्कार स्वरूप प्रदान कएल गेल छल।

एहि पोथीक प्रसंग प्रसिद्द कथाकार मनमोहन झा लिखने छथि– म.म.सचल मिश्र मिथिलाक विशिष्ट विद्वानक मुकुटमणि जकाँ सुशोभित छथि। हुनक देश भ्रमण, अपन वैदुष्यक पताका फहरेबामे हुनक अध्यवसाय, परिश्रम, सर्वथा आजुक यात्राक सुविधाक विपरीत रहितहुँ श्लाघनीय अछि।... पुणे सन स्थान जे पेशवा माधवरावक राजधानी रहैन्हि –ओतए पहुँचबा लए नदी मार्गकेँ विन्ध्य पर्वत श्रृंखला अवरुद्ध कए देने छलैक। म.म. सचल मिश्र कठिनसँ कठिन परिश्रम कए ओतय धरि पहुँचि गेलाह। ओतय शास्त्रार्थ केलन्हि, धनार्जित केलन्हि। अद्भुत् प्रतिष्ठा प्राप्त केलन्हि। ई दैवसाध्य कार्य– अपन योग्यताक प्रतिष्ठा स्थापित करबामे तथा तथा मिथिलाक यशोगाथाकेँ दूर-दूर तक पहुँचेबामे सफल भेलाह।"

सम्पादित पोथीक संक्षिप्त परिचय

(1) अश्रुकण (कथा संग्रह)– डा.सदन मिश्रक सम्पादनमे 1976 ई. 'अश्रुकण' कथा संग्रह केर दोसर संस्करणक प्रकाशन कएल गेल अछि। अमर कथा शिल्पी मनमोहन झा द्वारा रचित एहि पोथीमे सात गोट कथा संकलित अछि।

(2) गंगापुत्र (कथा संग्रह)– डा.सदन मिश्रक सम्पादनमे 2005 ई.मे गंगापुत्र कथा संग्रह केर प्रकाशन कएल गेल अछि। मनमोहन झा द्वारा रचित एहि पोथीमे पाँच गोट कथा संकलित अछि। ज्ञातव्य जे एहि पोथी पर कथाकार मनमोहन झाकेँ मरणोपरांत 2009 ई.मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कएल गेल छलनि।

(3) कथा यात्रा (कथा संग्रह)– डा.सदन मिश्रक सम्पादनमे 2006 ई.मे 'कथा यात्रा' क प्रकाशन कएल गेल अछि। ई पोथी मनमोहन झाक समग्र कथा संग्रह थिक। एहिमे अश्रुकण केर सात, वीरभोग्या केर सात, गंगापुत्र केर पाँच कथा एवं बोटिब्स, कोडवर्ड आ ईर्ष्या शीर्षक कुल बाईस गोट कथा संकलित अछि।

अभिनंदन – स्मृति ग्रन्थक सम्पादन

(1) आनन्द मंदाकिनी– साहित्यकी, सरिसब-पाही, मधुबनी द्वारा 2000ई.मे डा.सदन मिश्र आ श्री जितेन्द्र नारायण झाक संयुक्त संपादनमे आचार्य प्रो.आनन्द मिश्र अभिनन्दन ग्रन्थक प्रकाशन कएल गेल छल। एहि ग्रंथक प्रथम खण्डमे प्रो.आनन्द मिश्रक व्यक्तित्व-कृतित्व एवं हुनक अन्तरंग जीवनसँ सम्बन्धित विद्वान् लोकनिक आलेख आ दोसर खण्डमे शोध निबन्ध, समीक्षा तथा विविधाक अंतर्गत भाषा साहित्य ओ समाजसँ सम्बन्धित रचना संकलित अछि।

पटना विश्वविद्यालयक प्राध्यापक ओ मैथिली विभागाध्यक्ष डा.आनंद मिश्र लगभग सैंतीस –अड़तीस वर्ष धरि गहन अध्यापन कए मैथिली भाषा आ साहित्यक अविस्मरणीय सेवा कएल। आकाशवाणीसँ सर्वप्रथम डा.मिश्रक गाओल लोकगीतक प्रसारण भेल। हिनकहि प्रयासँ मैथिलीक पहिल कवि सम्मलेन1949 ई.मे एवं पहिल रेडियो एकांकी कुमार गंगानंद सिंह लिखित 'जीवन संघर्ष'क प्रसारण आकाशवाणीसँ भेल छल।

डा. सदन मिश्र एहि स्मारिकाक प्रसंग सम्पादकीयमे लिखने छथि– "प्रोफेसर आनन्द मिश्र पटना विश्वविद्यालयक प्रतिष्ठित शिक्षक, आकाशवाणीक कलाकार-वार्ताकार, जल-सेना पदाधिकारी (एन. सी.सी.), लेखक, सम्पादक, विशेषज्ञ, प्रशासक, अनेक रूपमे हुनक अवदान प्रशंसनीय रहल अछि।"

(2) अमर कथा शिल्पी मनमोहन झा स्मृति ग्रन्थ– साहित्यकी, सरिसब-पाही, मधुबनी द्वारा 2010 ई.मे डा. सदन मिश्रक संपादकत्वमे 'अमर कथा शिल्पी मनमोहन झा स्मृति ग्रन्थ'क प्रकाशन कएल गेल छल। डा.मिश्रक अतिरिक्त सम्पादक मंडल केर अन्य सदस्य रहथि– डा.किशोरनाथ झा, डा.यशोदानाथ झा, डा. विजय मिश्र, एवं डा. शान्तिनाथ सिंह ठाकुर। एहि ग्रंथक पहिल भागमे कथाकार मनमोहन झाक व्यक्तित्व–कृतित्व एवं श्रद्धांजलिसँ सम्बन्धित आलेख अछि। दोसर भागमे समीक्षात्मक रचनाक संग-संग चित्रावली सेहो अछि।

डा. सदन मिश्र एहि ग्रन्थक सम्पादकीयमे लिखने छथि– "मैथिली साहित्यक भवभूति, शरतचन्द्र, प्रसाद, हार्डी, चेखब ओ गोर्की – विभिन्न सार्वभौमिक साहित्यकारसँ तुलनीय, विविध काव्य-गुणसँ अलंकृत एवं समन्वित कथा–शिल्पी मनमोहनजीक व्यक्तित्व ओ कृतित्व कहियो मलिन होमएबाला नहि। कथाकाव्यक वैदूर्य 'अश्रुकण' हुनका मैथिली कथा जगतक बेताज बादशाह बना देलक। बीसम शताब्दीक पाँचम दशकमे प्रोफेसर हरिमोहन झाक कथा सुधी पाठककेँ पर्याप्त गुदगुदौलाक तहिना मनमोहन बाबूक कथा हुनक मर्मस्पर्श कए हुनक नेत्रसँ आनन्दाश्रुसँ आप्लावित कए देलक।" एहि ग्रंथक अवगाहनसँ मैथिली साहित्य प्रेमी मनमोहन झाक व्यक्तित्व ओ हुनक रचना संसारसँ पूर्ण रूपेण अवगत भए सकत। मैथिली साहित्यक ई अमूल्य निधि थिक।

साहित्यकी संस्था आ डा. सदन मिश्र– मधुबनी जिलान्तर्गत सरिसब-पाही परिसर केर प्रसिद्ध साहित्यिक ओ सांस्कृतिक संस्था 'साहित्यकी' क स्थापना, डा.सदन मिश्रक पाही स्थित आवास 'सरस्वती सदन'मे 15 फरवरी 1994 ई. केर वसंत पञ्चमीक दिन भेल छल। डा. मिश्र 2006 ई. तक एकर संस्थापक

सचिव ओ 2011ई. सँ 2017 ई. धरि एकर अध्यक्षक पद पर आसीन रहलाह। एहि संस्थाक स्थापना ओ एकर विकासमे हिनक महत्वपूर्ण योगदान अछि।

साहित्यकी संस्था द्वारा 2000 ई. सँ प्रति वर्ष एकर स्थापना दिवस पर एक मैथिली भाषाक साहित्यकारकेँ 'साहित्यकी सम्मान' सँ सम्मानित कएल जाइत अछि। एकर परिकल्पना तत्कालीन संस्थाक सचिव डा. सदन मिश्र एवं कथाकार मनमोहन झा द्वारा कएल गेल छल। 2000 ई. केर 'साहित्यकी सम्मान'क सभ व्यय भार मनमोहन झा एवं 2001 ई. केर 'साहित्यकी सम्मान'क सभ व्यय भार डा. मिश्र द्वारा वहन कएल गेल छल। 03 जून 2001ई.केँ मनमोहन झाक सरिसब स्थित आवास पर दुनू सालक 'साहित्यकी सम्मान' क्रमश: प्रो० मुक्तिनाथ झा एवं पं.बुद्धिनाथ मिश्र 'भंगेर' केँ प्रदान कएल गेल छल। डा.मिश्रक अध्यक्षीय कार्यकालमे साहित्यकी संस्था द्वारा साहित्यक विभिन्न विधाक अड़तालीस टा ग्रंथक प्रकाशन कएल गेल छल। एकर विस्तृत विवरण डा.शान्तिनाथ सिंह ठाकुर द्वारा लिखित 'साहित्यकी : स्वर्णिम कालखण्ड' पोथीमे देखल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक विकास ओ प्रोत्साहनक क्षेत्रमे डा.मिश्रक योगदान चिर स्मरणीय रहत।

यशस्वी एवं लोकप्रिय प्राध्यापक – डा.मिश्र लगभग अड़तीस वर्ष धरि महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय, सरिसब-पाहीमे हिन्दी विषयक अध्यापन कएल। समय पर वर्ग जाएब ओ विषय –वस्तुकेँ सरल भाषामे विस्तारसँ बुझाएब हिनक अप्रतिम विशेषता छल। छात्र ओ अध्यापकक बीच ई मधुरभाषी, अनुशासनप्रिय, विषय विशेषज्ञ ओ लोकप्रिय अध्यापकक रूपमे सम्मानित छलाह। हिनका द्वारा महाविद्यालयसँ सम्बन्धित देल गेल कोनो प्रकारक सुझावकेँ अध्यापक, छात्रगण ओ छात्रनेता द्वारा पूर्ण सम्मान कएल जाइत छल। हम अपनाकेँ गौरवान्वित अनुभव कए रहल छी जे, जखन एम.एल.एस.कॉलेज, सरिसब-पाहीमे 1984 ई. सँ 1989 ई. क बीच आई.ए. ओ बी.ए. (हिन्दी प्रतिष्ठा) क छात्र छलहुँ, तखनि डा.सदन मिश्रसँ पढ़बाक सौभाग्य भेटल छल।

अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण– मैथिल विद्वत समाज द्वारा डा.सदन मिश्रक अभिनन्दन करैत 26 नवम्बर 2018 ई.केँ मिल्लत कॉलेज, दरभंगाक सभागारमे, अभिनन्दन ग्रन्थ 'अक्षर गाथा' समर्पित कएल गेल छलनि। एहि ग्रन्थक सम्पादन डा.भीमनाथ झा द्वारा कएल गेल छल।

समग्रतामे कहल जा सकैत अछि जे प्रसिद्द प्राध्यापक, कर्मठ समाज सेवी, कुशल प्रशासक, राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक उन्नायक, दूरदर्शी सम्पादक, नाटककार, मैथिली सेवी एवं परवर्त्ती पीढ़ीक पथ प्रदर्शक रूपमे डॉ. सदन मिश्र प्रतिष्ठापित छथि। वर्त्तमान समयमे पाहीमे अपन गामहि पर रहि सारस्वत साधनामे निरंतर निमग्न छथि।

बाबा पोखरि

– शशि कुमार शशि

बाबा, बन्हकी राखि दाइक हसुली
किनने रहथि कचहरी पोखरि
खूब खैतैक माछ-भात हमर नाति-पोतासभ।

हित-मीत आ गाम-समाजमे शोर छलै
बाबा पोखरिक माछ बड्ड बेजोड़ छलै।

दाइक अत्मा जुराइत छलनि
रेहू, बुआरी जखन खाइत छली।

अर्थक मारिसँ स'ख-सेहन्ता जाइर क'
किछुए टाकामे बेचि लेलखिन
लाल काका पोखरि।

पोखरिमे गिरल छलै महजाल
हम टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलहुँ
मल्हा केर बेटा हमरा सोझा दने
रेहू, बुआरी की टेंगरो ल' गेल।

प्रदीप बिहारी

सम्पर्क : बेगूसराय, मिथिला (बिहार)
मोबाइल : +91 6202140561

प्रदीप बिहारी मूलत: कथाकार आ उपन्यासकार छथि। हिनक 'औतीह कमला जयतीह कमला', 'मकड़ी', 'सरोकार', 'पोखरिमे दहाइत काठ', 'सपन एक देखल' (सभ कथा संग्रह), 'गुमकी आ बिहाड़ि', 'विसूवियस', 'शेष', 'जड़ि', 'कोखि', 'मृत्युलीला' (सभ उपन्यास) बहुत चर्चित भेल अछि। एकर अतिरिक्त दूटा लघुकथा संग्रह- 'खण्ड खण्ड जिनगी' आ 'हे रौ' सेहो प्रकाशित छनि। मैथिली, हिंदी आ नेपालीमे परस्पर अनुवाद करैत छथि, जाहिमे 'अक्षर आर्केस्ट्रा', 'गाममे कविता', साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत पोथि "आदिम बस्ती' आ 'किएक कनलें उपमा", 'जहल' (सभ नेपालीसँ मैथिलीमे) प्रमुख अछि। नेपालीसँ हिन्दीमे हिनका द्वारा अनुदित पोथी 'कारा' साहित्य अकादेमीसँ तथा हिंदीसँ मैथिलीमे अनुदित पोथी 'बैजू मामा' नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित छनि। कथा संग्रह 'सरोकार'कैं वर्ष 2007मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल अछि। एखनि धरि एहि कथा संग्रहक हिंदी, नेपाली, मलयालम, राजस्थानी आ डोगरी भाषामे अनुवाद भ' चुकल छनि। बिहार सरकार द्वारा सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार, जगदीशचन्द्र माथुर सम्मान, माहेश्वरी सिंह 'महेश' पुरस्कार, दिनकर जनपदीय सम्मान, भाषा समन्वय पुरस्कार/ सम्मान आदिसँ अलंकृत छथि।

नाच

सरस सिनेहीकैं निर्देशक पर तामस उठल रहनि। तामस एहि दुआरें उठल रहनि जे निर्देशक नाटकक आरंभिक दृश्य बदलि देने छलाह। केहन बढ़िया अल्लू बम चौकी पर बजारल जाइक आ जहिना लोक सुनय 'फटाक', तहिना पर्दा घिचनिहार रस्सी घिचय आ मंच पर सजल-सजाओल दृश्यक संग कलाकारकैं लोक देखय। नाटक शुरू भ' जाइक। मान्यता रहैक जे, जे जतेक जोरसँ संवाद बाजय, से ततेक पैघ कलाकार।

मुदा राजनारायण डाक्टर दू मास पर दिल्लीसँ घुरलाक बाद नाटकक रूपे बदल' पर लागल रहथि। चाहैत रहथि जे पहिले दृश्यमे सभ कलाकार कोरसक रूपमे मंच पर नचैत आबय, नाटकक मुखगीत गाओल जाइक, मंचक दू-तीन फेरा लगा क' नेपथ्यमे चलि जाय।

नब ढंगक एहि आरंभक पक्ष-विपक्षमे गाममे दुगोला सन भ' गेलैक। एक गोल कहैक जे परिवर्तन जरूरी छै, सभ बेर एक्के रंगक आरंभसँ मोन ओंगठि गेल छै लोकक। दोसर गोलक लोक कहैक जे एहिसँ पात्रक गोपनीयता नहि रहतै। लोककैं नब-नब दृश्यमे नब कलाकारकैं देखबाक आतुरताक आनन्द नहि रहि पौतैक। सरस सिनेही सेहो विरोधिए पक्षक रहथि, अपितु ई कहल जा सकैछ जे विरोधी पक्षक अगुआ छलाह। मुदा हुनक जुति नहि चललनि। निर्देशक राजनारायण अपन निर्णय पर कायम रहलाह। गाममे हुनक विरोध करब मोश्किल बात। पछिला बीस बरखसँ वैह निर्देशक होइत रहलाह। ओ राजस्व विभागक कर्मचारी छलाह आ गमैया डाक्टर सेहो छलाह। मेटेरिया मेडिकाकैं घोंकि होम्योपैथिक डाक्टर कहाथि, मुदा एलोपैथिकसँ सेहो परहेज नहि छलनि। रोगीक दुख छुटक चाही, खाहे कोनो पैथीसँ होअय। रोगीक दुख छुटि जाइक, बस...। गौंआकैं आर की चाही?

नाटकक नीक कलाकार होइतहुँ सरस सिनेही निर्देशक डाक्टर राजनारायणक सोझाँ ठठि नहि सकलाह। हुनका नाच' नहि अबैत छलनि। समूह नृत्यमे स्टेप मिलायब हुनका लेल कुनैनक गोटी सन तीत छलनि। सात दिन धरि रिहर्सलक बादो स्टेप नहि मिललनि, तँ निर्देशक हुनका अभिनयसँ हटा क' नेपथ्यक काज थम्हौलखिन। कने-मने गुल-गुल चललै गाममे। मुदा सभ शान्त। विरोध पर दरी ओछा देल गेलै।

सरस सिनेही सोचलनि जे ओ नेपथ्यक काज नहि करताह। सभ दिन हीरोकेँ पाट खेलाइ छलाह आ आब मेक-अप करताह वा वस्त्र-विन्यास करताह वा मंच-सामग्रीक ब्योंत करताह वा अल्लू-बम पटकताह वा परदाक डोरी घिचताह। नहि, एहन कोनो काज नहि करताह। गाममे अपन छवि खराप नहि करताह। बड़ समझौता करताह तँ सेकेंड हीरोकेँ पाट क' सकैत छथि। ओहिसँ नीचां नहि खसताह।

तखनहि एकटा बात मोन पड़लनि। निर्देशक राजनारायणकेँ जे कलाकार पसिन नहि पड़ैत छनि तकरा ओ बीच नाटकमे नाकाम क' दैत छथि आ दर्शक सभ पिहकारी मार' लगैत छैक। कारण प्रचलित मान्यताक कारणेँ निर्देशकेँ प्राम्पटर सेहो होइत छल। जाहि पात्रकेँ ओ नहि चाहथि, ओकर संवाद एतेक स्थिरसँ बाजथि जे ओ सुनबे ने करय, मंचे पर अकबका जाय। दर्शक सभ बुझै जे कलाकार पाठ बिसरि गेल आ पिहकारी शुरू। जँ कोनो कलाकार अपना मोने संदर्भकेँ जोड़ैत कोनो दोसर संवाद बाजि दिअय, तँ राजनारायण तामसे फुच्च। परदाक पाछां लालटेम वा टार्च देखौनिहार पर तमसाथि आ चुप भ' जाथि। परदा घिचनिहार देखय जे कलाकार सभ चुप अछि तँ परदा खसा दिअय। नटुआक नाच शुरू भ' जाइक आ नेपथ्यमे संसदक सत्र चालू। अपन अवज्ञाक बहन्ने निर्देशक राजनारायण रुसि जाथि। फेर मान-मनौव्वलि होनि आ नाटक शुरू होइक।

ई सभ बात एहि दुआरे होइक जे बेसी कलाकार पाठ यादि करब अपन शानक विरुद्ध बुझय। ओहि गामक त्रिदिवसीय नाटकक आयोजनमे कम-सँ-कम एको राति एहन घटना होयब सोहाग-भाग रहैक।

सरस सिनेही सोचलनि जे प्रतिष्ठा बचयबा लेल नीक बात यैह जे नाटकक एहि सत्ताधारी मंडलीसँ हटि जाथि। देखताह जे हुनक अभाव गौआं सभकेँ कतेक खटकैत छनि?

सरस सिनेही जी पहिने मात्र सिनेही रहथि। गामक नाटक छोड़लाक बाद कविता लिखबाक अभ्यास कर' लगलाह। नाममे जोड़लनि सरस। भ' गेलाह सरस सिनेही। मोनमे भेलनि जे नाम बदलने किनसाइत भाग्य बदलि जानि।

से भाग्य बदललनि सिनेही जीक। नोकरी भेटि गेलनि आ गाम छोड़' पड़लनि। शहरमे अयलाह। पड़िकल मोन कतहु मानय? ताक' लगलाह नाट्य मंडली आ साहित्यिक संस्था सभकें। भेटबो कयलनि। नाटक आ कविता चल' लगलनि। मुदा, एकटा बात भेलैक। शहरोमे 'रियलिस्टिक प्ले'क अवस्था बदलल जा रहल छल। 'म्यजिकल प्ले' रंगमंचक केबाड़ ढकढ़काब' लागल छल। सरस सिनेही रियलिस्टिक प्लेमे सहज रहथि मुदा म्युजिकल प्लेमे असुविधा होम' होनि। मुदा, ओ ताहिसँ डेरयलाह नहि। जखने रिहर्सल कर' जाथि कि गामक राजनारायण डाक्टर मोन पड़ि जाथिन। मोन पड़थिन निर्देशक आ प्राम्पटर राजनारायण। आ मोनकेँ बान्हथि। नहि, एत'सँ पड़यताह नहि। सिखताह नृत्य। कम-सँ-कम ओत्तेक अबस्से जतेक नाटकमे खगता होयतैक।

से, सरस सिनेही नृत्य सिखलनि।

एकदिन पत्नी कहलखिन, "यौ, नाच सिखलहुँ से एकबेर हमरो देखाउ ने।"

पत्नीक गपकेँ 'फेर कहियो' कहि टारि देलनि। ओ कोठरी बन्न क' टेप रेकार्डर पर कैसेट बजौलनि आ नाचबाक उपक्रम कयलनि। मुदा पयर उठबे ने कयलनि। बेर-बेर प्रयास कयलनि। तैयो ओहिना।

जा, ई की भ' गेलनि? आब नाटक कोना करताह? साँझखन रिहर्सलमे जयबाकाल तनाओ रहनि जे कोना करताह? मुदा, रिहर्सलमे कोनो असुविधा नहि भेलनि। तखन? निर्देशककेँ कहलनि तँ कहलकनि, "किनसाइत संकोच होइत हैत। नृत्य कर' काल मोनमे राखू जे मंचे पर क' रहल छी। तहिना करैत रहब तँ धाख टुटि जायत। बयस बढ़ने किछु गोटेकेँ एना होइत छनि।"

"मुदा मंच आ आन ठाममे फरक होइ छै ने।"

"एही बातकेँ मोनसँ हटा दियौ।"

मुदा, सरस सिनेही जीक मोनसँ से बात हटि नहि सकलनि। हटितनि कोना? स्वयंकेँ यथार्थवादी शिल्पक अभिनेता मानथि।

राति चढ़ल नहि रहैक। साढ़े सात बजैत हेतैक। टी वी देखैत छलाह। ककरो मूड़ी छोपि लेल गेल रहैक, सैह समाचार टी वीक सभ चैनल पर अनघोल मचौने रहैक।

चैनल सभ विशेषज्ञ आ विभिन्न पार्टीक नेता सभकेँ बजा-बजा बुझू जे नचा रहल छल। ओ सभ अपने ताले नाचि रहल छल। सिनेही जीकेँ मोन पड़लनि जे बुलडोजर मिशन पर सेहो एहने नाच होइत रहै टी वी पर। ओहूसँ बेसी तँ लिव इनमे रह' वाली छौंड़ीकेँ पैंतीस टुकड़ी क' देबाक घटना पर भेल रहैक। सिनेही जी सोचैत रहलाह जे पैंतीस खण्डकेँ बुझू जेना पैंतीस टा तालमे पियाजुक खोइया हटा-हटा हत्याक प्रक्रियाकेँ बुझाओल जाइत रहैक। किछु गोटें अबस्से सिखने होयत।

टी वी बन्न करबा लेल रिमोट उठौनहि रहथि कि बाट पर बजैत डी जेक ध्वनि कोठरीकेँ थरथरा देलकै मने। तखनहि पत्नी भीतर अयलीह आ बजलीह, "यौ अहाँ बहीरो छियै?"

"से किएक?"

"एत्तेक जोरसँ डी जे बाजि रहल छै से सुनै नहि छियै? चलू बाल्कनीमे। देखियौ कोना नृत्य करैत अछि छौंड़ी-मौगी सभ।"

"हँ, डी जेक थरथरी हमरो बुझाएल। चलू।"

पति-पत्नी बाल्कनीमे ठाढ़ भ' बाट दिस तकलनि। देखिते सिनेही जी बजलाह, "एकरा अहाँ नृत्य कहै छियै? ई सभ तँ धमगज्जर ताल पर नाचि रहल अछि। मुदा, ब'र बला गाड़ी नहि देखै छियै।"

"बरियाती थोड़े छै जे देखबै।"

"तखन?"

"कुमरम कर' जाइ छै। हे वैह देखियौ। ब'रकेँ माथ पर पीयर धोती राखि क' एकटा मौगी जा रहल छै। मने, बिधकरी हेतै।"

"मुदा, ओ छौंड़ा तँ जिन्स पहिरने छै।"

"ताहिसँ की? अपना सभ सन नहि छै। मुदा नाच तँ आब अपनो सभमे होम' लगलैए।"

"हे देखियौ। कोनो मौगीकेँ नाच' अबै छै? लगै छै जेना हाथ-पयर भंजैत होअय आ देह पटकैत होअय। भूत लागल होइ जेना। जानि नहि, एहिमे कोन आनन्द भेटै छै। यैह देखाब' हमरा घिचने अनलहुँ अहाँ?"

"जे होइ। जहिना होइ। उत्सवकेँ भोगैए ने। बेजाय नहि मानू, अहूँकेँ तँ नाच' नहिए अबैए।"

पत्नीक ई बात छक् द' लगलनि सिनेहीकेँ। मुदा, सहि गेलाह। सोचलनि, पत्नी हुनका नचैत नहि देखने छथिन, तँ यैह ने बुझतीह। गंभीर स्वरमे बजलाह, "भोगत की? केओ भोगा रहल छै। जानि नहि कुमरममे एहन तँ बियाहमे केहन हेतै? चलू, चाह पिआउ।"

ताबत कुमरमक जुलूस सेहो आगां बढ़ि गेलैक।

समधौतक बियाह तय भ' गेल रहनि। तैयारीमे लागल छलाह। एही क्रममे पत्नी कहलखिन, "आभासक बियाहमे नचबै ने?"

"हँ, आब सैह बाकी रहि गेल-ए। नाचू ग' अहाँ। आ अहूँ सोचियौ जे समधियानामे रहब। समधि-समधिन भ' क' नचबै, से नीक हेतै?"

"हेतै ने किए? आब गेलै जमाना। ओत्ते टा रिसॉर्टमे बियाह हेतै, मेहदी हेतै, हल्दी हेतै, बियाह हेतै। सभ

टाकेँ शोभा-सुन्दर नाचे-गान ने। दोसर बात समधि अहाँकेँ छोड़ताह थोड़े। मानसिक रूपसँ तैयारी करैत रहू।"

सरस सिनेहीकेँ लगलनि जे ई गप पत्नी नहि, राजनारायण डाक्टर कहि रहल छथि। भय आ तामस, दुनू मोनमे उपजि गेलनि।

"सैह कहै छी, घिनेबै नहि ओत'।"

"एखनि बड़ दिन बाकी छै।"

"यौ, बियाह-दानक तैयारीमे दिन कोना ससरि जाइ छै, से बुझाइ छै? बेबी तँ डान्स क्लास ज्वाइन क' लेलनिहें।"

"से किए?"

"भायक बियाहमे नाच' लेल। विभिन्न उत्सवक तीन-चारि टा क' गीत सभ पर प्रैक्टिस करा रहल छनि।"

"अहूँ किए ने ज्वाइन क' लैत छी। एतहु तँ सुविधा छै।"

"हमरा कोनो अबैए नहि। स्कूले समयसँ सिखने छी। ई दोसर बात जे अभ्यास छुटि गेल अछि। हम घरेमे अभ्यास क' लेब। अहाँ जकां नहि अछि जे पयरमे जांत बन्हा जायत।"

"एना निकृष्ट नहि बुझू हमरा। हमरा कोनो नाच' नहि अबैए। कार्यालयी दबाओक कारणेँ रंगमंच छुटि गेल अछि। हमरो नाच' अबैए मैडम, मुदा हम अहाँ सभ सन धमगज्जर ताल पर नहि नाचब।"

"एकर माने बियाह-दानमे लोक बिनु रिदमेक नचैए? धमगज्जर करैए? कवि जी! भ्रममे नहि रहू। लोक आनन्द लेल नचैए।"

"आनन्द लेल तँ अपना मोनसँ नाचैए लोक। अहाँ जे कहै छी, ताहिमे लोक देखाउँसे नचैए, दोसरकेँ देखब' लेल नचैए। अपने मोने नहि नचैए। नचेनहार केओ आर छै, तकरा नहि चिन्हैए। खाली नचैत रहैए।"

"गलत। एकदम गलत। नाचबाक अपन-अपन स'ख-सेहन्ता होइ छै आ स'ख-सेहन्ता आनक मोने नहि होइ छै। आब तँ ब'र-कनिया सेहो नाचक प्रैक्टिस करैए।"

"बेस, आब तँ..."

बिच्चहिमे पत्नी रोकि लेलखिन, "बस, चुप भ' जाउ। आब अहाँ की कहब से बूझै छी। आब अहाँ लग अंतिम अस्त्र अछि- कवियाठी करब।"

सरस सिनेही चुप भ' गेलाह। मोबाइल खोलि क' देख' लगलाह।

मोबाइलमे रील, फेसबुक-स्टोरी आ यूट्यूब बेराबेरी देखलनि। खाली नाच, विभिन्न प्रकारक नाच। इंगेजमेटक दृश्यमे लड़की नचिते लड़का लग जाइत छै। आर सभ ओकरा संग स्टेप मिलबैत छैक। पार्श्व गीत एहन, जकर बखान नहि। अकबका गेलाह। निर्णय नहि क' पाबथि जे कोन नाच ठीक छैक? ओ सभ करैत छलाह, से वा एहिठाम देखि रहल छथि, से। आ मोबाइलमे जे नाच देखैत छथि, तकर व्यू तँ लाखो-करोड़ोमे होइत छैक। सोचलनि सिनेही जे एहि मामिलामे ओ अल्पसंख्यक छथि मने।

समधौतक बियाहमे 'हल्दी'सँ एकदिन पहिने नहि पहुँचि सकलाह। तेँ पत्नीक मोन झूस छलनि। छुट्टी नहि भेटलनि। एना बिदा भेलाह जे 'हल्दी'क समय धरि पहुँचि जाथि। पत्नीकेँ एकटा 'इवेंट मिस' भ' गेल रहनि। चूंकि कन्यागत सेहो ओही रिसॉर्टमे रहथि तेँ वियाहसँ एकदिन पहिने कन्यागतक ओहिठाम 'मेहदी'क कार्यक्रम रहैक आ ताहिमे दुनू पक्ष सम्मिलित भेल छल। जमि क' नाच भेलै। लगलै जेना दुनू पक्षक बीच प्रतियोगिता भ' रहल होइक।

ई सभटा बात पुतौहु व्हाट्स एप पर लिखने रहनि आ वीडियो क्लिप पठौने रहनि। ओ इयर फोन लगा क' वीडियो देखि रहल छलीह। रहल नहि गेलनि तँ सिनेही जीकेँ कहलनि, "अहाँ बड़ निशोख लोक

छी। एत्तेक सुन्दर प्रोग्राम छुटि गेल। के-के ने नाचल। एकटा हमहीं...। अपना नाच' अबितनि तखनि ने...!"

"हमरा ऑफिसमे छुट्टीक हाल तँ बुझले रहैए। एहन छल तँ दस दिन पहिने किए ने चलि गेलहुँ?"

"हे, अकरहक लीला नहि करू। ओहो सभ एके दिन हल्दी आ बियाह राखि लेलनि। लोक की इंज्वाय करत?"

"एहिनो होइ छै। रिसॉर्टक खर्च बूझल अछि? तैं एके दिनक खर्चमे दुनू बीध रखलनि समधि।"

"अहूँसँ पुछनहि हेताह आ अहाँ दहीमे सही लगा देने हेबनि। यौ कवि जी! एक्केटा तँ बेटा छनि समधिके। ओत्तेक सम्पत्ति! हाथ खोलि क' खर्च कर' दीतियनि ने।"

"सभटा बात अहीं बूझि जेबै?" कने थम्हैत बजलाह सिनेही जी, "अहाँकेँ नाचबाकेँ अछि ने। एके दिनमे दुनू कार्यक्रम छै। नचैत रहब भरि दिन।"

"तेना नहि ने होइ छै। लोक थाकियो जाइए, बोर सेहो भ' जाइए।"

तखनहि मोबाइल पर आंगुर तेजीसँ चल' लगलनि। किछु ताक' लगलीह। मोबाइल पर चलैत आंगुरे सन तामसे सांस सेहो तेजीसँ चल' लगलनि। सिनेही जी पुछलनि, "की भेल?"

लगलै जेना टेन अनचोकेँ रुकि गेल होइ। मुदा नहि, टेन चलैत रहै।

"देखियौ, मेहदी बला प्रोग्राममे मिथि कतहु नजरिए ने आबि रहल छै।"

मिथि हुनका दुनूक छओ बरखक पोती छनि।

"मोन तँ ने खराप भ' गेलै मिथिक? वीडियोमे कत्तहु ने देखाइत छैक।"

सिनेही जीकेँ सेहो चिन्ता भेलनि।

"बेबीकेँ व्हाट्स एप करियौ ने। पुछियौ।"

बेबीक व्हाट्स एप पर कौल भेल।

"नहि, मम्मी जी। मिथि नहि नचलै।"

"किएक? ओकर मोन ठीक छै ने?"

"हँ, ठीक छै। मिथि बाजलि जे ओकरा नाचबाक मोन नहि छै। हमहूँ सभ छोड़ि देलियै। आर कोनो बात ने।"

"ओ भरतनाट्यम सीख' जाइत अछि ने?"

"हँ, ओकर गुरुआइन अगिला मास एकटा कार्यक्रम क' रहल छथिन। ताहिमे मिथिक शो सेहो हेतै।"

"बेस। इन्ज्वाय करू। काल्हि दुपहर धरि हमहूँ सभ पहुँचि जायब।"

"ओ के मम्मी जी।"

कतोक बिगहामे पसरल रिसॉर्टमे भव्य आयोजन रहै। जखने सिनेही सपत्नीक पहुँचलाह तँ समधि-समधिन स्वागत कयलखिन आ कहलखिन जे झट द' तैयार भ' ग्राउंड फ्लोर पर आबधि। हिनकेँ दुनूक प्रतीक्षामे 'हल्दी'क कार्यक्रम रुकल छलैक।

यंत्रवत दुनू पहुँचलाह आ शुरू भेलै बीध। कने दूर पर डी जे चिचिआयल। एक-दोसरासँ गप करबाक परिस्थिति नहि रहैक। सभ नाचब शुरू कयलक। वीडियो बला बुझू विभिन्न तालमे दृश्य 'कैप्चर' क' रहल छल।

मिथि माम लग बैसलि मुस्किया रहल छलि।

बीध समाप्त भेलाक बाद अपन कोठरीमे सरस सिनेही ओछाओन पर ओंगठल रहथि आ टी वी देखबाक प्रयास क' रहल छलाह। हाथमे रिमोट छलनि। चैनल बदलैत रहलाह। एक्के रंगक समाचार। सोचलनि जखन समाचारमे एक्के आदमी छैक, तँ केहन हेतै समाचार? एक्के रंगक ने। कतहु रामायण पर

टिप्पणी, तँ कतहु कुरान पर। कतहु हनुमान चालीसा बला विवाद तँ कतहु बाट पर नमाज पढ़बाक बात। कोनो नेता जेल गेलाह, तँ कोनो अपन पार्टीसँ बहार कयल गेलाह। सभ पर गरम-गरम बहस। बहस कयनिहार सभ अपन-अपन नेताक गुणगानमे बेहाल।

सिनेही सोचलनि। अपन देशमे मने सदिखन कोनो-ने-कोनो चुनाओ होइते रहै छै। तैं टी वीक समाचार चैनल सभ पर नाच सेहो होइते रहैत छै।

टी वी बन्न कयलनि सिनेही। मोन पड़लनि। एकटा प्रोफेसर साहेब कहैत रहथिन— मानल जे बियाहक बीध टी वी बाटे दिल्लीसँ आबि अपना सभकेँ छापि लेलक। एकर माने ई नहि ने जे आबो बरदे गाड़ी पर बरियात जाय लोक?

सिनेहीकेँ बुझयलनि जे राजनारायण डाक्टर दिल्ली चलि गेलाह अछि।

तखनहि समधि कोठरीमे अयलखिन, "समधि! पड़ल किएक छी? चलू ने।"

"कत'?"

"रूम नम्बर दू सय आठ मे? साफा बन्हबा लिअ'।"

"पागक व्यवस्था नहि छै?"

"नहि। पाग बेसी काल माथ पर नहि टिकै छै। डान्स कर'मे खसि पड़बाक बेसी संभावना।"

"तेहन बात नहि छै। आब पागक बनौटमे सुधार भेलैए।"

"तैयो नाच' कालमे खसि पड़बाक खतरा रहै छै। ओना साफा सेहो अपने सभक शिरो परिधान छल ने।"

सरस सिनेही माथमे साफा बन्हबा क' अपन कोठरीमे अयलाह आ बड़का अयनामे स्वयंकेँ निहारलथि। माथ भारी लगलनि।

बियाह-दान सम्पन्न भेलै। अपन कोठरीमे अयलाह तँ पत्नीसँ पुछलनि, "अएं यै, कनियाकेँ ओत्तेक भारी आ जबदाह लहँगा किएक पहिरा देलकै जे बेदीक चारुकात घुम' काल दू गोटेकेँ पकड़' पड़ैक।"

"से सभ नहि बुझबै अहाँ। सभटा स'ख-मनोरथ होइ छै। बियाह दोबारा थोड़े होइ छै।"

"मर, हम पुछै छी किछु आ अहाँ उतारा दै छी किछु।"

"तँ सही बात कहि क' अहाँसँ के बतकुट्टनि करय। थाकल होएब। सूति रहू।"

सिनेही पत्नी लग आत्मसमर्पण कयलनि, "बेस। अहूँ कम थाकल नहि होयब। खूब नचलहुँ अछि।"

पत्नीकेँ जेना किछु मोन पड़लनि, "अएं यौ, समधि संगे तँ अहूँकेँ नचैत देखलहुँ। हमरा सोझां पयरे ने उठय आ समधि संगे तँ...। मुदा..."

"की?"

"मंचक दुनू कातक पर्दा पर लाइव वीडियो देखाइत रहै, ताहिमे अहाँक डान्स नहि देखलहुँ।"

"नहि देखलहुँ तँ की भ' गेलै? भने नहि देखलहुँ।"

"कैमरा बला काटि तँ ने देलकै? मुदा लाइवमे काटतै कोना?"

सिनेही जी कोठरीक प्रकाश बन्न कयलनि। बजलाह, "आब अन्हारमे अहाँक मुंहसँ एक्को टा शब्द नहि बहराय।"

कनिए कालक बाद पत्नी फोंफ काट' लगलीह। मुदा, सिनेही जीकेँ निन्न नहि भेलनि। बौआय लगलाह। तीन दिन पहिलुक बजारक ओ घटना मोन पड़ि गेलनि।

बजनिहार तँ सामान्ये गप सन बजलाह, मुदा सिनेही जीक लेल ओ घटने सन छलनि।

राजनारायणे डाक्टर सन हुनको शहरमे एक गोटे छलाह। ओहि साहित्यिक संस्थाक अध्यक्ष, जाहिसँ कहियो सिनेही जुड़ल रहथि। ओहि संस्थाक बैनरमे किछु नाटक खेलायल छलाह। एक समय हुनका शहरमे जगजियार छल ओ संस्था, मुदा नहूँ-नहूँ ओकर अधोगति शुरू होम' लगलैक। बीच शहरमे संस्थाक करीब अढ़ाइ कट्ठा जग्गह रहैक, जे जन सहयोगसँ अरजल गेल रहैक। सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्टसँ पंजीकृत संस्थामे अध्यक्ष-सचिव बनबा लेल उतराचौड़ी शुरू भ' गेलैक। सदस्य सभ एक-दोसराकेँ छिटकी मारबा पर बिर्त होइत गेलाह। मुदा सभ छिटकी अंततः संस्थेकेँ लगलैक आ संस्था मृतप्राय भ' गेलै। स्थानीय राजनीतिक दुष्परिणामक कारणे सिनेही सन लोक संस्थासँ हटैत गेलाह आ राजनारायण डाक्टर सन लोक संस्थाक डोरि धयने रहलाह। छहरदेबाली कयल संस्थाक जमीन, जाहि पर संस्थाक मकान नहि बनि पौलैक, मुंह बौने रहल जे कोनो भागिरथ ओकर उद्धार करतैक।

समय बीतैत गेलैक। सिनेही सन-सन पुरान लोक संस्थाक जमीन देखि चुपचाप आगां बढ़ि जाइत छलाह। ग्लानि होनि। एक मोन होनि जे आगां बढ़थि, बनथि भागिरथ। मुदा, दोसर मोन नकारि जानि। डर होनि। ओ की महादेवक तपस्या करताह? आजुक महादेव अपन जटामे ओझरा क' तत्तेक ने दूर फेकि देतनि जे ककरो जनतबो ने होयतैक।

तीन दिन पहिने संस्थाक पूर्व अध्यक्षक पुत्र बजारमे भेंट भेलखिन।

"समितिक जगह दिस गेलियैए?"

"हँ, ओहि बाटे जाइते रहै छी। पहिने एकटा सामुदायिक भवन बनल देखलियै आ आब..."

"आब मंदिर बनैत देखने हेबै।"

"जी।"

"दुनू चीज हमहीं बनबा रहल छियै।"

"तखन तँ खूब खर्च लगैत होयत।"

"किछु अपनो आ बेसी जन सहयोग सं। किछु विधायक आ सांसदक सहयोग सं। आजादीक अमृत महोत्सव चलि रहल छै, किछु ताहूक मद सभसँ उपरौलियैए। आब अपनेक सहयोग चाही।"

"हम की सहयोग क' सकै छी?"

"डेराउ नहि, पाइ नहि मांगब। देखनहि हेबै। नाम देलियैए— उगना महादेव मंदिर।"

"से तँ दू-तीन टा मंदिरक गुम्बद सन देखने रही। बस, जाइते-जाइत। भीतर नहि गेलहुँ।"

"भीतर जैतियै ने। अपने तँ पुरान सदस्य छियै। बाबा आ मैयाक मंदिर सोझा-सोझी। कातमे उगनाक मंदिर। गेट पर थोड़ेक जगह बचैत रहै, तँ ओत' नन्दीकेँ बैसा देलियनि। हमरा बुते जत्ते भेलै से क' देलियै। आब समाज जानय।"

सिनेही सोचलनि, समाज रहितैक, तँ यैह बनितैक साहित्य आ सांस्कृतिक संस्थाक जमीन पर। मुदा ओ बजलाह किछु आर बात। कहलनि, "समाज की करत? अहाँ एत' धरि बनौलहुँ तँ कमान सेहो अपने हाथमे राखू।"

"से बाबाक सेवासँ हम पयर पाछु थोड़बे करबनि? दू मासक बाद प्राण-प्रतिष्ठाक तिथि बनै छै। आग्रह जे ओहिमे अपने अग्रणीक भूमिकामे रहियैक। कवि-कलाकार सभकेँ रहबाकेँ चाहियनि।"

"सीतेश जी, हमर कोनो भूमिका तय नहि करू। ओही समय हमर समधौतक बियाह तय छैक प्रायः। तिथि मिला लेबै, तखने किछु कहि पायब।"

"सोचने छी जे प्राण-प्रतिष्ठाक अवसर पर पूरे शहरमे कलश यात्रा होइक। नाच-गान होइक। आदि-आदि। पूरा शहर बाबामय बनि जाय। तँ अहाँ अपन समय जरूर रखियौ। संस्थाक एकोटा पुरान सदस्य नहि रहतै, तँ की कहतै लोक? आ एकटा आग्रह आर।"

"की?"

"हमर पत्नी आ धियापुता सभ मोन बनौने छै जे बाबा, मैया, उगना आ नन्दीक प्राण-प्रतिष्ठा दिन खूब नाचय। मुदा ओकरा सभकेँ नाच' नहि अबै छै। किछु समय बहार क' थोड़े स्टेप सिखा दीतियै, तँ बड़ उपकार होइत। थोड़बो अपनेसँ सीखि लेतै, तँ बांकी लोक सभकेँ देखि क' टानि लेतै।"

"ई नाच सिखायल हमरा बुते नहि होयत सीतेश जी। हमरा अपने ने नाच' अबैए।"

"फुसि नहि बजियौ। अहाँकेँ टाउन हॉलमे नचैत देखने छी हम।"

"ओ समय रहैक। आब पयरे ने उठैए। दोसर गप ई जे जुलूसमे नाच' लेल सिखबाक कोन खगता। नचौनिहार नचा दैत छैक। नाचि लेती कनिया आ बच्चा सभ। अहाँ चिन्ता नहि करू। आब चलै छी।"

"बेस, मुदा ओहि दिनक कलश-यात्रामे अपनेकेँ आगू-आगू रह' पड़त।"

सिनेही ओत'सँ बिदा तँ भ' गेलाह। मुदा, लगलनि जे पयर उठिए ने रहल छनि। पयर दिस तकलनि। पयर उठैत रहनि मुदा स्टेप नहि मिलैत रहनि। चारूकात तकलनि। बुझयलनि जे राजनारायण डाक्टर तँ ने देखि रहल छनि।

पत्नीक खोंखीसँ तँद्रा टुटलनि। समधौतक बियाहमे तँ तीन दिनक बादे आबि गेलाह। दू मासक बाद कोन बहन्ना बनौताह?

सोचलनि। बहन्ना किएक बनौताह। सोझे कहताह जे मंदिरक मूर्ति सभक प्राण-प्रतिष्ठामे ओ कोनो सहयोग नहि करताह। मिथि मोन पड़लनि। मिथि अपन मायकेँ कहने रहय जे ओ मामाक बियाहमे नहि नाचति।

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत विभूति सभक अभिनन्दन !

वर्ष 2022क मूल पुरस्कार श्री अजित आजादकेँ कविता-संग्रह 'पेन-ड्राइवमे पृथ्वी' लेल देल गेल। 'खुरचनभाइक कछमच्छी' (व्यंग्य-संग्रह)क लेल श्री नवकृष्ण ऐहिककेँ युवा पुरस्कार, 'उड़न-छू' (कथा-संग्रह) लेल श्री वीरेंद्र झाकेँ बाल साहित्य पुरस्कार आ श्री रत्नेश्वर मिश्रक उपन्यास 'आज़ादी' (अंग्रेजी, मूल लेखक चमन नाहल)पर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार देल गेल अछि। वर्ष 2023क मूल पुरस्कारक घोषणा अखने भेल अछि। निबन्ध संग्रह 'बोध संकेतन' लेल डॉ. वासुकीनाथ झाकेँ मूल पुरस्कार देल जएतनि। बाल कविता-संग्रह 'ओल कतरा, झोल कतरा' लेल अक्षय आनंद 'सन्नी'केँ बाल साहित्य पुरस्कार भेटल आ सुश्री संस्कृति मिश्रकेँ कविता-संग्रह 'कहबाक अछि हमरा'क लेल युवा पुरस्कार देल जएतनि।

अनुप्रास परिवार दिससँ हिनका लोकनिकेँ हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना।

जगदीश प्रसाद मण्डल

सम्पर्क : निर्मली, मिथिला(बिहार)
मोबाइल : +91 7050185154

जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 इस्वीमे भेलनि। शिक्षा एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र), जीविकोपार्जन कृषि छनि (मुख्यत: तरकारी खेती), वर्ष 2001 धरि समाज सेवा, रूढ़ि एवं सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लड़ाइ, केस-मोकदमा, जहल यात्रा एवं 2001 इस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे आगमन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि– साहित्यक मौलिक विधामे साएसँ ऊपर पोथीक लेखन-प्रकाशन। 'विदेह सम्मान- 2011', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', 'वैदेह सम्मान- 2012', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', 'कौमुदी सम्मान- 2017', 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2017', 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान-2018', 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022', 'यात्री सम्मान- 2022' तथा 'शिखर सम्मान- 2022' सम्मान/ पुरस्कारसँ अलंकृत छथि।

नियति आ पुरुषार्थ

सूर्यास्तक पछातिक समय। ओना अखन अन्हार पसरल नहि अछि, मुदा रातिक पहिल पहर तँ शुरू भइये गेल अछि। रवि दिन रहने गोपालबाबू अप्पन दिनक काजसँ निवृत्त भ' दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस चाह पीब रहल छला। सोल्होना निश्चिन्त छला। पत्नियोकेँ पारिवारिक कोनो वस्तुक खगता रहितैन तखन ने दौड़-दौड़ अप्पन रंग-बिरंगक खगताक तगेदा हिनका लग आबि क' करितैन। से तँ रहैन नहि, तँए ओ आँगनक ओसारपर बैस चाहो पीब रहल छेली आ मने-मन विचारियो रहल छेली जे पहिने चाह बनबैक सभ समचा माने केतली, कप, छन्ना धो-धा क' आनि लेब, पछाइत चाहक वस्तु-जातकेँ माने चाहपत्ती, चीनी आदिकेँ सेरियाक' राखब, आ तेकर बाद दरबज्जापर सँ गिलास आनि ओकरो धोइ-धाइक' राखि लेब। तैबीच लगले अपने विचार बदैल गेलैन, माने सुशीलाक मनमे ई उठलैन जे एक निवितक काज एकबेर करब बेसी नीक होएत, बेरा-बेरी केलासँ जेहने दलबदलू सभक मनमे रहैए, तेहने कर्ताक विचारमे सेहो भइये जाइए। ऐठाम ई नइ बुझब जे विचारगत निर्णय आ कर्मगत निर्णयमे केतौ-केतौ अन्तर नइ आबि सकैत अछि, अबिते अछि। दरबज्जापर सँ गिलास आनि सुशीला अप्पन वस्तु-जातकेँ तेना रखली जे आगू बेरक काजमे कोनो वस्तुक तक्का-हेरी नइ करए पड़तैन।

चाह पीब पान खा गोपालबाबू जखन दुनियाँ दिस, माने आगू दिस ताकए लगला कि धब्ब-दे पाकल आम जकाँ एकटा विचार मनमे खसलैन। विचार ई खसलैन जे बेटा जकाँ जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल अछि तहिना छोट भाए जकाँ विमलबाबू सेहो छथिए। यएह ने भेल परिवार, तँए सभकेँ पारिवारिक जीवन-दर्शन करा देब उपयोगीए नहि आवश्यक आ अनिवार्य सेहो अछिए। विचारक सीमापर ठाढ़ होइत गोपालबाबू मने-मन निर्णय कए लेलैन जे जखने तीनू गोरे भेटता तँ पहिल विचार यएह रहत।

गोपालबाबूक मन जखन मानि लेलकैन तखन अपने मनमे फेर उठलैन जे जँ कहीं विचारे बिसैर जाइ तखन की करब? अप्पन तँ ओहन अभ्यास नहि रहल अछि जे कौलेजक शिक्षक जकाँ डेरापर पढ़ि विद्यार्थीकेँ पढ़ाएब। साहित्यक शिक्षक छी, किताब देखिक' पढ़बै छी, आन विषय जकाँ मुँहजवानी नहियेँ पढ़बै छी। मनमे फेर लगले उठलैन जे तखन मोन केना रहत?

माने, तीनू गोरेकेँ जीवन-दर्शनक विचार जे करबए चाहै छी..।

गोपालबाबू पाछू उनैट ताकए लगला तँ मोन पड़लैन अप्पन दादी। कोनो बात मोन राखैले दादी गीरह बान्हिक' रखि तँ लइ छेली साड़ीक खूँटमे, मुदा काजक ओझरीमे तेना ओझरा जाइ छेली जे गिरहे ने ठेकानपर रहै छेलैन, बिसैर जाइ छेली। जइसँ काजक बीचमे काजे हेराएल रहै छेलैन। कबीर दास सेहो कहने छैथ ने—

'खेत में बेढ़ी दिये, बेढ़हि खा गये खेत

तीन लोक में अचरज भया, कहे कबीर कोइ देख'।

गोपालबाबूक मन कछमछाए लगलैन। कछमछेबो केना ने करितैन, जे विचार विमलबाबू, मुनीलाल आ धुनीलालक संग करए चाहै छैथ, माने हुनका सभकेँ कहए चाहै छथिन, जँ सएह बिसैर जाथि तखन अप्पन मनकमना केना पुरतैन? मुदा तैबीच गोपालबाबूक अपने मन कहलकैन जे जाबे तक तीनू गोरेसँ भेँट नहि भेल अछि ताबे तक क्षणे-क्षण–तीन घन्टाक क्षण होइए, जेकरा पहर कहै छिऐ– मने-मन घोंकैत रहब। तखन तँ मोन रहत। मन मानि गेलैन जे यएह नीक हएत।

गोपालबाबू बैसले-बैसल जखन जीवन-दर्शनक विचारकेँ मने-मन घौंकए लगला कि मनमे विचारक दौर उठलैन। वैचारिक दौरमे एक सीमासँ दोसर सीमा धरि दौड़ लगबए लगला। दौरक मंत्रोक तँ अप्पन धर्म अछिए जे शान्त करैत-करैत तेतेक शान्त क' देत जे आँखि झलफलाए लगत आ झलफलाइत-झलफलाइत अलिसा सेहो देबे करत।

संयोग बनल, तीनू गोरे माने विमलो बाबू, मुनियो लाल आ धुनीलालो, सभकियो संगे गोपालबाबू लग पहुँचला।

तीनू गोरेकेँ एकसंग देखिते गोपालबाबूक मनमे उठलैन जे चाह-ताह पीबैसँ पहिने अप्पन विचार सभक बीच राखि दिऐन। मुदा, लगले अपने मन रोकि कहलकैन जे यएह ने भेल धड़फड़ीमे धड़फड़ाक' किछु बाजब। कोनो विचार वातावरणक अनुकूल केलासँ वजनदार होइते अछि किने।

ओना, गोपालबाबूकेँ अपना मनक भीतर कछमछी रहबे करैन जे केतेक जल्दी अप्पन मनक विचार तीनू गोरेक मनमे रोपी। तँए, अपनहि विचारक तरंगमे गोपालबाबूक मन तरंगित होइते रहैन कि तइ बिच्चेमे चाहक खेल सम्पन्न भेल। माने सभकियो चाह पीब लेलैन। गर देखि गोपालबाबू बजला—

"विमल भाय, अपना ऐठाम जीवन-दर्शनक दू विचारधारा अदौसँ काज करैत आबि रहल अछि?" ओना, बजैक क्रममे गोपालबाबू बाजि गेला, मुदा अपने मन जखन उनैट क' विचारए लगलैन तँ बुझि पड़लैन जे विमलबाबूक लेल तँ समतुल्य मोटरी भेलैन मुदा मुनीलाल आ धुनीलाल ले तँ नमहर मोटा भइये गेल। गोपालबाबूक अपने मन विचार देलकैन जे मुख्य विचार करैसँ पहिने किए ने मुनियो लाल आ धुनियो लालक मनमे पहिने एकटा भाव-जगत निरमा दिऐ जइसँ विचार स्थापित करब बेसी नीक हएत। मने-मन गोपालबाबू विचारिये रहल छला कि विमलबाबू बिच्चेमे पुछि देलखिन—

"जीवनक दुनू दर्शनक दृष्टि संगे-संग चलि अबि रहल अछि?"

गोपालबाबू कहलखिन—

"हँ।"

मुनीलाल आ धुनीलाल बीचमे बैसल रहितो दुनू गोरेक–माने गोपालो बाबू आ विमलो बाबू–क गप-सप्पक क्रमक आधार किछु ने बुझलक तँए आँखि-कानकेँ चकोना करैत सावधान भेल। जे बात गोपालबाबू बुझि गेला, तँए मनमे उठलैन- जखन विचारकेँ बारीकीसँ व्यक्त कएल जाएत तँ किछु-ने-किछु अंश बाल-बोध रहितो बुझबे करत।

तैबीच विमलबाबू गोपालबाबूकेँ पुछलखिन—

"भाय साहैब, एते उमेर बितौला पछातियो अपनो तँ जीवन-दर्शनक लेल ओहिना छी जेना बाल-बोध मुनीलाल आ धुनीलाल अछि।"

विमलबाबूक विचारकेँ गोपालबाबू गौर करए लगला, गौर केलाक बाद विचार जगलैन जे गर लगाक' कहलासँ तीनू गोरे किछु-ने-किछु बुझबे करता। जखने किछु विचार मनमे गड़तैन तखने ने अपने उनैट-उनैट प्रश्न करता, जेकरा परिमार्जित करैत अपने सच्चाइक धरतीपर आनि ठाढ़ क' देब। अपने मनक विचार गोपालबाबूक मनकेँ शान्त केलकैन। मन शान्त भेला पछाइत विचार जगलैन जे व्याख्यात्मक रूपमे नहि, गणितीय रूपमे विचारकेँ व्यक्त केलासँ बेसी नीक हएत।

गोपालबाबू बजला— "विमलबाबू, अहाँ विज्ञानक शिक्षक छी तँए गणितीय शैलीकेँ आसानीसँ बुझब। रहल मुनीलाल आ धुनीलाल, जँ कनियो-मनियो बुझत सेहो बड़बढ़ियाँ। अपना दुनू गोरे तँ एक-सँ-दू भइये जाएब। जखन दू गोरे भ' जाएब तखन मुनीलाल आ धुनीलालक कोन बात जे आरो दू गोरेकेँ बुझा-सुझा बेसिया सकै छी।"

जाधैर केकरो विश्वास केकरोपर नीक जकाँ नहि जमल रहैए, ताधरिक विचार, आ विश्वास जमला पछातिक विचारमे गुणानुकूल परिवर्तन सेहो होइते अछि। जीवनो तँ परिवर्तनशील अछिए। भलेँ ओ केतौ बाध्यतासँ परिवर्तित हुअए आ केतौ स्वेच्छासँ। ..विमलबाबू बजला—

"भाय साहैब, अपनेकेँ जेना सुविधा बुझि पड़ए तहिना कहियौ। अपने जनिते छी जे अंकगणितक संग रेखागणित सेहो पढ़िते-पढ़ैबते छी।"

विमलबाबूक सिनेहक शीलताकेँ गोपालबाबू नीक जकाँ बुझि क' बजला—

"पहिने नियति आ पुरुषार्थ बुझि लिअ।"

नव शब्द सुनि विमलबाबू अप्पन दुनू कान ठाढ़ केलैन।

विमलबाबूक कान ठाढ़ देखि गोपालबाबू बजला—

"बेकती आ समाज दुनू दू होइए। मुदा बेकतीए समाज बनबैए। तँए दुनू दू रहितो एक्के छी। तहिना पुरुषार्थवाद आ नियतिवाद दुनू धारा समाजक बीच अदौकालसँ धड़धड़ाइत बहैत आबि रहल अछि।"

गोपालबाबूक विचार सुनि विमलबाबू आँखिपर सँ चश्मा उतारि, जेबीसँ रूमाल निकालि आँखियो पोछलैन आ चश्मो पोछि पुन: आँखिपर ल' अप्पन आँखि गोपालबाबूक आँखिपर ओहिना देलैन जहिना कियो बेकती बेकतीगत सिमानपर ठाढ़ भ' अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वकेँ स्वयं देखैए। विमलबाबू बजला— "पुरुषार्थवाद आ नियतिवाद बुझि गेलौं। की मुनीलाल तूँ सभ बुझलह किने?"

मुनीलाल बाजल— "सर, पहिने अहाँ नीक जकाँ मानि लिअ। एकटा गुरु भेटने तँ एक जिनगीक कोन बात जे सात जिनगीक उद्धार होइए, तैठाम अपने दू गोरे भेलौं, तखन मनमे निआशा किए हएत।" गोपालबाबू बजला— "दुनू वाद, माने पुरुषार्थो वाद आ नियतिवाद सेहो वैचारिक समर्थन टा नहि, जीवनधारामे सेहो प्रवाहित होइत आबि रहल अछि।"

गोपालबाबूक विचार सुनि विमलबाबू मने-मन विचारकेँ औंटए-पौड़ए लगला। विमलबाबूक मनक औंटब-पौड़ब देखि गोपालबाबू बजला— "विमल भाय, ऐठाम पुरुषार्थवाद आ नियतिवादकेँ विराम दियौ आ नीक जकाँ बेकती आ समाजक रूप-रेखा पर गोर करियौ।"

विमलबाबूक मन चकोना-पर-चकोना नव-नव शब्दक रूप देखि हुअ लगलैन। हेबो केना ने करितैन? जहिना गाए-महींस दुनू साँझ, माने साँझोमे आ भोरोमे दूध दइए तहिना ने विचारोक अन्हार आ इजोत दुनू पक्ष अछिए। विमलबाबू बजला— "भाय साहैब, अपने लग बजबामे मिसियो भरि लाज-शरम नइ होइए, माने अप्पन जीवनक सच्चाइ बाजैमे अहाँ लग कोनो झिझक नहि अछि। अखन जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल जीवनसँ अनभुआर अछि तहिना हमहूँ छी, तँए अनभुआर केना भुआर बनत, से तँ अपने..?"

विमलबाबूक विचारक संग चेहराक हाव-भाव देखि गोपालबाबूक मन सहमए गेलैन। बजला— "विमल भाय, पहिने समाजक एकटा रूप प्रकट करै छी।"

'समाजक रूप' सुनि विमलबाबूक अपने मन कहलकैन जे समाजमे रहितो, अपनाकेँ सामाजिक

कहितो, समाजकेँ नीक जकाँ नहि जानि रहलौं हेन। मुदा 'जखने जागी तखने परात'। विमलबाबू बजला— "अपनेकेँ जे श्रद्धा हुअए।"

गोपालबाबू बजला— "संस्कार आ विचार जेतएसँ प्रभावित होइए, से पहिने कहै छी। समाजक अधिकांश भाग, माने बहुसंख्य लोक, या तँ अहं भावनासँ रोगाएल छैथ वा हीन भावनासँ।"

गोपालबाबूक विचारकेँ विमलबाबू आधा-छिधा बुझबो केलैन आ आधा-छिधा नहियोँ बुझलैन। मुदा मन कहलकैन, बीचमे टोक-टाक करबसँ नीक जे पहिने एकहरफी सुनि ली। पछाइत जे नइ बुझने रहब से दोहराक' पुछि लेबैन। आइ जँ समय भेटत सेहो बड़बढ़ियाँ आ जँ समय नइ भेटत तँ दोसर दिन पुछि लेबैन। यएह सोचि विमलबाबू अप्पन आँखि-कान ठाढ़ केलैन। आँखि-कान ठाढ़ करबक माने जेना प्राण शक्ति शरीरमे प्रवेश करैए, तेना नहि बुझब।

विमलबाबूक रूप देखि गोपालबाबू बुझि गेला जे आगू सुनैक जिज्ञासा भ' रहल छैन। बजला— "विमलबाबू, वैदिके युगमे पुरुषार्थो वाद आ नियतियो वादक जन्म भेल। जहिना अनेको वैदिक ऋषि पुरुषार्थवादी भेलाह, तहिना अनेको ऋषि नियतिवादी सेहो भेबे केलाह।"

विमलबाबूक मुहसँ सहजे निकैल गेलैन— "तखन तँ दुनूक जड़ि बड़ गहींरमे अछि.!"

गोपालबाबू बजला— "हँ। आगू चलू। पूर्व मध्ययुगमे बुद्धदेव भेला, महावीर भेला, जे पुरुषार्थवादी विचारेक नहि बेवहारवादी सेहो छला। ओ सभ जीवनक मूलकेँ पकैड़ अप्पन विचार प्रतिपादित केलैन। तहिना दोसर दिस ओही समयमे आजीवक सम्प्रदायक आचार्य गोशालक नियतिवादी भेला।"

बिनु विचारने विमलबाबू बिच्चेमे बजला— "इतिहासो लोककेँ भ्रमित केने अछि.!"

विमलबाबूकेँ बहकैत देखि गोपालबाबू अप्पन विचारकेँ मोड़पर चढ़बैत बजला— "भ्रमिते टा केने अछि, इतिहास की छी आ पुराण की छी, सेहो अखन तक फरिछौठ नहि भेल अछि। तइ बीचमे मनोवैज्ञानिको सभ छैथ।"

मनोवैज्ञानिकक नाम सुनि विमलबाबू बजला— "फ्राइड सेहो मनौवैज्ञानिके भेल छैथ किने?"

गोपालबाबू बजला— "हँ भेल छैथ, जिनका सम्बन्धमे रशियन मनोवैज्ञानिक मास्लोव लिखने छैथ जे फ्राइड आ डार्विन सन नियतिवादी, समाजमे गलत धारणा पसारि समाजकेँ आगू मुहेँ नहि बढ़ए देलैन अछि।"

विमलबाबू मने-मन निर्णय केलैन जे अनेरे मनोवैज्ञानिक सभक बीच ओझरा जाइ से नीक नहि, किए तँ अप्पन जीवनक दर्शन अपने करी। विमलबाबू बजला— "अप्पन जीवनक दर्शन अपने केना हएत?"

विमलबाबूक विचारक ओज, वैज्ञानिक भाषामे ओजेकेँ ऊर्जा– माने शरीरक बिजली–सेहो कहल जाइए, देखि गोपालबाबू बजला— "हँ, जीवन दर्शने ने जीवनो पेब सकैए, मुदा तइले पहिने अपनाकेँ झाँकिक' देखि लेब आवश्यक अछि। आत्मा परमात्मा सेहो बनैए। ऐ सूत्रक जे पहिल सूत्रधार भेला ओ धरतीपर बहुत पैघ सच्चाइक अनावरण केलैन। जे पुरुषार्थवादक पहिल घोषणा छी।"

विमलबाबू अधमुहेँ बजला— "की घोषणा?"

गोपालबाबू बजला— "समाजमे अखनो बहुसंख्य लोक ओहन छैथ जे अपन भाग्य रेखा देखि रहला अछि। भाग्यमे जे लिखल हएत से हेबे करत। बजैकाल ईहो बजबे करै छैथ जे हम सभ एक्कैसमी सदीक मनुक्ख छी।"

विमलबाबू बजला— "एक्कैसमी सदीक मनुक्ख केना बनब?"

विमलबाबूक विचार सुनि गोपालबाबूक मन अपने हँसए लगलैन। जिनगीकेँ अखनो विमलबाबू ठठ्ठे बुझै छैथ। बजला—

"विमलबाबू, जइ मनुक्खमे जेतेक शक्तिबोध, विवेक, संकल्प आ मनोबलक विकास हएत ओ ओतेक आगू दौड़त। आ जेकरामे से जेतेक कम हएत ओ ओतेक पछुआइत रहत।"

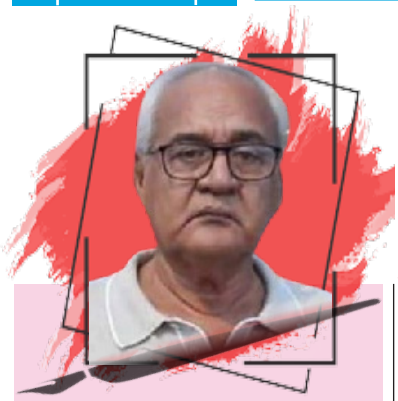

मधुकान्त झा

सम्पर्क : पटना, बिहार।
मोबाइल : +91 99349 16785

मधुकान्त झाजी चारिटा उपन्यास, दूटा कथा-संग्रह, पाँचटा कविता-संग्रह, दूटा प्रेम-संवाद-संग्रह आ दूटा निबन्ध संग्रह मैथिलीकेँ देलनि अछि। हिन्दीमे सेहो एकटा कविता-संग्रह आ एकटा गजल-संग्रह प्रकाशित छनि। आधुनिक मैथिली नाटक : पहिल शताब्दी, शताब्दीक संधि बेलामे मैथिली साहित्यक उत्कर्ष, चेतना समिति, पटना आ मैथिली संस्कृति विकास समिति, पटनाक स्मारिका : 2010 केर सम्पादनक अतिरिक्त 'समय-साल' मैथिली द्विमासिक पत्रिकाक वर्ष 2000सँ संरक्षण प्रबन्धन, संचालन तथा प्रधान संपादकक रूपमे ख्यात मधुकान्तजीकेँ यात्री चेतना पुरस्कार-2012 (चेतना समिति, पटना), किरण पुरस्कार-2010 (मैथिल समाज, रहिका, मधुबनी), मार्कण्डेय प्रवासी राष्ट्रीय शिखर सम्मान-2013 (भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर) आदि सम्मान/पुरस्कारसँ पुरस्कृत छथि। 'अरिपन' मैथिली नाट्य मंच, पटना, चेतना समिति, पटना तथा मैथिली लेखक संघ, पटनासँ सम्बद्ध छथि।

तलाक

जज साहेब— वकील साहेब, आवेदनसँ स्पष्ट लगैछ जे अहाँ अपन वैवाहिक जीवनसँ त्रस्त छी। पति देवधरसँ तलाक चाहैत छी।

मुद्दै के वकील— हँ हुजूर। हम पतिदेवक आचरण, व्यवहार आ प्रवृतिसँ आहत छी। तलाक छोडि कोनो विकल्प नहि शेष अछि। थाकि गेलहुँ। अपनेक शरणमे तँ आबय पडल।

जज साहेब— अहाँक कतेक वयस अछि?

वकील— लगभग 35 साल हुजूर।

जज साहेब— कतेक बाल बच्चा अछि?

वकील— संतान नहि अछि।

जज साहेब— तलाक के आवेदनमे विलंब किएक?

अहाँक तँ उत्पादक वयस मात्र 5-7 साल शेष अछि जे संतान सुख पुनर्विवाहसँ भेट सकैछ। ओतेक दिन तँ विभिन्न कोर्टक तफसियामे लागि जायत।

वकील— आशा अछि शीघ्र निर्णय भ' जायत।

जज साहेब— लेकिन न्यायालयक तँ ई दायित्व अछि जे तलाकक मामिलामे त्वरित निर्णयसँ परहेज करय। किएक तँ पति पत्नी एक साधारणो बात के मतभेद,मनभेद भेला पर आवेशमे आबि जाइछ। जिद पकडि लैछ। प्रतिष्ठाक विषय बना लैछ। अगल-बगल के लोक ओ पति पत्नी के कुटूंबगण तिल के तार बनेबामे सहयोगी बनि जाइछ। उग्र स्वभावक पति या पत्नी एकर शिकार बनि जाइछ। फेर जीवन भरि पछताइत रहैत अछि।

तें पति पत्नी के पुनर्विचार हेतु पर्याप्त समय देब आवश्यक। न्यायालय के सेहो समझौता लेल जमीन तलाशक समय भेटय। शंका, संदेह, आरोप-प्रत्यारोप के बिंदु पर मनोवैज्ञानिक के सलाहसँ उपचार के प्रयत्न कयल जाए। नहिं?

वकील साहेब— हुजूर ! मी लार्ड, अपनेक मंतव्य आ सलाह हमर माथ आंखि पर। लेकिन हम पतिदेव के भयंकर उत्पीडन के शिकार छी। वर्षोंसँ देवधर मारि-गारि,दुर्व्यवहार, बलात्कार के भुक्तभोगी छी। कोनो भारतीय नारी अपन पतिसँ तलाकक बात छोडल जाए, ओकर आंगनसँ बाहर पयर राखब अनुचित मानैत अछि। हम कोनो खुशीसँ परित्यागक कलंक अपना

माथ पर नहि लेल अछि। हम पति देवधरक संग अपन नारकीय जीवनसँ मुक्ति चाहैत छी। हमर अर्जी के स्वीकार क' हमरा प्राण आ मानवीय मर्यादाक रक्षा कयल जाए। हमर यैह निवेदन अछि।

जज साहेब— यौ वकील साहेब, तलाकक अर्जीमे पीडितासँ अधिक एडवोकेट गण सेहो केस के मजबूत करबा लेल ओ सभ शिकायत दर्ज क' दैत छैक जे काफी अमानवीय व्यवहारक प्रतीक अछि। जाहिसँ न्यायालय के अपना पक्षमे कयल जा सकय।

फलत: हम आवेदनमे लिखल शिकायत पर आंखि मुनि विश्वास नहि क' सकैत छी। हम चाहब जे आरोपक तार्किक छानबीन हो। एक पत्नी अपन पति पर बलात्कार के आरोप लगाबय ई एक बचकानी बात भ' गेल। एहि आरोप सि प्रतीत होइछ जे आवेदिका हवा के मुठ्ठीमे राखि मनपसंद दिशामे उडाबय चाहैत छथि।

वकील— महानुभाव, देवानी के पति देवधर मनुख नहि जानवर छी। ओ देवानी संग पशुवत व्यवहार करैत छथि।

एक तँ ओ पत्नी पर पाकेटसँ टाका निकालि नित चोरिक आरोप लगा उत्पीड़न करैत छथि।घरक खर्च लेल देल टाका के दुरुपयोग के नाम पर देवानीसँ बार बार मारि पिट करैत छथि। सप्ताह हर शनिवार राति ओ शराबमे धूत भेल लडखडाइत घर अबैत छथि। पत्नी जँ हुनकर आदि छोडाबक कोनो चेतावनी देल जाइछ तँ ओ भडका जाइ छथि। मारि पीट करैत छथि। भोजन के थारी उठा फेकैत छथि। कतेक बेर देवानी के माथ कपार फोड़ दैत छथि।

आ फेर नशामे मातल रहिते ओ पत्नी संग सहवास लेल आतुर भ' जाइ छथि। दवाब बनबै छथि। बदहवासीमे ओ पत्नी संग जबर्दस्ती अप्राकृतिक यौनाचार आरंभ करैत छथि जकरा एनिमल लभ कहल जा सकैछ।

एहि प्रकारे देवधर देवानी के भयंकर मानसिक ओ शारीरिक पीडा दैत छथि।

देवानी एहि कष्टप्रद दंपति जीवनकेँ वर्षोंसँ उघि रहल छली। आब असहनीय भ' गेल। गारि-फज्झति के अलावे पशुवत सहवासक दुर्लक्छण के कारणे अंग अंगमे भेल घाव के ओ आब सहन नहि क' पाबि रहली। देवानीक आवेदनमे अतिशयोक्ति कतहु नहि अछि।

एलेक्स सुनलाक बाद जज साहेब अपन आदेश डिक्टेट क्रायफ लगलाह।

जज साहेब—

देवानी द्वारा दाखिल कयल गेल के एक प्रति देवधर के पठाओल जाए।

एहि मामिला के सुनवाई अगिला महीना के आजुक तारीख के निर्धारित कयल जाइछ।

उक्त निर्णय संग आजुक बहस समाप्त भ' गेल।

निर्धारित तिथिकेँ देवधरक वकील अपन दाखिल जवाबक कॉपी संग उपस्थित भेलाह।

जज साहेब— मुदालह देवधर द्वारा दाखिल जवाब के प्रति प्राप्त भेल की नहि वकील साहेब?

मुद्दै के वकील— हँ सर, हमरा भेटल।

जज साहेब— मुदालहक वकील अपन पक्षमे तर्क संगत जानकारी अगर देबय चाहथि तँ द' सकैत छथि।

मुदालहक वकील— ई सही अछि जे देवानी हमर पत्नी छथि। विवाह दस वर्ष पहिने भेल। हम दुनू गोटे जब करैत छी। आत्मनिर्भर छी। हम संतानहीन छी।

हमरा लोकनिक विवाह लभ मैरेज नहि परिवार के सहमतिसँ एरेंज मैरेज भेल छल।

लेकिन समय बीतबाक संग ई पता लागल जे एहि विवाह सँ देवानी खुश नहि छली। देवानी के कालेज समयसँ कोनो सहपाठीसँ प्रेम छलनि। लेकिन अंतरजातीय विवाह लेल हुनकर परिवार तैयार नहि भेलनि। हमरा तकर भनक धरि तखन नहि लागल।

देवानी हमरा कहियो हृदयसँ अपन पति नहि मानलनि। शरीर अर्पण जरूर कयलनि,मोन नहिं। संयोगसँ किछु दिनक बाद देवानी गर्भवती भ' गेली। लेकिन ओ एलेक्स जल्दी माय बनक लेल तैयार नहि भेली। हमर लाख अनुनय विनय के अस्वीकृत करैत गर्भपात करा लेलनि।

हमरा एहि दुर्घटनासँ भारी चोट लागल। पति पत्नीक मध्य अन बन आ कटुता आरंभ भ' गेल। तदुपरांत 7-8 साल बीत गेल। कोनो संतान नहि भेल। देवानी गर्भ निरोधक औषधि खाय फरहर बनल रहली। हमर शंका गहींर होइत गेल। ओ सहवासमे रूचि लेब छोडि देलनि। लगैत छल जे ओ संतुष्ट भ' घर अबैत छली।

हम दांपत्य जीवनक प्रणयविहीन पीड़ासँ मुक्ति लेल दोस्त आदि संग साँझ बीताबय लगलहुँ। गलत आदति जीवनमे प्रवेश कयलक। शराब सिगरेटमे आश्रय भेटल।

देवानी के हमरा प्रति उपेक्षाक भाव तीव्र होइत गेलनि। हम महसूस कयल जे ओ अपन बाल मित्रसँ संबंध प्रगाढ करबामे व्यस्त छली। तकर कारण ई जे बादमे पता चलल, हुनकर बालमित्रक पत्नी एक दुर्घटनामे विकलांग बनि गेलखिन। ओ बिछाउन पकडने अंतिम सांस ल' रहल छलखिन। कहियो मृत्यु संभावित छनि।

हम खोजबिन क' एहि रहस्यक उद्‌भेदन कयल।

आइ ओ तलाक लेल एहि कारणे अग्रसर भेली अछि जकर प्रतीक्षा ओ सभ दिनसँ करैत रहल छली। देवानी अपन बालमित्र संग पुनर्विवाह करय चाहैत छथि।

देवानी आ हुनकर मित्रक प्रेम कतेक प्रगाढ अछि से बालमित्रक पत्नी के दुर्घटना के षड्यंत्र के जांचसँ पता चलत।

माननीय, देवानी द्वारा हमरा विरुद्ध लगाओल गेल आरोप सरासर गलत, झूठ,मनगढ़ंत आ भ्रमकारी अछि।

हम सदा हुनका आदर आ प्यार देल अछि।

हँ, हम हुनका अपन नहि बना सकलहुँ,ई हमर विफलता थिक।

लेकिन कियो ओकरा अपन कोना बना सकैछ जे मन प्राण सँ ककरो अनका लेल जीवैत हो। ई बात हम फरिछा के आब बूझल अछि। हम नादान बबूरक गाछमे आम तकैत रहि गेलहुँ।

लेकिन देवानी द्वारा लगाओल आरोप निराधार आ षड्यंत्रपूर्ण दुर्भावना सँ प्रेरित अछि। फलत: हमर प्रार्थना जे देवानी के तलाकक आवेदनकेँ अस्वीकार कयल जाए। हम देवानीसँ तलाक नहि चाहैत छी। आइयो ओ जेहेन जेना छथि, हमरा स्वीकार छथि। हम एक छत तर रहि ब्रह्मचर्य पालन करब। ओ हमरासँ आजाद जीवन जी सकैत छथि।

जज साहेब मुदालहक वकील के प्रस्तुति सुनि भावुक भ'गेलाह। देवी सदृश पूजित नारी आब शूर्पनखा बनबामे अपन सफलता मानैत अछि से सोचि जज साहेब हतप्रभ भ' गेलाह।

जजक कुर्सी पर छलाह। नियम कानूनक अनुपालन हो से दायित्व स्मरण भेलनि। सम्हरलाह।

जज साहेब— मुद्‌दै के वकील साहब,अहाँ अपन पक्ष राखि सकैत छी।

मूद्‌दै के वकील— चुंकि विरोधी पक्ष अनेक अनर्गल आरोप लगौलनि फलत: प्रमाणिक जवाब देबा हेतु एक मासक समय देल जाए।

जज साहेब— सहमत छी। लेकिन 15 दिनक अधिन मुद्‌दै पक्ष अपन जवाब प्रस्तुत करथि जाहिसँ ससमय मुदालहो अपन जवाबी शपथपत्र दाखिल क' सकथि।

एहि मामिला के अगिला सुनबाइ 14 जनवरी के होयत।

आदेश देल जाइछ जे उक्त तिथिकेँ मुद्‌दै मुदालह सदैव कोर्टमे उपस्थित रहथि।

निर्धारित तिथिकेँ दुनू पक्ष उपस्थित भेलाह।

जज साहेब— देवानीसँ आग्रह जे देवधर जीक जवाब के संबंधमे किछु कहबाक अछि तँ कहू। हम अहाँक मुंहसँ विषयक जानकारी सुनय चाहब।

जरूरी हैत तँ पति पत्नी दुनूकेँ अपन चैंबरमे बैसाखकेँ सोलहनामा कराने चाहब। कारण देवधरक स्वीकृति बिना तलाकक स्वीकृति देब आसान नहि अछि।

देवानी— माननीय, हमरा अपन पक्ष रखबाक अवसर देल, आभारी छी। किछु गलत भाषा बजा जाए तँ क्षमा करी।

हम आवेदनमे जे आरोप लगाओल से पूर्णत: सत्य अछि। कोनो मनगढ़ंत बात नहि। हमर भोगल बात मात्र अछि।

हम दस वर्ष सँ पल पल देवधर जीक क्रूरता के अनेक घटना के शिकार भेल छी। एकर वर्णन करब हमरोसँ संभव नहिं।

बालमित्रक संग हमर संबंधक चर्चा क' देवधर जी हमरा कलंकित कयलनि से निंदनीय अछि।

हमरा ककरोसँ कोनो संबंध नहि रहल अछि। से रहैत तँ हम दस वर्ष हिनका सुधरबाक लेल प्रतीक्षा नहि करितहुँ। भागि गेल रहितहुँ। हमहूँ समाजक रीति नीति,परंपरा,मर्यादा के समर्थक छी। लेकिन जखन जीवनक अस्तित्व पर खतरा हो,प्राण भयसँ आतंकित हो तँ तलाक मात्र हमरा विकल्प भेटल जाहि भिक्षा लेल अपनेक समक्ष आंचर पसारि ठाढ छी।

महोदय, देवधरक संग हम आइयो रहैत छी। घर छोडि भागलपुर नहि छी। आत्मनिर्भर छी,अलग रहि सकैत छलहुँ। लेकिन हम पलायन कयनिहारि नहिं।

देवधरक एनिमल लभ के निशानी जँ कही तँ हम कोनो महिला वकीलक सामने देखा सकैत छी। शराबी देवधर हर राति हमर हत्या क' बिछाउन सँ उतरैत अछि। हमर स्तन पर हुनकर नह के नोछार आ दांतक घाव आइयो हरियर अछि। हमर गुप्तांग पर हुनकर देल घाव हम आइयो उघि रहल छी। प्रणय अनिच्छा के विपरीत पशु सदृश पत्नी पर हिंसात्मक आक्रमण बलात्कार छी,प्रेम नहिं।

महाशय,हम देवधर संग एक दिन आब नहि रहि सकैत छी। हमरा एहि नर्कखानासँ मुक्ति दियाओल जाउ।

जज साहेब— देवानीक आरोपसँ प्रकंपित कहलनि जे देवधर अहाँ प्रत्युत्तरमे अपन पक्ष राखि सकैत छी।

देवधर सज्जन लोक छलाह। अनुमान लगौलनि जे देवानी अपन बालमित्रक प्रेममे किछु क'सकैछ। भ' सकैछ जे ओ अपन गुप्तांगमे छतरी आदिसँ घाव स्वयं क' लेने हो। आइ काल्हि किछु असंभव नहिं।

देवधर देवानी के पीडा के बर्दाश्त नहि क' सकल। पति पत्नीक संबंध पर एहेन आरोप प्रत्यारोप समाज लेल हितकर नहिं। ठाढ भ' बाजय लगलाह— माननीय जज साहेब, देवानी पति पत्नी के संबंधक सभ सीमा तोडि पार क' गेली। हम एहि पवित्र संबंधकेँ कलंकित होइत नहि देखय चाहैत छी। नहि चाहब जे हमर पत्नी बेनग्न भ' समाजक समक्ष अंग प्रदर्शन करथि। हम एकसर जीवन काटि लेब। बाजारमे इज्जत नहि नीलाम करब। हम सहर्ष देवानी के परित्याग करैत छी। तलाकमे हमरा कोनो आपत्ति नहिं। तलाकक स्वीकृत द' उपकृत करबाक कष्ट करी।

देवधरक वकील सन्न रहि गेला। देवधर कागज पत्र समेटि कोर्ट रूमसँ बाहर चल गेलाह। कोर्ट क निर्णयक प्रतीक्षा नहि कयलनि।

कोर्टमे थोडे काल लेल सन्नाटा पसरि गेल।

देवानी हर्षित मुद्रामे बाहर भेली।

कहबी छैक जे जीवन अपना हाथ नहि तँ मरण सेहो वशक बात नहिं। देवधर दिल्ली शहरमे नौकरी करैत रहलाह। कतेक बेर जंगल पहाड दिस चल जयबाक सोचलनि। हिम्मति नहि क' सकलाह।

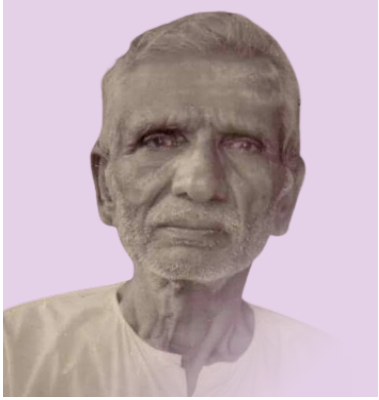

वैकुण्ठोसँ बढ़ि मधुप पावन मिथिला भूमि
लक्ष्मी सीता रूप धय खेलथि जै ठाँ झूमि

देश न मिथिला सन मधुप भूमण्डलमे आन
जनक सनक हरबाह आ सीता उपज प्रमाण

टुटल प्रेम जोड़ने मधुप हो तैमे रस थोड़
रस न खूब कुसियारमे जाहि ठाम हो जोड़

— कविचूड़ामणि मधुप

कार्यालय घर नैतिक जीवन व्यतीत होइत रहलनि। लोक अपन लोभ लालच जिद लेल केहन केहन अपकर्म करबा लेल तैयार भ' जाइछ, सोचैत रहला। देवानी अपन प्रेम प्रसंग विवाहक समय कहि दैत तँ हम ओकरा तखने आजाद क' दितियैक— बेर बेर सोचल करथि।

संयोग देखू जे एक दिन ओ पंजाबी बाग के बैंकक शाखामे पैसा निकासी हेतु पांतीमे ठाढ रहथि। तखने एक अधवयसू महिला पर नजरि गेलनि। मैल कुचल सलवार समीज आ दुपट्टामे बान्हल रुग्ण काया संग कौंटर लग ठाढ ओ महिला परिचित लगलनि। अखियासि के देखलनि तँ ओ देवानी लगलनि। ओ अपना के रोकि नहि सकला। झटकि के देवानी समीप गेलाह।

— की अहाँ देवानी छी? एहेन रंग रूप किएक?

देवानी घुरि तकलनि तँ देवधर के चीन्हि गेली। ओ अवाक्। कौंटर छोडि देवानी दैवधरक समीप आबि भरि पांजकेँ तेनी पकडि लेलनि जेना विवाहक राति प्रथम मिलनक समय देवधर हुनका गछारि लेने रहथिन। माथ हुनकर छातीमे धंसबैत,फफकि फफकि कानय लगली।

देवधर, देवानी के समेटि अपन पंजाबी बागक नव डेरा पर ल' अनलनि। देवानी के सुरक्षित अलमिरासँ हुनके सलवार समाज आदि पहिरौलनि। चाह पियौलनि। दैवानीक आंखिक नोर कोर धयलक। होश अयलनि। कहय लगली-- तलाकक पश्चात ओ गोपालक संग उत्तमनगरमे रहय लागलि।

लेकिन गोपालकृष्णन आइ काल्हि करैत रहल, विवाह नहि कयलक। ओकर पत्नी मरि गेलैक तैयो वैह व्यवहार। ओकरा अनेक महिलासँ संबंध छलैक। दू बेटा छलैक। जे हमरा माय नहि कहैत छल।

गोपाल विवाहक चर्चा कयला पर आगि भ'उठैत छल। रखैल सदृश व्यवहार करैत छल। हमर सभ टाका पहिनहिं घर बनेबाक नाम पर ल' लेलक। जेवर पर कर्ज ल' लेलक। तैयो हम बर्दाश्त कयल।

लेकिन एक राति हम एकसर सुतल रही,गोपाल टूर पर गेल छल। गोपालक जेठ बेटा हमरा कोठरी आबि जबर्दस्ती करय लागल। हमरा संग बलात्कार कयलक। हम पागल जकां करय लगलहुँ।

गोपाल सँ शिकायत कयल तँ हमरा जवाब देलक जे जवान छैक। गलती भ' गेलैक। एहेन होइत छैक। तोमर कोन अमृता घैल हेरा गेलौ। एक रत्ती चर्मघर्षणे ने?

ताहि दिनसँ हम अलग रहैत छी। नहि पता किएक जीवैत छी।

देवधर,हम अहाँकेँ बड्ड दुख देल। क्षमा करू।आब हम मरि सकैत छी।अहाँके देख लेल। मरि सकैत छी। चैनसँ मरि सकैत छी।

देवधर अश्रुधारा नयन के पोछैत, देवानी के छाती लगा लेलनि आ कहय लगलाह— पगली, आब हम सभ जीव सकैत छी। उमेर बांकी अछि। देखबै अहाँक कोडामे बौआ खेलायत। हम अहाँ फेर हँसबै, फेर मुस्कियेबैक। हम छी ने।

विजय शंकर माल्लिक 'सुधापति'

सम्पर्क : बोकारो, झारखण्ड
मोबाइल : +91 9939340984

कविता, कथा, आलेख, निबंध, संस्कार-गीत, भक्ति-गीत, बाल-कविता, अनुवाद आदि विधामे निरंतर कलम चलबैत आबि रहल विजय शंकर माल्लिक 'सुधापति' जीक 'सगुनक भार', 'कुल-श्री' (मैथिली कथा-संग्रह) 'बाल काव्य प्रसून', 'काव्य विलास', 'काव्य श्रृंगार' (कविता-संग्रह), 'सुधा मंजरी' (वैवाहिक संपूर्ण गीत), 'रस मंजरी' (संस्कार गीत, भक्ति गीत, लोक गीत) आदि प्रकाशित छनि। हिनक छः भाषामे लघु पुस्तिका सेहो प्रकाशित छनि यथा– 'हृदयोदगार', 'भावाभिव्यक्ति', 'शुभ अभिनन्दन', 'शुभावसरोचित काव्यरस प्रसाद', ''भाव पियूष', 'काव्याभिषेक', 'काव्यचर्चा'। 'ड्राइंग रूममे लाफिंग बुद्धा' चर्चित काव्य-संकलन छनि। एकरा अलाबे स्मारिका (मैथिली), मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो इस्पात नगर। स्मारिका (हिंदी), श्री चित्रगुप्त महापरिवार कल्याण समिति, बोकारो स्टील सिटी। सम्पादन कएने छथि। कैथी लिपि प्रशिक्षक रूपमे ख्यात सुधापतिजी सम्प्रति बोकारो, झारखण्ड प्रवासमे रहि साहित्य साधना करैत छथि।

सोनमीक बिआह भ' गेलै

कनियाँ काकी आने दिन जकाँ सबेरे उठि भगवतीकेँ गोर लागि घर-अँगना बाहारय लगलीह। बाहारैत-बाहारैत जखन अँगनाक कोन्टा लग एलीह तँ कनि मूरी उठा बाहर दिस देखय लगलीह। देखलखिन्ह जे रघुकामत हहैले-फिफियैले दलान दिससँ हिनका घक पछुऐत बला रास्ता पकड़ि झटकारने जा रहल अछि। नहि जानि कनियाँ काकीकेँ की फरेलैन्ह। ओ रघुकेँ नाम ल' क' शोर पारलखिन्ह। रघु कामत अपना धुनिमे जा रहल छल। कनियाँ काकीक हाक अकानि घेंट सोझ कए देखलक आ पुनः डेग बढ़ा देलक।

कनियाँ काकी— यौ रघु! अहींके कहैत छी। कनि एमहर आऊ ने। बेसी हरबड़ीमे छी की?

रघु कामत— नहि काकी! एहेन सन कोनो खास नहि। इएह कनि नगेसक हालचाल लेमय जारहल छियै।

कनियाँ काकी— की बात? की भेलैक अछि।

रघु कामत— किछो भेलैय नहि। घबरेबाक कोनो बात नहि काकी! बेटीक बियाह कए क' आयल अछि ने। इएह कने पुछाआछी। से कहैत रघु कनियाँ काकीक आँगन दिस मूरि गेल। से देखि बाहरैन-सोहरैन के कात लगा काकी घुरि घर गेली आ एकटा पीढ़ी निकालि असोरा पर राखि कने मुस्किआइत कहलथिन्ह— 'आऊ-आऊ बैसू।' आ अपने लोटा गिलासमे पानि आ प्लेटमे दू गोट बिस्कुट आनि कहलखिन्ह। हे पानि पीबि लिअ'। रघु मुस्किआइते कनियाँ काकीक हाथसँ पानि आ बिस्कुट ल' आँगा राखि कहय लागल— भोरे भोर एकर कोन आवश्यकता काकी?

कनियाँ काकी— आवश्यकता कोन। खाली पानि कोना पीब तँ दूगो बिस्कुटो...। अच्छा छोड़ ई सभ बात। कहू जे एते भोरे नगेसक ओहिठाम जेबाक कोनो खास प्रयोजन की? आकि ओहिना? ओ तँ, अहाँक घनिष्ट मित्रमेसँ अछि। बादोमे जा सकैत छलहुँ ने।

रघु— हँ, काकी बात तँ अहाँ ठीके कहैत छियैक। मुदा ओ सोनमीक बियाह कएकेँ काल्हि भिनसरे आयल आ हम एखनधरि भेंटो नहि केलियैक। बियाहमे तँ नहि जा सकलियैक तँ भेंटो घांटसँ गेला। तँ कने जल्दीमे छी। एखन जाय दिअ। फेरू

कखनो आबि अहाँसँ बतिया लेब। एते कहैत रघु कामत उठि विदा भेल नगेसक ओहिठाम जयबा लेल।

कनियाँ काकी— हे, एखन जाइत छी तँ हम नहि रोकब मुदा ओम्हरसँ घूरब तँ एम्हरे देने जायब। सुनितो रहियैक आ अहूँ कहबे केलहुँ सोनमीकेँ वियाहक मादे। से सविस्तर सुनबा लेल हम कान पथने रहबा अहाँ जल्दीए आबि जायब। ठीक ने।

रघु— हँ, काकी जखन एहि सबसँ फराकति भेटत की हम दौड़ले आबि जायब। आ तखन आबि स्थिराहे गप्प हेतैक। अच्छा तँ हम चलै छी काकी।

कनियाँ काकी— बेस, तँ जाऊ।

रघु जखन अँगनासँ बाहर भ' गेल तखन कनियाँ काकी ओही पीढ़ी पर बैसि गेलीह आ किछु सोचय लगलीह। सेचय लगलीह जे नगेसक बेटी सोनमी, जेकरा जन्मेसँ देखैत एलियैक। कोरा काँख लेलियैक से बेटी बिहनजोग भ' गेलै। ओकर बिआहो भ' गेलै। ओहो बिआह गामसँ होयतैक तँ भरि नैन देखबो करितहुँ। से तँ भेलैक नै। नहि जानि कत' जा क' भेलैक? बिआहे देखने ने स'खो मनोरथ पुरैत। भोज-भातक कोन मोल छैक। ओ तँ होइतहि रहैत छैक। एह, सोनमीकेँ पसाहिन भेल हेतैक। हाथमे चक्कू सुपारी नेने रहैत हेतै। कपार पर पीअर कपड़ा पर सिनुरक पाँच धारी लगा विद्यकरी बान्हि देने हेतैक। पिअर सारीमे तँ जे से लेकिन जखन ओ बिअहुतलि सारी आँगी पहिरि, गहना-गुड़िया पहिरि नेने हैत, पटवाइस भेल हेतैक तखन ओहि सोनमीकेँ रूप साक्षात लछमीये जकाँ ने लगैत हेतैक। सोनमी तँ सुन्दरताइमे अपने कम्म नहि ताहि परसँ बिआहक सिंगार-पटार, अलौकिक। इनरोक परीसँ बढ़िक' भ' गेलि होयत ओ। ओहि परिधान-अलंकरणमे एक बेरि देखि लितियैक तँ मोनक लिल्सा पूर भ' जाइत। हमरे कि गामक सभजन आनन्दित भ' जाइत। तेहने मुलूकमे जा कए ने नगेस बिआहलकै जे गाम भरिक लोक देखबा लेल उनमुनाइते रहल आ सोनमी सासुरो चलि गेलि। ई सभ सोचिते-सोचिते कनियाँ काकीक आँखि बन्न जकाँ होमय लगलैन्ह। अकचका क' उठली आ ठाढ़ भ' गेलीह। अकछायल जकाँ बजलीह— घुर हम ई सभ की सोचय लगलहुँ। बेर कते उठि गेलैक। सभ काज एखन पड़ले अछि। से कहैत ओ चिनवार परसँ डेकची, बटलोही थारी-बाटी सभ लोहियामे राखि बरतन माँजय पोखरि दिस विदा भ' गेलीह।

बरतन सभ माँजि, चौका चिनवार नीपि ओ स्नान करबा हेतु साड़ी-आँगी लए पुन: चललीह। मुदा मोन अशांते जकाँ रहैन्ह। मनुक्खक मोनमे जखन कोनो बातक जिज्ञासा जागि जाइत छैक तँ सभ किछु जाधरि अपना काने नहि सुनि लैछ वा अपना आँखिये नहि देखि लैछ आ वास्तविकतासँ आश्वस्त नहि भ' जाइत अछि तावत ओ अपस्यांते जकाँ रहैत अछि। यद्यपि ओहि बातसँ ओकरा कोनो खास सरोकार हो, कि नहि। जिज्ञासा तँ जिज्ञासे होइत छैक ने। ''से कनियाँ काकी सोनमीक बिआहक पूरा वृतांत सुनवाक वास्ते ततेक ने व्यग्र भ' गेल रहथि जे नहेबाक वास्ते पोखरि पर अबिते सुरेखियाकेँ देखि ओकरा टोकिये देलथिन्ह। सुरेखिया (सोनमीक संगी) ओकरे उमेरक छलि आ नगेसक बगलेबला अँगनामे रहैत छलि। ओकरा ठाढ़ हेबाक इशारा कए लग जा पुछलखिन्ह— ऐं गे सुरेखिया, गे तोहर संगी सोनमी के जे बिआह भेलैक से हँकार-तिहारमे तहूँ सभ गेल रही गै? आकि नहि?

सुरेखा— हँ यै, कनियाँ काकी गेल तँ रहियै। जयतियै कोना नहि? सोनमी तँ हमरा छौड़ैये नहि चाहैत छलैक मुदा से गामे भरि ने बिआहसँ दू-तीन दिन पहिले तक तँ जाइत अबैत रहियैक। मुदा बिआह तँ गाममे भेलै नहि। बिआह तँ पटनोसँ आगाँ कोनो शहर हँ, लखनऊमे जा क' भेलैक। तँ एत' गोसाइघरक पूजा-पाठ आ किछु बिधो-बिधान सभ कएकेँ कुल देवताकेँ फूल पान-मिठाइ चढ़ा दोसर दिन अन्हरोखे गाड़ी पकड़ि सभकेँ सभ चलि जाइ गेलै। हम सभ ओते दूर कोना क' जइतियै? तँ नहि गेलिये काकी। मोन लागले रहि गेला आब तँ जानि नहि संगीसँ कहिया भेंट-मुलाकात हैत। कहि नहि।

कनियाँ काकी— तहन तँ सोनमी ब'र के तहूँ नहिये देखलीही ने।

सुरेखा— नहि हम सभ कोना देखबै। हम इर घाट ओ वीर घाट। बियाह तँ दू-तिन दिन बादे भेल हेतैक। जइतिय तखन ने देखतीयै काकी।

कनियाँ काकी— हँ गै ठीके कहै छैं'। ठीक छौ जो अपन काज देखि ग'। हमर मोन औनाइत अछि जे आखिर सोनमीक ब'र-घर केहेन भेलैक। के कहत जुरल जोड़ी केहेन लगैत छल हेतैक...? एक आँखिये देखि लितियैक तँ काया जुरा जाइत। मुदा से तेहेन ने समय आबि गेलैक अछि गामक लोक परदेशी आ परदेशक लोक अप्पन ताहि ठाम हमरा सभ सन एक्की दुग्गीकेँ के पुछतैक गे बेटी सुरेखिया? जो... तौं...। हमहूँ पोखरिमे दू डूम देने अबैत छी। बेर कते उठि गेलै। एखन भानसोभात बाँकिये अछि।

सोनमीक बिआह-दान, दुरागमन, घुर-बहुर आकि ओहिसँ पूर्वक देवता पित्तर वगैरह सभ काज कखनऊएमे सम्पन्न भेलैक। सेहो लगातारे दू तीने दिनमे। लखनऊ शहर अपनेमे विशालकाय अछि। ओ शान-शौकत, ऐय्यासी लेल प्रसिद्ध अछि। मुगलकालीन राज-रजबारक नवाबीक जे शुरूआत भेल रहैक से राज आकि सामन्ती खत्म भइयो गेलाक बाद आइ धरि कोनो ने कोनो रूपमे विद्यमाने छैक। आइयो ओतुका मूलबासीन्दाक मोनमे नवाबीपनाक कोनो-कोनो लक्षण देखाइ परिये जाइत छैक। ''लखनऊ की रंगीन शाम'' आबो नामी छैक। ताहि शहरक एक मोहल्लामे भाड़ा पर लेल गेल एकटा ''विवाह भवन''मे सोनमीक बिआह भेलैक। ओही हॉलसँ किछुए दूरी पर चारि-पाँच कोठलीक एक आवासीय परिसर सेहो अपन परिवार ओ सर-संबंधीक वास्ते एक सप्ताह लेल भाड़ा पर लेल गेलैक। ओ तात्कालिक बासा छलैक। दुखम-सुखम ओहीमे रहि जेना जे भेलैक से भेलैक। बिआह-दुरागमन वा अन्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य सम्हारबाक जीतोड़ कोशीश कएल गेलै। सभ काज निर्निध समाप्तो भेलै। आ तत्पश्चात ब'र पक्षक 'रिसिप्सन'मे सेहो उपस्थिति दर्ज करा नगेस अपन परिवार संग गाम आ अन्य सम्बंधी सभ अपना-अपना स्थान पर ओतहिसँ जाइत गेलाह।

रघुकामत नगेसक लंगोटिया छल। सोनमीकेँ बिआहमे जेबा लेल आग्रह आ न्योता एकरो सभ परिवार के रहैक मुदा ओकर अपना कुटमैतीमे सेहो एकटा बिआह बजरि गेलैक जत' रघुक उपस्थिति अनिवार्य छलैक। तैँ अत्यधिक इच्छा आ सभ तैयारी रहलाक बावजूदो रघु नगेसक बेटीक बिआहमे नहि जा सकल रहय। मोन मसोइस क' रहि गेल रहय। जखन पता लगलैक जे नगेस बेटी बिआहि सपरिवार गाम आपस आबि गेल अछि तँ ओकरो जिज्ञासा करब आवश्यके छलैक। दोसर जे बिआह कोना की सम्पन्न भेलैक से बुझबाक उत्कंठा सेहो छलैक आ तैँ हड़बड़ायल ओम्हर जा रहल छल की कनियाँ काकी बजा नेने रहथिन्ह। ओहि दिन घुरती काल बड़ अबेर भ' गेलैक। अस्तु ओकर प्राते अपन वचन पूरा करबाक हेतुए कनियाँ काकीक सेवामे उपस्थित भेल। अँगनाक कोन्टा पर आबि हाक देलक। कनियाँ काकी पटिया नेन्नहि घरसँ बाहर भेलि आ रघु कामतकेँ अँगनामे बजा, असोरा पर पटिया बिछा, बैसबा लेल कहलथिन्ह आ अपने ओही पर बैसि बतिआय लगलीह।

कनियाँ काकी— हमरा तँ भरोसा नहि छल जे अहाँ आयब। काल्हि भरि दिन बाट तैकते रहि गेलहुँ। साँझ धरि जखन अहाँकेँ नहि देखलहुँ तँ आसावाटी छोड़ि देलहुँ।

रघुकामत— एह, की कहैत छी कनियाँ काकी। एहेन कोना हेतैक जे कहि क' नहि आयब ? ओना अहाँक जिज्ञासा जाहि तरहक छल सैह तँ हमरो संग छल। हमरो कि सविस्तर आकि किछुओ बुझल थोड़े छल ? से नगेसेक ओहिठाँ बड़ टेम लागि गेल। की करितहुँ सीधे अपना अँगना चलि गेलहुँ। तैँ नहि अयलहुँ काकी। आर कोनो बात नहि छल। खैर...। नगेस हमर परम मित्र किन्तु एहेन परिस्थिति बनि गेलैक जे लखनऊ हमसब नहि जा सकलियैक। तथापि प्रेम की घटि गेलैक? नहि ने। अस्तु ओतुका सभ हाल जानै लेल मोन औनाइत छल। एक बेर भेंट-घाट भ' तँ निश्चिंत भ' गेलहुँ।

हँ, अहाँ जे काल्हि सोनमीक बिआहक मादे पुछने रहियैक से हम पूरा पता कए क' आबि गेलहुँ।

आब फलहारि क' कहब। सोनमी जेहने देखबा-सुनबामे सुन्नरि तेहने पढ़ाइयो-लिखाइ। एक नम्बरकेँ। तेकर ब'रो तँ ब'रे ने हेबाक चाहिये। से नगेस भाइ कते दिनसँ खोजमे लागल छल। कतेक ठामसँ एहि बनिस्वत गप्प भेलैक। कते हँ कहियोक नठि गेलै। कतौ कुल-शील नीक तँ ब'र सोनमीसँ हुस कतहु सामंजस्य बला भेटबो केलै तँ लेन-देन नहि फरिछलै। मगर ई जे भेलै से सभ तरहे बढ़ियाँ। तेहने देखनुहर ब'र, तेहने पढ़ाइ आ चाकरी सेहो। कुल-शीलमे कने झुसो रहैक तथापि छोड़ै जोकरक नहि मुदा...

कनियाँ काकी— ई मुदा की यौ?

रघु कामत— मुदा इएह जे बरागत एके ठाम जिद्द बान्हि देलकै ने हायराम हम बेटाकेँ बिआह लखनऊएसँ करब। से अहाँ सभ ओतहि आबि बिआह सम्पन्न करी। दोस्त, कतबो अपन आर्थिक लाचारी बतौलकै, मुदा ओ एक नहि मानलकै। संगे संग इहो शर्त रहैक कि हमरा टाका-पैसा सोना-चानीक कोनो लोभ नहि परन्च बरिआतक सम्मान, खान-पान नम्बर एक होयबाक चाही कारण जे बौआ (ब'र)केँ कतेको संगी साथी सभ अओतैक। देशोसँ आ विदेशोसँ। से ओकरा सभहक वास्ते दसगो कोठरी नीक होटलमे बुक क' देबैक जाहिसँ ओकरा सभकेँ कोनो दिक्कत नहि होइक। नगेसकेँ लाचारी भ' गेलैक आ सभ वेवस्था करइये पड़लैक। लखनऊ जेब क इएह कारण छलैक। एक तँ नगेश धिया-पुताकेँ पढ़ाबयमे आर्थिक रूपे लचरि गेल छल। खास क' सोनमीकेँ पढ़ाइमे तँ आर बेसी टाका खर्चा पड़ि गेलैक। मुदा से ब'र पक्ष मानक लेल कोनो रूपे तैयार नहि भेल। ओत' लड़के ततेक नीक छै, जे नगेस दु-क्ट्ठा खेतो बेचनामा कए सोनमीक सासुर बलाक बात मानि गामसँ ओतेक दूर लखनऊ सन बड़का शहरमे जा ई शुभकार्य करबा हेतु बाध्य भ' गेल। नहि तँ एहेन दुस्साहस ओ नहि क' सकैत छल नगेसक कनियाँ तँ बड़ हनछिन कएलथिन्ह मुदा तइयो ई भेलैक। भगवान-भगवतीक कृपे बिआह-दान शुभ-शुभ क' नीके-ना सम्पन्न भ' गेलैक। नगेस दुनू प्राणी मोनसँ खुश अछि।

यै कनियाँ काकी एम्हर कने घुसकि आऊ। हम अपना मोबाइलमे किछु फोटो नगेससँ ल' अनलहुँ अछि। एहिमे सोनमीक बिआह कालक आ बादोक फोटो सभ अछि। सोनमीक जुगल जोड़ी आ बिआह स्थलक जावन्तो फोटो सभ अछि। कनियाँ काकी फोटो सभ देखि खुश भ' गेली किन्तु जिज्ञासा आओर बढ़िये गेलैक। ओ पूछि देलखिन्ह— ''ऐँ यौ रघु! ई सभ फोटो देखलासँ तँ लगैया जे नगेस भारी खर्चामे परि गेलाह।

रघु कामत— ई तँ तय बात छै काकी! आजुक बिआह-दानमे आडम्बर ततेक ने बढ़ि गेलैये जे कोनो घरवारी खर्चाकेँ थाहे ने पबैत अछि। ताहूमे नगेसक समधि तँ पहिने शर्त सभ लगा देने रहैक तँ कन्यागत कइये की सकैत छल। बुझू जे नगेसक ढोढ़ी ढील भ' गेलैये।

कनियाँ काकी— अहाँ तँ बिआहमे गेले ने रही तँ आओर सभ बात कोना कहब?

रघु— हँ, काकी, से बात बड़ सहिये। आ ओते अहाँ बुझिये क' की करबै काकी। आइ काल्हि लाम-काफ तते ने बढ़ि गेलैया जे कोनो यज्ञ करैबलाकेँ नाकोदम भ' जाइत छैक। अपस्यांत भ' जाइत अछि घरबारी। एखने हमरा अपन भगिनीक बिआह छलैक, जाहिमे हम गेल रही, ताम-झाम देखि कए मोन घोर भ' गेल। व'र पक्ष कि कन्या पक्ष एकहि तरहक बुझायल। ओना कन्या पक्षकेँ काज व'र पक्ष के ससम्मान परीछि कए आनय, बइसाबै, परस्पराकेँ हिसावे आदर-सत्कारक संग ओकरा आहार-व्यवहारसँ बरियातक एक-एक जनकेँ मोन तिरपित कए देब। जाहिसँ प्रायोजित बिआह शुभ-शुभ कए आ कार्यक्रम सुचारू रूपे, सामंजस्यकेँ माहौलमे सम्पन्न हो, तथ ब'र-कनियाँ ता जीवन सुख-आनंदसँ बितावय। किन्तु से आब जिट्टेजाटमे ओझरा जाइ छै। हम से सद्य: देखैत छी काकी!

ई सभ गप्प चलिते रहैक कि नगेसक आँगन बाली अपन छोटकी कनकिरबीक संग आबि गेली। कनकिरबी-रुक्नीकेँ हाथमे चँगेरा छलैक। चँगेरा कुरुससँ बूनल सूतक झँपनासँ झाँपल छलैक। दुनू माय बेटी कनियाँ काकीकेँ पयर छू प्रणाम कए कहलकनि— काकी! कने कोनो बासन देथु सोनमीक सासुरक सनेसक

बैन अलनियैन्ह अछि से ल' लेथु। श्री सत्यनारायण भगवानक पूजाक प्रसादो छैन्ह काकी। कनियाँ काकी एकटा थारी अनलीह बैन आ प्रसाद ल' राखि दुनूकेँ बइसबा लेल कहलथिन्ह मुदा नगेसक आँगन वाली कलजोरि कहय लगलीह— ''काकी एखन जाय देथु। फेरू एबैन्ह पूरा टोल बैन बाँटक छैक। बर देरी भ' जेतैक। एखन जाय देथु।

कनियाँ काकी— ऐं यै, प्रेम सुन्नरी! एना कतौ भेलैये? ठाढ़े-ठाढ़े एलहुँ आ ठामे पड़ायल जाइ छी? दू मिनट वास्ते बइस जायब तँ कोनो अन्हेर नहि ने भ' जयतैक? बेटी बिआह कए क' अयलहुँ अछि। हम मानैत छी, थाकल हैब, घरमे काजो बहुत हैत परंच दू मिनट बइस जइतहुँ। किछु बिआहक हाल खबड़ि कहितहुँ तँ एहि बुढ़ियाकेँ काया जुड़ा जयतैक। खुशी आनन्द भ' जायत ने।

नगेसक आँगन वाली। कनियाँ काकीक अग्रह ओ आदेश मान राखि क्षण भरि लेल बैसि गेली। बेटियोकेँ बैसबाक इशारा कएली एहि बिच रघु उठि अपना अँगना क' चलि देल। कनियाँ काकी रोकलखिन्ह तँ कहलक— ''फेरू आयब काकी? एखन जाय दीअ'!''

कनियाँ काकी— अच्छा ठीक अछि जाउ। फुर्सत हुए तँ आवि जायब बौआ!''

रघुकेँ चलि गेला पर एकान्त पाबि कनियाँ काकी प्रेम सुन्नरिसँ पुछलन्हि— ''ऐं यै, प्रेम सुन्नरि! ब'र-बरियाती, बिआह दान सभ नीक रहलैने?

प्रेम सुन्नरि— ''हँ काकी हिनका सबहक आशार्वादे सबकिछु ठीके ठाक रहलैक मुदा...।''

कनियाँ काकी— ''ई मुदा की यै प्रेम सुन्नरि? कोनो धोखा की?

प्रेम सुन्नरि— नहि, कनियाँ काकी! कोनो धोखा-तोखा नहि लेकिन खर्चाकेँ तँ कोनो इत्ते नहि। बुझथु जे लाखक-लाख भेलै आ... विध बेबहार तँ नदारथे बुझथु। एक तँ ब'र-बरियाती नाचैत-गाबैत अबिते अबिते रातिक दू बजा देलकैक। तेकर बाद जयमाला भेलैक, सेहो बढ़िये। जयमालाक बाद जे फोटोग्राफी शुरू भेलैक से दुनू पक्षकेँ मिला क' 2 घंटासँ बेसिये बुझथु। ताबत तँ भोर होमय लगलैक। इहै कहथुन्ह जे बिआहब आइपाइ, भगवतीक पूजा, गौड़ी गणेशक आवाहन, कन्यादान, सिन्दुरदान, आदि-आदि विधिक निमेरा कखन होइतैक? कोना होइतैक? समय हाथमे छलैके कते? उपरसँ पुरूष सभहक ''होउ-होउ जल्दी-जल्दी बिध-बाद्य खतम करू''। सभ जनानी अकच्छ भ' गेला। सबहक प्राण अवग्रहमे परिगेल रहैक। पंडित-पुरहित पित्ते आन्हर। हाँइ-हाँइ, जेना-तेना बुझथुन्ह जे दूये घंटामे बिध सभ सम्पन्न करय पड़लै। कहथु तँ सूर्योदयसँ पहिने सिंदूरदान, दुर्वाक्षत कहुना क' सम्पन्न करा देलथिन्ह पंडित जी। ओहो करबे की करितथिन्ह। की होयतैक कोबरक बिधि आ औहक-मोहक 'बुझथ तँ किछु ने भेलैक। ताबत बरागत दिससँ विदागरीक हो-हल्ला होमय लगलैक। सोनमीक दुरगमनियाँ सारी पहिरा विदा कए देलियैक। सोनमी सासुर विदा भेल। पाहुन संगे कारमे बइसा देलकै लोक सभ। एते कहैत सोनमीक माय ठोहिपारि कानय लगलीह। हिचक' लगली। कहली कनियाँ काकी युगल जोड़ीकेँ भरि नैन देखियो नहि पेलियै यै काकी। दुर्वाक्षत चुमानो बुझु जे कहुना क' देलियैन हँ, विदाइ कालक बिधि सभ करा दैत गेलै लोक सभ। एक कौर अन्नो कि एक घोंट पानि कनियाँ-ब'र दुनुमेसँ ककरो नहि पैठ भ' सकलै। एतबे बुझथुन्ह कनियाँ काकी जे ''सोनमीक बिआह भ' गेलैक''। आर की कहियैन्ह। कारमे बइस जखन बेटी विदा भेलै तँ लोके सभ एक घोंट पानि पिया गाड़ीक पाछूसँ पानि छिलका देलकैक।

कनियाँ काकी, प्रेम सुन्नरिक नैनक नोर पोछैत कइलथिन्ह— कनियाँ जुनि कानू। हँसैत कहियौ शुभ हो, शुभ हो, शुभ हो, एहिसँ बेसी आब हमरा अहाँकेँ हाथमे रहिये की गेले अछि? ''समय संग चलबाक बाध्यताक सिवा हमरा अहाँके हाथमे अछिये की। हँ ई बात तँ अवश्य वर्त्तमानक चकाचौंधमे हमर सभहक परम्परा ओझल भेल जा रहल अछि। सोचैबला कियो नहि।'' से कहैत कहैत कनियाँ काकीक आँखिसँ सेहो दू बुन्न नोर गाल परसँ नीचा टघरिये गेलैक। रुक्मी आ ओकर माय बैन बँटबा लेल अँगनासँ बहरा गेली।

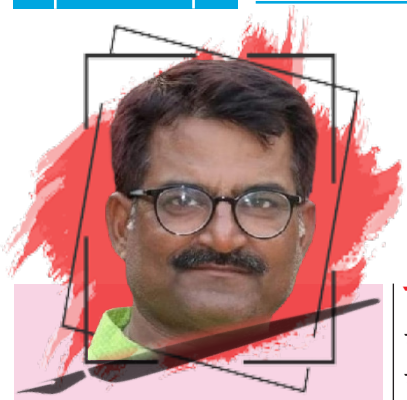

डा. सत्येन्द्र कुमार झा

सम्पर्क : सीएम साइंस कॉलेज, दरभंगा
मोबाइल : +91 98356 84869

सीएम साइंस कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक सहायक प्राध्यापकक रुपमे कार्यरत कथाकार, कवि, आलोचक एवं नाट्यकर्मी-अभिनेता डा. सत्येन्द्र कुमार झाक अद्यावधि चारिगोट पोथी प्रकाशित छनि। वर्ष 2007मे लघुकथा संग्रह 'अहींकेँ कहै छी', 2018मे कविता संग्रह 'स्वप्नमे इंद्रधनुष', 2019मे लघुकथा संग्रह 'जँ अहाँ सुनितहुँ' आ 2022मे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा अनुवादक पोथी 'देबालक पार अकास' हिनक रचनाकर्मकेँ जगजियार करैत अछि।

दादीक कम्बल

सभकेँ होइ छलै जे आइ साँझमे जखन जद्दूबाबू ब्लॉकसँ घुरताह तखन बड़का मारि पसरतै। बात किछो नहि छलै मुदा बातकेँ बतंगड़ बना देल गेल छलै। जद्दूबाबूक छोटका बेटाकेँ विपिन दू फैंट मारि देने छलै। हुनकर छोटका बेटा छैहो अताइ, कॉलोनीक सभसँ बिगड़ल बच्चा। ने जेठक कोनो धाख आ ने छोटसँ कोनो सिनेह। ककरो मुँह पर ठाँहि-पठाँहि केहनो गप्प कहि दैक। भरिदिन मुँहमे गुटका घमबैत रहैत छल। कॉलोनीक सभ सम्भ्रान्त परिवार ओकरा देखिते कात भ' जाइत छलाह।

भेलै ई जे एकटा नवघरिया परिवार जे आर्थिक रूपसँ ओहि कॉलोनीक सभसँ कमजोर परिवार छल आ ओहि कॉलोनीमे दस धूर जमीन पर खपड़ाक दू कोठली कहुना जोड़ि अपन गुजर-बसर करैत छल तकरे घरक बालक विपिन जद्दूबाबूक बेटाकेँ मारने छलै। ओ परिवार कॉलोनीक सभ परिवारसँ भिन्न छल। ओहुना आब मेल-मिलाप लेल आर्थिक थर्मामीटर बेसी काज करैत छैक आ ओहि थर्मामीटरमे एहि परिवारक तापमान खसल छलैक। वर्तमानक सभ कष्टकेँ अपन नियति मानि भविष्यक सुखद-सुन्नर कल्पनाक संग ओ परिवार अपन दिन कटैत छल।

ओहि परिवारक अभिभावक विपिनक दादी छलैक। विपिनक पिता दू भाइ आ दुनू बाहर कमाइत-खटाइत। एक भाइ दिल्ली आ दोसर कलकत्ता ओगरने छलाह। विपिन तीन भाइ आ दू भाइ पितिऔत, कुल जमा पाँच भाइ आ विपिनक माय, काकी आ दादी, तत्काल ओहि परिवारमे एतबे लोक छलाह। दादी अभिभावक भूमिकामे, आ तँ दादी कहै भोर तँ भोर आ साँझ तँ साँझ। परिवारमे ककरो हिम्मति नहि छलैक जे दादीक कोनो गप्पकेँ काटि सकए। दादी तहिना करितो छलैक। ई गप्प विपिन कहियो नहि बिसरि सकैत छल जे एकबेर विपिनक सरकारी स्कूलमे उज्जर बुश्शर्ट आ नील रंगक पैन्ट पहिरिक' अएबाक फरमान जारी भेलैक मुदा विपिन लग उज्जर कमीज नहि छलैक। ई गप्प दादीक कानमे गेलैक, ओ तुरन्त अपन चदराबला बाकस लग गेल आ गरदनिमे लटकल बाकसक चाबीसँ ताला फोलि अपन सटुआक कपड़ा आनि विपिनकेँ देलकै— 'जो, दरजी लग चलि जो, एकरे बुश्शर्ट सिआ ले। विपिन भावुक भ' गेल छल, ओ दादीक गरदनि पकड़ि बड़ीकाल धरि दादीक मुँह देखैत रहल।

जद्दूबाबूक संग बहुत रास लोक साँझमे ओकर दरबज्जा पर जुमि गेल छल। जद्दूबाबूक छोटका बेटा सेहो संगमे छलै। जद्दूबाबू जोरसँ चिचिया क' बजलाह— 'आखिर हमर बेटा पर हाथ उठएबाक साहस कोना केलक विपिन ?' दादी दरबज्जे पर ठाढ़ छलैक। ओतेक हसेड़ीक बीच एकसर जनानी मुदा एकसर रहितो दुआरि छेकने, महिषासुरक विनाशार्थ जेना कोनो दुर्गाक रूप। दादीक मुख पर तामसक रेख चमकि रहल छलैक— 'हमरा घरक पाछाँ घर दिस मुँह क' अहाँक बेटा मूति रहल छल, हमर पोता ओकरा टोकलकै तँ अहाँक बेटा ओकरा ढेपासँ मारलकै, छौड़ाकेँ तामस उठि गेलै तँ ओहो एक धौल लगा देलकै... कहू भला, धिया-पुताक बात पर अहाँ हमरासँ लड़ए अएलहुँ अछि? ककरो एखन एतेक हिम्मति नहि भेल छैक जे हमर पोताकेँ कंगुरिओसँ छूबि देत। अहाँकेँ जे करबाक हो से क' लिअ।' ई कहैत दादी जोरसँ दरबज्जा बन्नक' लेलक। पूरा कॉलोनीक लोक तमासा देखि रहल छल मुदा किछु नहि होएबाक छलै, किछु नहि भेलैक।

आइ दादीकेँ अस्पतालमे पड़ल देखि विपिनकेँ ई सभ गप्प सिनेमाक दृश्य जकाँ आँखिक सोझाँ नाचए लागल छलैक। कतेक हिम्मतिगरि, कतेक उर्जावान, कतेक साहस, कतेक संवेद नशील महिला छलैक ओकर दादी। पोता सभमे तँ ओकर जान बसैत छलैक। कतेको बेर पोता सभक पक्ष लैत पुतोहू सभकेँ उखलि दैत छलैक मुदा दुनू पुतोहूकेँ साहस नहि होइत छलनि जे पलटिक' जबाब दैतथिन।

मुदा आइ वएह दादी मृत्युशैया पर पड़ल छल। दादीक मुँहमे लकबा मारि देने छलैक। ओकर मुँह टेढ़ भ' गेल छलैक। विपिन जखन हाथ पकड़ि किछु पुछबाक प्रयास कएलक तँ दादीक कंठसँ एकटा घोंघिआएल स्वर मात्र निकसि सकलैक। विपिनक करेज छहोछित होमए लागल छल। ओकरा दादीक ई रूप देखबाक धैर्य नहि रहलैक। ओ ओहि कोठलीसँ बाहर निकसि गेल।

दादी... की दादी पुन: पहिलुक रूपमे घर घुरि सकत ? डाक्टरक कहब छल जे आब दादीक मोह अहाँ सभ त्यागि दिऔ। माने की ? माने जे दादी संभवत: अपन जीवनक अन्तिम अवस्थामे पहुँचि गेल अछि। मुदा विपिनकेँ ई कोना स्वीकार कएल जेतैक ? विपिनक नेनपन दादी संग बीतल छलैक, युवावस्था दादीक छत्रछायामे बीतल छलैक आ विपिन आइ जे किछु अछि से दादीक कठोर-मृदु अनुशासनेक परिणाम अछि। आइ विपिन भने दादीसँ फराक रहि दिल्लीमे सरकारी नोकरी करैत अछि मुदा तकर गढ़नमे दादीक समर्पणकेँ कोना बिसरल जा सकैत अछि? मुदा ई पाथर डाक्टर कहैत अछि जे सभकिछु बिसरि जाउ—'आब दादीकेँ माइनसे बुझू।' डाक्टर ओकरा कतेक सहजतासँ गणितीय सूत्र बुझा देलकै मुदा भावना, प्रेम आ मोन गणितीय सूत्र यदि बुझितैक तँ संसारमे किओ ने हँसि पबिते आ ने किओ कानि सकितए।

ओकर मोन कोनादनि कर' लगलैक। विपिन कल्पना क' रहल छल जे दादी बिनु घर केहन लगतैक। ओकरा घरक कोन-कोनमे कोनो ने कोनो रूपमे दादीक उपस्थिति देखबामे आबि रहल छलैक। दादीक नुआ, दादीक सटुआ, दादीक पानक डाली जाहिमे छोट-छोट कैकटा डिब्बा जाहिमे सुपारी, पीला पत्ती आ जरदा भरल रहैत छलैक आ एक कातमे भीजल कपड़ामे सैंतल पानक पात। विपिन कतहु हेरा सन गेल। ओ दादीक उपस्थिति लेल व्याकुल भ' उठल। दादी बिनु एहि घरक कल्पना करब ओकरा लेल असम्भव छलैक।

मोनमे एहि तरहक बिरड़ो उठिए रहल छलैक कि तावते अस्पतालसँ छोट भाइक समाद अएलैक जे दादी लेल एकटा कम्बल ल' अस्पताल अएबाक छैक। दादीक ओछाओन पर एकटा कम्बल कातमे चौपेतिक' राखल छलैक। ओ कम्बल उठौलक मुदा ओकर नजरि ओहि कम्बल पर साटल कपड़ा सभ पर पड़ि गेलैक। ओ अनुमान लगौलक जे संभवत: दादीक कम्बल फाटि गेल छलैक जकरा उपर ओ चिप्पी साटि फाटल स्थानकेँ मुनि देने छलैक। कम्बल देखिते ओकर मोन हदमदाए लगलैक।

कम्बल... दादीक कम्बल... ओकर माथ चकरी काटए लगलैक। कतेक पैघ अपराध आ एतेक दिनक बाद दादीक अन्तिम स्थितिमे अएला पर ओकर अपराधबोध। विपिन द्वारा कएल गेल दादीक प्रति ई अपराध की क्षम्य भ' सकैत अछि? कदापि नहि।

ओकरा एखनो ओहिना मोन छैक जखन पहिल बेर ओ नोकरी ज्वाइन कर' जाइत छल। जनवरी मास छलैक। कड़गर ठंड। जखन ओ अपन सामान पैक क' रहल छल तखने दादी अपन कोठलीसँ निकसि ओकरा लग आएल छल। दादीक हाथमे एकटा नव कम्बल छलैक आ तकरा ओ विपिनकेँ दैत बाजल छल— 'बाहर जा रहल छेँ। ओतए ठण्ड बेसी लगतौक, ई कम्बल राखि ले, बेस गरम छैक, हमरा परूँका वार्ड कमिश्नर देने छल।'

'मुदा एकरा तूँही किएक ने बाहरक' लै छेँ, पेटीमे सैंतने रहैत छेँ सभटा...'

'दूर... नव चीज लोक बेटा-पोता लेल रखैत अछि ने !'

नहिएँ मानलकै दादी... विपिनकेँ ओ कम्बल अपना संग राखहि पड़लैक। ओ कम्बल ओकरा कैक बरख धरि संग निभौलकै जेना दादी एखनधरि संग निभौने छलैक।

एकदिनक गप्प छैक... ओहि दिन विपिनकेँ बोनस भेटल छलैक... पूरा-पूरी तीन हजार टाका। अचानक दादी मोन पड़ि गेलैक। दादीकेँ फोन कएलकै जे दादी! आइ हमरा किछु टाका भेटल अछि। हम चाहैत छी जे एहि पाइसँ तोरा लेल किछु सामान कीनि। बाज ! तोरा की चाही ?

'बौआ रे ! हमरा लेल एकटा कम्बल नेने अबिहेँ। एखन जे ओढ़ए छी ने से फाटि गेल अछि आब।'

'ठीक छैक।'

ओ दादी लेल कम्बल किनबाक निश्चयक' नेने छल। दोसर दिन एहि निमित्त बजारो गेल मुदा कम्बलक दोकानक बगलमे जे रेडीमेड कपड़ाक दोकान छलैक आ ओहिमे एकटा सुन्दर सन कोट टाँगल छलैक। नहि जानि कोना आ किएक दादीक कम्बलक खगताकेँ कातक' विपिन कम्बलक दोकानसँ निकसि रेडिमेड दोकान दिस बढ़ि गेलैक। ओ कोट कीनि नेने छल।

मुदा कम्बल... कम्बलक तगेदा दादी ओहिदिन कएलक जहिया ओ छठिमे घर गेल छल। जखन भोजन-भातक कार्यक्रम सम्पन्नभ' गेलैक तखन दादी साधिकार ओकर कोठलीमे प्रवेश करैत कम्बल देबाक गप्प कहलकै। विपिन सन्न रहि गेल। दादीक प्रश्नक उत्तर ओ नहि द' सकल। फुसि बाजए चाहलक मुदा ओकर मुँह लसियाय लगलैक ओ ओ झूठो नहि बाजि सकल। बस एतबे बाजल—'अगिला बेर नेने अएबहु।' दादीक मुँहकेँ एकटा नैराश्य भाव घेर नेने छलैक। ओ विपिनसँ एहन उत्तरक अपेक्षा नहि करैत छल। मुदा तैयो दादी अपन आहत भावकेँ देखार नहि होमए देलकैक।

आइ जखन ओ दादीक स्थिति सुनि घर आएल छल तँ ओकर अटैचीमे एकटा कम्बल सेहो छलैक- दादीक कम्बल। ओ वएह कम्बल ल' क' पयर झटकारिक' अस्पताल दिस दौड़ल। अस्पताल पहुँचि ओ अपने हाथेँ कम्बल ओढ़ौलक। देह पर कम्बल पड़िते दादीक आँखि भक्सँ फुजि गेलैक। विपिन बाजल— 'दादी! तोहर कम्बल। तोरे लेल कीनि क' अनलहुँ अछि।' मुदा विपिन आश्वस्त नहि भ' सकल जे दादी ओ गप्प सुनि सकल की नहि। दादी शून्यमे ताकि रहल छल। फेर थरथराइत हाथे अपन देहसँ कम्बल पकड़ि ओकरा हटा देलक। फेर हाथसँ किछु इशारा केलकैक। मुदा विपिन नहि बुझि सकल दादीक ई भाव। ओ अनुमान लगौलक जे दादी एहि कम्बलकेँ स्वीकार नहि केलकैक। दादी अपन व्यक्तित्वसँ समझौता कहियो नहि कएलक, एखनो नहि कएलकै।

आ तकरे दोसर दिन दादी एहि संसारसँ विदाभ' गेलैक। सम्पूर्ण हाहाकार... विपिन लेल सम्पूर्ण दुनियाँ सुन्न।

मुदा ओतुक्का सभ लोक देखलकै जे दादी अपन मुट्ठीमे ओहि कम्बलकेँ कसियाक पकड़ने छलैक-विपिन सेहो देखलक। विपिनकेँ बुझना गेलैक जे दादी एहि कम्बलक संगहि अपन अन्तिम यात्रा पर प्रस्थान क' गेल छल।

विजेता चौधरी

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल

मोबाइल : +977 9849362676

समकालीन मैथिली साहित्यमे विजेता चौधरी एकटा चर्चित नाम अछि। हिनक धाराक विरुद्ध (मैथिली कविता संग्रह) कर्फ्यू (मैथिली कथा संग्रह) आ चुप्पी चिकरैछ नि:शब्द-नि:शब्द (मैथिली एकपतियाँ कविता संग्रह) प्रकाशित छनि। कथा संग्रह 'कर्फ्यू'क लेल चेतना समिति, पटनाद्वारा 'ज्योत्स्ना सम्मान', चित्रगुप्त सेवा समिति जनकपुरद्वारा, 'उत्कृष्ट साहित्य सम्मान', मैथिली साहित्यकार सभा जनकपुरद्वारा 'गार्गी साहित्य सम्मान', नेपाल चित्रगुप्त समाज, काठमाडौंद्वारा 'उदीयमान साहित्यकार-पत्रकार पुरस्कार' एवं राष्ट्रपति विद्यादेवी भण्डारीक हाथसँ 'प्रेस काउन्सिल समावेशी पत्रकारिता पुरस्कार' प्राप्त छनि। सम्प्रति पत्रकारिता नेपाल समय न्यूज, काठमाण्डूमे वरिष्ठ संवाददाताक रुपमे कार्यरत छथि।

कलम डेग नहि उठबैत अछि

खिड़कीक आगा गूफा तपस्वि जकाँ आसन जमा क' बैसिगेल छी। बाहर वातावरणमे अजीब सुष्कता व्याप्त छैक। बर्खासँ पूर्वकेर धोंछाह मेघ जँका आकाश पूरे गुम्मकी लधने छैक। हमर मन सेहो आइ धुम्म अछि। ने बर्खा होइत छैक आ ने मौसम उघरैत छैक। आइ एकहुँ गोट कथा कम्तिमे लिखबाक विचार अछि। महिना दिनसँ हमर रचना सामश्र्य जेना प्रश्नबाचक बनि माथ पर लटकि रहल अछि आ जेना कहि रहल अछि जे आब जँ तों नहि लिखबहक तँ शुलीपर टांगि देबौक।

एक प्रकारसँ लेखनकेर एडिक्ट छी। लिखने बिनु रहल नहि जाइत अछि मुदा विगत किछ दिनसँ हाथमे कलम आ कागज ल' क' घण्टो विचारमग्न भ' बैसल रहि जाइत छी मुदा किछो स्वत:स्फूर्त नहि। कागज भर्जिने रहि जाइत छैक। तैं आइ एकहुँटा कथा लिखबाक नियार करैत खिड़कीक आगा बैसिगेल छी। समय सेहो अनुकूल अछि।

एना नहि जे किछु अभरति नहि अछि। मनमे बहुतरास कथासभक प्लट तैयार अछि। मंथन निरन्तर जारी मुदा कलम कोनो शब्दक आकार निर्माण नहि क' पाबि रहल अछि। कहि नहि ई केहन मानसिक अस्त-व्यस्तता अछि। आँखि मूनि एकाग्र होएबाक जतेक प्रयत्न करैत छी ओ ततबए अदृश्य बिम्बसभक दिस निरुद्देश्य बहकि जाइत अछि। बाहर मेघ ओहिना हहा'रहल छैक मुदा फूंहि निपत्ता।

अनायास खिड़कीक छज्जिपर दूगोट पड़बा कटाउँझ करैत अवतरण भेलैक अछि। कथाक यज्ञमे समाहित हमर ध्यान सहजहि ओम्हर आकृष्ट भ' गेल अछि। कटाउँझ करैत-करैत ओ पड़बाक जोड़ी प्रेममे लीन भ' गेल छैक। हम रोमाञ्चित भ' एकटक ओ दृश्य देख' लगैत छी।

तहने केकरो हँसी सुनाइ पड़ल। सामनेबला घरक खिड़कीसँ दूगोट युवक हमरे देखि हँसि रहल अछि। खिड़कीक सोझा बैसि परिवेषसँ अनभिज्ञ हम पड़बा जोड़िक प्रणयलीला निर्लज्जतासँ देखि रहल छलहुँ। ओ छौड़ासभ ताहि बात पर हँसि रहल अछि संभवत:।

एक क्षण लए हमहुँ लजा' गेल छलहुँ। मुदा हमरा आश्चर्य एहि बातक लागि रहल अछि जे आधा वित्तासँ कमकँ

छज्जी पर प्रणय कोना संभव छैक ? तहने हमर विचारक पोखरिमे हिलकोर उठबैत आ चारि आँगुरक खिड़कीक छज्जी पर हमरा लए जवाबक अवशेष छोड़ैत पड़बा दुनू फूर्रर द' उड़ि गेलैक। आँखि उठक' देखैत छिएक सामनेबला खिड़कीक पर्दा मात्र फरफरा रहल छैक। आकृतिसभ गायब छैक। मन भेल जोरसँ चिकरि क' कहियैक जाह हो पटमूर्खासभ मुदा कलम पुन: हाथमे लैत शिर्षक लिखबाक सोंचि रहल छी मुदा विषयक नियारमे एखनहुँ स्थीरता नहि अछि। बहुतरास विषयवस्तुसभ मानसमे ओझराएल अछि मुदा किछो प्रवल भ' क' बहरा नहि रहल अछि।

कथा लेखनसँ पूर्वे संवाद, परिवेश, पात्र तथा द्वन्द्व लगायत कथाक उठान-बैसान आ शैलीशिल्प पर गहिंर विचार एवं परिकल्पना कएनिहारि हमर कल्पनाशिलता जेना आइ मंथर भ' गेल अछि।

...बाहर, हावा आदीम फूफकार छोड़ैत बेतहास बह' लागलैक अछि। मेघ आर सघन कारी भ' उठल छैक। चक्रबातमे खर-पतारसभ अपस्याँत भ' घुमि रहल छैक। हमर ध्यान सेहो अनेरो ओ चक्रबातक केन्द्रमे घुमि रहल अछि। घिरनी जँका। तहने ध्यानकेँ झंकृत करैत मोबाइल टन-टना उठलैक।

मोबाइल उठबैतदेरि ओम्हरसँ गर्जन शुरु भजाइत छैक, हमर हेलो शब्द कण्ठ गूफामे जेना हेरा' जाइत अछि। हुँनक कर्कश गर्जन... ई नास्ताक डब्बामे की देने छिएक ? मात्र ओइली आ स्पाइसी। स्वाद किछियो नहि। नहि बनेबाक मन रहैत अछि तँ पहिने कहिदेल करु हम बाहरे खा' लेल करब।

जवाब देबालए हमर मुँह खुलले रहिगेल अछि। कह' लागल छलिएन अरे, सभ दिन अपन पसन्दकेँ तँ खाइते छी एक दिन हमरो मनपसन्दक खा' क' देखियौ मुदा कनेक्सन कटि गेलछैक। सोंचैत छी, मेघक क्षणभरिक पाथरक वृष्टिसँ कि धरतीक छाती कहियो फाटिसकलैए एकहिक्षणमे विलाजएब ओकर नीयति छैक मुदा चोट गहिंर पड़ैत छैक। से धरि सत्ते! बाहर करिछोंह मेघक कारणे सम्पूर्ण सृष्टि संध्या जँका प्रतित होइत अछि। हावामे सेहो बेस ठंढापनकेँ आभाश भ' रहल अछि। संगहि चाहकेर छौंक सेहो प्रबल भ' उठल अछि। भरि कप इलाइंची बला चाह बनाक' पुन: खिड़कीक आगा बैसि जाइत छी। बाहर बाट एकदम सुनसान छैक। चाहकेर एक घुंट लैत कलम पुन: हाथमे उठबैत डायरीमे अझुका डेट लिखैत छी...

विक्रम संवत २०७० फागुन १८ गते, काठमाण्डू।
दुपहरिया २:३५बजे।

बदलल छै हवाक मिजाज आइ बुझिलिय।
उड़ाक' नामेट क' देत निरंकुश सत्तापट्टा धूरागर्द जँका।

कथाक स्थानपर मुक्तक झहरि गेल। चलु कमसँ कम कागज कलमक सिन्दुरदान तँ पाबि गेलैक। ठोरपर सृजन मुस्कान पसरि गेल आ मन सेहो किछ हल्लुक लगैत अछि। बाहर बर्खाक एकाध बून सेहो झहरलैक अछि आ किछ मेघ सेहो फटलैक अछि।

ई असमयक बदरी अनेरो बरसि रहल अछि। ध्यान बच्चासभ पर चलि जाइत अछि। बादलक रंग-रुप देखि घमासान बर्खाकेँ संभावना बूझि पड़ैत छैक। जानि नहि एहन बर्खामे बच्चासभ स्कुलसँ कोना आओत ? मुदा सड़क पर बर्खाक कमसल बूनसभ भाफ जँका क्षणे भरिमे बिला गेल छैक।

तहने शुनसान सड़कपर ओहे परिचित पगला एसगरिए बक-बक करैत देखना जाइत अछि। ओकर पाछा टोकल सम्पूर्ण छाड़ा कुकुरसभक बरियाति निकलि पड़ल छैक। कुकुरक लगातारकके झाउँ-झाउँसँ टोलमे व्याप्त गहिंर निरवता भंग भ' रहल छैक। खने ओ पागला कुकुरक पाछा पाथर उठाक दौगैत छैक खने कुकुरसभ ओकरा ओरअन्त खिहारि अबैत छैक। बाहरके दृश्य सभसँ हमर ध्यान बराबर बटि रहल अछि मुदा एक क्षण धरि ई खेल देखि मन किछ चंगा भ' उठैत अछि।

डायरीक पन्ना उन्टा क' पुन: कथा लिखबाक उपक्रम दिस लगैत छी। मनमे बहुत दिनसँ ओझराएल एखनुक एक्सट्रा मांर्डन परिवेशमे रमैत युवा पुस्ता आ अभिभावककेर मनोविज्ञानकेँ ल' क' कथा लिखबाक विचारमे अन्तत: पहुँचैत कलम उठबैत छी। मुदा पुन: ओहे मंथन। ओहे सम्प्रेषण केर समस्या।

कलम डेग नहि उठबैत अछि। अह: नहिये ने उठबैत अछि। एकहुँ पाँति नहि लिखि पएलहुँ। तहने ध्यान भटकबैत डोरवेल बाजि उठल अछि। लगातार बाजि रहल अछि।।।ओह, एहन मोसममे के आएल हएत रुताहुमे बेवकूफ जँका घण्टी बजा' रहल अछि, मनेमन बरबराइत छी।

केबाड़ खोललिएक। आगामे पड़ोसी मंडलजीक बेटा आशिष तमसाए–लपिताएल सन ठार छैक। की भेलौक रौ ? हमर प्रश्नसँ ओ किछ आर आहत भ' उठैत छैक आ बिनु जवाब देनहि कानन सन मुँह बनाक' कोठरीमे आबि बैसिजाइत अछि। आँखिसँ भट–भट नोर झहरि रहल छैक।

परिस्थिति अनायासहि दुनूकेँ बुत बना' देने अछि। हम किंकर्तव्यविमुढ भ' ठार छी, मनमे संशयकेर हजारहुँ ज्वार उठि रहल अछि। तहने पुन: डोरवेल कर्कश भ' क' बाजि उठलैक। आशिषक माय बेटाकेँ खोजैत पहुँचलिह अछि। कहलनि, हम बुझैत छलिएक ई छौड़ा एतहि हएत।

हमर प्रश्न भरल दृष्टि संभवत: ओ पढ़ि लेलनि। कहलन्हि अरे गौतमकेँ माँ किछ नहि, ई छौड़ा बगड़ाक खोंता जँका केश कटबालेने छलैक तेकरा आइ सुतलेमे काटिक' मिला देलिएक ताहि बातपर एतेकरास घओना पसारने अछि।

एहिबेर आशिष दिस गौरसँ तकलिएक। केशक कारणे ओकर कोमल रुप विद्रुप लगैत छैक। हमरा मोनेमोन आशिषक माय पर घोर तामस उठि रहल अछि। हुँनका कहलिएन दीदी टीनएजकेँ फेसन एखनि एहने छैक आ निको लगैत छैक। हरेक समयके अपन फेसन ट्रेड होइत छैक। किछ चिजमे बच्चासभक मन सेहो राखय पड़ैत छैक।

ओ विस्मृत भ' हमरा दिस एना तकलनि मानु जेना हम असंगत गप बतिया देने होइएक। तुन्कैति कहलनि गौतमके माँ अहुँक बात बड़ अजगुत रहैत अछि। बच्चासभकेँ जे मन लगतैक सेहे कोना कर' देबैक। ई छौंरा कहियो जिन्स पैन्ट चिरिलैत छै। कहियो हाथमे स्टीलके बाला तँ कहियो गर्दनमे पत्ति बला माला पहिरने रहैत अछि। दिनभरि आवारागर्दी। ओहिना छोड़ि देबै तँ ई छुट्टा साढ़ भ' जेतैक। ओ तमसाएले विदा भ' गेलिह।

तत्क्षण ध्यानमे आएल ओह, हमरा अपन कथाक लेल तँ पात्र, कथानक, घटना आ संवाद सबकिछ भेटिगेल। उत्साहित भ पुन: कलम उठबैत छी मुदा कलम किए ससरितए। बस ओहिना अलाय–बलाय लिखैत रहलहुँ।

घड़ी तीन बाजेक घण्ट मारि चुकल अछि। माँकेँ उठब' हेतु हुनक कोठरीक केबार खोलैत छिएक। कि तहने पुन: डोरवेल बाजि उठैत अछि। आइकथा लिखबाक मूडकेँ पुरे सत्यानाश भ' गेल अछि। मोनेमोन बरबराइत छी, जानि नहि लोककेँ एहनो मौसममे किए आराम नहिभेटैत छैक।

साँच कहि तँकखनोकाल हमरा लोकक परिवन्धसँ दूर भागि जेबाक मोन होइत अछि। कखनो सोंचैत छी जे घरक सभ सदस्क कतौ चलि जाथि आ हम एसगरिए रहि। नितान्त एसगरि। कतहु कोनो टापुपर नहि तँ निर्जन कोनो काननमे जत्त' मात्र हम आ प्रकृति एकदोसराक संग एकाकार भ' क' रही। कतहु कोनो लोक नहि। कोनो मनुगन्ध नहि।

पुन: डोरवेलके टिङ्ग-टङ्गसँ ध्यान भंग होइत अछि। माँक सखी लालकाकी आएल छथिन। हुँनका माँकेँ कोठरीमे बैसबति हम पुन: चाहक जोगारमे लगैत छी।

बाहर ओहन रुमानि मौसम छैक मुदा आइ हमर मोन कोनहु चिजमे लागि नहि रहल अछि। आलस्यता सेहो बढ़ि गेल अछि। चारुभरि एक प्रकारके उसठ वातावरण व्याप्त छैक। तहने मौन आकाश एकाएक गड़–गड़ा उठलैक। बिनु बर्खाक निरुद्देश्य गर्जन, सायद आइ फूहिं नहिये पड़तैक। मेघ संभवत: ओहिना उमरि-घुमरि क' रहि जेतैक।

माँ आ काकीकेँ चाह ल' जाक' दैत छिएन। माँ पुन: लङ्गर लगा दैत छथि, धुर कनियाँ चाह फेर बहुत मीठ क' देलियै। कि कहू लाल हिनक हाथ बड़ बहसल छनि। लालकाकी चाहक एक घुट लैत

बजल्हि– कम बेसी तँ कहियोकाल भ' जाइत छैक। भाग मनाबथु जे पुतहु हाथक चाह पकवान समयसँ भेटैत छनि आ से कहैत काकी हमरा दिस स्नेहिल दृष्टिसँ तकैत छथि।

हमर ठोरपर मुस्किक सदावहार स्टिकर ओहिना सटल छैक। माँ निर्वीकार बैसल छथि। प्रतिक्रिया विहीन। जेना लालकाकी देबालसभसँ बतियारहल होथि।

लालकाकी चाहक घुट लैत पुन: बजलिह– बेचारी हमर पुतहुकेँ अफिस रहैत छनि। दिनभरि व्यस्त। एहनमे हुनकासँ हम बेसी उम्मिद करबैक तँ सेहो पाप हेतैक... माँ बिचहिमे बात लोकैत चोट्टे जवाब दैत छथिन लाल अहाँक पुतहु कमसँ-कम दफ्तरमे काम करै छथि, पैसो कमाइत छथि आ घरव्यवहार सेहो सम्हारने छथि। आ पल्लवीकेँ देखियौन, कहैछथि जे हम ड़बल एम. ए. छी मुदा नोकरीचाकरी नहि क' घरे बैसल छथि आ व्यर्थकेँ लिखापढिमे भरिदिन मुड़ी गारने रहै छथि। एहिसँ बुझिजे आर्थीक समस्या टरैत हो तँ सेहो नहि। एहिसँ नीक तँ दू पैसाके नोकरी करितथि मुदा के कहौ ? हम तँ कहिक' थाकि गेलहुँ।

हुँनका दुनूक गप सुनि हम शालिक बनि जाइत छी। हाथ महक चाह पीबाक सामर्थ्य बाँकी नहि रहि जाइत अछि। मन चूक केने हम अपन कोठरीमे आबि जाइत छी। मोनेमोन सोचैत छी जानि नहि मिथिलामे पूर्णकालीन लेखन व्यवसायिक कहिया हेतैक ? आ कहिया लेखक अपन लेखनकर्मसँ आत्मनिर्भर भ' सकत रुइहो एक गोट महत्वपूर्ण मुद्दा छैक। एहि विषयपर निबन्ध लिखबाक विचार करैत डाइरीमे नोट करैत छी। निबन्धके बातसँ स्यात प्रभाकर बाबूक इमेल मोन पड़िगेल। काल्हि रातिए प्रतिभा मासिककेर नवका अंक हेतु किछ लेखकसभक लिष्ट हमरा इमेल केने छलाह आ कहने छलाह जे ई अंक दीर्घ कथा अंक बहराएत तैं लेखकसभक लिष्ट देखिलेबैक।

ओह, लेखकसभक नाम देखि ताज्जुब लागैत अछि। प्रभाकर बाबूकेँ लिखिदेलियनि, ई लेखक साहित्यकार सभ आब आधुनिक कथाक भार नहि थेगि सकताह। अँहा नामक पाछा जुनि जाउ। आब प्रतिभा पत्रिकामे नवप्रतिभासभकेँ स्थान भेटबाक चाहि। नवतुरमे जे बेस उम्दा क' रहल छैक तेकरा सबकेँ प्रोत्साहन भेटबाक चाहि।

शास्त्रीयताक रेघान सहितकेँ पारम्परिक लेखनकेर समय आब इतिहास भेलैक। आब समसामयिक आ विश्वपरिपेक्षमे रचना आएब आवश्यक छैक। से लिखैत अपनेसँ लेखकसभक एकगोट सूची बनाक' हुनका इमेल पठा देलियनि आ ल्यापटप बन्द करैत पुन: डायरी आ कलम ल' क' खिड़कीक सोझा बैसिगेल छी।

२०७० फागुन १८ गते, दुपहरिया ३:४० बजे।

कथा

समयक चित्र

ओह, कलम पुन: ठमकी जाइत अछि। दू लाइन-चारि लाइन लिखि-लिखि क' दकचि रहल छी। फर्शपर कागजकेर नाउसभ यत्र–तत्र हेलिरहल अछि।

बाहरक मौसममे कोनो परिवर्तन नहि। आकाश ओहिना गुम्कि लधने छैक। बाट ओहिना सुनशान आ हमर लेखन ओहिना मंथर आ सुस्त अछि।

देबालघड़ी चारि बजबाक शएरन मारि चुकल अछि। बस, किछिये कालमे बच्चासभ स्कुलसँ पहुँचि जाएत तकराबाद साहित्य रचनाक प्रश्ने नहि। सम्पूर्ण घर चलायमान भ' उठतैक। सोचैत छी आइ रातिभरि जागियोक' एकहुगोट कथा पूर्ण कर' पड़त।

जनि नहि आइ मन किए एना बज्जर भेल अछि। बुकसेफमे राखल अपन पुस्तकसभ देखि आश्चर्य लगैत अछि। आखिर हम एतेक दिन धरि कोनाक' एतेक रचना क' सकलहुँ। कोना सभ किछ स्वतह: स्फूर्त बहराइत रहल।

मन जेना चैतक दिन जँका उचाट भ' गेल अछि तहिना आगामे पड़ल पत्रिका सेहो उठाक' एक नजर देखबाक अभिलाषा नहि अछि। कलम बन्द करैत बच्चासभक लेल बेरुहट बनब' लए उठि जाइत छी।

खा-पीक' बच्चासभ खेलैलए बाहर भागि जाइत अछि। माँ सेहो टीवी देख'मे व्यस्त भ' गेलिह तैं व्यस्ततम समयमेसँ किछु पलखतिकेँ चोरबैत हम पुन: खिड़कीक सोझा पूर्ववत बैसिगेल छी।

बाहर हावा चलब एकदम्म बन्द भ' गेल छैक। मात्र सुख्खा मेघक नर्जन छैक मुदा फूहि नदारद। घड़ीमे पाँच बाजि रहल छैक। अझुका दिन सेहो बालु जँका हाथसँ छिछलि गेल अछि। लगैए कथाक यज्ञमे समाहित होबालए तपस्या जेना पूर्ण नहि भेल अछि तहिना। लेखक–कलाकारसभक सृजन मूड पर निर्भर करैत छैक मुदा हमरा आइ धरि एना नहि होइत छल। पलखति भेटल नहिकि हम लिखबा–पढ़बामे तल्लीन भ' जाइत छलहुँ मुदा आइकाल्हि।

दिनभरि हम ओहिना खिड़की लग बैसल रहिजाइत छी। कथा लिखबाक प्रण दुर्घटित भचुकल अछि। बाहर अन्धकार गहिंर होइत जारहल छैक। चारुभरि मात्र ल्याम्प पोष्टकेर बल्वसभ भग्जोगनी जँका चमकि रहल अछि भुकभुक-भुकभुक।

आखिर झिसी नहिये पड़लैक। बदरी लधले रहि गेलैक। आगामे पड़ल डायरी आ कलम देखि लम्बा नि:स्वास लैत छी। कागजमे शब्दब्रम्हण्ड रचि देबाक इक्षाकेँ जानि नहि कोन तत्व छेकी रहल अछि। फेर सोचैत छी, रचना तँ स्वत:स्फूर्त होइत छैक। एहनो कतौ बलात रचना हुए रु हम अपन रचना सामर्थ्यकेँ एहिसँ बेसी कन्हिहुँ नहि आजमा सकैत छी। कारण हमर माटि उर्वर आ प्राकृत अछि तैंहम विकासे विजसन रचना उत्पादन नहि क' सकैत छी। किमार्थ नहि।

अनहार पसरल घरमे बिजलीक रश्मि छिटैत हम पुन: गृहस्थ व्यवहारमे लागि जाइत छी। मेघ एखनहुँ जोड़-जोड़सँ उमड़ि-घुमड़ि रहल छैक। बदरी लधले छैक तँ देर-सबेर बर्खा होएबे करतैक।

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास

अनुप्रास

रचनाकार सभसँ निवेदन

- रचना मात्र E-mail/WhatsApp पर पठाबी।
- रचना युनिकोड फॉन्टमे पठाबी। मोबाइलसँ टाइप क' सेहो पठाओल जा सकैत अछि।
- रचना अप्रकाशित आ मौलिक अछि एकर उल्लेख अवश्य हो।
- रचनाक संग फोटो आ लगभग 50 शब्दमे अपन परिचय अवश्य पठाबी।
- रचनाक अन्तमे पूरा पता, मोबाइल नम्बर आ ई-मेल अवश्य लिखी।

— *सम्पादक*

WhatsApp : +91 9430583847, E-mail : anuprasprakashan@gmail.com

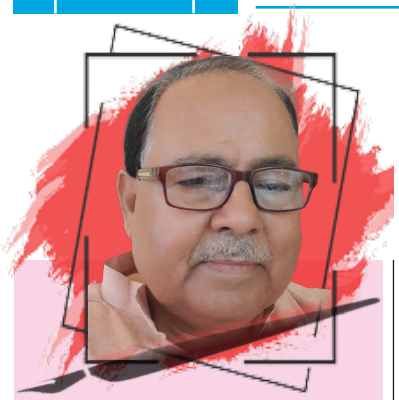

हीरेन्द्र कुमार झा

सम्पर्क : दरभंगा, मिथिला(बिहार)
मोबाइल : +91 8169003125

बैंक ऑफ इण्डियाक मुख्य प्रबन्धक पदसँ सेवा निवृत हीरेन्द्र कुमार झाक विभिन पत्र-पत्रिका एवं स्मारिकादिमे दर्जनो कथा, लेख आ समीक्षा प्रकाशित छनि। हिनक कथा-संग्रह *ट्रान्सफार्मर, सोनाक खोप, परगोत्री* एवं नाटक *राजा बेटा,* कविचूड़ामणि काशी कान्त मिश्र 'मधुप'जीक प्रसिद्ध कथाकाव्यक *घसल अठन्नी* नाट्य रूपान्तर बेस चर्चित छनि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद, हैदराबाद द्वारा वर्ष 2017मे कथा-संग्रह 'सोनाक खोप'क लेल 'तिरहुत साहित्य सम्मान'सँ अलंकृत छथि। भारत सरकार संस्कृति मन्त्रालयक के द्वारा आई. आई. टी. मद्रास द्वारा भाषिणी प्रोजेक्टमे मैथिलीक विशेषज्ञ परामर्शदाता (Expert Consultant) "हेतु कार्यरत। सम्प्रति संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकारक 'सांस्कृतिक शोध एवं प्रशिक्षण' योजनान्तर्गत सिनियर फेलोसिप लेल शोधरत छथि।

नव प्रथा

गामक हरेक घरमे लोक महानगर आ पैघ शहरमे कमाइत छै। तैं अधिकांश परिवारो बाहरे रहैत छै। मुदा जेना कि गाछक धड़कैं कतबो काटि दियौ जँ जड़ि बाँचल रहत तँ नव नव पँपी आ ताहिसँ गाछक ठारि-पात जनमैत रहैत छै। से तहिना गामक लोक जकर घरमे बुढ़-पुरान बाँचल छनि, घर-आङन रह' जोगर छनि तँ ओ परिवारसभ यदा कदा कोनो पाबनि तिहारमे गाम अबैत छथि। एहन परिवार विशेषक' छठिक तैयारी लेल गाम अबिते अछि। छठिमे टिकटक कमीक कारणे लोक दस दिन पहिने दिवालीसँ पहिने चल अबय जाइत छथि।

हमरो टोलमे एहूबेर बहुतो परिवारक लोक जुटल छल। गामोमे आब शहरे जेकाँ घरही गणेश-लक्षमीजीक प्रतिमाक पूजाक प्रथा आरम्भ भ' गेल छै। दीयाबातीक प्रात टोलपरहक कोनो घरक कोनो दाय-माय गणेश-लक्ष्मीक मूर्ति अपना कोनो नेनाकेँ देलखिन जे जो एकरा पोखरिमे भसा दही। छोट छोट नेना हालमे भेल कृष्णाष्टमी, विश्वकर्मा आ गणेश पूजाक अवसरपर भेल भसान देखने छल। ओहि नेनाकेँ स्वतन्त्र रूपसँ भसानक अवसर भेटलै तँ चट द' अपन दसटा सङ्गीसभक सङ "गणेशजीकेँ जय,लक्ष्मीजीकेँ जय "क उदघोष करैत जुलुस बना बिदा भ' गेल पोखरि दिस। टोल परहक धिया पुता शामिल हुअ लागल। फेर जकरा जकरा घरमे मूर्तीक पूजा भेल रहै से सभ अपना-अपना घरसँ मूर्ति उठा जुलुसमे शामिल भ' जयघोष करैत बढ़ लागल। दलानपरहक लोक सभ बुझलकै जे धिया-पुतासभक खेल छिऐ। से कियो ध्यान नहि देलकै।

जुलुस पोखरिपर पहुँचि आनन्दसँ अपन-अपन मूर्तिकेँ जलमे फेकब शुरू कयलक। पचीस तीस नेनाक समूहक स्वर अन्तत: किछु वयस्ककेँ आकर्षित कयलकनि। से बाधसँ घुमैत काल लालकका लग जा क' देखलनि तँ हुनको पौत्र हाथमे राति पूजित भेल मूर्ति लेने भसेबाक लेल ठाढ़ छनि। ओ अकचकाइत पुछि बैसलखिन " रौ !तोरा के कहलकौ भसाब' लेल ?"

पौत्र की कहितनि, ओकरा कियो कहने होइ तखन ने। ओ सरलतासँ सोझे कहि देलकनि "सभ भसबैत रहै तँ हमहुँ ल' अनलिऐ।" ताबत दू चारि गोटे आओर जुटि गेला। सभ एक दोसराकेँ पुछथिन जे की भ' रहलैया।ताबत बेराबेरी खबरि टोलपर पसरि गेल रहै। जाहि जाहि घरक मूर्ति आ नेना दुनू पार छल सभ दौगल पोखरिक घाट दिस। दू-तीनटा छोड़ि शेष मूर्ति जल-समाधि ल' चुकल रहथि।

सभ अपना-अपना नेनाकेँ दमसबैत रहथि। मुदा ककरो बुझ'मे नहि आबि रहल रहनि जे ई भेल कोना। अन्तत: मङरपट्टीबाली बौआसिन भेद खोललनि जे ओ अपना बेटाकेँ पछिला वर्खक पुरना मूर्ति भसेबाक लेल कहने रहथिन। ओ छौंड़ा आनो नेनासभकेँ संग क' बिदा भेल तँ देखा देखी सभ नेना अपना-अपना घरक मूर्ति उठा जुलुसमे शामिल भ' गेल। सभ अपना-अपना बच्चाकेँ हुथ' लागला कियो-कियो कनैठी वा एक-दू चटकनो देलखिन।

तखने मामलाकेँ बुझि टोलक बुढ़ जयदेव बाबा पहुँचि सभकेँ रोकलनि आ उण्टे वयस्क सभकेँ हुथ लागला "आहिरेबा बगड़ो चलली खञ्जनिक चालि तँ अपनो चालि बिसरबे करती। एक तँ गाममे पहिने ई कृष्णाष्टमी, विश्वकर्मा आ गणेश पूजा नहि होइत छल। नवमे सभटा मूर्तिक पूजन आ प्राते भसान करब आरम्भ कयने छी से एहि नेना सभक लेल एकटा मनोरञ्जन आ आनन्दक अतिरिक्त किछु बुझाइते नहि छै। ताहिपरसँ सुकरातीमे हमरा लोकनि अपन घरक भगवतीकेँ पुजैत रही, उक फेरी बस। तोरा लोकनि नव-नवमे ई गणेश-लक्ष्मीक मुरुतक पूजा कर' लागल छह। नेनासभ तँ देखैत रहलैया जे पूजाक परात मूरूतक भसान होइत छै। ताहिपरसँ पण्डितक कनियाँ अपना नेनाकेँ मुरूत थमहेलखिन जे भसा दही। ओ की जानय गेलै जे नव छिऐ कि पुरान। ओ बिदा भेल तँ आरो घरक नेना सभ अपना-अपना घरक मुरूत उठा लेलक। एहिमे लोकक दोख, नेनासभक कोनो दोख नहि। नव-नव प्रथा शुरू करब आ सभकेँ बुझेबै नहि तँ एहिना होयत।"

लोकसभ चुप छल। ककरो लग उत्तर तँ रहै नहि। अन्तमे जे दू-तीनटा मुर्ति नेना सभक हाथमे बाँचल रहै ओकरो अभिभावक ताहिकेँ जलमे भसा चुपचाप बिदा भ' गेला।

सभक मनमे एकेटा गप्प चलैत रहनि जे अगिला वर्ख की करब ?

प्रकाशक

प्रसिद्ध कवि साहित्यकारक दलानपर पत्रिकाक प्रकाशक पहुँचला "नमस्कार।"

"आ हा हा हा, आउ आउ पाठकजी। कोना मोन पड़ल ? कोना छी?"

"जी सब ठीक छै, कैयक दिनसँ सोचैत रही जे भेट क' आबी। पछिला सप्ताह एक दिन साँझमे आयलो रही तँ अपने नहि रहिऐ।"

"अरे की कहै छी ? रोज कोनो ने कोनो बोलाहटि आबि जाइत अछि। कोनो लोकार्पण तँ कोनो गोष्ठी। नहि भेल तँ कविता पाठे राखि दय जाइत छथिन। आब लोक इज्जतिसँ बजबैत छथि तँ कोना नहि जाउ ?"

"जी जी से तँ छैहे। आ, बिनु अपनेकेँ कार्यक्रम झुझुआन लगैत छै।"

"नहि-नहि,से बात तँ नहि ।तखन लोकक सिनेह तँ छैहे। आब ककरो आग्रहकेँ नकारब उचित नहि। अच्छा अहाँ कहु कोना एलहुँ ?"

"जी किछु खास नहि बस पत्रिकाक नवका अङ्क आबि गेल छै। अपने बहुत सम्पर्की लोक छिऐ। दसगोटेँ लग उठैत बैसैत छिऐ।त' सोचल जे अपनेके तँ दए दी सङहि दस प्रति जँ अपना लग राखि लितिऐक तँ बिका जयतै।"

साहित्यकार महोदय गम्भीर भ' उठला। बहुत सोचिक' बजला—

"से तँ छैहे, पत्रिका तँ दसगोटेक सहयोगेसँ चलैत छै। ओना आन समय रहितय तँ दस की बीस प्रति छू उड़िया जाइत। मुदा एखन ई पाबनि तिहार सभक कारणे लोकसँ सम्पर्के बन्द अछि। तेँ एहि बेर हमरा छोड़ि दिय। राखले रहि जायत। भगवती करथिन तँ अगिला अङ्कमे हमर पूरा सहयोग रहत। एक प्रति राखि दियौ। कतेक दाम छै?"

प्रकाशक मन्द स्वरमे बजला "जी ओएह बीस टाका"

"एखन भजल नहि अछि। अच्छा अगिला अंकक संगे ल' लेब।"

प्रकाशक महोदय एक प्रति राखि चुपचाप अगिला दलान हेतु बढ़ि गेला।

मैथिली शोधपर सम्मान : जय-राम शोध संस्थान

साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण विधा शोध कोनो भाषाक वृहत्तर परिचिति लेल एक आवश्यक अंग अछि मुदा मैथिली शोध केर स्थिति संतोषजनक नहि अछि। एहन परिस्थितिमे शोधपर समारोहपूर्वक सम्मान दैत आबि रहल जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर हमरा सभक ध्यान आकृष्ट कएलक अछि।

एकर नामकरण कोठिवरे मूलक सदाचारी वैष्णव जय नारायण चौधरी आ हुनक धर्मप्राण पत्नी रामवती चौधराइन केर आरम्भिक अक्षरसँ निर्मित शब्द-युग्मसँ भेल। एकर पूर्वपीठिका मनोलिता प्रकाशनसँ वर्ष 2000मे पं. बालगोविन्द महाराजक पोथी 'ब्रह्मभट्ट वैभव' (संपा. डॉ. रंगनाथ दिवाकर), 2013मे पं. सहदेव झाक बहन्ने मंडन-शंकर केर कथित शास्त्रार्थपर 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ' (सम्पा. डॉ. रंगनाथ दिवाकर), मैथिल शौर्यक जीवन्त दस्तावेज 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर) 2014मे प्रकाशित भेल। 24 अप्रैल 2014कैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी ब्रह्मलीन भेलाह। एहन प्रयास शुरू भेल जे हुनक पुण्य-पर्वपर हुनका सारस्वत तर्पण देल जाय। एहि क्रममे 24 अप्रैल 2015कैं मधुबनीक शिक्षक संघ सभागारमे मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर) केर लोकार्पण भेल छल। 24 अप्रैल 2017कैं डॉ. अमरनाथक मैथिली उपन्यास 'सिनुरिया आमक गाछ' केर लोकार्पण पटनाक गाँधी संग्रहालयक सभागारमे मान. पूर्व मंत्री श्री रामलषण राम रमणजी कएलनि। संस्थान 24 अप्रैल 2018कैं गजहरा गामवासी कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'जीक एकमात्र मैथिली काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब' (सम्पा. डॉ. रंगनाथ दिवाकर)क लोकार्पण गामेमे स्वयं वयोवृद्ध कवि प्रवासीजीक कर-कमलसँ सम्पन्न करओलक। एहि वर्ष जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर अस्तित्वमे आएल आ निर्णय भेल जे मैथिली शोध-साहित्यमे कोनो एक अध्येताकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान देल जाय। एहिमे मिथिला पेंटिंगसँ सुसज्जित पाग-डोपटा, माला, चानीक कलम, एगारह हजार नकद आ एक स्मृतिचिह्न देबाक नेयार भेल। प्रथम सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी सम्मान डॉ. नरेश कुमार विकलजीकैं 21 जून 2018कैं देल गेल छल। जगन्नाथ चौधरीक पाँचम पुण्य-पर्वपर एहि पुरस्कारक नियमावलीमे किंचित् परिवर्तन भेल जे ई सम्मान मात्र मिथिला-मैथिलीसँ संबंधित शोध क्षेत्रमे उत्कृष्ट अवदानक लेल देल जाएत। पुरस्कार हेतु उपयुक्त पात्रक चयन लेल निदेशक डॉ. रंगनाथ दिवाकरजीक अध्यक्षतामे प्रख्यात नेत्र चिकित्सक एवं साहित्यकार डॉ. अमरनाथ चौधरी आओर साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कारसँ सम्मानित श्री दीप नारायणक एक त्रिसदस्यीय समिति केर गठन कयल गेल। 2019क पुण्य-पर्व समारोहमे सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरीक स्मृति स्थल आ एहिपर स्थापित संगमरमर केर प्रतिमाक अनावरण कएलनि सुप्रसिद्ध कवि श्री उदय चन्द्र झा विनोद आ पोथी 'सुलतानपुर सौरभ' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर)क लोकार्पण कएलनि डॉ. नरेश कुमार विकल। एहि समारोहमे शोध विद्वान् श्री भैरव लाल दासजीकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मानसँ अलंकृत कएल गेल। श्री उदय चन्द्र झा विनोदजीक अध्यक्षतामे आयोजित कविगोष्ठीमे सर्वश्री अर्जुन कविराज, सुरेन्द्र शैल, प्रीतम कुमार निषाद एवं डॉ. नरेश कुमार विकलजीक काव्यपाठ भेल छल। एहि समारोहक विशिष्ट बात ई छल जे सुलतानपुर गामक पहिल अमर शहीद सुरेश राय केर वीरमाता श्रीमती प्रभा देवीकैं सेहो साड़ी, नकद आ माला पहिरा सम्मानित कएल गेल छल। कोरोनाक कारणैं वर्ष 2020 आ 2021मे कोनो समारोह आयोजित नहि भेल छल। 24 अप्रैल 2022कैं मिथिला रत्न डॉ. प्रभाकर पाठक, सुप्रसिद्ध कवि श्री उदयचन्द्र झा विनोद, श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री दीप नारायण आदि द्वारा मैथिली लोकगाथाक पुरोधा डॉ. महेन्द्र नारायण रामकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान अर्पित कएल गेल। एहि समारोहमे 'महाकविक महाप्रयाण' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर), 'शान्ति निबन्धावली' (पं. महेश झा) आ डॉ. रंगनाथ दिवाकरक पोथी 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी' (दोसर संस्करण)क लोकार्पण भेल छल। समारोहमे सिम्मर फिल्म्स इंटरनेशनलक श्री सुमित सुमन द्वारा निर्देशित आ श्री एन. मंडल द्वारा सम्पादित 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी' वृत्तचित्र केर सेहो प्रदर्शन कयल गेल।

24 अप्रैल 2023कैं जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर डॉ. रमानन्द झा रमणकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मानसँ अलंकृत कयलक। एहि समारोहमे डॉ. नरेश कुमार विकलजीक रेडियो नाटक संकलन 'चोखगर खौंच', डॉ. महेन्द्र नारायण रामजीक 'दुसाध जाति का वृहत् इतिहास' आओर डॉ. रंगनाथ दिवाकरक शोध आलेखसंग्रह 'मिथिला मन्दार मञ्जरी'क लोकार्पण आगत अतिथि पं. डॉ. शशिनाथ झा, श्री जीबछ मिश्र, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. रमानन्द झा रमण, डॉ. महेन्द्र नारायण राम आदि द्वारा कयल गेल। विकलजीक अध्यक्षतामे आयोजित कविसम्मेलनमे सर्वश्री दीप नारायण, सुरेन्द्र शैल एवं फूलचन्द्र झा प्रवीणजीक काव्यपाठ भेल। डॉ. अमरनाथ चौधरी धन्यवाद ज्ञापन कयलनि। ई सारस्वत समारोह अविराम चलैत रहए यैह शुभकामना अछि।

— अनुप्रास परिवार

दीपा मिश्रक चारिटा कविता

काव्य व्योममे स्वत: दीप्त नक्षत्र जकाँ चमकैत मैथिली कविताक नव माटिपर एकटा पैघ डरीर पारि अपन संवेदनाकेँ शब्दक त'हमे बिछएबाक प्रयास कएलनि अछि दीपा जकरा एखनधरि किंसाइत भाषाक ओछानि नहि भेटल छल। हिनक उपन्यास *अर्यमा* एवं *डीह,* लघुकथा-संग्रह *हींग-राइ* आ *योनिक आत्मबोध* कविता-संग्रह मैथिली साहित्य जगत् मे बेस चर्चित भेल अछि। हिन्दीमे हिनकर चारिटा काव्य-संकलन आ एकटा कथा संग्रह प्रकाशित छनि। सम्प्रति 'वाची' आ 'बजरबट्टू'क सम्पादक छथि।

अंतिम स्त्री

ओ कालिदास पढ़लक
ओ कीट्स पढ़लक
ओ विद्यापतिक पदमे तकलक
ओ वर्डस्वर्थकेँ कवितामे देखलक
ओकरा कतौ नै भेटलै ओ स्त्री
जेकरा ओ ताकि रहल छल।

ओ शहर-शहर घूमल
ओ गाममे छिछियाएल
ओ विदेशो घुमि आएल
ओ गली मोहल्लामे हुलकल
ओकरा कतौ नै देखेलै ओ स्त्री
जेकरा ओ ताकि रहल छल।

ओ लियोनार्डो द विंचीक चित्र देखलक
ओ पिकासोक कलाकृतिके उनटेलक
ओ सब कला प्रदर्शनीमे तकलक
ओ खजुराहोक सुन्दर मूर्तिकेँ छूलक
ओकरा कतौ ने बुझेलै ओ स्त्री
जेकरा ओ ताकि रहल छल।

ओ ठामहि बैसि गेल थाकि क'
आँखिकेँ मूनि लेलक
ओ पढ़ने छल कतौ जे आब स्त्री नै बचल
एक दिन सबटा अपने आप बिला गेल
जेना बिला जाइए समय, लोक आ सभ्यता।

ताबत माँथ पर एकटा हाथक स्पर्श बुझेलै
ओ स्त्रीकेँ देखि आश्चर्यचकित रहि गेल
जाबत प्रश्न पूछितै उत्तर स्वत: भेटि गेल
हम अंतिम स्त्री छी जे आइ जा रहल छलहुँ
ओ ओकर हाथ कसिया क' पकैड़ लेलक
आँखिमे नोर छल, मोनमे प्रेम आर श्रद्धा
आर एहि तरहेँ पृथ्वीक ओ अंतिम स्त्रीकेँ
रोकबामे सफल भऽ गेल।

ओकरा भेट गेलै ओ स्त्री जेकरा
ओ ताकि रहल छल।

लतरैत स्त्री

अहाँक हाथमे कैंची छल
जखन-जखन इच्छा भेल
ओकर पाँखि कतैर दैत छलहुँ
अहाँ भरिसक बिसरि गेलहुँ
जतेक छाँटब अनुकूल समय
भेटलापर ओ ततेक लतरत।

आब लतैर रहल अछि स्त्री
आब किनसाइते ओ रुकत
अपन सामर्थ्य बुझबामे आब
आबि रहल अछि ओकरा।

भानस करैत-करैत
ओ बिसरि गेल छल चारूकात ताकब
ओ मोनपर, इच्छापर सेहो
संस्कारक घोघ तानने बैसल छल
ओहिना जेना सलाइ केर काठीकेँ
नहि भान रहैत छैक ओकर तागतक
ओ बारूदक जे ओकरामे संलग्न रहैये।

ओ जेकरामे यज्ञक अग्नि
प्रज्वलित करबाक सेहो सामर्थ रहैत छैक
आ कोनो वस्तुकेँ खकस्याह करबाक सेहो
टूटा पाथर टकरेलासँ आगि बनाएब
तँ ओ सिखने छल किन्तु
आब एक दोसरक कान्ह पकड़िकेँ
देखब फूटत तेहन ज्वालामुखी
जे समाजकेँ नब इजोत देत।

स्त्री आब स्त्रीसँ बेसी प्रेम करए लागलि
अनसोहाँत लागत सुनिकेँ
किन्तु आब स्वीकारए पड़त
अहाँक चँगेरामे साँठि क' देल
साड़ी, लहठी, सेनुर, गहना, खिलौना बला फुलौकी
ओ सम्हारि क' कातमे राखि देलक
अपन इजोतसँ आब अपनाकेँ सजाओत।

ओ दिन आब दूर नहि जहिया
समाजक नियमकेँ सुधारबाक
अहाँकेँ आवश्यकता पड़त
जकर नाम, जकरा लेल
कतहु स्थान नहि देलियै
आब ओ अपना लेल बाटो अपनहि बनाओत
अपन नाम अपनहि चमकाओत
आब स्त्री लतरब नहि छोड़त।

कठजीब

कहैत छल पहिलुका लोक
मौगी जाति बड़ कठजीब होइए
कहाँ असानीसँ छुटैत छै ओकर प्राण
पुरुष चट-पट बिला जाइए
आ ई जीबैत रहै छथि छ:-छ: पुश्तकेँ देखैत।

सुनैत-सुनैत स्त्री जेना थेथ्थर होइत गेल
सोचलक नीके भेल
पुरुष लेल चिरायु भव !
आर स्त्री लेल सौभाग्यवती भव !
कहू दुनू तँ पुरुषे लेल छल,
की बुझितो सब अनठा देलक ?
केहन अजगुत छल ने
पंद्रहो बरख पैघ वर लेल
सदा सोहागिनक आशीर्वाद
लोक चाहैत छल जे ओएह जाथि पहिने
कतौ एतेक आशीर्वादी काज नै करिते की ?

चट-पट बिलाए लगलीह स्त्रीसभ
कहुखनकेँ तँ मृत्युक थापो नै पड़ैत छैक
आ चुपचाप चलि जाइत छथि
तँ कखनो रोगसँ देहकेँ ग्रस्त क'
जे दिन-दिन गत्र संग मोनकेँ सेहो गलबैत जाइए।

जहिना घोघ तानि दुरूक्खा बाटे
दीप पर पएर धरैत मुड़ी झुकौने
ओहि अंगनामे पैर रखने रहथि कहिओ
ओहिना आइओ आँखि मुनने विदा भेलीह।

हँ, अलतासँ पएर तहिओ टुहटुह लाल छल
आइओ भरि हाथ लहठी चूड़ी पहिर गेलीह
लोक कहलक बड़ भागमन्त छलीह
हम सोचैत छी स्त्री देह त्यागबा लेल आतुर।

केंचुल

स्त्री आ नागमे
एकटा पैघ समानता होइत छैक।

जेना समय-समय पर सर्पकेँ
अपन केंचुल उतारए पड़ैत अछि
ओहिना स्त्री जीवनमे कतेको बेर
अपन मोनक, अपन इच्छाक
केंचुल उतारैत रहैत छथि।

सर्पकेँ एहि क्रियामे बड़ कष्ट होइत छैक
किन्तु ओकर बाद ओ
पीड़ासँ मुक्त भ' जाइ छथि।

स्त्रीक पीड़ा
आह ! ओ इच्छाक केंचुल उतारबाक बादो
जीवन पर्यन्त कष्ट दैत रहैत अछि।

डॉ. विनोद कुमार मिश्रक तीनटा कविता

सुहृद व्यक्तित्वक स्वामी डॉ. विनोद कुमार मिश्र जीक मैथिली आ हिन्दी साहित्यक काव्यरचनामे विशेष रुचि छन्हि। हालहिमे हिनक श्रीमद्भगवद्गीताक मैथिली पद्यानुवाद चर्चित भेल अछि। एकरा अलावे An Introduction to Quantum Communication, Software Defined Networks, Calendars of India, Hindu dharma Differentiated and Integrated आदि हिनक प्रकाशित/चर्चित पोथी छन्हि। सम्प्रति अमेरिकामे शोध वैज्ञानिकक रूपेँ कार्यरत छथि।

मातृभूमि

हे मातृभूमि, हे कर्मभूमि, गीताक चिरंतन मर्मभूमि॥
कोना बिसरू मिथिलाक माटि, अरुणाभ क्षितिज, पुरवा बसात,
आमक गाछी, कोइलीक गीत, चर चाँचरमे कोकाक फूल।
पोखरिक पाढ़ पर बड़क गाछ, कतिकी चानक ठह ठह इजोत,
बिजुरी बरखा मूसलाधार, शिव सम्मुख अर्पित बेलपात॥1॥
जीवनक तत्त्व धर्मक महत्त्व, ममताक मूल्य, सेवाक अर्थ,
मंडन शंकर उदयन आदिक अर्जित ज्ञानक शाश्वत प्रकाश।
विद्यापति गीतक मीठ छंद, सीतारामक पावन चरित्र,
संस्कृतिक सतत निर्मल प्रवाह, विद्यालय छल गामक मचान॥2॥
भाग्यक हिलोर जीवन नौका, पहुँचेलक अनुपम अमरीका,
प्राचीमे अतलांतक अगाध, धरती विशाल, पच्छिम प्रशांत।
भाषा नव, लोको सभ नवीन, धनवान बहुत, बड़ शक्तिमान,
विद्याक भूमि, विज्ञान भूमि, बनि गेल हमर ई कर्मभूमि॥3॥
तहियो दुविधासँ ग्रस्त मोन, छोड़ल कियैक जननी स्वदेश,
तोड़ल कियैक ओ स्नेहसूत्र, बन्हने छल जे तन मन जीवन।
सुख साधन सीमित छल तँ की अप्पन संस्कृति छल भाषा छल,
युग युगसँ आयल गरिमामय, अंतस्तल के परिभाषा छल॥4॥
ओझरायल तर्क-वितर्क बीच, शंकाक काँट केलक पीड़ित,
संधान समाधानक दुरूह, ई सोचि सोचि भेलहुँ व्याकुल।
तखनहिं सहसा दिग्भ्रम कुहेस कए सोखलक एकटा तर्क किरण,
मेघक झाँपल अंतरतममे उत्तरक दामिनी दमकि गेल॥5॥
पच्छिमक मनीषा कएने अछि प्रकृतिक आँगन कए आलोकित,
हम शिष्य बनब सब किछु सीखब, ई ज्ञान करब हम आत्मसात।
जगमग कएने आंतरिक विश्व अछि मंगलमय पूबक प्रकाश,
हम बनब दूत ऋषिवाणी के भए उभयमध्य के सुलभ सेतु॥6॥
जुटि जायब हम संकल्पशील, काटब जड़ता विषवृक्ष मूल,
गीताक मर्म, अविराम कर्म, अविरत, श्रद्धामय, अनासक्त।
संतान मनुक हम सृजन करब, अमरीकामे भारत भू के,
वसुधा समग्र अप्पन कुटुंब, वसुधा समग्र नारायण के॥7॥
भेटल हमरा नव कर्मभूमि, गीताक चिरंतन मर्मभूमि॥

वसंतक आस

कानन कुसुमित उपवन सुरभित मधुकर दलसँ सदिखन गुंजित,
पीयर पसरल सरिसों सीटल मिथिला के आँगन ज्योतिमंत।
आओत वसंत आओत वसंत॥

एतए एखनहुँ धवलित तुषार वन प्रांतरमे कयने प्रसार,
मद्धिम गतिसँ मंजरी आबि हेमंत शिशिर के करत अंत।
आओत वसंत आओत वसंत॥

फगुआक रंगसँ शराबोर संगीत मधुरसँ मन विभोर,
कोइली कुहकत टिकुला गमकत ढोलक स्वर पसरत दिग दिगंत।
आओत वसंत आओत वसंत॥

झिस्सी झमकत तरुवृंद हँसत हरियर आभा सगरे चमकत,
उद्यान भरत नर नारीसँ घूम' जायब भ' वेगवंत।
आओत वसंत आओत वसंत॥

गड़कैत रहत कालक चक्का आनत नव ऋतु ईहो पक्का,
नहि शोक करू किछु धैर्य धरू किछुए दिनमे आओत वसंत।
सुखकर वसंत मनहर वसंत॥

जोगा धार

पानिक प्रवाह कलकल करैत, कोका कुसुमक रमणीक हार।
मोनक कागज पर मूर्तिमंत, उतरल स्मृतिमे जोगाक धार॥

गामक पच्छिम कोसेक दूर, छल एक सघन सुंदर जंगल।
आमक जामक सीसोक गाछसँ भरल सजल सदिखन शीतल॥

पाकल आमक महमह सुगंध, कलकतिया फैजली कृष्णभोग।
गाछक नीचाँ भटभट खसैत, कहिया भेटत एहेनसँजोग॥

ई सोचि आम लेलहुँ जेबी, डर होइ छल सेहो लगातार।
आगाँ देखैत पाछाँ तकैत, तेजीसँ गाछी भेलहुं पार॥

जेठक महिना अतिशय ऊमस, गर्मीसँ थाकल मोन भेल।
लेलहुँ उछाल जोगा जलमे, व्याकुलता सबटा बिला गेल॥

तावत देखै' छी आगाँमे, अनगिन सुंदर कोकाक फूल।
झकझक उज्जर मादक सुगंध, पसरल यावत् दूरस्थ कूल॥

ओहि जलोद्यानसँ पाँच फूल, बीछल बीछल हम लेलहुँ हाथ।
हेलैत हेलैत ई देखै' छी, जलपक्षीगण सब भेल साथ॥

धारक सुंदरता मोहक छल, नहि भरल मोन कतबो देखल।
किछु काल प्रकृति के आँगनमे, हम बिता देलहुँ बैसल बैसल॥

सूर्यास्त लालिमा जलबिम्बक, पक्षीगण के चंचल कूजन।
सब देखि सूनि तिरपित मानस, हम फूल नेने एलौं आँगन॥

एखनौँ कखनौँ हम सोचै छी, आबैये ओ स्मृतिमे सुगंध।
बाल्यावस्था के ओ किछु क्षण, आनंद सुधामय बनल छंद॥

धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरेन्द्र'क दूटा कविता

शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकारक वरिष्ठ प्रवक्ताक पदसँ सेवनिवृत धीरेन्द्र कुमार झा "धीरेन्द्र" जीक विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे कविता, लेख आदि प्रकाशित होइत रहैत छन्हि। हिनक मैथिली कविता संग्रह 'काल-ध्वनि प्रकाशित आ चर्चित छनि। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा दूबेर पुरष्कृत संस्कृत शिक्षक संघ दिल्लीक संस्थापक एवं पूर्व अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र जी अनेक संस्थाद्वारा सम्मानित/पुरस्कृत छन्हि। सम्प्रति दिल्ली प्रवासमे रहि साहित्य साधनामे रत्त छथि।

कवि

सत्य सटीक जे बात लोकसभकेँ कहियौ।
कविक धर्म जे थिकै निर्वहन से करियौ॥

कविकेर धर्म निमाहब पैघ तपस्या थिक
सामाजिक हित खातिर कवि! हरदम खटियौ॥

जौं अभरैए अनय अनीति कुरीति कतहु
काव्यकलासँ हे कवि! ओकरा उपटबियौ॥

कवि क्रांतिकारी होइ छै पथ निर्देशक
से न बिसरि कवि! जे मन आबय से कहियौ॥

मंच पुरस्कारक लोभे नहि किछु बाजी
तथ्यपरक जे बात सभामे से रखियौ॥

अपन काव्य केर मादे लोक कुरीति हरु
मंच ने भेटय तैसँ की? लिखिकेँ कहियौ॥

असली कवि नहि चापलूस बहिया होइ छै
कविकेर मरजादाकेँ कवि! अपने रखियौ॥

कवि बिकाउ नहि होइ छै बिकय से कवि की भेल?
जौं कवि छी तँ कविक धर्म धारण करियौ॥

कविता सरिता जकाँ सिंचय आगाँ बढ़ि कय
तेहन रुप 'धीरेन्द्र'काव्यकेँ नित रखियौ॥

हमरा अहाँक मनमे

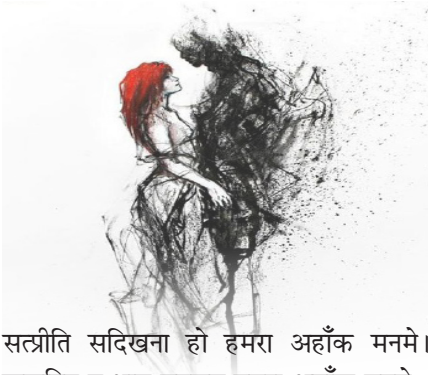

सत्प्रीति सदिखना हो हमरा अहाँक मनमे।
कलुषित न भाव उपजय हमरा अहाँक मनमे॥

हम सभ जे बात बाजी नहि ताहि मे कपट हो
सत् प्रेम भावना हो हमरा अहाँक मनमे॥

अनुरागसँ जीबी जग तजि द्वेष आर ईर्ष्या
हित भावना निरत हो हमरा अहाँक मनमे॥

अपमानकेर जड़िमे दुर्भावना बसैछै
दुर्भावना बसय नहि हमरा अहाँक मनमे॥

संबंधमे मधुरता राखब सुखी रहब नित
कटुता न हो, सहृदयता हमरा अहाँक मनमे॥

शुभ एक दोसराके मनबैत जगमे जीबी
उपकार सोच उपजय हमरा अहाँक मनमे॥

'धीरेन्द्र ' सूक्ति गाबय 'सर्वे भवन्तु सुखिन:'
सद्भावना हो विकसित हमरा अहाँक मनमे॥

संदीप कुमार झा 'प्रदीप'क तीनटा कविता

बेनीपट्टी, दामोदरपुर रहनिहार संदीप कुमार झा 'प्रदीप' जीक 'नूतन क्षितिज'क विभिन्न वार्षिक अंकमे कविता/गीत प्रकाशित छन्हि। मूलत: वीर रस, भक्ति रस, श्रृंगार आ विरह रससँ सम्बन्धित मैथिली आ हिन्दीमे पद्य लेखन। सम्प्रति भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभागमे सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रधान महालेखाकार कार्यालय, कोलकातामे कार्यरत्त छथि।

रोकि सकत के भोरकेँ?

रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ।
घोंटि नञि सकतै घुप्प अन्हाड़ कखनहुँ दिनकरक इजोरकेँ॥
जीवन सेहो समर भूमि थिक, भीषण, निर्मम शूल जेकाँ,
नञि ई मृदुल कमल पंखुड़ी, नञि गुलाबक फूल जेकाँ।
मार्ग कंटकाकीर्ण विकट, ऊबड़-खाबड़ अगम्य रहय,
भरल रहय उत्साह हृदयमे,साहस मुदा अदम्य रहय।
छोड़ि हताशा शीघ्र लगाबू अहिबेर धक्का जोरकेँ।
रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ॥

एहेन समस्या नहि भूतल पर, अछि नहि जकर उपाय कोनो?
कठिन परिश्रमकेँ अहि जगमे भेल नञ अछि पर्याय कोनो।
बेर-बेर हारल अछि बाधा-विघ्न पुरूषकेँ पौरुषसँ,
केलन्हि अधीन मनुज गजराजहुकेँ बल-बुद्धिक अंकुशसँ।
हटा दियौ आब अप्पन मोनसँ अहाँ निराशा घोरकेँ।
रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ।

विष-अमृत आ विजय-पराजयकेँ कखनहुँ नहि दाह धरू,
जीवनकेँ अहि रौद-छाँहकेँ नहि कोनो परवाह करू।
स्थिति, क्षमता देखि लक्ष्य-निश्चयकेँ अनुसंधान करू,
ओहिपर निज संपूर्ण शक्तिसँ वाणक फेर संधान करू।
जहिना ध्यान चान पर लागल रहै छै प्रिया चकोरकेँ।
रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ॥

बिना त्यागकेँ मणिधरकेँ मणिसँ भासित कि भाल भेलै!
बिना रगड़ने पाथर पर, मेहदी कहियो कि लाल भेलै!
कतबहु दूर अहाँके मंजिल,लक्ष्य अहाँ पेबे करबै,
दृढ़ विश्वास बनेने राखू, सफल अहाँ हेबे करबै।
हिम्मत बाँन्हू, पै'र बढाबू पोछि नयनसँ नोरकेँ।
रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ॥

अरे हिमालय! कर घमंड नहि, माथ बहुत ऊँचगर तोहर!
ओ विशाल वारीश! जनै छी गर्त कतेक निचगर तोहर!
विजित तोरा हम करबहु एकदिन अप्पन अडिग संकल्पसँ,
सतत प्रयास, सतत नव-चिंतन आ अभिकल्प-प्रकल्पसँ।
बढ़ैत चलू कर्तव्यक पथ पर पकड़ि सुकर्मक डोरकेँ।
रैनक नहि सामर्थ्य एतेक जे रोकि सकैत अछि भोरकेँ॥

अप्पन मिथिलाधम यौ!

सकल त्रिलोकीमे वंदित अछि अप्पन मिथिला-धाम यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।
हिमवंतक शीतल छायामे अप्पन मनोरम घर-आँगन,
कमला-कोशी-गंडकी-सुरसरिएतयबहथिकल-कलप्रतिक्षण।
धोती-कुरता-पाग, भाल पर चंदन, मुखमे पान सदा।
माछ-मखान रहल मैथिल-संस्कृतिकेँ अमिट निशान सदा।
भाषा ओहिना मिठगर अछि जहिना अछि आम-लताम यौ।

जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।
श्रीकृष्णक गीतासँ पहिले छल अष्टावक्रक गीता,
ज्ञान-मुक्ति-वैराग्यक गंगा एतय बहय छलि सुपुनीता।
भक्तिक पावन-धार त्रिवेणी,आश्रय ई ज्ञानीजनकेँ,
नृपति जनककेँ तपोभूमि, यज्ञस्थल अछि ई ऋषि-मुनिकेँ
जगजननी बनि अयली सीता, परब्रह्म श्रीराम यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

न्यायशास्त्र,दर्शनकेँ पाठ जगतकेँ अहीं पढेने छी।
यजुर्वेदकेँ ज्ञान परम ओ जगकेँ अहीं सिखेने छी।
मैत्रेयी सन विदुषी, गौतम, याज्ञवल्क्य विद्वान एतय,
शक्तिपीठ-उच्चैठ-भगवती-कालीदास-स्थान एतय।

मिथिलाकेँ गौरव गाथा गाबय अछि वेद पुराण यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

भट्ट कुमारिल सन वैदिक धर्मक रक्षक श्रुति-आचारी।
तोतागण शास्त्रार्थ करै छथि पनिभरणी विदुषी नारी!
जननि उग्रताराकेँ धरणी,वाचस्पति नर-आर्य एतय,
दण्डसहित नतमस्तक भेलाह आदि-शंकराचार्य जतय!
दिग्दिगन्त तक भारती-मण्डनकेँ छन्हि यश-गुण-नाम यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

महादेव! हरि! गंग! गोसाउनिकेँ मंगलमय गीत सुनू,
नव-ललनाकेँ स्नेह-विरहकेँ मोहक सुरमे प्रीत सुनू।
प्रेमभक्तिमे डूबि जखन कवि प्रभुकेँ विनय सुनायल छथि,
विह्वलभ'त्रिभुवनपति!उगना-चाकरबनिक'आयलछथि
गूँजि रहल भू-व्योम-पवनमे विद्यापतिकेँ गान यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

धन-संपत्तिकेँ बात कोन! पीयूष दानमे नहि आनब,
अछि स्वीकार्य मृत्य बरु हमरा, मुदा भीख हम नहि माँगब।
हे गंगाधर!आशुतोष!पग-दर्शन लेल अकुलायल छी,
मनमे ल' सुतकेँ अभिलाषा शरणागत बनि आयल छी।
स्वयं पुत्र बनि अयला शंकर आयाचीकेँ गाम यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

श्रेष्ठ!पुरातन संस्कृति!केँ सभ मिलि अभिनव-उत्थान करी,
माटि-पानिमे छुपल सरस्वती-सीताकेँ आह्वान करी।
फेर बनारसमे जा क' हम माछक झंडा फहरायब,
गर्व करथि भावी पीढ़ी किछुओ त' धरोहर द' जायब।
करू मैथिली-मिथिलाकेँ सेवा निश्छल-निष्काम यौ।
जन्म लेलहुँ पावन-धरती पर नित उठि करू प्रणाम यौ।

सीता

रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!
बिनु अपराध दंड सहि वन-वन भटकथि परम पुनीता॥
निन्दित कोन काज केलहुँ? सिया ई बुझियो नहि पेलथि,
नहि सुनबाई, दोष किछु नहि, सजा तखनहुँ भीषण पेलथि।
लोकलाजकेँ भयसँ तेजलथि नृप पावन-परिणीता!
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

अन्यायक प्रतिरोध कहाँ? सभ वज्रक निष्ठुर छाती!
मिझा गेल सन्देहक अन्हड़मे संबंधक बाती।
हतप्रभ माँ-सौभाग्यदायिनी! ओ हरिकेँ सुप्रीता।
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

काँपि उठल ई मर्यादा देखि ब्रह्मलोक आ काशी।
अहि कलंककेँ धोब कोना यौ सभ्य अयोध्यावासी!
त्रिभुवन-तारिणी जगदम्बेकेँ बुझलहुँ अबला पतिता!
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

पतिव्रताकेँ तृण समक्ष नत चंद्रहास-दसग्रीवो।
जिनक चरित्रक करथि वंदना ब्रह्मा, शिव राजीवो।
असहाय, स्तब्ध आई ओहि पतित-पावनिक शुचिता!
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

सूर्यवंशकेँ नवल-सूर्यकेँ तनमे धारण केने।
अपमानक असह्य-गरलकेँ अंतर्मनमे धेने।
लाँछन-ज्वालामे तिल-तिल क' पल-पल जरथि विनिता।
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

निर्जन वन, चहुँदिश अन्हड़, असगर विदेह-सुकुमारी,
व्यथित-हृदय, घाव संतापक, कानथि जनक-दुलारी।
राजधर्मकेँ हवन-कुण्डमे आहुति हृद्-संगीता।
रामराज्यकेँ न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

झुकय देलन्हि नहि रघुवंशक, मिथिलाकेँ ऊँचगर माथा।
नारीत्वक दृढ़ स्वाभिमान आगा करबद्ध-विधाता।
समा गेलीह भू-मध्य स्नेह-वात्सल्यक अमृत-सरिता।
रामराज्य के न्याय अजब सुनि बिलखथि जननी सीता!

ललित कुमारक दूटा कविता

मिथिलाक्षर प्रवीण ललित जीक हालहिमे मैथिली कविता-संग्रह 'हिलकोर' प्रकाशित आ चर्चित भेलनि अछि। कविश्वर चंदा झा रचित मिथिला भाषा रामायणक मिथिलाक्षरमे लिप्यान्तरण अप्रकाशित छनि। मिथिलाक्षरक प्रचार प्रसार लेल विद्यापति सम्मान, रामायणक लिप्यान्तरण हेतु अटल-मालवीय सम्मान, मिथिलाक्षरमे उत्कृष्ट कार्य हेतु जागृति आदि सम्मानसँ सम्मानित छथि। हिन्दी साहित्यसँ स्नातकोत्तर ललितजी सम्प्रति बिहार सरकरक शिक्षा विभागमे शिक्षक रूपमे प्राथमिक विद्यालय कन्या, जिरौल, हरलाखीमे कार्यरत छथि।

शिक्षा व्यवस्था

हाकिम-हूकूम नेता मंत्री,
कहू हिनकर कोन कसूर।
चपरासी इस्कुलकेँ जाँचय,
मास्टर ताकय टुकुर-टुकुर॥

अपन बिहारमे खूब तरक्की,
शिक्षामे भ' रहल सुधार।
मास्टर कतौ कुर्सी बैसथि?
हुनका नै छनि ई अधिकार॥

एहि विभागक बात ने पूछू,
अधिकारी सब छथि बेजोर।
दूधक धोल नीचासँ ऊपर,
एक मात्र मास्टरबे चोर।।

घड़ी देख क' नौ बजेमे,
इस्कुल पहुँचब हिनकर काज।
भानस-भातक करथि व्यवस्था,
अइमे कोन मासटरकेँ लाज?

गिरगिट, साँप, बेंगक चिन्तामे,
पागल भेल रहै छथि।
भोजन शुद्ध कहुना ई बनौ,
चिन्तित खूब रहै छथि॥

विधिवत छुट्टीसँ की मतलब?
शिक्षककेँ नै ई अधिकार।
भेल निलंबन निश्चय बूझू,
सुसाशनकेँ ई सरकार॥

आब ने रहू मुहतक्कीमे,
कलमक चोटसँ करू प्रहार।
देशक अछि निर्माता शिक्षक,
आब सहत नै अत्याचार॥

चान

सुति उठले रही चान सोझा पड़ल,
ओ बेबस सब के निहारैत रहै।
रातिसंग तरेगनकेँ हेंज सजल,
भोर असगर किया ओ बिचारैत रहै॥

गुप अन्हरिया जखन छल घेरने तखन,
चान ल'गमे बैसल दुलारैत रहै।
भेल दिनकर उदित सभ छोड़ि चलल,
चान अपनाकेँ अपने सम्हारैत रहै॥

राति पूनम जखन चान रानी रहै,
ओ प्रेमक अनुपम निशानी रहै।
चान दुतियाकेँ शिव माथ शोभैत रहै,
चौठ भादो कलंकित पिहानी रहै।

चान रजनीमे बौआक मामा बनल,
भेल भिनसर तखन ओ खेलौना बनल।
छल चन्द्रयान उतरल जखन चान पर,
चान रोवर प्रज्ञानक बिछौना बनल॥

आब चानक छवि जे छी देखि रहल,
मोन गढ़ने छलौं से ने भेटि रहल।
चान अपनो दुखित आब सोचि क' ई,
जे मोजर हमर छल सेमेटि रहल॥

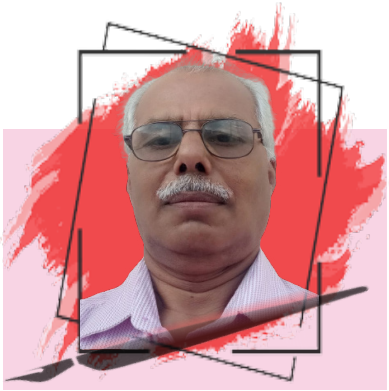

बैकुण्ठ झाक चारिटा गजल

बैकुण्ठ झा जीक संदर्भ समय सोपान (कविता-संग्रह), बुझनुक आ संकेत (लघुकथा-संग्रह), रखबार (गजल-संग्रह) प्रकाशित छनि। नवतुरिया (मैथिली), दिव्या आ संवाद (हिन्दी)क सम्पादन कएने छथि। सम्प्रति जबलपुर, मध्यप्रदेशमे रहि साहित्य साधनामे लागल रहैत छथि। सम्पर्क : +91 9131432142

01

भीड़कैं हाथमे ऊक छै
अछरकटुआ सभक फूक छै

तहन हुरदंग के रोकतै
गामकैं मुख्य सब मूक छै

एक कौराक ओकादि छै
सत्य कटु किंतु दू-टूक छै

दोख देखत अपन नहि कहत
सभटा सरकारकैं चूक छै

माथ रहतै कहाँ होशमे
जँ तनल पीठ बंदूक छै

ऊककैं माथमे ऊक छै
लक्ष्यपर कोइलिक कूक छै

02

सरल रहब नहि सरल भाइ यौ
सबदिन पीअब गरल भाइ यौ

कियो कहैत छै दाँत पेटमे
कियो कहैत छै मरल भाइ यौ

झूठक फँसरीमे फँसैत छथि
सज्जन सब बरमहल भाइ यौ

बहुत लोक बिन अपराधोकैं
काटि रहल छै जहल भाइ यौ

नगर-नगरमे धधरा धाही
अहाँ गबै छी गजल भाइ यौ

03

जहन्नुमक जहाज एलैए, चल जल्दी
फतवा मौलवीक भेलैए, चल जल्दी

बन्द पड़ल छै जन्नत मुदा जहन्नुममे
सहस बहत्तरि हूर एलैए, चल जल्दी

एम्हरका पिलान काफिर बूझ' लगलै
एक घाट होब' लगलैए, चल जल्दी

जे मन से करैत छलिऐ करिते रहबै
कल्ला किऐक अलगाबैए, चल जल्दी

सरकैं तनसँ जुदा करक छै गामे गाम
न'व सेकुलर प्लान भेलैए, चल जल्दी

नीक-बेजाय सोचबाक नहि काज अपन
महजिदमे एलान भेलैए, चल जल्दी

04

भेलै बन्न उगाही जहियासँ
नहि रहलै ओ धाही तहियासँ

कुर्सी दूर छटपटी छै तकरे
सक भरि करय तबाही तहियासँ

चानी केर सलाइ भ्रमकैं काठी
जँह-तँह आगि पसारय बहियासँ

भोट बेचि लै छैं पनसैया पर
चेहरा अप्पन झाँप कड़हियासँ

काम-चामकैं अभिलाषा लिखले
गजलकार तोँ भेले कहियासँ

विजय इस्सर 'वत्स'क चारिटा गजल

गीत, गजल, कविता आ कथा लेखनक संग-संग संगीतमे विशेष अभिरुचि रखनिहार विजय इस्सर 'वत्स'जी संगीत विशारद छथि। विभिन्न मंचसँ संगीतक प्रस्तुति मैथिली सिरियल, सिनेमा आ नाटकसभमे अभिनयक संग सांगीतिक आडबिंग सहयोग। दूरदर्शन एवं साहित्य अकादेमीक आलबे विभिन्न साहित्यिक मंचसँ कविता पाठ। विभिन्न पत्र-पत्रिका आ स्मारिकामे मैथिली आ हिंदीमे रचना प्रकाशित। 'मोनक चिड़ैया' मैथिली कविता-गीत-संग्रह प्रकाशित एवं चर्चित छनि।

01

आब नै रहलै भरोसा लोक-वेद समाज पर
की करब विश्वास ककरो बात पर आ काज पर

ठकि रहल छै एक दोसरकेँ फँसा कए जालमे
लोक मोहित भेल छुछ्छे लोकतांत्रिक राज पर

सेवकक सेवा गजबकेँ पाबि मेवा लाल अछि
जी हजूरीमे मगन जनता अपन ई सुराज पर

गीत आंदोलनक गाबै बात संघर्षक करै
सूट बूटक ख्याल सदिखन ध्यान मुँहकेँ साज पर

खूब भ' रहलै तमाशा सांस्कृतिक ई मंचसँ
शब्दकेँ मरजाद गेलै मंच बाँचल बाज पर

02

रही दूर तेँ की हृदयमे रहै छी
नयन मूनि सदिखन अहींकेँ तकै छी

पियासल जते हो दरश लेल नैना
पिपासाक अश्रू बनल हम खसै छी

कनी जे अहूँ हाक देबै मनहिमन
कहू की अहाँकेँ नजर नै अबै छी

कमत की हमर दुख कहब केकरो जे
विरहकेँ व्यथा ई चुपहि हम सहै छी

बनल शीप स्वातीक बुन्नहि भ' आबू
बना 'वत्स' मोती सकब से कहै छी

03

एएक बेर फेर मैथिलीक पूत जाग रे
फाँर बान्हि एकताक संग आब लाग रे

गीत बीरताक गाबि साहसी प्रबल बनी
जोश राख होश राख साथ माथ पाग रे

गंग गंडकी बलान कोशी कमला धारमे
धोए धर्म धामकेँ हटा कलंक दाग रे

वेदमे बखान गाबि कहि रहल पुराण छै
जानकीक पुण्य भूमि देवताक भाग रे

विष्णु रूप राम से एतइ जहान जानलै
चाकरी करैत शंभु खाथि भात साग रे

04

राग भाष रूप रंग अनमन गजल सन
भाव प्रेम मोहिनीक खनहन गजल सन

भूख प्यास देखिते परायल कतौ जे
धानकेँ लबान मास अगहन गजल सन

बाध बोन खेत कात हहरल किसानक
प्राण बुन्न श्रावनक बरसन गजल सन

आँखिकेँ लगैछ नीक सुंदर मनोरम
प्रीत बीज रोपि दैछ चितवन गजल सन

फूल चान फेल छैक शोभा अनूपे
'वत्स' ओ लगैत छैक कहाँदन गजल सन

महानादमे समाहित हमर मोन-प्राण

डॉ. वीणा ठाकुर

सम्पर्क : दरभंगा, मिथिला (बिहार)
मोबाइल : +91 9471640191

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक वरीय प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा आ साहित्य अकादेमी दिल्लीमे मैथिलीक पूर्व संयोजिकाक रूपमे प्रतिष्ठितश्रीमती वीणा ठाकुरक रचना संसार बहुत वृहत छनि। मैथिलीमे हिनक उपन्यास 'भारती', कथा-संग्रह 'आलाप', परिणीता' समीक्षा 'मैथिली रामकाव्यक परम्परा', 'विद्यापतिक उत्स', 'इतिहास दर्पण', 'वाणिनी', 'मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परंपरा' एवं अनुवादक पोथी 'हाट-बजार' आओर 'आधुनिक भारतीय कविता संचयन : हिंदी' प्रकाशित छनि। एकरा अलावे 'विद्यापति गीत रचनावली', 'मैथिली प्रबंध काव्यक उद्भव ओ विकास' सहित कएगोट पोथी एवं पत्रिकाक संपादन सेहो कएने छथि। सरस्वती सम्मानक लेल गठित मैथिली भाषा समितिक संयोजिका डॉ. ठाकुरकेँ हुनक कथा-संग्रह 'परिणीता'क लेल, साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित सम्मानित कएल गेल छनि।

वर्ष 2019क 29 जनवरी, अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन छल हमर जीवनक। साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार 'अर्पण समारोह'क अवसर पर दिल्ली गेल छलहुँ। प्रयागमे कुम्भक अवसर पर संगममे स्नानक कोनो निश्चित योजना नहि छल। ई दोसर बात जे पंचानन जी बेर-बेर आग्रह करैत छलाह। पंचानन जी कतेको वर्षसँ सपरिवार प्रयागमे कल्पवास करैत रहलाह अछि। सभटा व्यवस्था रहैत छनि— आवाससँ ल' भोजन धरि, अत्यन्त सुव्यवस्थित। ओ मात्र अयबाक लेल आग्रह नहि करैत छलाह, अपितु कोनो प्रकारक दिक्कत नहि हयत, तकर आश्वाशन सेहो बेर-बेर दैत छलाह। मोन तँ होइत छल, मुदा अथाह लागि रहल छल। तथापि अवचेतनमे लागि रहल छल, जे कोनो अदृश्य शक्ति हमरा आमंत्रित क' रहल अछि।

टिकट तँ छल नहि, आ नहि छल ओहि अव्यक्त आमंत्रणक भाषा बुझबाक सार्मथ्य, मुदा आकर्षण एतेक तीव्र भ' गेल छल जे कोनो साधनसँ, कहुना प्रयाग चलि जाइ, सोचि मोन व्यग्र भेल जा' रहल छल। ओना संगम-स्नानक ई हमर तेसर अवसर छल। वर्ष 1995मे प्रयाग गेल छलहुँ, अवसर छल संगम तट पर पुत्र अंशुक मुड़नक, दोसर बेर प्रयाग गेल छलहुँ वर्ष 2016 मे, साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित सेमिनारक अवसर पर। दुनू खेप संगममे स्नान कयने छलहुँ।

अस्तु 2 फरवरीक ट्रेनक टिकट भेटि गेल। दिल्लीसँ गाड़ी खुजबाक समय छल लगभग एक-डेढ़ बजे। गाड़ीमे बैसतहि लागल जेना एतहिसँ प्रयागक आभा मण्डलमे हम प्रवेश क' गेल छी। टू टायर ए.सी. सभ सीट भरल छल। ओना अपरिचितसँ गप्प करयमे हम बड़ सहज नहि रहैत छी। मुदा ओहि दिन नहि जानि केहन उद्वेग लागि गेल छल जे भरि बाट बतिआइत गेलहुँ। सभ यात्री प्रयाग जा' रहल छलाह, कियो असगर नहि, पांच-छह गोटेक समूहमे, देशक विभिन्न प्रान्तमे रहनिहार, सभ ओहिना उत्साहित। राति साढ़े दस बजे ट्रेन इलाहाबाद स्टेशन पहुंचल। दूगोट व्यक्ति, जे आर्मीक स्टाफ छलाह, हमरा लोकनिकेँ रिसीव करय लेल स्टेशन आयल छलाह। हुनकहि सभक संग स्टेशनसँ बाहर अयलहुँ।

बाहर अबितहिँ हम तँ सम्मोहित सदृश चारू दिस निहारय लगलहुँ। चारू-दिसक बिजलीक प्रकाशसँ आँखि चैन्हिया

गेल। प्रशासनक व्यवस्था देखि आश्चर्य सेहो भेल। डेग-डेग पर ठाढ़ पुलिस, राति छल तथापि असंख्य लोक बाट पर स्वनियंत्रित चलल जा' रहल छल। ककरहुँ कोनो हड़बड़ी नहि, सभ सधल डेगे मोटरी-चोटरी सम्हारैत आगाँ बढ़ल जा' रहल छल। हमहुँ सभ गाड़ीमे बैसी गेस्ट हाउस दिस विदा होमय लगलहुँ। ताबत बनारससँ प्रभाष कुमार झाजी, जे हमर ज्येष्ठ पुत्री पिंकीक देओर छथि, आबि गेलाह। प्रभाष जीक घरक नाम कन्हैया जी छनि। सभ गोटे आर्मीक गेस्ट हाउस पहुँचि, भोजन क' सुतबाक उपक्रम करय लगलहुँ। उपक्रम एहि लेल जे बतिआइत एक-डेढ़ बाजि गेल छल। भोरे संगम स्नान हेतु जयबाक छल। दुनू गोटे, कन्हैया जी और हमर पति डा. दिलीप कुमार झाजी, तँ सुति गेलाह, मुदा हमर ऑखिसँ जेना निन्द बिला गेल छल। कतेको काल धरि आँखि मुनने पड़ल रहलहुँ, मुदा निन्द नहि भेल। एकटा अव्यक्त बेचैनी शरीरक पोर-पोरमे पसरि गेल छल। कतेक ठाम गेल छी, कतेक यात्रा कयलहुँ अछि। मुदा एहन अनुभूति तँ कहियो नहि भेल ? मोनमे बेर-बेर घुरिया रहल छल।

चारि बजे भोरे हम सभ जल्दी-जल्दी नित्यक्रियासँ निवृत भ' गेलहुँ। ताबत धरि आर्मीक गाड़ी आबि गेल छल। स्नानक उपरान्त पहिरय बला वस्त्र एकटा झोरामे राखि सभ गोटे गाड़ीमे बैसी गेलहुँ। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार एकटा आर्मी अफसर, जे राजस्थानमे पोस्टेड छलाह, हमरहि सभक संग संगममे स्नान हेतु गाड़ीमे बैसल छलाह। गाड़ी सड़क पर आयल तँ सच्चे ओ दृष्य देखि अचम्भित भ' गेलहुँ। असंख्य स्त्री-पुरूष, बच्चा-बूढ़ सघल लयमे चलल जा' रहल छल। सभक माथ पर मोटा, कान्ह पर झोरा, दुनू हाथ झोरा-झोरीसँ बाझल, तथापि उत्साहसँ लवालव मुखाकृति। सभ अपन गन्तव्य संगम तट दिस बढ़ल जा रहल छल। सड़क पर लागि रहल छल जेना मानव-समुद्र अपन लयमे प्रवाहित भ' रहल अछि। नहि जानि कतेक प्रश्न मोनमे क्रमश: अबैत रहल। नहि जानि कतेक युगसँ ई लोकनि कल्पवास क' रहल छथि? भारतवर्षमे कतेको पवित्र तीर्थस्थल अछि, मुदा प्रयागकेँ तीर्थराजक संज्ञा कियैक देल गेल अछि? आखिर कोन विश्वास अछि जे लाखक लाख वर्षसँ संगम-स्नानक महत्वकेँ अक्षुण्ण रखने अछि? लोक विश्वास अछि जे, माघमे जखन सूर्य मकर राशिमे रहैत अछि, तखन देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्य तीर्थराज प्रयागमे निवास करैत छथि। प्रतिदिन त्रिवेणीमे स्नान करैत छथि। श्रीवेणीमाधवजीक चरण कमलकेँ पूजैत छथि तथा अक्षयवटक स्पर्श करैत छथि, अक्षयवटक स्पर्शसँ हुनक शरीर पुलकित होइत छनि। भारद्वाज मुनिक आश्रम अत्यन्त पवित्र, परम रमणीय और श्रेष्ठ मुनिक मोनकेँ मोहित कयनिहार अछि। तीर्थराज प्रयागमे स्नान करय हेतु जे ऋषि-मुनि अबैत छथि, हुनक सम्पूर्ण समाज भारद्वाज मुनिक आश्रममे जुटैत अछि। प्रात: काल सभ उत्साहपूर्वक त्रिवेणीमे स्नान करतै छथि, पुन: परस्पर भगवदगुणक कथाक वाचन करैत छथि। ब्रह्मनिरूपण, धर्मक विधान, तत्वक विभागक वर्णन करैत छथि, तथा ज्ञान वैराग्यसँ युक्त भगवानक भक्तिक महात्मक कथन करैत छथि। एवं प्रकारेँ प्रतिवर्ष प्रयागमे कल्पवास क' मुनीश्वर अपन-अपन आश्रम दिस घुरि जाइत छथि।

एहि लोक विश्वासक आधार अछि रामकथाक लोकप्रियता, सोलहम शताब्दीमे रचित रामचरित मानस आम लोकमे सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ थिक। रामायणमे प्रयागक महात्मक वर्णन अछि। रामचरितमानसक मूल स्त्रोत थिक बाल्मीकि रामायण। बाल्मीकि रामायणक रचनाकाल थिक ऋग्वैदिक काल। एतेक प्राचीन अछि कल्पवासक प्रथा से सहजहि कहल जा सकैत अछि। यैह विश्वास तँ थिक अमृत्व, एकरे खोज तँ हजारक हजार वर्षसँ भारतीय मनीषा क' रहल अछि। यैह तँ थिक मानव मात्रक जीवनक परम लक्ष्य। अहि विश्वासक प्रकाश तँ चारू दिस प्रयागमे देखि रहल छी। यैह अमृत तँ एतुका कण-कणमे व्याप्त अछि।

रामकथाक विकास पर फादर कामिल बुल्केक शोध ग्रंथमे वर्णित अछि जे वेदमे रामकथा-विषयक पात्रक उल्लेख स्फुट और स्वतन्त्र रूपसँ भेल अछि। रामकथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्यक रचना वैदिक कालक पश्चात्, इक्ष्वाकु वंशक राजा लोकनिक सूत आरंम्भ कयलनि। अहि आख्यान-काव्यक आधार पर बाल्मीकि आदिकाव्य रामायणक रचना कयलनि। एहि रामायणमे अयोध्याकाण्डसँ ल' युद्ध-काण्ड धरिक

कथा वर्णित छल, तथा मात्र बारह हजार श्लोक छल। मुदा एहि रामायणक समाजमे अत्यन्त आदर छल। कुशी-लव एकर गान करैत छलाह तथा ओकर अभिनेता अभिनय क' अपन जीविका चलबैत छलाह। काव्योपजीवी कुशी-लव श्रोताक रूचि ध्यानमे राखि रामायणक लोकप्रिय अंशकेँ बढ़बैत छलाह। जेना-जेना राम कथाक मूलरूप लोकप्रिय होइत गेल रामक कथा रामायण (राम-अयन अर्थात रामक पर्यटन) नहि रहि पूर्ण रामचरितक रूपमे विकसित भेल। एहि अवधि धरि रामायण नरकाव्य छल तथा राम आदर्श क्षत्रीयक रूपमे विख्यात छलाह। एकर प्रमाण भगवतगीताक ओहि स्थलसँ होइत अछि, जतय कृष्ण अर्जुनसँ कहैत छथि जे शस्त्र धारण कयनिहारमे हम राम छी— रामशस्त्रभृतामहम्।''

रामचरित, जेना-जेना लोकप्रिय होइत गेल, तेना-तेना एहिमे अलौकिकता अबैत गेल। पश्चात् तँ रामक महिमा अत्यन्त प्रखर भ' गेल तथा सम्पूर्ण भारतवर्षक संस्कृति राममय भ' गेल। एतेक तँ सत्य अछि जे बाल्मीकि रामक समकालीन छलाह और बाल्मीकि रामायणक कथा प्रत्यक्ष सत्य पर आधारित अछि। दोसर महत्वपूर्ण तथ्य अछि जे एहि आदि काव्यक आधार पर मात्र भारतीय भाषा मध्य नहि, अपितु जौँ तिब्बत, सिंहल, खोतान, हिन्द-चीन, श्याम, कश्मीर और हिन्देशियामे प्रचलित रामकाव्यक सारिणी मिला देल जाय, तँ कहय पड़त जे राम-कथा मात्र भारतीय नहि, एशियाई संस्कृतिक महत्वपूर्ण तत्व बनि गेल अछि। संगहि इहो तथ्य महत्वपूर्ण अछि जे रामकथा-साहित्यक मूल स्त्रोत बाल्मीकि रामायण थिक।

सोलहम शताब्दीमे रचित तुलसीदास अपन अमर कृति रामचरितमानसमे याज्ञवल्क्य-भारद्वाज-संवादक व्याजेँ प्रयागक महात्मक वर्णन करैत प्रयागकेँ तीर्थराजक संज्ञा देलनि अछि। रामचरित मानसमे वर्णित अछि जे भारद्वाज मुनि तीर्थराज प्रयागमे बसैत छथि। वर्तमानोमे भारद्वाज आश्रम प्रयागमे साक्ष्य रूपमे विद्यमान अछि। रामायणक अयोध्या कांडमे श्रीराम स्वयं अपन श्रीमुखसँ सीताजी, लक्ष्मणजी एवं सखा निषादराजकेँ कहलनि तीर्थराजक महिमाक वर्णन करैत अछि। जे— ''राजा प्रयागक मंत्री सत्य थिक, श्रद्धा पत्नी छथि तथा श्रीवेणीमाधव सदृषा हितकारी हिनक मित्र छथि। चारि पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) सँ हिनक भण्डार भरल छनि। यैह पुण्यमय प्रान्त प्रयाग क्षेत्र एहि राजाक सुन्दर देश थिक। प्रयाग क्षेत्र दुर्गम, मजबूत और सुन्दर गढ़ (किला) थिक, जकर प्राप्ति स्वप्नोमे (पाप रूपी) शत्रुकेँ नहि भ' सकैत अछि। समस्त तीर्थ राजा प्रयागक वीर सैनिक थिक। (गंगा, जमुना और सरस्वतीक) संगम स्थल हिनक अत्यन्त सुशोभित सिंहासन थिक। अक्षयवट छत्र थिक, जे मुनिक मोन मोहित क' लैत अछि। गंगा और यमुनाक पवित्र तरंग(श्याम और श्वेत) चँवर थिक, जकर दर्शन मात्रसँ दुख और दरिद्रता नष्ट भ' जाइत अछि। पुण्यात्मा पवित्र साधु एकर सेवा करैत छथि, और हुनक सभटा मनोरथ पूर्ण होइत छनि। वेद और पुराणक समूह भाट थिक, जे राजा प्रयागक गुणगान करैत छथि। पापक समूह रूपी हाथीकेँ मारय हेतु सिंहरूप प्रयाग राजक प्रभाव (महत्व-महात्म) के कहि सकैत अछि?'' एहन सोहाओन तीर्थराजक दर्शन क' सुखक समुद्र रघुकुल श्रेष्ठ श्रीराम सुखी भेलाह। एवं प्रकारेँ श्रीराम त्रिवेणीक दर्शन कयलनि। त्रिवेणी जनिक स्मरण मात्रसँ सभटा मंगलक प्राप्ति होइत अछि। श्रीराम पुनः आनन्दपूर्वक त्रिवेणीमे स्नान क' शिवक पूजा कयलनि, तत्पश्चात् विधिपूर्वक तीर्थ देवताक पूजन कयलनि। तखन प्रभु भारद्वाज मुनि आश्रममे अयलाह।

लगैत अछि जेना एखनहुँ देवता, किन्नर, गन्धर्व प्रयागमे कल्पवास क' रहल छथि। कलियुगमे मनुष्यकेँ सामर्थ्य नहि अछि जे अपन आँखिसँ ओ दृश्य प्रत्यक्ष देखि सकय। हँ एतेक अवश्य अछि जे यैह प्रभाव थिक जे सम्पूर्ण प्रयाग क्षेत्र अलौकिक भासित भ' रहल अछि। जेना-जेना संगम क्षेत्र लग आबय लागल मोनक व्याकुलता बढ़ैत गेल, उत्सुकता चरम पर चलि गेल छल। ताबत गाड़ी सरस्वती घाट पहुँचि गेल छल।

फरीच्छ भ' गेल अछि, अकाशमे कारी-बैगनी मेघक जेना अम्बार लागल अछि। अवाक भ' क' ठाढ़ भ' जाइत छी, दहिना-बामा दिशामे परसल अथाह, अगम जल राशि। जेम्हर दृष्टि जाइत अछि ओम्हर जमुना और ओकर परिसर देखाइ द' रहल अछि। जमुनाक कण-कण लगैत अछि जेना उल्लासपूर्ण उमंगसँ नाचि रहल अछि। प्रभात-काल, शीतल पवन लगैत अछि जेना आत्म मुग्ध भ', शान्त भावसँ जमुनाक प्रवाहसँ

एकाकार भ' गेल अछि। मेघ और बसातक बीच जमुनाक लहरि अभिनन्दनमय मुद्रामे डोलैत प्रवाहित भ' रहल अछि। चहुँ दिस नदीक कछेरमे, अतल जलमे, प्रकृतिमे, सर्वत्र उत्सव सदृष उमंग पसरल अछि, बस मात्र किछुये कालमे हमरहुँ तरल स्पर्श भेटत। हम मेघ दिस निहारैत छी। घनगर कारी मेघक विपुल आनन्दसँ लगैत अछि जेना अकाश नव श्रृंगार क' स्नानार्थी लोकनिक स्वागत हेतु अपन बाँहि पसारि आलिग्नमे बान्ह्य हेतु आमंत्रित क' रहल अछि। एकटा मृदु ध्वनि, गंभीर नाद सुनाइ द' रहल अछि। ई ध्वनि थिक जमुनाक जल प्रवाहक। एकर अतिरिक्त ओहि भोरमे और किछु नहि प्रतिध्वनित भ' रहल अछि।

सरस्वती घाटसँ नाव पर बैसि संगममे स्नानक हेतु हम सभ विदा भेलहुँ। पांच-छह लग्गा आगाँ बढि नाव जखन यमुनाक अथाह जल राशिक उपर आबि गेल, तखन हमर ध्यान मलाह दिस गेल। ओ अपन धुनमे रामायणक पाँति गाबि-गाबि क', रामायणक ओ प्रसंग जखन श्रीराम सीता और लक्ष्मणकेँ नावपर बैसाबयमे अपनाकेँ असमर्थ कहि निषादराज अहल्या-उद्धारक प्रसंग कहैत अछि, वर्णन करय लागल। हमहुँ ओहि मलाहकेँ सम्बोधित करैत कहलहुँ, ''निषादराज ई कथा अहाँ रामायणमे पढ़लहुँ अछि की? ताहि पर ओ विहुँसैत बाजल,'' नहि सीता महरानी, ई सभ खिस्सा हम कोना सिखि गेलहुँ से हमरहुँ नहि बुझल अछि। हम तँ अच्छरो नहि चिन्हैत छियैक। रामायणक बहुतो खिस्सा हमर पितामही बच्चेमे हमरा कहने छलीह, से सभटा ओहिना मोन अछि। हमहुँ सभ तँ निषाद राजेक वंशज छी। ''ओकर गप्प बड़ नीक लागल, ओकर मुँहसँ और किछु सुनय हेतु हम बजलहुँ निषाद राज हम तँ क्षुद्र मनुष्य छी, सीता महरानी हमरा नहि कहु''। ताहि पर अत्यन्त सहजतासँ ओ बाजल, ''जे पेट भरय, सएह तँ भेल भगवान। हमर भगवान तँ अही सभ छी। अहीँ सभसँ जे कमाइ होइत अछि, ओहिसँ तँ बाल-बच्चाक गुजर होइत अछि और एकटा बात अछि, नहि जानि कोन रूपमे भगवानक दर्शन भ' जाय। ''ओकर सरलता पर मुग्ध होइत, जोर दैत हम बजलहुँ, ''नहि, नहि, ई अहाँक परिश्रमक फल थिक, कियो अहाँ पर उपकार नहि करैत अछि।'' ओ हँसय लागल छल, पुन: ओ कुशल गाइड सदृश चारू दिसक दृश्य देखबैत कहय लागल जे, ''आई पाँच बजे रातियेसँ स्नान भ' रहल अछि। अपन देशक लोकक कोन कथा, सात समुद्र पारसँ चिड़इ-चुनमुनी सभ सहो त्रिवेणीमे स्नान करय हेतु अबैत अछि। देखियौ ने, कोना चारू दिस हेजक हेज चिड़इ पसरल अछि।'' सच्चे त्रिवेणीक दुनू कछेरमे लगैत छल जेना मनुष्यक देबाल बना देल गेल अछि। चूकि नाव कछेरसँ बहुत दूर नहि छल, तेँ जतेक दूर धरि दृष्टि जा रहल छल, दू बगलि लोक सभ स्नान क' रहल छल। नाव ''अकवरी किलाक सोझाँसँ जा' रहल छल, निषाद राज कहलक, ''एहि किलामे अक्षयवट अछि, अहि वृक्षक नीचाँ सीता महरानी आराम कयने छलीह। एहि वटवृक्षसँ जमुनामे जे कुदि क' आत्म हत्या करैत अछि, सोझे स्वर्ग चलि जाइत अछि।'' पुन: ओ आगाँ बाजल, ''पाँछा जे पुल देखैत छी, ताहु परसँ कुदि क' कतेको लोक आत्महत्या क' रहल अछि, ई तँ खुनियाँ पुल थिक।'' ओकर सरलता पर पुन: हमरा हँसी लागि गेल। तत्पश्चात् निषाद राज रामायणक चैपाई गबैत मग्न भ' गेल और हम चैपाइक धुन सुनि दोसर लोकमे पहुँचि गेल छलहुँ।

फरीच्छ भ' रहल छल, त्रिवेणी पूर्व-पश्चिम बहैत छथि। नाव पूर्व मुहेँ जा' रहल छल। जतय गंगा-जमुनाक मिलन प्रत्यक्ष रूपेँ दृष्टि गोचर होइत अछि, ओम्हरे सैकड़ोँ नाव पूर्व दिस बढ़ल जा' रहल छल। ताबत धरि स्वर्णिम प्रकाषसँ जगकेँ प्रकाशित करैत दिनकर उदित भ' गेल छलाह। जमुनाक श्याम जल पर पसरैत स्वर्णिम आभा, लागि रहल छल जेना उषा-सुन्दरी धीरे-धीरे अपन मुँह परसँ आचर हँटा रहल होथि। पानिक प्रत्येक चंचल बून्द लागि रहल छल जेना उषा सुन्दरीक आँचर पर टाँकल स्वर्णिम नग होमय और ओ शत-सहस्त्र नग एक दोसरसँ संयुक्त भ' जरीदार महावस्त्र सदृश प्रतीत भ' रहल छल। क्षण-क्षणमे ओहि स्वर्णिम आभाक रूप परिवर्तित भ' रहल छल। लगैत छल जेना उषा सुन्दरी अपन आँचर पसारैत संपूर्ण प्रकृतिकेँ झांपि अपन साम्राज्यक उद्घोष क' रहल होथि। एहन रूप महिमा देखि मनुष्यके कहय, चारू दिस जल पर बैसल साइवेरियन पक्षी मुग्ध भेल, अलसायल, त्रिवेणीक जल पर विचरैत ओहि महावस्त्र पर टाँकल श्वेत मोती सदृश प्रतीत भ' रहल छल। हमहुँ एहन अलौकिक सौंदर्य देखि मुग्ध भ' गेल छलहुँ। अपलक

नेत्रसँ ओ अपूर्व रंगोत्सव निहारि रहल छलहु। मोनमे भेल जे भरिसक एहने सौन्दर्यक प्रत्यक्ष दर्शनसँ ऋषि-मुनि उषाक स्तुतिमे ऋचाक रचना कयने होयता।

सभटा नाव संगम-स्थल दिस बढ़ल जा' रहल छल। हमरहुँ सभक नाव संगम-स्थल पर पहुँचि गेल। अद्भुत, अविश्वसनीय, लागि रहल छल जेना त्रिवेणीक मध्य एकटा रेखा घीच देल गेल होमय। गंगाक श्वेत जल एक दिस, जमुनाक श्याम जल दोसर दिस, सरस्वती तँ अन्त:सलीला छथि। सुरक्षाक दृष्टिकोणसँ प्रशासन द्वारा पीपा पुलक निर्माण कयल गेल अछि। त्रिवेणीमे पीपा-पुलक घेरा बना क' स्नान हेतु क्षेत्र निर्धारित कयल गेल अछि। ओहि घेराक भीतर स्नानार्थी सभ स्नान करैत अछि। ई घेरा गंगा दिस बनाओल अछि। छाती भरि, गरदनि धरि जल, उन्मुक्त स्नानार्थी, किछु काल धरि नाव पर निश्चल ठाढ़ रहि चारू दिसक दृश्य देखैत रहलहुँ। पीपा-पुल पर सैकड़ों प्रेस रिपोर्टर कैमरासँ फोटो लैत, देशी विदेशी त्रिवेणी स्नानक साक्षी बनल।

आब हमरहुँ एहि तरलताक प्रत्यक्ष स्पर्श भेटत, व्यग्र भेल, नावसँ पीपा-पुल पर चढ़ि जलमे उतरि गेलहुँ। छाती भरि जल, कतेको डूब लगौलहुँ। विश्वरूपक दर्शनसँ जेहन दशा अर्जुनक भ' गेल छलनि, ओहने हमरहुँ भ' गेल। एतेक शीतल जल, तथापि देहक सभटा रोइयाँ ठाढ़ भ' गेल। आँखिमे नोर भरि आयल, आँजुरमे जल भरि-भरि कतेक बेर दिनकरकेँ अर्घ्य देलहुँ, मोनो नहि अछि। कथूक होश नहि, ओहि असीम दृश्यसँ एतेक भरि गेलहुँ जे नोर पोछय दिस ध्यानो नहि गेल। बेर-बेर गदगद भ' दिनकरकेँ अर्घ्य दैत रहलहुँ। पुण्य सलीला अन्तर्वाह्यकेँ भरि देलनि। कतेक काल धरि ओहिना अपलक नेत्रसँ ओ अपार-अपार दृश्य देखैत रहलहुँ। अन्य कोनहुँ प्रयोजन नहि, अन्य कोनहुँ हेतु नहि। मात्र यैह एकटा परम साध्य थिक, एहने मन स्थितिमे त्रिवेणीक जलमे निश्चल ठाढे रहि गेलहुँ। ताबत कन्हैया जी संकेत कयलनि, हमरहुँ एकाग्रता भंग भेल। जलसँ बहराइतो-बहिराइत पांच-छह डुबि पुन: लगा लेलहुँ। पीपा पुल पर चढ़यमे थोड़ेक असोकर्य तँ भेल, मुदा उत्साह तेहन छल जे ओहि प्लास्टिकक पटरी पर चढ़ि, नाव पर भीजल वस्त्र बदलि करबाक हेतु चढ़ि गेलहुँ। इहो संकोच नहि भेल जे चारू दिस असंख्य लोक अछि, कोना क' वस्त्र बदलब। ककरा फुर्सति छलैक जे दोसर दिस देखत? सभक तँ मात्र एकटा काम्य, एक मात्र उद्देश्य, त्रिवेणीक स्पर्श, दर्शन आ त्रिवेणीमे स्नान।

चारि फरवरी 2019क दिन, मौनी अमावस्या तिथि छल ओहि दिन। साड़ी पहिरि सोझ भ' क' ठाढ़ भेलहुँ, तँ देखैत छी जे अगिला घेरामे असंख्य नागा सन्यासी घाट पर ठाढ़ भ' कर जोड़ि प्रणाम करैत जलमे प्रवेश क' रहल अछि। शाही स्नानक दिन होइत अछि मौनी अमावस्या, नागा सन्यासी जलमे प्रवेशो क' रहल छल कूदैत-फानैत। अद्भुत छल ओ दृश्य, सौंसे देह भभूत मलि, डाँढ़मे गेन्दा फूलक डरकस जेना पहिरने, गरदनिमे रूद्राक्ष, विभिन्न प्रकारक पाथरक मालाक संगहि गेन्दा फूलक माला पहिरने, वस्त्रहीन, नंगटे, नागा सभ डूब देलाक पश्चात् कतेको प्रकारक करतब क' रहल छलाह। कियो हाथक चुट्टा भाँजि रहल छलाह, तँ कियो त्रिशुल-भाला चमका-चमका क' भाँजि रहल छलाह, तँ कियो नाचि रहल छलाह। चारि-पांच हाथक भीजल जटाकेँ झारि-झारिक विभिन्न प्रकारक हाथ-भाव प्रदर्शित क' रहल छलाह, तँ किछु सन्यासी हाथमे पकड़ल स्टीलक डोलचीमे राखल दूधसँ गंगाजीक पूजा क' रहल छलाह। कियो-कियो नागा अहि करतबक क्रममे गेन्दा फूलक डरकस और गरदनिक माला तोड़ि लोक सभ दिस फेकि रहल छलाह। लोको सभ लपकि-लपकि क' लोकि रहल छल। मान्यता अछि जे नागा सन्यासीक पैरसँ स्पर्श कयल माँटिसँ लोकक सभटा मनोरथ पूरा भ' जाइत अछि। ई तँ सहजहि पहिरल माला छल। हँ, एकटा आश्चर्य अवश्य लागल, एतेक अनियंत्रित क्रिया कलाप और समयक एहन अनुशासन। पांचो मिनट नहि लगैत छल, जथ्थाक-जथ्था नागा स्नान क' घुरि जाइत छलाह।

ई तँ भेल नागा सन्यासीक स्नान करैत कालक क्रिया कलाप। दोसर दिस घाट पर असंख्य नागा सन्यासी कर जोड़ि गंगा जी कैं प्रणाम क' जलमे प्रवेश क' रहल छलाह। ई क्रम लगभग चालिस पैंतालिस

मिनट चलल होयत। घोड़ा पर सवार नागा सन्यासी दूरेसँ देखाई द' रहल छलाह, आ देखाइ द' रहल छलाह चानीक सिंहासन पर विराजमान सन्यासी। ओ संभवत: ओहि अखाड़ाक महामण्डलेश्वर छलाह। दू गोट नागा सन्यासी दू बगलि ठाढ़ भ' चामर डोला रहल छलनि। एकटा बैनर सेहो देखाइ द' रहल छल, संभवत: ई ओहि अखाड़ाक बैनर छल। ओहि दिनक ई प्रथम शाही स्नान छल, पश्चात् सुनबामे आयल जे लगभग दस हजार नागा सन्यासीक संख्या अछि, जाहिमे दूसौ नागा घोड़ा पर सवार छलाह। अपन निवास स्थलसँ संगम स्थल धरि नाचैत-कुदैत जाइत छथि। हिनक नृत्यकेँ शैव नृत्यक संज्ञा देल जाइत अछि। नृत्यमे कोनो शास्त्रीयता नहि, मात्र अंग संचालन, मात्र आत्म प्रकाश आ एक मात्र उद्देश्य अपन उन्मुक्तताक प्रदर्शन। मौनी अमावस्याक ई प्रथम शाही स्नान छल। श्री पंचानन मिश्र जी लिखित 'महाकुम्भ' पोथीसँ ज्ञात भेल जे आदि शंकराचार्य द्वारा साधु-सन्यासी केँ प्रथम स्नानक अधिकारी बनयबाक व्यवस्था कयल गेल और एकरा शाही स्नानक संज्ञा देल गेल। प्रत्येक अखाड़ाकेँ प्रशासन द्वारा स्नान हेतु समय निर्धारित रहैत अछि, जकर पालन सभ अखाड़ाक साधु सन्यासी करैत छथि। नागा सन्यासीक शाही स्नानक प्रत्यक्ष दर्शन अपन सौभाग्य बुझि मोन अत्यन्त आहलादित भ' गेल। चारू दिस जतेक लोक छल, चाहे ओ स्नानार्थी होथि अपना प्रशासनसँ संबंधित व्यक्ति, नाव चलौनिहार मलाह हो अथवा देश-विदेशक प्रेस रिपोर्टर, फोटोग्राफर सभ साँस रोकि, एक टकसँ ओहि दृश्यक प्रत्यक्ष गवाह बनल निश्चल ठाढे रहि गेल छल।

ओतयसँ विदा होयबाक इच्छा तँ छल नहि, मुदा निषाद राजक बजाहटि पर हम सभ पुन: नावमे बैसि गेलहुँ। निषाद राज पर थोड़ेक मोन तँ खौझायल, तथापि ओकर विवशताक अनुमान क' पुन: सामान्य भ' गेलहुँ। मुदा अनेक प्रश्न मोनमे घुरियाइत रहल। आखिर एहि सभ्य समाजमे नागा सन्यासी वस्त्रहीन नाँगट कियैक रहैत छथि? एहन आदि मानव सदृश वेष-भूषा कियैक बनौने छथि? एहन उन्मुक्त, एहन स्वच्छन्द जीवनदर्शनक पाछोँ कोन प्रेरक शक्ति कार्यरत अछि? एहन जीवन दर्शनक की उद्देश्य थिक? नागा तँ जाति होइत अछि, धार्मिक सम्प्रदाय कोना भ' गेल? सामान्य गृहस्थ जीवन छोड़ि ई सभ एहन कठोर जीवन-व्रत कियैक ग्रहण क' लैत छथि? एहि प्रकारक असंख्य प्रश्नसँ मोन अहुछिया काटय लागल।

अनुमान कयल जाइत अछि जे भारतमे सर्वप्रथम नीग्रो जातिक आगमन भेल। ई जाति संभवत: अफ्रीकासँ आयल छल। एकर एकटा शाखा भारतसँ आस्ट्रेलिया गेल, जतय एकर वंशज एखनहुँ विद्यमान अछि। मलाया, फिलीपाइन, न्यूगिनी और अंडमनमे जे नीग्रो छथि, से एतहिसँ गेल छथि। भारतमे नीग्रो लगभग समाप्त भ' गेल अछि। एकर थोड़ेक निशान दक्षिण भारतक आदिम जातिमे अथवा असमक नागा जातिक रूपमे बचल अछि। ई जाति सभ्यताक आदि सोपान पर छलाह। नागा सन्यासीक मूल उत्स एहि नागा जातिमे अवश्य ताकल जा सकैत अछि। पुराणमे नागा जातिक कथा वर्णित अछि-द्वापर युग समाप्त भ' गेल छल। कलियुगक आगमन भेल, राजा जनमेजय अत्यन्त वृहत स्तर पर नागयज्ञक आयोजन कयलनि। सम्पूर्ण आर्यवर्तसँ राजा महाराज, ऋषि-मुनि ओहि यज्ञमे आमन्त्रित छलाह। यज्ञ-स्थल पर प्रज्वलित हवन कुंडसँ बहराइत सुगन्धसँ चहुँ दिशा महमहा रहल छल। एहि नागयज्ञमे उपस्थित पुण्डरीक नामक नाग यज्ञ-स्थलसँ भागि जयबा लेल आतुर छल। अथक प्रयाससँ पुण्डरीक ओहि यज्ञसँ भागयमे अन्तत: सफल भ' गेल। तत्पश्चात् पुण्डरीकक मोनमे सांसारिक सुख भोगबाक लालसा तीव्र भ' गेलैक और ओ मानव शरीर धारण क' लेलक।

पुण्डरीक सर्वप्रथम काशी गेल। सांसारिक सुख भोगबाक लालसा ओकर एतेक तीव्र भ' गेल छल जे ओ काशीमे एकटा ब्राह्मण कन्याक सौंदर्य पर मोहित भ' गेल। ब्राह्मण कन्याक नाम छल पार्वती, पुण्डरीक पार्वतीसँ विवाह क' लेलक। किछु वर्ष पश्चात् पार्वती गर्भवती भ' गेलीह। पुण्डरीक भयभीत भ' गेल, पार्वती जखन संतानकेँ जन्म देतीह, तखन ओकर नाग होयबाक रहस्य नहि खुलि जाय। अत: भगवान जगन्नाथक दर्शनक बहानासँ पुण्डरीक पत्नी पार्वतीक संग जगन्नाथपुरीक यात्रा हेतु विदा भ' गेल। भगवान जगन्नाथक दर्शन क' जखन ओ घुरि रहल छल, तखन पार्वती पुण्डरीकसँ पूछलनि जे हुनक संपूर्ण शरीर

तँ एहन दिव्य छनि, मुदा जी कियैक फाटल छनि? जी दू भागमे कियैक बाँटल छनि? एहन जी तँ सामान्य मनुष्यक नहि होइत अछि, मात्र नागक होइत अछि। किछु काल धरि पुण्डरीक बहाना करैत रहल, मुदा पत्नीक जिद्दसँ विवश भ' नाग पुण्डरीक अपन पत्नी पार्वतीकेँ ओहि रहस्यक कथा तँ कहि देलक, मुदा ओकरा स्वयं अपन कृत्य पर एहन घृणा भेलैक जे ओ मार्गमे स्थित गहीर जल-कुण्डमे डुबि प्राण त्यागि देलक।

क्षोभ और दु:खसँ कातर नाग पत्नी पार्वती जे गर्भवती छलीह, अपन सद्य: जन्मल पुत्रकेँ एहि पृथ्वी पर छोड़ि अपना जीवनक अन्त क' लेलनि। पुण्डरीक पुत्र आगाँ चलि क' फणिमुकुट नामसँ विख्यात भेल। यैह फणिमुकुट नागवंशक प्रथम शासक कहल गेल अछि, तथा ओकर शासित प्रदेश पौण्ड्र देश। ई पौण्ड्र देष वर्तमान कालक पश्चिम बंगालक मालदहसँ ल' दिनाजपुर, गंगा और ब्रह्मपुत्रक मध्यवर्ती भाग तथा बिहारक पूर्ववर्ती भाग धरि पसरल छल। 'ऐतरेय ब्राह्मण'मे पुण्ड्र प्रदेशक उल्लेख अछि। किछु इतिहासकारक मत अछि जे पुण्ड्र देष झारखंडक छोटानागपुर क्षेत्र थिक तथा नागवंशक राजाक नामक आधार पर एकर नामकरण छोटानागपुर कयल गेल अछि। रांची जिला गेजेटियरमे उल्लेख कयल गेल अछि जे पूर्वमे एतय चुटिया अथवा छुटिया नामक गाम छल, तथा ई भूमि नागवंशी शासकक प्रथम निवास स्थल छल। कालातंरमे यैह प्रदेश छोटा नागपुर भेल।

जखन हम भारतीय संस्कृति अर्थात हिन्दू संस्कृतिक चर्चा करैत छी, तँ संक्षेपमे यैह कहल जा सकैत अछि जे ई मात्र आर्यक संस्कृति नहि थिक। नीग्रो, औष्ट्रीक, द्रविड़, आर्य, मंगोल, युनानी, युची, शक, अमीर, हुण तथा तुर्क आदि संस्कृतिक संयुक्त स्वरूप थिक हिन्दू संस्कृति। एक शब्दमे कहल जा सकैत अछि, जे आर्य और आर्येत्तर संस्कृतिक मिश्रणसँ हिन्दू-संस्कृतिक निर्माण भेल। कोनहुँ संस्कृतिक स्वतंत्र अस्तित्व नहि रहल, सभ हिन्दू समाजक चारू वर्णमे बँटि पचि-खपि गेल। चूकि एहि समन्वयक काजमे प्रमुख भूमिका आर्यक रहल, ते भारतीय संस्कृति पर आर्यक नामक बौद्धिक लेबुल लागि गेल।

एहि लेल मात्र एकटा उदाहरण पर्याप्त होयत। हिन्दू संस्कृतिमे सिन्दूर एकटा अपरिहार्य पदार्थ थिक। सिन्दूरक प्रयोग और अनुष्ठानमे नारियल और पान रखबाक प्रथा आग्नेय परम्पराक देन थिक। आग्नेय जातिक लोक बलिदान कयल गेल पशुक रक्त माँथ पर लगायब शुभ मानैत छलाह। यैह प्रथा सिन्दूर लगौनाइमे बदलि गेल। सिन्दूरक विषयमे आचार्य क्षितिमोहनक मत अछि जे ई उपकरण आर्येत्तर जातिसँ आयल अछि। विवाहक अवसर पर सिन्दूर बिना विवाह पूर्ण नहि होइत अछि। मुदा सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्यक ''पुरोहित-दर्पण'' पोथीक अनुसार सिन्दूरक आचार आर्य कोनो आर्येत्तर जातिसँ ग्रहण कयलक। सिन्दूरक नहि तँ कोनो वैदिक नाम अछि और नहि सिन्दूर-दानक कोनो मन्त्र। सिन्दूर मूलत: नागा लोकक वस्तु थिक। एक दोसर नाम नाग-गर्भ एवं नाग सम्भव थिक। शंख और कम्बु आदि नाम वेद वाह्य थिक। ई मात्र छोट-छिन क्षेपक थिक, नागा जातिक हिन्दू संस्कृतिमे देनक।

वेदक वातावरण आनन्द और उत्साहक वातावरण छल। आहिमे भय अथवा शोकक छाया नहि छल। अपन समस्त सीमाक संग सांसारिक जीवन वैदिक ऋषिक प्रेय छल। प्रेयकेँ छोड़ि श्रेय दिस बढ़बाक आतुरता उपनिषद कालमे जागल, जखन मोक्षक समक्ष गृहस्थ-जीवन निस्सार भ' गेल एवं जखन लोक एहि आनन्दसँ विमुख भ' सन्यास लेमय लागल। वैदिक ऋषि जतय ई प्रश्न पूछि शान्त भ' जाइत छलाह जे ई सृष्टि के बनौलक? के देवता छथि, जनिक हम उपासना करी? ओतय उपनिषदक ऋषि सृष्टिक निर्माताक सम्बन्धमे किछु सिद्धान्तक निश्चय क' लेलनि तथा ओहि ''सत''क पता लगा लेलनि, जे पूजा और उपासनाक वस्तुत: अधिकारी छथि। वैदिक धर्मक प्राचीन आख्यान वेद और नवीन आख्यान उपनिषद थिक।

आत्मा-परमात्मा, पुनर्जन्म और कर्मफलवादक विषयमे वेदमे सूक्ष्म कल्पना छल, उपनिषदमे तकर विपुल विकास भेल। मोक्षक सिद्धान्त निरूपित भेल, मुदा एहि सिद्धान्तक निरूपणमे जीवनक दुखपूर्णताक प्रश्न उठल, फलत: समाजमे एक प्रकारक निराशावाद पसरि गेल और जीवनक उत्साह समाप्त होमय लागल, जे वेदकालीन भारतवासीक विशेषता छल। उपनिषद सन्यास और वैराग्यक भावनाकेँ प्रेरित कयलक।

वैदिक सभ्यता कर्मठ मनुष्यक सभ्यता छल, जे सोचैत कम छल और काज अधिक करैत छल। नरकक चिन्ता नहि आ नहि स्वर्गक लोभ छल। जे जीवनकेँ दुखक आगार नहि, सुख और आनन्दक साधन मानैत छल। मुदा उपनिषद मनुष्यक दिमागक बहुतो केबाड़केँ खोलि देलक और मनुष्य बहुश: प्रश्नक चक्करमे पड़ि गेल। ई सृष्टि की थिक? जन्मक पूर्व की छल? मृत्युक पश्चात् की होयत? मृत्युक पश्चात् जीवन समाप्त भ' जाइत अछि? मृत्युक पश्चात् स्वर्ग भेटैत अछि? जौँ हँ, तँ एकर की प्रमाण थिक? एहि प्रश्नक छिन्न झलक वेदमे सेहो प्रच्छन्न छल, मुदा वेदकालीन मनीषा एहि प्रश्नमे ओझरायल नहि। उपनिषद मनुष्यकेँ एहन प्रश्नक जालमे उलझा देलक, और एहि प्रश्नक अन्तिम उत्तर ओकरा आइ धरि नहि भेटल छैक।

नागा सन्यासीक जीवन दर्शन और दैनिक क्रिया कलापमे हिन्दू संस्कृतिक क्रमिक विकास सहजहि ताकल जा सकैत अछि। आर्यक आगमनसँ पूर्वहिसँ नागा जातिक निवास स्थल भारतवर्ष छल। स्वाभाविक अछि जे सभ्यताक आदिम सोपान पर वस्त्रक प्रथा नहि छल। वर्तमानमे नागा सन्यासी जाति नहि अपितु धार्मिक सम्प्रदाय थिक और एहि सम्प्रदायक साधुक नाँगट रहब सम्भवत: ओतहिसँ प्रेरित अछि। नागा सन्यासी शैव होइत छथि, नागा आर्येत्तर जाति छल तथा शिव आर्येत्तर जातिक उपास्य छलाह। नागा सन्यासी बनबाक कठोर प्रक्रिया नागा जातिक साहसिकता प्रतीक थिक तँ नागा सन्यासीक जीवन दर्शन और दैनिक क्रिया कलाप वेद कालीन दर्शन आनन्द और उत्साहसँ प्रेरित अछि। अन्तिम सभसँ महत्वपूर्ण तथ्य जे भारतीय मनीषा उपनिषद कालहिसँ जाति ''सत्'' क खोजमे सन्यासी बनय लागल और जकरा एखन धरि अपन प्रश्नक समाधान नहि भेटल छैक। ओ निश्चय विशिष्ट छथि, हिन्दूत्वक प्रतीक छथि।

हम मोनहि मोन सोचय लगलहुँ जे वर्तमान भौतिकवादी युगमे सांसारिक सुख त्यागि, कठोर जीवन-व्रत धारण कयनिहार ई साधु-सन्यासी अहि ''सत'' क खोजमे संगम क्षेत्रमे एकत्रित भेल छथि। अहि सत् रूपी अमृतक प्राप्ति हेतु ई लोकनि कुम्भ स्थल पर एकत्रित होइत छथि। अहि ''सत्'' रूपी अमृतक प्राप्ति हेतु बेचैन आत्माक सन्तुष्टि हेतु त्रिवेणीक शीतल जलमे स्नान क' ब्रह्ममे एकाकार भ' जाइत छथि। श्रद्धासँ हमर माँथ झुकि जाइत अछि।

तत्पश्चात् हम सभ पंचाननजीक निवास स्थल जयबाक हेतु विदा भेलहुँ। सड़क पर गाड़ी चलि नहि ससरि रहल छल, ओएह हेंजक-हेंज लोक संगम दिस बढ़ल रहल छल, पंचाननजीक टेन्ट सेक्टर छह, पीपा पुल चैदह नम्बरमे छलनि। ई क्षेत्र नागवासुकी थानाक अन्तर्गत पड़ैत अछि। एहि थानाक नामकरण नागवासुकी मन्दिरक नाम पर भेल अछि और ओ सड़क नागवासुकी रोड कहल जाइत। एहि मन्दिरमे भीष्म पितामहक मूर्ति स्थापित अछि। पंचाननजी, रेवतीजीक संगहि डा. जयकान्त मिश्राजीक बालक केके मिश्रा सपत्नी अत्यन्त आह्लादसँ स्वागत कयलनि। भोजनक संरजामसँ ल' क' हुनका सभक आत्मीयताक मूल्यांकन शब्दसँ नहि कयल जा' सकैत अछि। हुनका लोकनिक स्नेह और ओहि स्नेहसँ भीजल हमर मोन-प्राण। एखन संस्मरण लिखय काल अपन एहि अनुभूतिकेँ शब्दक स्वरूप द' सार्वजनिक करबाक इच्छा नहि भ' रहल अछि। अस्तु... दिनमे दरभंगाक ट्रेन पड़बाक छल। ओतयसँ विदा भेलहुँ, भरि बाट चारू दिस निहारैत रहलहुँ। नहि जानि पुन: कहिया एहन सुयोग भेटत? लाखक लाख मनुष, तथापि मौन प्रकृति, सभक आँखि त्रिवेणी दिस, अनन्त जनसमूह नमन करैत, अनन्त आत्मा-श्रद्धाक एकटा महोत्सव। त्रिवेणीक धारा नमनकेँ स्वीकार करैत, कलकल बहैत, सभकेँ आशिष दैत। भीतर बाहर दुनू दिस एकटा महाप्रवाह-अवचेतनमे पीढ़ी दर पीढ़ी, जन्म जन्म, युग युगसँ संजोगल विश्वासक आदि-अनादि अमृत धारा। ओहि अमृत धाराक महानादमे समाहित हमर मोन प्राण। हमर मोन प्राणमे श्रद्धाक शान्त, पवित्र स्वर अविरल प्रवाहित भ' रहल अछि और प्रकृतिमे... गुंजित भ' रहल अछि-त्रिवेणी-प्रवाहक पावन, मधुर, सांगीतिक ध्वनिक आदिम स्वर।

रूपू

निवेदिता झा

पत्रकारिता आ मनोविज्ञानमे स्नातकोत्तर।
F/25/51 ग्रीन व्यू अपार्टमेंट, सेक्टर 3
रोहिणी दिल्ली 11085
सम्पर्क : +91 9811783898

मनोहरपुर एकटा छोट कस्बा छल। मुदा रेलवे स्टेशन रहलाकेँ कारणे भरल रहैत छल कस्बा। सबटा ट्रेन रूकै ओहिठाम किएक तँ कनिये दूर पर प्रसिद्ध एकटा मंदिर छलै।

ओहि गाममे एकटा छोट दस बरखकेँ बालक सुमन अपन परिवार आ एकटा छोट बहिन सुम्मी संग रहैत छल। 'श्याम' ओकर मित्र छल। दुनू संगहि रहय पूरा दिन। ओकर आ श्यामक मित्रताक चर्च विद्यालयमे सब करय। एकदिन सुमन श्यामक घर गेल तँ ओहिठाम ओ एकटा सुग्गा देखल, श्याम भागिकेँ गेल, सुग्गा आँगनमे घुमैत छल। जखन श्याम बजबै तँ ओ सुग्गा आम-आम बाजय। अतेक हरियर कचोर लाल ठोर बला सुग्गा पहिने सुमन नहि देखने छलै।

'ई उड़ै नहि छै कि दोस्त ?'

'नहि नहि एकर पाँखिकेँ बाबा छाँटि देने छथिन।

बहुत दुखायल हेतैय, पंख कटैयसँ मुदा एहि प्रश्नक उत्तर नहि देलक श्याम।

'सुमनकेँ नीक नहि लागल'

अहाँ अपन घर ल' जाऊ... कहिकेँ बहुत जोरक ठहाका लगेलक श्याम। सुमनकेँ हँसि छुटि गेल।

घर ऐलाक बाद ओ पप्पासंग हठ करैय लागल।

हमरो एकटा सुग्गा आनि दिए। जे राम-राम बाजैय...

माय बाबुजी बहुत बूझओलनि मुदा सुमनक माथमे तँ कीड़ा पैसल छल ओ नहि मानल, हारि क' पप्पा एकटा पैघ पिजरामे एकटा सुग्गा आनि देलैन। प्रसन्नताक ठेकान नहि रहल। नाम राखल गेलै 'रूपु'

पाठशालासँ ऐला क' बाद ओ बैसल रहय आ सिखाबै, कहू 'रूपु कटोरे-कटोरे' मुदा रूपू किछ नहि बजैय। रूपू एकटा खिलौना छल पूरा घर लेल। कियो पानि दए, कियो लताम, मुदा दू दिन तँ ओ नहि खेलक। काया कमजोर भ' गेल रूपुकेर। आब पूरा परिवार चिन्तित छल।

एक दिन भोरे-भोर अकाशमे बहुत रास 'सुग्गा' जाइत छल। इम्हर रूपू पिजरामे चकरघन्नी जकाँ नचैत छल। कने देर बाद फेर ओ हारिकेँ आँखि मूँदि लेलक।

'माय दूरसँ देखैत रहथि'... हुनकासँ रहल नहि गेलनि।

ओ सुमन पप्पाकेँ कहलनि जनै छिए ऐना लगैत अछि कि सबटा सुग्गा रूपूकेँ ताकि रहल अछि। अहूँ बिना अर्थक गप करै छी, हम अहाँकेँ मना करैत रही मुदा छोट बच्चाकेँ हठ पर अहाँ हमरा बाध्य क' देलौं। स्वतंत्रता सबकेँ पसीन होइत छै, हमरा ग्लानि भ' जाइए जखन रूपूकेँ मोन झामरि देखए छिए।

सुमनक परीक्षा नजीक छलै, ओ बहुत नहि खेलाय रूपूसँ। कने पैघ भ' गेल छलै रूपू आ पिजरा छोट पड़ैत छलै। पप्पाजी एकटा घरमे कुकूर सेहो आनि देने रहथिन, एकटा कुकूर चोटसँ ग्रसित छलै, पप्पा उठाकेँ आनि लेलनि।

पिजराक बाहरि ओ बैसल रहैत छल। जेना दुनूक खूब मित्रता भ' गेल हुए। रूपू मुदा अखनो किछु नहि बजैय।

अँगनामे कुकूर आ रूपू रहय। 'कुकूर जिमीक गर्दनमे बेल्ट नहि छल 'ओ अजाद घुमैय मुदा रूपू पिजरामे रहय'।

सुमन एक दिन लेल अपन परिवार संग नगरसँ बाहर गेल। रूपूक रखवारी लेल धन्नू नामके स्टॉफ छोड़ि देने रहथिन माय बाबूजी। घुमि क' ऐलाकेँ बाद जखन सुमन दौड़ल रूपू लग तँ ओ अचम्भित भ' गेल धन्नूकेँ गप सुनि। रातिमे एकटा साँप रूपूक पिजरा लग आयल छल। ओ रूपूकेँ मारै चाहैत छल मुदा जिमी ओकरा काटय दौड़ल बहुत काल धरि जिमी ओझराएल रहल, भूँकनाय सुनि धन्नू जागल। फेर साँपकेँ भगाएल गेल, मुदा तामे जिमी बेहोश छल। ओ अखन मवेशी अस्पतालमे छै।

सुमन खूब कानए लागल 'पप्पा रूपूकेँ मारिदइते आइ साँप', एकरा उड़ा दिऔ, कही क' पिजरा लग बैसि गेल। हमरा जीमी ल'ग ल' चलू पप्पा। पप्पा एकबेर मुस्केला आर पिजरा खोलि देलनि। सबगोटे अस्पताल दिसँ दौगल।

ओहिठाम जिमी पड़ल छलै। डाक्टर छुट्टी दए देलनि। माय कोरामे उठाए क' आनलनि। खूब दुलार करैत सबगोटे घर दिस विदा भेला–

'माय रूपू कतय हेतै ?'

माय बजलीह– लताम खायत हेतै बौआ, कोनो गाछपर ...

घरमे सबसे पहिने सुमन प्रवेश केलक ... ओ दौगल रूपूकेँ तकैत, मुदा रूपू तँ उड़ि गेल छल सुमन थाकि गेल छल, ओ बिछाओन पर सुति गेल, कने काल बाद 'रूपू कटोरे-कटोरेक स्वर सुनाय पड़ल' ओ जागल, देखैत अछि माथ लग रूपू बैसल छल। सुमन कोरामे ल' लेलक रूपूकेँ... रूपू आब पिजरामे नहि सुमन आ जिमीक संग आँगनमे खाइत आ खेलाइत रहैत अछि।

हमरा बचा लिय'

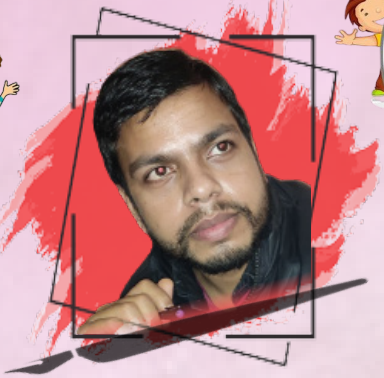

सुमित मिश्र गुंजन

सम्पर्क : दरभंगा, मिथिला (बिहार)

मोबाइल : +91 84348 10179

सुतैत-जागैत गणित पढ़ी
पढ़िते रही हुजुर
परीक्षा कक्ष मे किए सरजी
दै धोबिया पाट जरुर

यौ कौहुना बुझा दिय'
हे हमरा रटा दिय'

चान आ सूरज गोल-गोल छै
धरती गोल मटोल
भूगोलक भूत जे पाछा धेलकै
भागी टोले-टोल

यौ हमरा बचा लिय'
हे कौहुना सिखा दिय'

न्यूटन आंइस्टीन चलि गेला
द' सभटा हमरे माथ
विज्ञानक जुआरि उठैए सरजी
आबैये नहि हाथ

यौ कौहुना सिखा दिय'
हे उत्तर बता दिय'

हम नेना बड छोटगर बुझू
कोना पहाड़ ई ढाहबै यौ
सिलेबस छै बड भरिगर सरजी
नीकगर अंक कोना आनबै यौ।

देश पहुँचलै चान पर

हमर दैया बड़ बुधियारि।
माटि खाइ नहि, छथि होशियारि॥
मीठक खयने दाँत खराब।
दाँतक टुटने फुस्स बसात॥

चल-चल बौआ गाम पर।
सुगना छैक लताम पर॥
बिढ़नी छता आम पर।
बड़द घुमैए ठाम पर॥

भोरे उठ' व्यायाम कर।
पढ़'-लिख' आ ध्यान कर॥
अपन फूट पहिचान कर।
देश पहुँचलै चान पर॥

राम सेवक ठाकुर

सम्पर्क : मधुबनी, मिथिला (बिहार)

मोबाइल : +91 9934205203

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211

www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com

+91 9430583847 +91 8862977228

अनुप्रास प्रकाशन

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

मैथिली पोथीक सूची

नाटक

01. सिया के सकल देखि : ऋषि बशिष्ठ 108/-
02. हमहूँ जेबै इसकुल : मनोज कामत 100/-
03. मनोरथ : रेवती रमण झा
04. चोखगर खौंच : डॉ. नरेश कुमार विकल 201/-
05. कमला मे भासियाइत सीता : डॉ. अरविन्द अक्कू 200/-

उपन्यास

06. लय : विभूति आनन्द 200/- *(दोसर संस्करण)*
07. मृत्युलीला : प्रदीप बिहारी 200/-
08. डीह : दीपा मिश्रा 251/-
09. युगांतकारी : मधुकान्त झा 200/-

बाल उपन्यास

10. पिजरा : वन्दना झा 200/-

कथा-संग्रह

11. एकान्त द्वीप पर डा. मंजुला : श्याम दरिहरे 251/-
12. आशक चंगेरा : अरुण लाल दास 200/-

लघुकथा-संग्रह

13. स्पीड पोस्ट : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-
14. भाइरस : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-

मधुमाछी कथा-संग्रह

15. बिठुआ : शंकर मधुपांश 199/-

बाल कथा-संग्रह

16. सोना हमर बड़ बुधियारि : वन्दना झा 200/-
17. हरियर-कचोर फुलबारी : वन्दना झा 201/-

बाल कविता-संग्रह

18. पिजरा : वन्दना झा 201/-

मैथिली कविता-संग्रह

19. कोनो टूटल अछि तन्तु : नारायणजी 165/-
20. मुट्ठी भरि सम्वेदना : अंजली कुमारी 150/-
21. संवेदनाक भीत पर : अश्विनी कुमार तिवारी 225/-
22. अभिसारिका : जयंती कुमारी 200/-
23. थिर कएने मोन : अमरनाथ झा 'अमर' 211/-*(अनुपलब्ध)*
24. फुलडाली : शंकर मधुपांश 160/-
25. आउ स्वप्न साझी करी : गोपाल झा 'अभिषेक' 200/-
26. नमहर हो चद्दरि जतबए : अमरनाथ झा 'अमर 200/-
27. जेना होइत हो भोर : अरुण लाल दास 150/-
28. अधवाराक बदलैत स्वरूप : नंदनी झा 250/-
29. तोरेसँ : शंकर मधुपांश 201/-
30. शब्द शेष अछि एखन : शंकर मधुपांश 201/-
31. राजर्षि भरत : सतीश चन्द्र झा 200/-
32. भोरक बाट तकैत : खुशबू मिश्रा 'खुशी' 200/-
33. योनिक आत्मबोध : दीपा मिश्रा 251/-
34. शतपत्री : दीपा मिश्र 800/-HB
35. जा धरि अछि अक्षर : अरुण लाल दास 200/-

महाकाव्य

36. चाणक्य : दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 250/-*(तेसर संस्करण)*

अनुवाद

37. कोलरिज एवं अभिनवगुप्त : श्रीकृष्ण मिश्र (अ.- भैरवेश्वर झा) 1000/-HB

व्यंग्य-संग्रह

38. व्यंग्य मेकिंग इन विलेज : वीरेन्द्र नारायण झा 175/-

यात्रा संस्मरण

39. देश विदेश : डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' 500/-

आध्यात्मिक

40. श्रीमद्भागवतगीता(भावानुवाद) : वन्दना झा 351/-
41. श्रीमद्भागवतगीता(पद्यानुवाद) : विनोद कुमार झा 351/-
42. श्रीदुर्गासप्तशती : वन्दना झा HB 551/- PB 351/-
43. श्रीदुर्गासप्तशती : सतीश चन्द्र 'सजल' 451/-

आलेख-संग्रह

44. शान्ति निबन्धावली : आचार्य पं. महेश झा 200/-
45. मैथिली आलेख संचयन II : प्रा. रामावतार यादव 500/-
46. मिथिला मंदार मंजरी : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 300/-

व्याख्यान

47. मैथिली गीत : परम्परासँ आइ धरि : डॉ. चन्द्र मणि झा 250/-

गजल

48. जे कहि नञि सकलहुँ : दीप नारायण विद्यार्थी HB 199/- PB 149/- *(दोसर संस्करण)*
49. प्रेम पूरित भाष : विजय इस्सर 'वत्स'

मधुप साहित्य

50. मधुप सप्तसुधा : कविचूड़ामणि मधुप 500/-

शोध

51. महाकविक महाप्रयाण : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 800/- HB
52. कबीर आ हुनक मैथिली पदावली : डॉ. तरानन्द वियोगी 500/-

हिन्दी-अंग्रेजी पुस्तकें

हिन्दी उपन्यास

53. फूलो रानी : प्रो. महेन्द्र प्रसाद सिंह 250/-
54. अगम अगोचर : अर्जुन झा 150/-

अंग्रेजी उपन्यास

55. HEFTY DELIGHTS : samriti jha 200/-

हिन्दी कविता-संग्रह

56. स्मृति : श्यामानन्द ठाकुर 150/-
57. कहूँ तुझे सूरज या चंदा : लक्ष्मी देवी स्मृति झा 100/-
58. विरह संदेश : शंकर मधुपांश 160/-
59. भूमिजा : शंकर मधुपांश 201/-
60. मधुयामिनी : शंकर मधुपांश 151/-
61. नींव का पत्थर : जगमोहन चौधरी 201/-
62. मैं बिहार हूँ : दीपक वत्स 199/-
63. तेरे न होने से 200/-

हिन्दी गजल

64. हंसती आंखों के आंसू (हिन्दी) : डॉ. हाजिक फरीद 199/-

अनुवाद

65. परिचय शतक (हिन्दी) : कविचूड़ामणि मधुप (अ.- शंकर मधुपांश) 199/-
66. योनि का आत्मबोध (हिन्दी) : दीपा मिश्रा (अ.- प्रेरणा पारिश) 251/-

हिन्दी दोहा-संग्रह

67. संरक्षण के दोहे : कुमार मनीष अरविन्द 200/-

शोध

68. दुसाध जाति का वृहत् इतिहास : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 600/-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

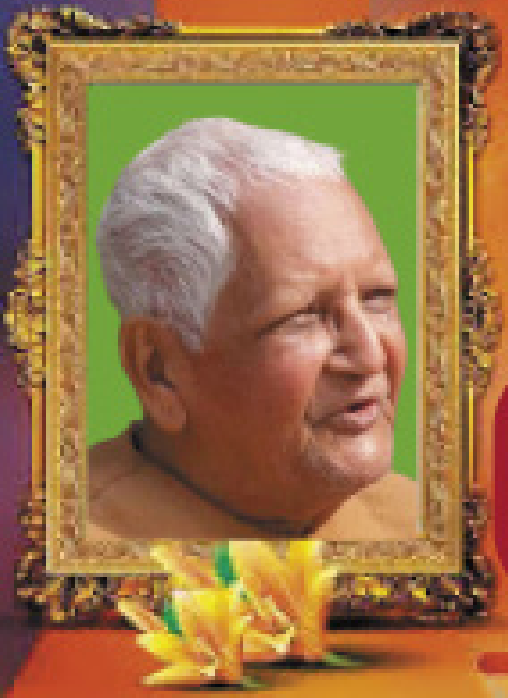

भावपूर्ण श्रद्धांजली

मैथिली साहित्यक पुरोधा पं. गोविंद झाक सताधिक वर्षक आयुमे गोलोक गमन पर अनुग्रास परिवार दिससँ हुनक श्रीचरणमे सादर श्रद्धा सुमन।

10 अक्टूबर 1923 : 18 अक्टूबर 2023

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

27 मार्च 1962 : 02-जुलाई 2023
२०१८/१२/१४ : २०८०/०३/१७

अनुग्रास पत्रिकाक प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण जीक माताश्री सहृदया सरल स्वभावी, मिलनसार एवं धार्मिक प्रवृत्तिक परम परोपकारी अन्वेय...

वटुनी देवीक

देवलोक प्रयाण पर अनुग्रास परिवारक सादर नमन।

भावपूर्ण श्रद्धांजली

अनुप्रास प्रकाशन समूह

मिलाय जाइत छी मैथिल होइक लेखन

इन्द्र परिसर, खोरिबागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com
+91 9430583847 +91 8862977238

नयनाभिराम कवर डिजाइन एवं अंतरराष्ट्रीय गुणवत्तायुक्त पोथी प्रकाशित करएबाक लेल सम्पर्क... +91 9430583847

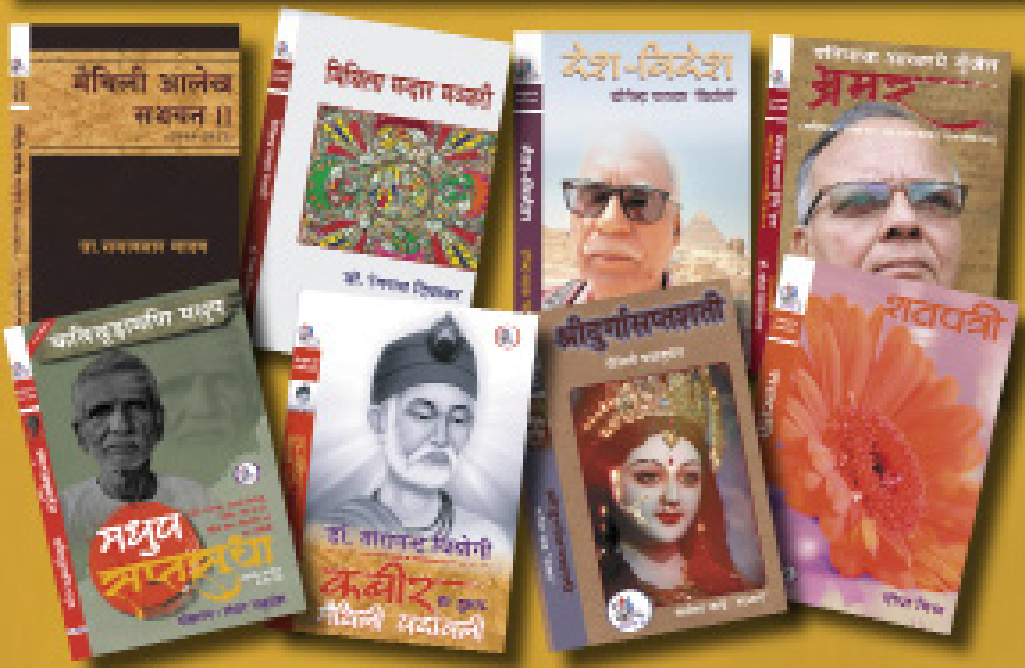

अनुप्रास प्रकाशनक उद्देश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताकें स्थापित करब छिक। स्तरीय साहित्यकें सर्वसुलभ करएबाक एहि सारस्वत प्रयासमे अपने लोकनिक सहयोग आ परामर्श अपेक्षित अछि।

Our online partners: amazon flipkart.com amazon kindle

www.anuprasprakashan.com e-mail: info@anuprasprakashan.com/anuprasprakashan@gmail.com

anuprasprakashan @anuprasprakashan +91 9430583847